

वार्षिक प्रतिवेदन  
ANNUAL REPORT  
2010 – 11



भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास,  
शिमला – 171005

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171005



## अध्यक्ष का प्राक्कथन

मुझे भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान का प्रधान एवं अध्यक्ष सितम्बर 2005 को मनोनीत किया गया था एवं प्रथम तीन वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर मुझे पुनः वर्ष 2008 में मनोनीत किया गया था। जैसाकि आपको विदित है कि मेरा प्रधान एवं अध्यक्ष का दूसरा कार्यकाल भी पूर्ण होने जा रहा है। यह वास्तव में मेरे लिए “विद्या के मन्दिर” का संरक्षक होने का सुखद सौभाग्य है जिसकी स्थापना लब्धप्रतिष्ठित विद्वान डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने की थी। इस प्रतिष्ठित पद के लिए मुझे मनोनीत करना मेरे लिए गौरव की बात है, जिसके लिए मैं भारत वर्ष के प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह जी एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पूर्व मंत्री स्वर्गीय श्री अर्जुन सिंह जी को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। यद्यपि मुझे मुम्बई विश्वविद्यालय का उपकुलपति एवं योजना आयोग के प्रतिष्ठित पदों पर रहने का सौभाग्य प्राप्त था, लेकिन संस्थान का प्रधान और अध्यक्ष प्रतिष्ठित पद मेरे लिए कई कारणों से महत्त्व का रहा है।

इन वर्षों में मैंने सभी सम्भव उपायों से संस्थान को देश के प्रमुख उच्च शोध संस्थानों में प्रतिष्ठित करने, जहाँ सामाजिक महत्त्व तथा जिनकी नीति निर्धारण की सार्थकता मिश्रण का चिरस्थायी महत्त्व है, का प्रयास किया है।

जैसाकि आपको ज्ञातव्य है कि जब मैंने संस्थान के प्रधान एवं अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया उस समय संस्थान में निष्क्रियता थी। एक वर्ष छः महीने से भी अधिक के समय तक संस्थान में कोई निदेशक नहीं थे और लगभग चार वर्षों से पूर्ण-कालिक सचिव भी नहीं थे। मुझे योजना आयोग के सदस्य के कार्यकलापों के अतिरिक्त इनके कार्यकलापों का भी वहन करना पड़ा। संस्थान के अधिकारियों एवं समस्त कर्मचारियों की समर्पित टीम के द्वारा हमने संस्थान के सामान्य कार्यकलापों को सुनिश्चित किया जो निर्बाध चली। अध्येतावृत्ति कार्यक्रम, आगन्तुक प्रोफेसर और आगन्तुक विद्वान कार्यक्रम, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अर्न्तविश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्र भी सुचारु रूप से चले। काफी प्रयासों के पश्चात हमने प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा को दिसम्बर 2008 में निदेशक चयनित किया। प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा के अकादमिक नेतृत्व में संस्थान के कार्यकलापों को पुनः स्थापित किया गया जिसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। हमने न केवल संस्थान के अकादमिक कार्यकलापों को संगठित किया बल्कि नई पहल से टैगोर संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन केन्द्र स्थापित कर सके जो अपने में बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रकाशन कार्यक्रम भी भली प्रकार चल रहे हैं। विगत छः वर्षों में हमने तीस से भी अधिक विविध महत्त्वपूर्ण विषयों की पुस्तकें प्रकाशित की हैं। संस्थान के अध्येताओं और आगन्तुक विद्वानों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए पुस्तकालय और आधारभूत सुविधाओं में विस्तार किया एवं सुधार किया है।

जैसाकि मैंने विगत वर्ष वचन दिया था, संस्थान के लेखाओं और लेखा परीक्षण विवरणियों की प्रक्रिया को पूरा करके सभागार के समक्ष प्रस्तुत करने में हम सफल हुए हैं, जिससे सरकार की निर्धारित अनुसूची का पालन करना था। इसलिए हम 2010-2011 के वार्षिक प्रतिवेदन की प्रकाशित प्रतियाँ मानव संसाधन विकास

मंत्रालय को निर्धारित अवधि में भेज देंगे। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी संस्थान प्रशासन निर्धारित अनुसूची के अनुसार इन्हें भेजने का प्रयास करेगा।

मैं डॉ० मनमोहन सिंह जी और स्वर्गीय श्री अर्जुन सिंह जी का आभार प्रकट करना चाहूँगा कि उन्होंने मुझ पर छः वर्ष तक संस्थान के प्रधान और अध्यक्ष पद पर बने रहने का पूर्ण विश्वास किया। मैं श्री कपिल सिब्बल जी का भी आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने मुझे अपना काम करने के लिए उत्साहित किया। मैं मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधिकारियों का भी आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने मुझे मेरे कार्यकाल में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

मैं सोसायटी, शासी निकाय, वित्त समिति तथा अन्य समितियों का भी आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने संस्थान की गतिविधियों को चलाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया। मैं संस्थान के अध्येताओं का आभारी हूँ जो संस्थान के सत्त्व हैं। प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा द्वारा विगत चार वर्षों से किये गए प्रयासों और पहलशक्ति की प्रशंसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वह इसे आगे ले जायेगे। मैं संस्थान के अधिकारियों एवं समस्त कर्मचारियों के सहयोग की भी प्रशंसा करता हूँ जिनके बिना संस्थान की गतिविधियों को चलाना सम्भव नहीं था। मुझे विश्वास है कि इन सभी विकसित और नवीन प्रक्रियों से संस्थान उच्च अध्ययन के क्षेत्र में शिखर पर होगा।

**डॉ० भालचन्द्र मुण्गेकर**  
प्रधान आईआईएस सोसायटी  
एवं अध्यक्ष शासी निकाय

## निदेशक महोदय की टिप्पणी

आलोच्य वर्ष मेरे लिए कई महत्वपूर्ण कारणों से महत्वपूर्ण रहा है। यह वर्ष मेरे और मेरे सहयोगियों की सहायता से समकेतिक रहा है। मैंने इसे समय में पूर्ण किया है, मैंने संस्थान के निदेशक का कार्यभार भी ग्रहण किया। यह वर्ष संस्थान की अकादमिक तथा अन्य गतिविधियों के विस्तार का रहा है। जैसाकि रिपोर्ट से विदित है कि अकादमिक गतिविधियों को देश के विभिन्न ज्ञानशास्त्र के समुदायों से मिलजुल कर विकास किया है, अकादमिक गतिविधियाँ जो आयोजित की गईं उनमें विधाओं की विविधता रही है और भौतिक आधारभूत सुविधाओं का विकास किया तथा हमें आशा है कि विश्व मानचित्र पर संस्थान उच्च शिक्षा के संस्थानों में अपनी पहचान बना लेगा। इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए हमने यह सुनिश्चित कर लिया कि सभी विधाओं की विविधता बनी रहे। हमने अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किये जिनमें, दी महाभारत और लाईफ एण्ड थॉट ऑफ गाँधी पर स्कूल एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन शिपिंग पैरीमीटरस् : सोशल एण्ड ऐथिकल इम्पलीकेशनस् ऑफ ह्यूमन जेनोमी रिसर्च तथा अध्ययन सप्ताह एक्सपलोरिंग जैन्डर, रीडिफाईनिंग दी फील्ड : फ़ैमिनिस्ट जर्नीज़ इन दी सोशल साइंसिस, ह्यूमैनिटिज़ एण्ड दी आर्टस् पर आयोजित किये। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता/अध्येताओं की सूची से स्पष्ट है कि भारतीय भौतिकवाद में उनकी विविधता प्रदर्शित करती है।

मुझे यह कहने में आपार हर्ष हो रहा है कि गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयन्ती पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्थान को टैगोर संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन केन्द्र दिया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र के कार्यक्रमों को और संगठित किया गया है तथा पुराने मामलों का यूजीसी के साथ समाधान कर लिया गया है। संस्थान का सहप्रकाशन कार्यक्रम अग्रणी व्यवसायिक प्रकाशकों के साथ संगठित किया गया है और लगभग 15 पुस्तकें ओयूपी, सेज़, ओरियेन्ट ब्लैकस्बन और रौटलेजे के पास प्रकाशानाधीन है। पुस्तकों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिये अब हमने फिल्ट्रकार्ट के साथ अनुबन्ध किया है जिसके उत्साहजनक परिणाम निकले हैं। संस्थान के पुस्तकालय में पहले ई-संसाधनों की कमी थी अब ई-जनरल और ई-रेपोसोर्टिज़ का अच्छा संग्रह है। आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिये हमने स्वीमिंग पूल को "पूल थियेटर" और स्कवेश कोर्ट को कोर्ट गैलरी जिसमें भवन के दुर्लभ छायाचित्रों को रखा गया है, को विकसित किया है।

इस प्रतिवेदन के माध्यम से हम वर्ष 2010-2011 में संस्थान में घटित अकादमिक एवं अन्य गतिविधियों को सोसायटी के समक्ष रख रहे हैं। संस्थान की कार्यप्रणाली में और सुधार लाने के लिए हम आपकी समीक्षा, सुझावों एवं मार्गदर्शन की आशा करते हैं जो संस्थान के लिए सार्थक होंगी।

पीटर रॉनल्ड डिसूजा  
निदेशक, भा.उ.अ.सं, शिमला



## भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

### राष्ट्रपति निवास शिमला

#### वर्ष 2010-2011 का प्रतिवेदन

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की स्थापना वर्ष 1860 के समिति पंजीकरण अधिनियम के अर्न्तगत वर्ष 1965 में की गई थी। शिमला के राष्ट्रपति निवास में स्थित यह संस्थान मूलतः मानवीय महत्त्व और सामाजिक विद्वानों के गहन सैद्धान्तिक शोध में समर्पित है। संस्थान के शैक्षणिक निकाय में मुख्यतः शोध अध्येता समुदाय जो यहाँ रहते हैं अपना शोध कार्य करने के अतिरिक्त परस्पर औपचारिक व अनौपचारिक विचार-विनिमय करते हैं। राष्ट्रपति निवास तथा इसकी परिसम्पदा प्रकृति के सुरम्य वातावरण में चिन्तनशील उच्च अध्ययन हेतु प्रेरक सिद्ध होती है।

संस्थान के संगम-ज्ञापन के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में शोध का मार्गदर्शन किया है जो इस प्रकार है:-

(क) शोध के क्षेत्र ऐसे होने चाहिए जो अंतर्विधात्मक अनुसंधान का उन्नयन करें।

(ख) अनुसंधान की विषय-वस्तु वह होनी चाहिए जिसकी गहन महत्त्व हो।

संगम-ज्ञापन में अध्ययन के विभिन्न क्षेत्र भी प्रदर्शित किए जो इस प्रकार हैं:-

(क) सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दर्शन,

(ख) तुलनात्मक भारतीय साहित्य (जिसमें प्राचीन मध्यकालीन, आधुनिक, लोक और आदिवासी-साहित्य भी हो),

(ग) दर्शन और धर्म का तुलनात्मक अध्ययन,

(घ) शिक्षा, संस्कृति और कला, जिसमें निष्पादन कलाएँ और हस्तशिल्प भी हों,

(ङ) तर्क और गणित की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ

(च) प्राकृतिक और सामाजिक (जीवन) विज्ञानों की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ,

(छ) प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण का अध्ययन,

(ज) एशियाई पड़ोसियों के संदर्भ में भारतीय सभ्यता, और

(झ) राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में समसामायिक भारत की समस्याएँ।

संगम-ज्ञापन के अनुसार निम्न विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

(क) अनेकता में भारतीय एकता का विषय,

(ख) भारतीय चेतना की अनिवार्यता,

- (ग) भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में शिक्षा का दर्शन,  
 (घ) प्राकृतिक विज्ञानों में उच्च अवधारणाएँ और उनकी दार्शनिक विवक्षाएँ,  
 (ङ) विज्ञान और अध्यात्म के संश्लेषण में भारत और एशिया का योगदान,  
 (च) भारतीय मानव एकता,  
 (छ) भारतीय साहित्य एक परिचय,  
 (ज) भारतीय महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन,  
 (झ) मानव पर्यावरण।

## 1. प्रशासन

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान प्रोफेसर भालचन्द्र मुण्गेकर, राज्यसभा सदस्य, भूतपूर्व सदस्य योजना आयोग भारत सरकार एवं लब्धप्रतिष्ठित विद्वान, भारत के अग्रणी अर्थशास्त्री एवं विचारक और सुधारक भी हैं, ने भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान सोसायटी तथा प्रबन्ध समिति का नेतृत्व किया। सोसायटी तथा प्रबन्ध समिति के सदस्य लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों से लिया जाता है। संस्थान की एक वित्त समिति है जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सदस्यों के अतिरिक्त संस्थान की प्रबन्ध समिति के सदस्य भी होते हैं जो प्रबन्ध समिति को वित्तीय मामलों में परामर्श देते हैं।

संस्थान का नेतृत्व निदेशक करते हैं जिन्हें सचिव तथा अन्य अधिकारी अपना सहयोग देते हैं। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा निदेशक के पद पर आसीन रहे। श्री एस0 पी0 ठाकुर, भा0प्र0स0 ने 22 सितम्बर, 2010 को सचिव का पदभार ग्रहण कर लिया।

## 2. कार्यरत अध्येता

संस्थान के आधार इसके अध्येता हैं। राष्ट्रीय अध्येता/अध्येता यहाँ रहकर अपनी शोध परियोजनाओं पर कार्य करते हैं। इसकी अवधि दो वर्ष तक है। अध्येता अपनी अवधि के समाप्त होने पर पाण्डुलिपि प्रस्तुत करते हैं, यदि यह प्रकाशन के लिये उचित पाई जाती है तो संस्थान इसका प्रकाशन करता है। इन्हें संगोष्ठियों में सहभागिता, विचारविमर्श तथा व्याख्यानों में सहभागिता करनी होती है। वर्ष 2010-2011 में निम्नलिखित राष्ट्रीय अध्येता/अध्येता कार्यरत थे:-

क्रम संख्या	अध्येता का नाम	शोध परियोजना
1.	प्रोफेसर डी0एल0 सेठ (राष्ट्रीय अध्येता )	"रिसर्च ऑन डेमोक्रेटिक पालिटिक्स एण्ड सोशल चेंज"
2.	प्रोफेसर बी0 वी0 निमाडे (राष्ट्रीय अध्येता )	"दी लैंग्वेज ऐट लिट्रेचर स्टडीस इन लिट्रेरी स्टाईल"



3. प्रोफेसर माधवन के पलाट (राष्ट्रीय अध्येता ) *"वर्किंग क्लास वायलैन्स इन लेट इम्पीरियल रशिया"*
4. प्रोफेसर घनश्याम शाह (राष्ट्रीय अध्येता) *"ग्लोबलाईजेशन, सिविल सोसायटी एण्ड गर्वनेन्स"*
5. प्रोफेसर गंगूमयी केमेई (राष्ट्रीय अध्येता) *"ए हिस्ट्री ऑफ मणिपुर:दी मार्डन पीरियड (1826–2000 एडी)"*
6. प्रोफेसर जी.सी० त्रिपाठी (राष्ट्रीय अध्येता) *"मोनोस्टिक ट्रेडिशनस् ऑफ बुद्धिज्म एण्ड क्रिश्चोनिटि"*
7. डा० गागिंग्या मुखर्जी *"फिलासफी ऑफ इन्ट्रोग्रेशन एण्ड रिक्नसिलेशन: ए स्टडी ऑफ दी पॉलिटिकल थॉट,इटस कन्टेक्सट एण्ड दी फॉर्म ऑफ इटस प्रेजेंटेशन इन गांधी एण्ड टैगोर"*
8. प्रोफेसर सतीश एकान्त *" पोस्टकलोनियल इंडियन लिटरेचर : टूवर्ड्स ' क्रिटिकल फ्रेमवर्क "*
9. डा० कंचना सी.वी.नट्टराजन *"ट्रान्सलेशन एण्ड स्टडी ऑफ एवयुदेई अकालस सांग्सस : एन एग्जामिनेशन ऑफ रिलिजस एण्ड फिलासिफिकल व्यूज ऑफ दी 18थ सेन्चुरी वूमैन सेज ऑफ तामिलनाडू "*
10. प्रोफेसर वीर भारत तलवार *" नवजागरण : इटेलियन, बगंला और हिन्दी : एक तुलनात्मक अध्ययन "*
11. डा० मोहिन्द्र सिंह *" कन्सैपशन्स ऑफ दी सोशल एण्ड दी पॉलिटिकल इन इन कोलोनियल वर्ल्ड "*
12. डा० समारिका नवानी *" इन्टिटूशन ऑफ मेरीटार्डम एम्पायर : दी पोर्टगीस इन कोस्टल साऊथ-ईस्ट इंडिया एण्ड सिलोन इन दी 16थ एण्ड 17थ सेन्चुरीस "*
13. डा० सत्य व्रत दास *"दी कमिंग टार्डम, दी एथिक्स ऑफ रेडमपिटन एण्ड दी प्रोमिस ऑफ टार्डम"*

14. डॉ० राज कुमार हंस "हिस्ट्री ऑफ दलित लिट्रेचर मूवमेंट इन दी पंजाब एण्ड इट्स माइग्रेशलाइजेशन इन दी हिस्ट्रोग्राफिकल प्रेक्टिसिस"
15. डॉ० रंजीता दत्ता "दी बायोग्राफिकल प्रोसैस ऑफ ए सेंट : रामानुज इन ट्रेडिशन एण्ड इन हिस्ट्री"
16. डॉ० शशि जोशी "रिलिजस क्रौसिंग एण्ड बाउंड्रीज : गांधी, दीनबन्धु एन्ड्रयू एण्ड दिनसेवक एलविन"
17. प्रोफेसर शिरीश चन्द्र चौधरी "नॉलेज ऑफ लेंग्वेज ऑफ मल्टीलिंग्वल माईड"
18. डॉ० प्रमोद कुमार "डिसकोर्स ऑफ नैशनलिज्म एण्ड नॉवल (विद स्पेशल रैफरेंस टू गोरा एण्ड रंगभूमि)"
19. डॉ० संजय पॉलिसकर "मॉर्डन इण्डियन इंटरप्रेशन ऑफ दी गीता"
20. डॉ० पी० नारायण "त्रिपुनिथूरा ग्रेंडवहवन- ए क्रिटीक"
21. डॉ० अर्जुन घोष "फ्रीडम फ्रॉम प्रॉफिट: एशोडिंग कापी राईट इन रसिटेन्स ऑट"
22. डॉ० सरोज ठाकुर "फाइडिंग ए वॉयस : री-इन्सक्रिप्शन ऑफ हिंडम्बा इन कंटम्परेरी इण्डियन लिट्रेचर, ट्राईबल लिट्रेचर एण्ड फोक टेल्स"
23. डॉ० विजया सिंह "ट्रेनस् इन दी अर्ली सिनेमेटिक इमैजिनेशन ऑफ इण्डिया"
24. डॉ० सौम्यव्रत चौधरी "थियेटर नम्बर इवैन्ट : श्री स्टडीज ऑन दी रिलेशनशिप बिटवीन सोवरइजिन्टी पावर एण्ड त्रूथ"
25. डॉ० वीना शर्मा "दी कन्सैप्ट ऑफ गॉड एण्ड मोडस् ऑफ नॉलेज ट्रॉसमिशन इन दी एकन स्पिरिच्यूल ट्रेडिशन एण्ड अद्वैत वेदान्त : ए कम्पेरिटिव स्टडी"
26. डॉ० अनीता ई चेरियन "प्रॉफोरमिंग दी नेशन : इन्स्टीच्युशन, कलचरल पॉलिसी शेपिंग ऑफ ए नैशनल थियेटर इन पोस्ट-इन्डीपेंडेंस इण्डिया"
27. डॉ० धन्नजय सिंह "प्रवासी श्रम इतिहास मौखिक दस्तावेज : भोजपुरी लोक साहित्य"

28. डॉ० जया त्यागी *“कटैस्टेशन एण्ड कम्पलायेन्स : ए सोशियो-हिस्टोरिकल स्टडी ऑफ रिलीजियस ऑबजरवैन्सिस, राईटस् एण्ड रिच्युअलस् परफोर्मड वाई वूमैन (फ्रॉम दी अर्ली हिस्टोरिक टू 1200 सीई)”*
29. डॉ० क्यूनी प्रधान सिंह *“डिबैलिंग दी हिल : ए कम्पैरिटिव इन दी स्टडी ऑफ शिमला, दार्जलिंग, ऑक्टोमण्ड एण्ड माउंट आबू (19 एण्ड 20 सँचूरी)”*
30. डॉ० योगेन्द्र सिंह सिकंद *“ए क्रिटिकल एनालाईसिस ऑफ डिस्कोर्स ऑफ इस्लामिक फेमिनिज़म”*
31. डॉ० प्राची खण्डेपारकर *“दी मैकिंग ऑफ मराठी लिट्रेरी, थियोरी ड्यूरिंग दी कोलोनियल ईरा”*
32. डॉ० स्वाधीनता महन्ता *“डिब्लपमेंट ऑफ असामी मॉडर्न शॉर्ट स्टोरी डियूरिंग रामधेनू पीरियड”*
33. डॉ० यू ए विनय कुमार *“सिन्थैसिस ऑफ वर्ल्ड रिलीजनस : कनस्ट्रक्टिंग ए जनरल मेटाफिजिकल स्ट्रक्चर”*
34. डॉ० मलारिका सिन्हा रॉय *“मैरिज़ मॉडर्निटी एण्ड दी महारानी जैन्डर एण्ड पोलिटिक्स इन कोलोनियल कोचविहार”*
35. डॉ० सुषमिता चट्टर्जी *“सेक्सवेलिटी, फेमिनी सिम्बोलिज़म एण्ड दी फीमेल इन बंगाल तांत्रिक बुद्धिज़म”*
36. डॉ० पीयूष माथुर *“टूवर्डस् ए ग्लोबल कन्सैप्शन ऑफ एनवायरमेंट सिटीज़नशिप”*
37. प्रोफेसर सतीश के शर्मा *“विजुवल एक्सप्रेसनस् : अमर्जिंग सिग्नलस् इन दी स्टडी ऑफ कलचर एण्ड सोशल स्ट्रक्चर”*
38. प्रोफेसर टी आर एस शर्मा *“कलचरल एनकाउन्टरस् इन एनिशियन्ट इण्डियन लिट्रेचर”*
39. डॉ० नन्दनी सी सेन *“वूमैन इन कॉम्बैट : ए स्टडी ऑफ दी नकसलवादी एण्ड दी माओ मूवमेंट”*

### 3. अकादमिक गतिविधियाँ

#### क. डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मारक व्याख्यान माला

संस्थान के शैक्षणिक सत्र में सर्वपल्ली राधाकृष्णन व्याख्यान माला अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है। इसे हर वर्ष आयोजित किया जाता है। संस्थान ने 15वां सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मारक व्याख्यान का आयोजन 18 दिसम्बर, 2010 को दिल्ली में किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने अतिथियों का अभिनन्दन किया। अध्यक्ष एवं सदस्य योजना आयोग प्रोफेसर बी०एल० मुण्गेकर ने अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की एवं माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने एनवायर्नमेंट एण्ड डेवलपमेंट विषय पर भाषण दिया। संस्थान के सचिव श्री सु० पा० ठाकुर ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

#### ख. संगोष्ठियाँ, सम्मेलन, गोष्ठी और गोलमेज गोष्ठी।

आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किए गए:

##### 1. "हिस्ट्री एण्ड मेमोरी" पर अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन (18-20 मई, 2010)

**मूलाधार:** ऐतिहासिक सार-लोप से संमाजस्य उपर्जित है? या स्मृति, भूत की भूलों की आधारपूर्ति का विरोध। यदि संमाजस्य उद्देश्य है, "सत्यता" लक्ष्य के लिये उपयुक्त है। "इतिहास और समृति" पर विचारवमर्श का केन्द्र बिन्दु विश्वभर की सामूहिक समृतियों का पर्यवेक्षण करना था। कौन "स्मरण" करता है किसको स्मृति, के संग्रह से चयनित, विशिष्टता या सुधार करना था? स्मृति, के विस्तार के लिए वैचारिक, सिद्धान्त और वर्तमान में सम्बन्ध शक्ति में विस्तार आज की विषयवस्तु में सुधार करना था, वैश्वीकरण के नेटवर्क में कौन क्या और कहां ले जाता है, न केवल सत्यतता पर आधारित है, ऐतिहासिक सत्यतता पर समाप्त की विषयवस्तु है, लेकिन वर्तमान की काल्पनिकता को प्रस्तुत करता है।

इस सन्दर्भ में ऐतिहासिक विषयवस्तु मानस, संस्कृति और राष्ट्र-राज्य का सामना करता है, प्रतिकूल सांस्कृतिक सम्बन्ध की गतिशीलता का मूल्यांकन करता है। हमारे विचार विनिमय में समीक्षात्मक है। क्या प्रतिकूल सांस्कृतिक वार्तालाप और विविध मार्ग भूल को पहचानने के लिए स्वतंत्र है, इसका ऐतिहासिक महत्त्व है और समसमायिकता में जटिल है, जिसका आज हम अध्ययन कर रहे हैं जो

"स्मृति," आज के परिवेश में प्रतिकूल और विवादास्पद है, जैसा कि कर्विन ली क्लेन ने कहा है "स्मृति, संग्राहलय व्यापार से विधि युद्ध तक, और अकादमिक पुस्तकों जिनमें स्मरण शक्ति एक मुख्य शब्द है को दमित करती है।"

संस्थान में भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद (आईसीसीआर) नई दिल्ली और भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के सहयोग से 18-20 मई 2010 तक "हिस्ट्री एण्ड मेमोरी" पर अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने निदेशक की टिप्पणी प्रस्तुत की।

संस्थान के अध्यक्षता और सम्मेलन की संयोजक डॉ० शशि जोशी ने विषयवस्तु की जानकारी दी। प्रोफेसर जीन कामाराफ, बर्नड ई और एलन सी सनी प्रोफेसर लब्धप्रतिष्ठित सेवाएँ, मानव विज्ञान विभाग, शिकागो विश्वविद्यालय ने “हिस्ट्री, इनिक, ऑर दी प्लास्टिक पॉवर ऑफ दी पास्ट” विषय पर मूल भाषण प्रस्तुत किया एवं प्रोफेसर मारग्रेट लेवी, जैरे एल बाचहारच, प्रोफेसर इंटरनेशनल स्टडी, डायरेक्टर सीएचएओएस (कम्पैरिटिव हिस्टोरिकल एनलाईसिस ऑफ ऑरगेनाईजेशनस), स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन, और चेयर इन यूएस पॉलिटिक्स, यूनाईटेड स्टेट्स स्टडी सेंटर (यूएसएससी), सिडनी विश्वविद्यालय ने “दी पास्ट ऐज़ ए सोर्स ऑफ पॉलिटिकल पॉवर इन दी प्रैजेंट” विषय पर समापन अभिभाषण प्रस्तुत किया।

**प्रतिभागी :** प्रोफेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य, इतिहास विभाग, जे०एन०यू० दिल्ली; प्रोफेसर सिराज रशूल, इतिहास विभाग, वेस्ट्रन केप विश्वविद्यालय, साऊथ अफ्रीका, प्रोफेसर फिलिप बोनर, विस्वाटररैण्ड विश्वविद्यालय, साऊथ अफ्रीका; प्रोफेसर चेतन सिंह, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला; प्रोफेसर जे०एस० ग्रेवाल, मोहाली; प्रोफेसर डेविड लेईवेड, न्यूयार्क; डॉ० गांगिया मुखर्जी, इलाहाबाद; प्रोफेसर मीना अलैग्जैन्डर, सिटी विश्वविद्यालय, न्यूयार्क; श्री भाई बलदीप सिंह, नई दिल्ली; प्रोफेसर त्रिडिप शुरुड, डीएआईआईसीटी, अहमदाबाद; प्रोफेसर सारी नूसीबहे, एल-क्यूडीएस विश्वविद्यालय जैरिसिलम; प्रोफेसर शिव विश्वानाथन डीएआईआईसीटी, गुजरात; प्रोफेसर माधवन पलाट, राष्ट्रीय अध्यक्षता, आईआईएस; प्रोफेसर रेणूका सिंह, समाज शास्त्र विभाग, जे०एन०यू०, नई दिल्ली; प्रोफेसर हैलन जारविस, हेड ऑफ दी विक्टम्स यूनिट, एक्स्ट्राऑडिनरी चैम्बर्स इन दी कोर्टस् ऑफ कम्बोडिया; श्री तुबटेन साम्फेन, सचिव तिब्बतियन सूचना केन्द्र, धर्मशाला; सुश्री पसरीचा मुखिम, सम्पादक, शिलॉंग टाईम्स, शिलॉंग; डॉ० राज कुमार हंस, अध्यक्षता, आईआईएस; डॉ० डो थी हुरंग थायो, वियतनाम राष्ट्रीय विश्वविद्यालय; डॉ० इमरे लॉज़र, निदेशक हंगेरियन सांस्कृतिक केन्द्र, नई दिल्ली; प्रोफेसर भगवान जोश, जेएनयू, दिल्ली; डॉ० अलेग्जैन्डर कुरविलो, लिवसन का नया विश्वविद्यालय, पुर्तगाल; डॉ० एन्तो लो काटिनो, पुर्तगाल; प्रोफेसर घनश्याम शाह, राष्ट्रीय अध्यक्षता, आईआईएस; प्रोफेसर मारिया पॉला मिनीसिस, सैन्ट्रो डी एस्टूडस सोसिएस, मोज़म्बिक; श्री जेसन के फर्नाडिस, डोना पॉला, गोवा; डॉ० निलमा लीनो गोम्स फ़ेडरल विश्वविद्यालय ऑफ मिनास गैरिस, ब्राजील; डॉ० रंजीता दत्ता, अध्यक्षता, आईआईएस; डॉ० रोचेले पिन्दू, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रोफेसर पॉलो वरेला गोम्स, कोयमबारा विश्वविद्यालय, पुर्तगाल; प्रोफेसर इन्दू बांगा, मोहाली।

### अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किए गए:

1. सिराज रसूल : दी पॉलिटिक्स ऑफ मैमरी एण्ड पब्लिक हिस्ट्री इन साउथ अफ्रीका
2. फिलिप लिविस बोनर : अपरथहिड, मैमरी एण्ड दी ऑक्लूडिड पास्टस्
3. जेएस ग्रेवाल एण्ड इन्दू बांगा : सिख कांग्रेगेशनल प्रेयर (अरदास) फारमेशन ऑफ कुलेक्टिव सिख मैमोरी
4. डेविड जेहविद : ड्रीमस एण्ड मैमोरीज़ ऑफ ए मुगल चाईल्डहुड : सैयद अहमद खान
5. मीना अलैग्जैन्डर : मैमोरी एण्ड ए पोइटिक्स ऑफ डिस्लोकेशन
6. भाई बलदीप सिंह : म्यूजिक एण्ड मैमोरी

7. सारी न्यूशिवे : मैमोरी एण्ड दी पॉलिटिक्स ऑफ दी इजराइली-पालेसीनियन कन्फ्लिक्ट
8. श्री विश्वानाथन : बिटवीन मैमोरी एण्ड फॉरगोटिंग
9. माधवन पलाट : हिस्ट्री एण्ड मैमोरी
10. हेलन जारविस : कम्बोडियन रिसर्पोन्सिबल टू दी मैमोरी बाई स्टेटस् एण्ड सोशल ग्रुपस्
11. टुपटेन साम्हेल : हिस्ट्री एण्ड मैमोरी : दी तिब्बतियन एक्सपीरियेन्स
12. पसरीचा मुखिम : स्लैक्टिव मैमोरी, स्लैक्टिव ऐमनीशिया
13. हे की एण्ड थायो : कल्चरल इन्ट्रैक्शनस् बिटवीन वियतनाम एण्ड दी चायनीज़ एण्ड इण्डियन सिविलाईजेशन (थ्रू मैमोरी एण्ड हिस्ट्री)
14. इमरे लॉज़र : दी इम्पॉटैन्स ऑफ मैमोरी इन दी हिस्ट्री ऑफ इण्डो-हंगेरियन कल्चरल रिलेशनसन्
15. एलेग्जेन्डर कुरविलो : क्रॉसिंग बाउन्डरीज़ : दी पॉटगुजीज़ विजूवल कल्चर इन इण्डिया, 16थ-17थ सैन्चुरी
16. एन्नोलो काट्टेनियू : ए वार्निंग अगेन्स्ट दी पिटपॉल ऑफ नैशनल हिस्ट्रीज़ एण्ड मैमोरी (कार्टोग्राफी)
17. मारिया पॉला मैनसिस : फूड रैसिपीज़ एण्ड कम्प्यूटरीज़ ऑफ एम्पायरस : मौज़मविक्यू इन दी इण्डियन ओशन नेटवर्क
18. जैशन के फर्नांडिस : कलोनियलजिम, पोस्टकलोनियलजिम, सिटीजनशिप एण्ड हयूमिलेशन
19. निलीमा लीनो गोम्स : दी ब्लैक मूवमेंट एण्ड दी रैसिकल क्वेश्चन इन ब्राजील : साईलैन्सिस, एबसैन्सिस एण्ड इमानसीपेशन
20. रोचले पिन्दू : दी लाई ऑफ दी लैण्ड
21. पॉलो बरेला गोमस् : दी मैनी मैमोरीज़ ऑफ चर्च आर्कीटेक्चर इन गोवा
22. अलोक भल्ला : अनीशा इन दी सिटी ऑफ माइन्ड : लैंग्वेज़, ट्रान्सलेशन, आईडैन्टीटी, पॉलिटिक्स एण्ड पॉर्टीशनस्
23. उर्वशी बुटालिया : दी प्रस्सिस्टैन्स ऑफ मैमोरी
24. सुकृता पॉल कुमार : पॉर्टीशनसन : फाम दी आरकाइवज़ ऑफ लिट्रेचर
25. माग्रेट लेवी : दी पास्ट ऐज़ ए सोर्स ऑफ पॉलिटिकल पॉवरज़ इन दी प्रेजेंट

## 2 “एक्सप्लोरिंग जैन्डर, रिडिफाइनिंग दी फील्ड : फेमिनिस्ट ज़रनीस इन दी सोशल साइंसिस, ट्यूमैनिटीज़ एण्ड दी आर्ट्स” (1-5 जून, 2010) पर अध्ययन सप्ताह।

**मूलाधार:** विगत तीन दशकों से लगभग विद्वान और सृजनात्मक कलाकार अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यरत विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में लाने का कार्य कर रहे हैं जिससे ज्ञान और कला को प्रतिस्थापित किया गया था, और तब तक पुर्न संरचना की। लिंग विश्लेषणात्मक विधि है जिसका मुख्य प्रभाव सामाजिक विज्ञानों और मानविकी शास्त्रों पर है और विभिन्न विधाओं और विधाओं की सीमाओं पर चिन्तन करते हैं। यह विकास अब उचित रूप से समझा जा सकता है। नारीवाद द्वारा पुनः परिभाषित कलाओं जिनमें सिनेमा और फोटोग्राफी जिनमें वह काम कर रही है यह इन क्षेत्रों में स्कॉलरशिप प्रदान करने पर कम ही ध्यान दिया गया है।

लिंग पर आयोजित अध्ययन सप्ताह का उद्देश्य कला के विद्वानों और व्यवहारकुशलों को जिनमें किशोर महिलाएँ भी थीं को गहन रुचि और उनके कार्यों और लक्ष्यों को जिन योजनाओं पर वह काम कर रहे हैं या कर चुके थे को एक साथ विचार-विमर्श के लिये एकत्रित करना था। अध्ययन सप्ताह की मुख्य विषयवस्तु प्रतिभागियों को सामूहिक मंथन के लिये अन्य प्रतिभागियों के साथ जो इनमें रुचि रखते हैं, मंच प्रदान करना था। इसमें विचार-विमर्श और प्रस्तुतिकरण इतिहास, विज्ञान, साहित्य, फिल्म, रंगमंच, फोटोग्राफी और लोक कथाओं के आधार पर था।

संस्थान में “एक्सप्लोरिंग जैन्डर, रिडिफाइनिंग दी फील्ड : फेमिनिस्ट ज़रनीस इन दी सोशल साइंसिस, ट्यूमैनिटीज़ एण्ड दी आर्ट्स” विषय पर 1 से 5 जून, 2010 तक अध्ययन सप्ताह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं निदेशक की टिप्पणी प्रस्तुत की। अध्ययन सप्ताह की संयोजक प्रोफेसर ऊमा चक्रवर्ती ने प्रतिभागियों को विषयवस्तु की जानकारी दी।

**प्रतिभागी :-** प्रोफेसर शर्मिला रेगे, समाजशास्त्र विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे; प्रोफेसर कविता पंजाबी, तुलनात्मक साहित्य विभाग, जावेदपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता; डॉ० महुआ सरकार, सैन्टर फॉर दी स्टडी ऑफ डिब्लैपिंग सोसायटीज़, दिल्ली; डॉ० कंचना नटराजन, अध्येता, आईआईएस; डॉ० एस आनन्दी, मद्रास इन्स्टीच्यूट ऑफ डिब्लपमैन्ट स्टडीज़, गाँधी नगर, चैन्नई; प्रोफेसर कुमकुम राय सैन्टर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज़, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० वी गीताह, चैन्नई; डॉ० वी पदमा मानगिया, चैन्नई; डॉ० छैयन्दिका शाह, मुम्बई; डॉ० दिप्ता भोग, नई दिल्ली; डॉ० वैशाली वी दिवाकर, सैन्ट मित्रा कॉलेज, पुणे विश्वविद्यालय पुणे; डॉ० लता सिंह, नई दिल्ली; डॉ० शुभरह नागालिया, इलाहाबाद; डॉ० अन्नोहा ताम्बे, केपीएस वूमैन्स स्टडीज़ सैन्टर, पुणे विश्वविद्यालय पुणे; ए मंगेई; डॉ० वाणी सुब्राहमणियम, नई दिल्ली; डॉ० स्वाती धदराये, कर्णज्योति सावित्रीवाई फुले वूमैन्स स्टडी सैन्टर, डॉ० बाबासाहेब अम्बेदकर भवन पुणे विश्वविद्यालय पुणे।

### अध्ययन सप्ताह में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए:

1. कविता पंजाबी : जैन्डर एण्ड दी पॉलिटिकल फील्डस् ऑफ तभेगा
2. महुआ सरकार : विटबीन क्राफ्ट एण्ड मैथड : मिनिंग एण्ड इंटरसबजेक्टिविटी इन ओरल हिस्ट्री एनालाईसिस
3. कंचना नटराजन : क्रियेटिव डायनमिज़न ऑफ ओरल कम्पोज़िशनस् : सॉंगस् ऑफ ए सैल्फ रिलाईज़ड वूमैन सेज
4. कुमकुम राय : एनजैन्डरिंग सोशल हिस्ट्री : पैडोलोजिकल पॉसीबिल्टीज़
5. वी गीताह : नैगोशियेटिंग विटबीन दी प्रैजेंट एण्ड दी पास्ट : डयूइंग फेमिनिस्ट हिस्ट्री
6. शर्मिला रेगे : अम्बेडकर : ए फेमिनिस्ट रिकलेमेशन
7. छैयन्दिका शाह : जैन्डर एण्ड साईंस : मूविंग बियोन्ड बीनारिस
8. दिप्ता भोग : जैन्डर एण्ड नैशन इन स्कूल टैक्स्टबुकस्
9. वैशाली दिवाकर : रिइमैजनिंग दी नैशन एण्ड रिडिफाईनिंग रिजनल एण्ड जैन्डर आईडैन्टीटीज़ इन दी सिनेमा ऑफ दी 1950स
10. शुर्भा नागालिया : फ़ैमिनिस्ट लिट्रेरी क्रिटीसिज़म : वूमैन राईटिंगस् इन हिन्दी
11. अन्गेहा ताम्बे : रीडिंग देवदासी प्रैक्टिसिस इन पॉपुलर मराठी लिट्रेचर
12. लता सिंह : फोर-फ़नटिंग दी वूमैन प्रफॉर्मैन्सिस ऑफ कोलोनियल इण्डिया : इलाईट एण्ड पॉपुलर थियेटर
- 13 ए मंगेई : रिराईटिंग दी हिस्ट्रीज़ ऑफ आर्ट एण्ड लिट्रेचर : रिडिफाईनिंग बॉडी एण्ड स्पेस इन थियेटर
- 14 वाणी सुब्राहमणियम : जैन्डर एण्ड दी बिल्ट एनवायरमेंट
- 15 ऊमा चक्रवर्ती : शिपिंग टैक्स्टस् : इन प्रस्वैयक्ट ऑफ इल्यूसिव हिस्ट्रीज़
- 16 श्री एस आनन्दी : जैन्डर एण्ड कॉमोडिटी एस्थैटिक्स इन तामिल मैगजीन्स
- 17 स्वाती धदराये : टारगोटिंग एडोलसेन्टस् : टेकिंग मॉडर्न एजूकेशन टू ट्रेडिशन थ्रू छात्रा प्रबोधन

### 3. "इण्डियन लॉजिक एण्ड एपिस्टोमोलोजी" (2-11 जुलाई 2010) पर अध्ययन सप्ताह

**मूलाधार :** प्राचीन भारत में दार्शनिक व्यवस्थाओं की संरचनात्मक गहनता विभिन्न व्यवस्थाओं से वार्तालाप के द्वारा अर्जित की गई थी। एक अर्थपूर्ण वार्तालाप के लिये इसलिए संचार की भाषा महत्वपूर्ण है। अतः 1000ईस्वी में यह आवश्यकता समझी गई कि परिशुद्ध भाषा का विकास संचार के लिये किया जाए। इसने 13वीं ईस्वी में अपना आकार लेना आरम्भ कर दिया जिसे नव नया भाषा कहा जाने लगा और पूर्ण रूप से विकसित हो गई, तत्पश्चात् लगभग सभी बुद्धिजीवी और दार्शनिक प्रबन्ध और प्रवचन नव नया भाषा में परिशुद्ध संचार के



लिये अपना लिये गए तथा पारम्परिक दार्शनिक प्रबन्धों में आज भी प्रयोग में लाये जा रहे हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश भारत में आज बहुत कम संस्थान भारतीय विद्वान और दार्शनिक परम्पराओं से जुड़े हुए हैं, 1000 वर्ष से संग्रहित सारे प्रबन्ध नव नया भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप इन ग्रन्थों के असली विद्वानों जिन्हें इनमें असली रुचि है को प्राप्य नहीं है।

“इण्डियन लॉजिक एण्ड एपिस्टेमोलोजी” विषय पर इसकी आवश्यकता को समझने के लिए 2 जुलाई से 11 जुलाई, 2010 तक अध्ययन सप्ताह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने स्वागत भाषण दिया। अध्ययन सप्ताह के संयोजक प्रोफेसर वी.एन. झा ने मूल सिद्धान्त पर भाषण दिया। पुणे विश्वविद्यालय की प्रोफेसर उज्जवाला झा ने भी इस आयोजन में अपना वक्तव्य दिया।

**प्रतिभागी :-** डॉ0 पी.एस. रुद्रामण, महात्मा गाँधी इन्स्टीच्यूट, मौका, मारीशिस; डॉ0 एम श्रीनिवासनमूर्ति, हैदराबाद; डॉ0 मैकेज एस जैबा, जॉनपाल II कैथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ लूवलिंग, इन्स्टीच्यूट ऑफ फिलॉसफी पोलैण्ड; डॉ0 चन्दन कुमार चौधरी, आशुतोष महाविद्यालय, कोलकाता; डॉ0 अभिजीत सिंह, दर्शनशास्त्र विभाग, सामाजिक विज्ञान स्कूल, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद; डॉ0 श्रावणी बैनर्जी, दर्शनशास्त्र विभाग, रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता; डॉ0 लोकनाथ चक्रवर्ती, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, कोलकाता; डॉ0 वरुण कुमार त्रिपाठी, श्री माता वैष्णुदेवी विश्वविद्यालय, कटडा; प्रोफेसर आर आई नैनावती, ओरियेन्टल इन्स्टीच्यूट, एम एस विश्वविद्यालय बडोदा, बडोधरा; सुश्री रश्मि मिश्रा, दर्शनशास्त्र विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ; सुश्री नमिता त्रिपाठी, दर्शनशास्त्र विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ; डॉ0 राजेश्वर प्रसाद यादव, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ; श्री अनुराग कुरील, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ; सुश्री एच आर मीरा, बैंगलौर; डॉ0 रतिशचन्द्र झा, हंसराज महाविद्यालय, महात्मा हंस राज मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ0 सचिन्द्रा राउल, दर्शनशास्त्र विभाग, रवनशाह विश्वविद्यालय, कटुक; डॉ0 अम्बूजा सल्लोनकर, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई; डॉ0 सुभनकारी पत्ति, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ0 प्रशांत शुक्ला, दर्शनशास्त्र विभाग, हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली; डॉ0 शिखा झा, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रोफेसर राजीव रंजन सिन्हा, संस्कृत विभाग, विद्या सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस; डॉ0 रंजीत कुमार मिश्रा, संस्कृत विभाग, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ0 मीरा रसतोगी, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ; डॉ0 अनिरुद्ध पाण्डा, परमानन्द महाविद्यालय, खुर्दा, उडीसा; वाई श्रीधर रेड्डी, जनाना प्रभा महाविद्यालय, गढ़वाल; श्री कॉनसिंग बरुआ, दर्शनशास्त्र विभाग, जोराहट महाविद्यालय असम ह

#### 4 “दलित चैलेन्जिज एण्ड डिसिपिलिनरी प्रैक्टिसिस (19–25 जुलाई 2010) पर अध्ययन सप्ताह।

**मूलाधार :** विगत दो दशकों से दलित सक्रियतावाद और अकादमिक वर्ग में अन्तरापृष्ठ रहा है जिसने दलित अध्ययन पर मंथन करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। यह निश्चित रूप से अन्तर/बहु-विधात्मक विषय है जो मंथन के निर्देशात्मक सुझाव देता है। राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयवस्तु ‘दलित की धारणा ने एकान्तिक और हाशिये पर रखी हुई विधात्मक प्रक्रिया पर मंथन का मार्ग प्रशस्त किया है। वर्तमान विधाओं का सामना करने के लिए यह भारतीय समाज की समान्य और विशेषरूप से अकादमिक जगत में दैनिक जीवन में

अन्तरापृष्ठ की सृजना विशेषरूप से जाति, धर्म, और भूमि जो शक्ति और अधीनता में अन्तर करती है की ओर ढकेलता है। दलित वर्ग के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु उत्पीड़न और अपमान को समझने का स्रोत है। "दलित चैलेन्जिज एण्ड डिसिपिलिनरी प्रैक्टिसिस" का आयोजन गहन प्रस्तुतिकरण, विचारविमर्श और चिंतन करने के लिए आयोजित किया गया। इसमें आमंत्रित प्रतिभागी विस्तृत स्तर पर विभिन्न विधाओं के विद्वान थे जिनमें मानस बुद्धिजीवी जिन्होंने पहले भी दलित अध्ययन पर मंथन किया है भी सम्मिलित थे। 19 से 25 जुलाई 2010 तक आयोजित अध्ययन सप्ताह के प्रतिदिन विद्वानों द्वारा चार शोध पत्रों की प्रस्तुति और उनपर गहन विचारविमर्श किया गया। अन्त में संस्थान द्वारा अध्ययन सप्ताह की कार्यवाही को प्रकाशित की जायेगी। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर घनश्याम शाह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्थान के अध्येता और अध्ययन सप्ताह के संयोजक प्रोफेसर राजकुमार हंस ने अध्ययन सप्ताह की विषयवस्तु पर जानकारी दी।

**प्रतिभागी:-** डॉ० नीरव पटेल, स्वमान: फाउन्डेशन फॉर दलित लिट्रेचर, अहमदाबाद; श्री एस आनन्द, नई दिल्ली; डॉ० जी एस सुरेश बाबू, समाजशास्त्र विभाग जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू; प्रोफेसर रौणकी राम, राजनीतिशास्त्र विभाग, चण्डीगढ़; डॉ० प्रियदर्शनी विजयाश्री, सैंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डिबैलिपिंग सोसायटीज़, दिल्ली; डॉ० शुरा दारापुरी, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला; डॉ० जसवीर सिंह, बगलौर; डॉ० पी सानल मोहन, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोयटाम; डॉ० मसूद आलम फलाही, मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, लखनऊ परिसर, लखनऊ; श्री आनन्द तेलत्रूम्बिडे, पैट्रोनॉट इण्डिया लिमिटेड, मुम्बई; श्री ओम प्रकाश बाल्मीकी, देहरादून; डॉ० जोल ली, न्यूयॉर्क; डॉ० मनमोहन, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक; डॉ० विजया सिंह अध्येता, आईआईएस ।

### अध्ययन सप्ताह में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए:

1. जोल ली : ए क्रिटीकल रव्यू ऑफ दी एन्थ्रोपोलोजी ऑफ कास्ट
2. पी सानल मोहन : सोशल साइंस प्रैक्टिस एण्ड कलचरस ऑफ रसिस्टैन्स: स्विचेटिंग दलित स्टडीज़
3. प्रियदर्शनी विजयाश्री : बियोन्ड दी हिस्ट्री ऑफ पाथोस
4. मसूद आलक फलाही : दलित ऑप्शन: एन एनालाइसिस ऑफ इस्लामिक लिट्रेरी एण्ड हिस्टोरीग्राफिकल प्रैक्टिस
5. सुरेश बाबू : दलित रैशनैल्टी एण्ड पोस्ट-कोलोनियल ट्रेजक्री ऑफ मॉडर्नेरिटी इन इण्डिया
6. आनन्द तेलत्रूम्बिडे : दलित मॉडर्नेरिटी एण्ड मैटा मोरफिसिस ऑफ कास्ट
7. नीरव पटेल : हू स्पीक्स फॉर दलितस?
8. एस आनन्द : प्रैजेन्टेशन ऑफ ए डाक्यूमेंटरी भगवान दास: इन परस्यूवेट ऑफ अम्बेडकर
9. ओम प्रकाश बाल्मीकी : हिन्दी साहित्य के अन्तर्विरोध: विशिष्ट सन्दर्भ और दलित चेतना
10. मनमोहन : दलित क्वेश्चन इन कन्टम्परेरी पंजाबी लिट्रेचर

11. रोणकी राम : कलचरस् ऑफ सोशल प्रोटैस्ट इन दी प्रिफेरी: गुरु रविदास, भक्ति एण्ड दी राईज़ ऑफ दलित डेरास् इन पंजाब
12. विजया सिंह : टू ऐट ऑर नॉट टू ऐट: हंगर एण्ड ह्यूमन एण्ड ह्यूमिनेशन इन दलित स्टोरीज़
13. राजकुमार हंस : दलित सेन्टस पोयट्स ऑफ पंजाब एण्ड देयर एक्सलूज़न फ़ॉम हिस्ट्रीज़
14. जसवीर सिंह : दलितस्, कौन्स्टीच्युशनलस् प्रोमिसिस ऑफ सोशियो-इकनोमिक जस्टिस एण्ड दी स्टेट इन इण्डिया विद स्पेशल रैफरेंस टू एग्रीकल्चरल वेज़ वर्कस
15. शुरा दारापुरी : कास्ट-बेसड एक्सलूज़न एण्ड इटस इम्पैक्ट: ए स्टडी विद स्पैसिफिक रैफरेंस टू दलित वूमैन

## 5 "उत्पलदेवा, फिलॉस्फर ऑफ रैकोगिनेशन" (20-21 अगस्त 2010) विषय पर संगोष्ठी

**मूलाधार :** उत्पलदेव या उत्पलाचार्य (अन्तिम 9वीं-10वीं शती, कश्मीर) भारत के प्रख्यात दर्शन शास्त्री थे, लेकिन भारत में इन्हें कम ही जानते थे। सोमनन्द के पश्चात् (19वीं शताब्दी) जिन्होंने दर्शनशास्त्र की मान्यता के लिए आधारशिला रखी (प्रत्यभीजना दर्शन), उत्पलाचार्य ने अपने दार्शनिक कार्यों ईश्वर प्रत्यभीजना करिका और वृत्ति से संरचना को ठोस स्थिति प्रदान की। वृत्ति के साथ जो हमें आंशिक रूप से प्राप्त करते हैं और सिद्धित्रीयी, तीन सुगठित दार्शनिक निबन्ध समाहित हैं। दार्शनिक कार्यों के अतिरिक्त वह एक रहस्यवादी कवि भी थे, जैसाकि उनके महापरम शिवस्रोत्रवली भजन संग्रह में वर्णित है। उत्पलदेव का दार्शनिक प्रभाव उनके अनुयायियों द्वारा (दो पीढ़ियों के पश्चात्) अभिनवगुप्त (10वीं-11वीं शताब्दी) और उनके दो करिकास और विवृत्ति ईश्वरप्रत्यभिजना विमर्शनी और विवृत्तिमर्सनी की विस्तृत टीकाएँ स्थापित हुईं।

संस्थान में आयोजित 20 से 21 अगस्त तक इस महान दार्शनिक की मान्यता की पुनः खोज की गई तथा उन्हें भारतीय चिन्तन में न केवल उचित स्थान दिया गया बल्कि आज के भौतिक और आध्यात्मिक स्तर पर मान्यता भी दी गई।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। रोम विश्वविद्यालय, इटली के संस्कृत पीठ के प्रोफेसर राफेले टोरेला ने मूल भाषाण "उत्पलवेदा एण्ड दी प्रत्याभीजना स्कूल" विषय पर दिया। अभिनवगुप्त शोध संस्थान पुस्तकालय बनारस की प्रोफेसर बैटीना बॉमर और प्रोफेसर टोरेला संगोष्ठी के संयोजक थे।

**प्रतिभागी :-** प्रोफेसर के डी त्रिपाठी, फेकल्टी ऑफ संस्कृत लर्निंग एण्ड थियोलॉजी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस; प्रोफेसर एम एच जफर (जी एम खवाजा) सेंटर फॉर कश्मीर स्टडीज़ श्रीनगर विश्वविद्यालय; डॉ० एलैगजैन्डर वैन्ता, सेंटर फॉर दी कम्पैरिटीव स्टडीज़ ऑफ सिविलाईजेशन्स, जगियोलोनियन विश्वविद्यालय, पौलेण्ड; प्रोफेसर जी सी त्रिपाठी, राष्ट्रीय अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला; सुश्री गीगोरिना वोयलनेट, इन्स्टीच्यूट कश्मीर स्टडीज़, श्रीनगर; डॉ० डेनिल कुनियो, रोम।

**संगोष्ठी में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।**

1. के डी त्रिपाठी : *एमर्जेन्स ऑफ दी प्रत्यविज्ञाना फिलॉस्फी; वाक्यपद्यास कन्द्रीब्यूशन*
2. रैफली तोरेला : *ओरेलिटी एण्ड राइटिंग्स इन प्रिमाडर्न-इण्डिया*
  - i उत्पलदेवा एण्ड दी बुद्धिस्टस
  - ii उत्पलदेवा ऑन यौगिक प्रसैपशन फॉम दी रिसैन्टली रिकवर्ड ईश्वर-प्रत्यविज्ञाना विवरटी
3. बैटीना बैम्यूर : *विश्वपति अग्रेटा. . . परमादवित्त इन दी मिस्टीकल हायमन्स ऑफ दी सिवासोतरेवेली*
4. एम एच जफर : *दी इनफ्यूलेन्स ऑफ दी उत्पलदेवास प्रत्यविज्ञाना ऑन दी मिस्टीकल पोयटस ऑफ कश्मीर (ए शॉर्ट क्म्यूनिकेशन)*
5. डेनियल कुनिया: *डिफरनेटिंग ट्रैडिशन फॉम उत्पलदेवास एस्टैटिक एस्थैटिक्स टू अभिनवगुप्त एक्यूमैन्टिकल आर्ट थियोरी*

## 6 'सोशल इन्वारी टूडे दी चैलेन्ज ऑफ डिस्क्रिप्शन एण्ड चैन्ज' (24 सितम्बर 2010) विषय पर गोल मेज़ गोष्ठी

**मूलाधार :** कुछ वर्ष पूर्व डानिश के समाजशास्त्री बैन्ट फलायेवेज़र ने एक सामाजिक अण्वेषण की सम्भावनाओं पर सामाजिक विज्ञानों के अनुनय-विनय के आधार को अवगत करवाने पर एक प्रभावशाली पुस्तक लिखी, यह प्रथा गहन अध्ययन सामाजिक और व्यवहारिक विज्ञानों पर था जो एक दूसरे को प्रकशतिक विज्ञानों की बरावरी के लिए और सामान्य सिद्धान्त का सृजन और निर्णायक सामाजिक अण्वेषण का दुर्बल पहलू था, यद्यपि फलायेवेज़र ने सामाजिक विज्ञानों के समृद्ध, मूल्यों और शक्तियों के चिंतन पर सुझाव दिये थे—समाज के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिये आवश्यक थे, वर्तमान में “सामाजिक अण्वेषण का उद्देश्य, परिवर्तन और वृत्तान्त को चुनौती” को फलायेवेज़र विषय प्रत्यायत्मक स्वतन्त्रता की समस्याओं का संकेत दे रहे थे, सामाजिक विज्ञान को चिंतनशील उद्देश्य को अत्यावश्यक अग्रभाग करना था, और अभी भी इसे नाकारा नहीं जा सकता कि गोल मेज़ के सन्दर्भ में जो किया जा रहा है, यद्यपि यह फलायेवेज़र का वर्तमान की सामाजिक अण्वेषण का परिदृश्य, परिवर्ती विषयवस्तु परक गुंजायेमान है। वर्तमान सामाजिक अण्वेषण के लिये सामाजिक विज्ञानों पर स्पष्ट प्रत्यायत्मक रूप से प्रदर्शित करने का प्रयास था।

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद के समाजशास्त्र विभाग में 24 सितम्बर 2010 को आयोजित सामाजिक विज्ञानों और वर्तमान सामाजिक अण्वेषण के उद्देश्यों को विशिष्ट दृष्टिकोण से आयामों को वाहिर्विष्ट को विकास करने का उद्देश्य था। विवरणात्मक आयामों, संचार और परक्रामण के बदलाव को इंगित करती है। वर्तमान सामाजिक अण्वेषण की विशिष्टता की गतिशीलता ने निर्गमन समस्याओं का सामना किया है जैसे मतभेद और गौण की चुनौती, लोकतंत्र का प्रश्न, अधिकारों के क्षेत्र का विवर्धन, सामाजिक समानता और जनमानस का उत्तरदायित्व, भारत में सामाजिक विज्ञानों के विद्वतापूर्ण प्रबन्ध, जनमानस क्षेत्र में विवाद हैं। (जैसा कि विश्व के अन्य क्षेत्रों में है)।

हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विनोद जयरथ, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। गोलमेज़ गोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर सहीज हेगडे ने गोलमेज़ की बीजवस्तु की जानकारी दी। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने निदेशक की टिप्पणी दी।

**प्रतिभागी-** प्रोफेसर शिव विश्वानाथन, धारुभाई अम्बानी इन्स्टीच्यूट ऑफ इन्फर्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेकोनोलोजी, गाँधी नगर; डॉ० विवेक धरेशावर, स्वतंत्र विद्वान, बंगलौर; प्रोफेसर माधव प्रसाद, सेंट्रल इन्स्टीच्यूट ऑफ इंग्लिश एण्ड फॉरेन लैंग्वेजिज, हैदराबाद; प्रोफेसर पुलपरे बालाकृष्णन, सेंटर फॉर डिब्ल्युमेंट स्टडीज़, त्रिवेन्द्रम; श्री हर्ष सेठी, कन्सल्टिंग अडिटर, सेमीनार, दिल्ली; प्रोफेसर डीएल सेठ, सेंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डिबैलिंग सोसायटीज़, दिल्ली; श्री प्रसन्ना, कवि काव्य ट्रस्ट, हिगोडू, कर्नाटक; डॉ० राजश्री दासगुप्ता, सेंटर फॉर पोलिटिकल स्टडीज़, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्रोफेसर जावीद आलम, अध्यक्ष भारतीय समाजविज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर डी वेंकट राव, सेंट्रल इन्स्टीच्यूट ऑफ इंग्लिश एण्ड फॉरेन लैंग्वेजिज, हैदराबाद; डॉ० रा श्रीवाटशन अनवेशी, सेंट्रल इन्स्टीच्यूट ऑफ इंग्लिश एण्ड फॉरेन लैंग्वेजिज, हैदराबाद; डॉ० वी बी थारेकेशवर, सेंट्रल इन्स्टीच्यूट ऑफ इंग्लिश एण्ड फॉरेन लैंग्वेजिज, हैदराबाद; प्रोफेसर पी आर के राव, इण्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ इन्फर्मेशन टेकोनोलोजी, हैदराबाद; डॉ० अनिकेत आलम, इकोनोमिक पोलिटिकल विक्ली, मुम्बई; डॉ० शिल्पा आनन्द, सेंट्रल इन्स्टीच्यूट ऑफ इंग्लिश एण्ड फॉरेन लैंग्वेजिज, हैदराबाद।

### 7 'रीडिंग राममनोहर लोहिया' (3-7 अक्टूबर 2010)

**मूलाधार :** राममनोहर लोहिया की जन्म शताब्दी पर हमें उनके बारे में क्या याद रहा और क्या हम भूल गए। समसमायिक भारत में उनकी राजनीतिक और बौद्धिक जीवन में क्या टीका टिप्पणी रही जिनका उत्साही चिंतन और प्रभाव रहा। उनका एक ओर प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और रुढ़िभंजक चिंतन जो द्विशाहित चिंतन को दो भागों में विभाजित कर पूर्व की एक दूसरा मंथन करता है, लोहिया के समर्थक अब भी "डॉक्टर साहिब" के चिंतन से कुछ पाना चाहते हैं। दूसरी ओर लोहिया के समीक्षक जो पक्षधर हैं स्वयं भी इससे सुनिश्चित है कि वह (हमारे समय में क्या संदेश दे रहे हैं।)

राममनोहर लोहिया की जन्मशताब्दी बुद्धिदुर्बलता में सुधार का अच्छा अवसर है। जन्मशताब्दी में आयोजित समारोहों में लोहिया की धारणाओं को कार्यकलापों और संगोष्ठियों द्वारा समर्पित किया गया है। लोहिया के व्यावस्थात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। 'रीडिंग राममनोहर लोहिया' पर अध्ययन सप्ताह में लोहिया की कृतियों का अध्ययन विषयपरक अति सावधानी से जाँच कर किया जाए। 03 से 07 अक्टूबर 2010 तक आयोजित अध्ययन सप्ताह को विभिन्न सत्रों में विभाजित किया गया था जो लोहिया की पूर्व-उल्लेखित ग्रंथों पर था। प्रत्येक सत्र की अध्यक्षता एक विद्वान द्वारा की गई जिसने लोहिया की धारणा पर चिंतन किया है परन्तु वह प्रस्तुतिकरण का शोध पत्र प्रस्तुत नहीं कर सका। प्रत्येक सत्र में प्रतिभागियों द्वारा विषय-वाक्य की छानबीन और समीक्षात्मक चिन्तन किया गया। इसका मूल उद्देश्य नई शती के विद्वानों को लोहिया पर चिन्तन करने के लिए प्रोत्साहित करना था, इनमें अधिकतम प्रतिभागी किशोर विद्वान थे जिन्होंने लोहिया पर अधिक नहीं लिखा था पर लोहिया के चिन्तन के साथ जुड़ना चाहते थे।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डिबैलिंग सोसायटीज़, दिल्ली एवं डॉ० प्रेम सिंह, हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय संयोजकों में अध्ययन

सप्ताह की बीजवस्तु पर जानकारी दी। इंटरनेशनल इन्स्टीच्यूट ऑफ इन्फर्मेेशन टेकोनोलोजी, हैदराबाद के प्रोफेसर नन्द किशोर आचार्य ने मूल सिद्धान्त पर भाषण दिया।

**प्रतिभागी:-** डॉ० कुमकुम यादव, एसजीएनडी, खालसा महाविद्यालय, नई दिल्ली; प्रोफेसर आनन्द कुमार, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० पंकज पुष्कर, सीएसडीएस-लोकनीति, दिल्ली; श्री नीरज कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ० कमल नयन चौबे, दयाल सिंह महाविद्यालय, दिल्ली; श्री जयन्त कुमार कश्यप, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली; डॉ० मधुलिका बैनर्जी, राजनीति शास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ० मेधा पुष्कर, श्री अरविन्दु सैन्टर फॉर आर्ट्स एण्ड कम्प्यूनिकेशन, अधचिनी, नई दिल्ली; डॉ० चन्दन गोवडा, सैन्टर फॉर दी स्टडी ऑफ सोशल एकल्यूजन, नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इण्डिया, बंगलूरु; डॉ० कृष्णा स्वामी दारा राजनीतिशास्त्र विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली; डॉ० चन्दन कुमार श्रीवास्तव, सीएसडीएस, दिल्ली; जस्टिस राजेन्द्र सचार, पीपल्स यूनियन फॉर सिविल लिबरटीज, दिल्ली; सुश्री शिवानी कपूर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; श्री सुमित सौरव, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा; श्री उपेन्द्र कुमार, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० राजाराम तोलपदी, राजनीतिशास्त्र विभाग मंगलौर विश्वविद्यालय, मंगलगंगोत्री; सुश्री नयना, राजनीतिशास्त्र विभाग मंगलौर विश्वविद्यालय, मंगलगंगोत्री; श्री सुनील, होशंगाबाद; प्रोफेसर सुधीर कुमार व्याख्याता अंग्रेजी, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़; डॉ० वी अंजी रेड्डी, राजनीतिशास्त्र और लोक प्रशासन विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय नागार्जुन नगर; डॉ० अंजेहा नन्नापेनेनी, सैन्टर फॉर सांइटिफिक सोशलजिज़म, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय नागार्जुन नगर; श्री कुवारन अली, इण्डिया न्यूज़, मीडिया हाऊस, नई दिल्ली; डॉ० अनिल कुमार ठाकुर, श्याम लाल महाविद्यालय, दिल्ली; डॉ० सुशील कुमार एपीएसएम महाविद्यालय, बरौनी, बिहार; डॉ० मन्जुल कुमार सिंह, एआरएसडी महाविद्यालय साउथ कैम्पस, धौला कुआँ, दिल्ली; श्री अभय कुमार दुबे, सीएसडीएस, दिल्ली;

### 8 “पास्ट्रोरिलिज़्म एण्ड कॉमन्स” पर कार्यशाला (1-2 नवम्बर 2010)

संस्थान में पास्ट्रोरिलिज़्म एण्ड कॉमन्स विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन फाउन्डेशन फॉर इकोलोजिकल सिक्वोरिटी (एफइएस) आनन्द, गुजरात के सहयोग से किया गया।

**प्रतिभागी :-** सोसायटी फॉर प्रमोशन ऑफ वेस्टलैण्ड, दिल्ली से एसएस सामनथ, एसके रदोत्रा, दीपेन्द्र कपूर, विरेन लोबो; फाउन्डेशन फॉर इकोलोजिकल सिक्वोरिटी, आनन्द (गुजरात) से शाफत काकरू, पशमीना रियेरी, जगताराम, राहुल चक्रवर्ती और कमल किशोर; इन्स्टीच्यूट ऑफ डिब्ल्युमैन्ट सोसायटीज, जयपुर से जयराम, इमाम गुज्जर, पुरनेन्दू एस कावूरी; वेटेनरी महाविद्यालय और शोध संस्थान नमककाल (तामिलनाडू) से के कन्डास्वामी; एनटीआरएस (सीएसडब्ल्यूआरआई), गरसा, कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) से एस आर शर्मा; अन्तत्रा बाधवन, पुणे से निहाल फारूकी, नित्य एस घोटगे; जे एण्ड के से एस सी गुप्ता, मुहम्मद अजीज मंसूर हुसैन और मानसिंह विलावर ।

## 9 "राष्ट्रवाद और उपन्यास" (8-10 नवम्बर 2010)

**मूलाधार :** "राष्ट्रवाद और उपन्यास : सन्दर्भ हिन्दी उपन्यास विषय पर 8-10 नवम्बर, 2010 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हिन्दी उपन्यास के विगत 125 वर्षों से राष्ट्रवाद की विषयवस्तु पर अध्ययन एवं उसकी सम्बद्धता पर अध्ययन करना था। इस बहु-विधात्मक संगोष्ठी में समीक्षक, समाज शास्त्री, दलित समीक्षक एवं नारीवादी लेखक थे। 20 विद्वानों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

संगोष्ठी का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा की टिप्पणी से हुआ जिन्होंने राष्ट्रवाद के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया कि इसने साहित्य में किस प्रकार अपना अस्तित्व कायम किया। प्रोफेसर नित्यानन्द तिवारी ने अपने मूल अभिभाषण में भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास को स्वतंत्रता के पश्चात् रचनात्मक समय से विकास तक की यात्रा पर विचार प्रकट किये जैसाकि हिन्दी उपन्यासों में वर्णित है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को भारतीय अभिमान जो इसकी विरासत है, पर विचार प्रकट किये। हिन्दी उपन्यास रचनाएँ देसी एवं पश्चिमी साहित्य परिमण्डल के साथ विचार विनिमय की विषयवस्तु हैं। प्रोफेसर प्रमोद कुमार अध्येता और संगोष्ठी के संयोजक ने संगोष्ठी की विषयवस्तु पर जानकारी प्रस्तुत की।

**प्रतिभागी :-** डॉ० विद्या सिन्हा, करोडी मल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय; प्रोफेसर नित्यानन्द तिवारी, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय; डॉ० प्रेम सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय; प्रोफेसर रोहिणी अग्रवाल, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक; प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय; श्री मंजुल कुमार सिंह, एआरएसडी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; प्रोफेसर राजकुमार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय; डॉ० शान्ति नैयर, श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय, आर्ल्ड, केरल; डॉ० रविकान्त, सैंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डिबैलिपिंग सोसायटीज़, दिल्ली; डॉ० वेद रमन पाण्डेय, सेठ आनन्दराम जयपुरिया महाविद्यालय, कोलकाता; डॉ० पूनम सूद, श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; डॉ० विनेन्द्र कुमार सिंह, एसएल महाविद्यालय, मुज्जफरपुर; श्री विरेन्द्र यादव, लखनऊ; डॉ० अभय रंजन, हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; प्रोफेसर ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादमी, दिल्ली; डॉ० अभय कुमार दुबे, सैंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डिबैलिपिंग सोसायटीज़, दिल्ली; प्रोफेसर अरुण कमल, पटना विश्वविद्यालय; प्रोफेसर शम्भूनाथ, कलकत्ता विश्वविद्यालय; डॉ० केवल भारती, रामपुर (उत्तर प्रदेश); डॉ० कल्याण कुमार झा, मुज्जफरपुर; प्रोफेसर ओम प्रकाश गुप्ता, डॉ० वैभव, दिल्ली; प्रोफेसर विजय बहादुर सिंह, कोलकाता; और श्री राजीव रंजन गिरी दिल्ली विश्वविद्यालय।

### संगोष्ठी में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।

1. प्रोफेसर शम्भूनाथ : राष्ट्रवाद समुदायिक विमर्श और उपन्यास
2. प्रोफेसर विजय बहादुर सिंह : उपन्यास और देशजता
3. प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह : हाशिये के लोगों का राष्ट्र और मेला आँचल
4. प्रोफेसर अरुण कमल : मैला आँचल और दो ध्याय चरित्र मानस में राष्ट्र
5. डॉ० वैभव सिंह : आरम्भिक उपन्यास आधुनिकता और राष्ट्रवाद

6. श्री राजीव रंजन गिरी : भारतीय उपन्यास की अवधारणा और आरम्भिक उपन्यास
7. प्रोफेसर ओम प्रकाश गुप्ता : हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा और गुरुदत्त के उपन्यास
8. प्रोफेसर राजकुमार : राष्ट्र और गाँव (विशेष सन्दर्भ गोदान)
9. डॉ० प्रमोद कुमार : राष्ट्र निर्माण की दिशा और सांस्कृतिक संकट (विशेष सन्दर्भ प्रेमचन्द के राजनीतिक उपन्यासों के चरित्र)
10. डॉ० प्रेम सिंह : शेखर एक जीवनी और राष्ट्रवाद
11. डॉ० जोतिष जोशी : भारतीय राष्ट्रवाद का परिप्रेक्ष्य और जैनेन्द्र के उपन्यास
12. डॉ० विरेन्द्र यादव : विभाजन और हिन्दी उपन्यास
13. डॉ० रवि कान्त : आधा गाँव : किसका राष्ट्र? कैसा राष्ट्र?
14. डॉ० केवल भारती : राष्ट्रवाद और दलित उपन्यास
15. डॉ० अभय रंजन : दलित चिन्तन और राष्ट्र
16. प्रोफेसर रोहिणी अग्रवाल : स्त्री-अस्मिता, भारत राष्ट्र और नारीवादी उपन्यास
17. डॉ० अभय कुमार दुवे : राष्ट्रवाद और उपन्यास : नारीवादी प्रतिक्रियाएँ
18. डॉ० विद्या सिन्हा : आँचल का प्रश्न, रेणू के उपन्यास और भारतीय राष्ट्र
19. डॉ० वेद रमण : राष्ट्रवाद का उतराखंड और मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास
20. डॉ० शान्ति नैयर : परिस्थिति की और समकालीन हिन्दी उपन्यास
21. डॉ० पूनम सूद : बाईपास से बनते राष्ट्र की व्यथा गाथा : काली कथा
22. डॉ० मंजूल कुमार सिंह : विकास और विस्थापन के सवाल और विरेन्द्र कुमार जैन के उपन्यास

## 10 शिपिंग पैरामीटरस् : सोशल एण्ड एथिकल इम्प्लीकेशनस् ऑफ ह्यूमन जेनोम रिसेर्च (15-16 नवम्बर, 2010)

**मूलाधार :** वैश्वी संग्रहण के विज्ञान-तकनीकी-पूँजी शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हुए मानव कोशिकाओं (Genome) पर अनुसंधान ने तुरन्त बाजार नेटवर्क, चलपूँजी और वैश्वी अनुसंधान से सम्पर्क साध लिया है। मानव कोशिकाओं पर अनुसंधान में वृद्धि के बावजूद इसकी व्यवस्थित पहचान है, नीतिपरक, वैदिक और सामाजिक उलझाव ने मानव जैनोमिक्स (Genomics) को हाशिए पर लाकर रख दिया है। मानव कोशिकाओं पर अनुसंधान और इसके सहविज्ञान और तकनीकी वचनबद्धता विविध स्तरों पर रहती है : क्योंकि नवीन सूचनाएँ जिनका कि विभिन्न विधाओं के साथ उलझाव है : नई मैडिकल ज्ञान का स्रोत हैं : नई संस्थागत स्थापनों द्वारा विज्ञान और तकनीकी अनुसंधान से नई बिमारियों के लिये प्रयोग में लाया जा सकता है। मानव की सायकोलोजिकल संरचना के लिये मास्टरकोड की सम्भावनाएँ हैं। जिससे मानव भौतिक और सामाजिक स्थापनों में व्यवसायिक ज्ञान को पुनः परिभाषित करने के लिए लगा सकता है : ज्ञान की संस्था के पास विज्ञान



और सामाज और विधाओं की परिधि को परिवर्तित करने की सम्भावनाएँ रहती है। इन मुद्दों और विषय पर संधियोजन के लिए शिप्टिंग पैरामीटरस् : सोशल एण्ड एथिकल इम्प्लीकेशनस् ऑफ ह्यूमन जेनोम रिसर्च विषय पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसे समझने के लिए और इसके विभिन्न प्रश्नों के मंथन के लिए प्रतिभागियों को प्रारम्भिक वार्तालाप के लिए आमंत्रित किया गया।

1. मानव कोशिकाओं के ज्ञान की क्या सम्भावनाएँ हैं? इसका मैडिसन की विधाओं न्यूरोबायोलॉजी, साईकैट्री, समाजशास्त्र, मानव विज्ञान, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, न्याय पालिका और इतिहास में इसका क्या महत्त्व है?
2. क्या सामाजिक व्यवस्था (वैध, नीतिपरक, राजनीतिक) मानव कोशिकाओं अनुसंधान को जोड़ पायेगी और इसका विस्तृत क्षेत्रों में प्रयोग? मानव कोशिकाओं पर अनुसंधान का बढ़ते बाजार, व्यवस्थाओं और अनुसंधान इंटरप्राइजिज़ लाभ अनुस्थापित संस्थाओं में क्या महत्त्व होगा?
3. भारत जैसे देश में इसके लाभ और हानि, आचरण, आयाम और मानव कोशिकाओं पर अनुसंधान की क्या सम्भावनाएँ हैं?
4. क्या राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को (वैध और नीतिपरक) मानव कोशिकाओं पर अनुसंधान के ज्ञान को जनमानस के भले के लिए सुनिश्चित करना होगा और इसके लिए क्या क्या नियमों में फेरबदल को सुनिश्चित करना होगा?
5. मानव कोशिकाओं पर अनुसंधान के प्रयोग से नये मैडिकल ज्ञान (जैसे साईकैट्री, साईकॉलोजी, फिजोलोजी आदि) और प्रैक्टिसिस (व्यक्तिगत दबाईयाँ, लाभप्रद, उत्पत्ति सम्बन्धी गुणारोपण टैस्ट आदि) के लिए क्या उलझने हो सकती हैं? क्या नीतिपरक और वैधिक सम्बन्ध इसके विस्तृत प्रयोग के लिए मन में रखने होंगे?
6. क्या मानव कोशिकाओं के अनुसंधान से मानव की फिज्योलॉजी और नीतिपरक और दार्शनिक सम्भावनाएँ मानव की इस संरचना के सम्बन्ध में उठ सकते हैं?

एनआईआईएस बंगलौर में नैशनल इन्स्टीच्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़ (एनआईआईएस) बंगलौर के सहयोग से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। एनआईएस के प्रोफेसर एआर वासवी सम्मेलन के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा और एनआईएस संकाय के प्रोफेसर बीवी श्रीकान्तन ने उद्घाटन सत्र में अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की।

**प्रतिभागी :** प्रोफेसर ववै ई बिचकेर फ़ैक्ट्री ऑफ आर्ट एण्ड सोशल साईंसिस, मास्टरिचट यूनिवर्सिटी, मास्टरिचट, नीदरलैण्ड; डॉ० नोरमा एम. टोटसी, डायरेक्टर फॉर अंडरग्रेजुएट स्टडीज़, स्टीव बीको सेंटर फॉर बायोथिस्क, स्कूल ऑफ क्लीनिकल मैडिसिन्स, यूनिवर्सिटी ऑफ विटवाटरसरैन्ड, पार्क टाउन, जोहान्सबर्ग, साउथ अफ्रिका; डॉ० लिन्डा मैकनाल्ड गलैन, अस्सिस्टेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ मैडिकल ऐजुकेशन, एल्डन मार्च बायोथिक्स इन्स्टीच्यूट अलबेने मैडिकल सैन्टर, न्यूयार्क; प्रोफेसर पीटर ग्लासनर, इएसआरसी सेंटर फॉर दी इकोनोमिक एण्ड सोशल आस्पैक्टस् ऑफ गन्योमिक्स, स्कूल ऑफ सोशल साईंसिस, यूनिवर्सिटी ऑफ कार्डिफ, यूके; प्रोफेसर

शशीज हेगडे, समाजशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद; प्रोफेसर एनआर माधव मैनन, डॉ0 एस राधाकृष्णन संसदीय अध्ययन पीठ, त्रिवेन्द्रम; डॉ0 के थनगराज, सेंटर फॉर सैल्यूलर एण्ड मौलीक्यूलर बायोलोजी, हैदराबाद; डॉ0 डी वेंकट राव, अंग्रेजी साहित्य विभाग, स्कूल ऑफ इंग्लिश लिट्रेरी स्टडीज़; दी इंग्लिश एण्ड फॉर्म लैंग्वेजिज़ यूनिवर्सिटी, हैदराबाद; प्रोफेसर शिव विश्वानाथन, धीरुभाई अम्बानी इन्स्टीच्यूट ऑफ इन्फर्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलोजी, गाँधीनगर; डॉ0 रतन दुआ पुरी, वरिष्ठ सलाहकार, सेंटर फॉर मैडिकल जैनेटिक्स, सर गंगाराम अस्पताल, नई दिल्ली; डॉ0 कृष्णा रवि श्रीनिवास, एसोसियेट फेलो एण्ड मैनेजिंग अडिटर : एशियन बायोटेक्नोलोजी एण्ड डिबैल्पमेंट रिव्यू, आरआईएस-रिसर्च एण्ड इन्फर्मेशन सिस्टम ऑफ डिबैल्पिंग कन्ट्रीज़, नई दिल्ली; डॉ0 एमजी नरसिम्हा, एसोसियेट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटिज़, नैशनल इन्स्टीच्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़, बंगलौर; प्रोफेसर शरत चन्द्र, सेंटर फॉर ह्यूमन जैनेटिक्स, बंगलौर; प्रोफेसर विनोद के गौड, इण्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स, बंगलौर; श्री जे श्रीराम, बंगलौर; डॉ0 सी मनमोहन रेड्डी, बंगलौर; डॉ0 संतोष केआर राऊट, बंगलौर; डॉ0 यदुगिरी वीटी, बंगलौर

### संगोष्ठी में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।

1. सिराज रसूल : दी पॉलिटिक्स ऑफ मैमरी एण्ड पब्लिक हिस्ट्री इन साउथ अफ्रीका
1. प्रोफेसर ववै ई बिचकेर : दी गवर्नेंस ऑफ रिस्कस् एण्ड बैनिफिटस् ऑफ जिनोमे साइंस एण्ड इंजिनियरिंग-रिलेटिड एक्वीरियनसिस् इन यूरोप
2. शशीज हेगडे : बियोन्ड ईएल एसआई : फर्दर कन्सीड्रेशनस् ऑन दी "मोरेलिटी" ऑफ ह्यूमन जिनोमे रिसर्च
3. एनआर माधव मैनन : लिगल एण्ड एथिकल डाईमैन्शन्स ऑफ ह्यूमन जिनोमे रिसर्च : ए डिबैल्पिंग वर्ल्ड प्रस्पैक्टिव
4. लिंडा मैकनाल्ड गलैन : ह्यूमन जिनोमे रिसर्च कन्वर्जिंग टेक्नोलोजिज = दी सिग्यूरैरिटी? (एक्सपलोरेशनस ऑफ दी एव्यूल्यूशन ऑफ ह्यूमैनिटी)
5. रतना पुरी : एथिकल इश्यूज़ इन मैडिकल एप्लीकेशन ऑफ जिनोमे रिसर्च
6. एमजी नरसिम्हा : दी यूज़ एण्ड एब्यूज़ ऑफ जैनेटिक इन्फर्मेशन
7. अनिता कार : ह्यूमन जैनेटिक्स/जैनोमिस: ट्रान्सेशनल रिसर्च : डिबैल्पिंग कन्ट्री हैल्थ सिस्टमस्
8. डी वेंकट राव : लाइफ इटसेल्फ-बिटवीन दी एरोनेटिक एण्ड दी प्रोमिजरी : दी क्वैश्चन ऑफ क्रिटिकल ह्यूमनिटिज़
9. नोरमा एण्ड टिस्टोसी : ह्यूमन जेनोमि डाईवस्ट्री रिसर्च : सोशल एण्ड कल्चरल एथिकल इश्यूज़ फॉर साउथ अफ्रीका
10. के थंग राज : जेनोमि रिसर्च : पॉपुलेशन स्ट्रैटिफिकेशन, हैल्थ एण्ड डीजिज़

11. पीटर ग्लासनर : टोपोलॉजिज ऑफ़ दी जेनोमि : मैपिंग दी न्यू जेनोमिक ड्रा
12. शिव विश्वानाथन : थिंकिंग एबाउट दी ह्यूमन जेनोमि

### 11 रैस्यूजैन्ट नार्थ ईस्ट : कन्टैन्टस् एण्ड ऑपरच्युनिटिज़ (18-20 सितम्बर, 2010)

**मूलाधार :** उत्तर पूर्व या उत्तर पूर्व फ्रन्टियर की संकल्पना की उपनिवेशिक शुरुआत है। आधुनिक भारत में उत्तर पूर्व क्षेत्र में इसका विकास हुआ है। इसका अब पृथक राजनीतिक, मानव जनजातीय, सांस्कृतिक और भौगोलिक अस्तित्व है। उत्तर पूर्व भारत विकसित हो रहा है, हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है, जीवन शैली को विकसित कर रहा है, अधिक शिक्षित और अधिक समृद्ध हो रहा है यह पुनरुत्थापनशील भारत प्रकट हुआ है। भारतीय संविधान स्वतंत्रता और प्रशासन का सर्वश्रेष्ठ तंत्र है। भारतीय लोक तंत्र संविधान के अधीन काम कर रहा है।

भारतीय लोक तंत्र का आदर्श स्वतंत्रता, समानता और न्याय धर्म निरपेक्षवाद के अधीन है। जनमानस लोकतंत्र की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। लोकतांत्रिक संस्थान जैसे विधानसभा, पंचायत, पारम्परिक ग्राम परिषद और स्वायत्त जिला परिषद काम कर रही हैं। यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया कितनी सार्थक और प्रभावी है? भ्रष्ट चुनावी प्रक्रिया, धन का प्रयोग, बल और बन्दूक प्रक्रिया प्रचुर मात्रा में है। आम जन मानस के लिए स्वतंत्रता और लोकतंत्र का क्या महत्त्व है? लोकतांत्रिक व्यवस्था में जन मानस सहयोग करते हैं। लोकतंत्र पर दबाव : "सत्य" है : जनमानस के द्वारा सही व्यवस्था की चेतना से अभिभूत होता है।

कई विविध जातीय आकांक्षाओं, पक्षत्यागी राज्य, जातीय स्वदेश और जिला परिषद की माँग उठ रही है। जातीय आन्दोलन या विद्रोह हिंसा के प्रतीक हैं। समान्यतः यह हिंसात्मक आदोलन सुरक्षा बलों द्वारा दमित किये जाते हैं। जो विद्रोह के फलस्वरूप होते हैं। इन्हें भारतीय राज्यों में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए रखा जाता है। कठोर नियमों का पालन करते हुए आर्मड फोर्सिस स्पेशल पॉवर एक्ट (AFSPA) का प्रयोग किया जाता है जिससे देश की एकता और अखंडता को चुनौती न मिल सके। मानव अधिकारों की हिंसा, विद्रोह का दमन करने के लिए सुरक्षा बलों की आवश्यकता है।

मतभेदों को दूर करने के लिये समझोते पर वार्तालाप चल रहा है। जनमानस की शक्ति के लिए यह सही माँग है। भारत एक विशाल राष्ट्र है जो जातीय मतभेदों को समाहित कर सकता है। जातीय राष्ट्रवाद को भारतीय राष्ट्रवाद और लोकतंत्र में समाहित करना है।

उत्तर पूर्व भारत की महिलाएँ सामाजिक स्वतंत्रता के लिए प्रसिद्ध हैं और उनकी जनमानस के साथ अहम भूमिका है। मेघालय में एकात्मक मातृसत्ता है। लिंग का क्या महत्त्व है? आधुनिकता में महिलाओं की स्थिति किस प्रकार प्रभावित हुई है? इस क्षेत्र की अपार संस्कृति विविध और कम्पायामान है, आधुनिकता में यहां का शास्त्रीय नृत्य और कला के लोक नृत्य, संगीत और नृत्य स्वदेशी समुदायों द्वारा संग्रहित किया गया है। शिक्षा, तकनीकी, विकास, लोकतांत्रिक प्रक्रिया, संस्कृति और विकास, व्यापार और वाणिज्य, आधुनिक संचार प्रणाली जिसमें आईटी भी शामिल है की क्रान्ति ने इस क्षेत्र को आधुनिकता की ओर अग्रसर कर दिया है। उत्तर पूर्व क्षेत्र का

जनमानस कितना आधुनिक है? जीवन के क्षेत्र में क्षेत्र का भी प्रतिबन्ध है, जटिल समस्याओं को समय में सुलझाना होगा। परन्तु किसी भी समस्या का समाधान है, समस्याओं को सुलझाने के लिए कई अवसर हैं जिनका प्रयोग किया जाना चाहिए।

यही कुछ अहम प्रश्न थे जिनपर 18 से 20 नवम्बर 2010 तक आयोजित "रैस्व्यूजैन्ट नार्थ ईस्ट : कन्टैन्टस् एण्ड ऑपरच्यूनितिज" विषय पर गोष्ठी में विचार विमर्श किया गया।

**प्रतिभागी :-** प्रोफेसर कृश्री मयूम विमलो देवी, मणिपुर विश्वविद्यालय; प्रोफेसर तिपलुट नॉनजवरी, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० सी जौशा थॉमस, निदेशक आईसीएसएसआर नार्थ इस्टर्न रिजनल सेंटर, शिलांग; सुश्री जारजुम इटे, प्रैजिडेंट इण्डिजिनियस वूमैन रिसर्च सेंटर, इटानगर; प्रोफेसर मोनोरूल हुसैन, गुवाहटी विश्वविद्यालय; प्रोफेसर एच जॉन सेमा, नागालैण्ड विश्वविद्यालय लुमामी, मोक्कचुंग; प्रोफेसर बीके राय बर्मन, नई दिल्ली; प्रोफेसर जेजे बर्मन, टाटा इन्स्टीच्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुम्बई; प्रोफेसर एन जोए कुमार सिंह, मणिपुर विश्वविद्यालय; प्रोफेसर माग्रेट च जामा, मिजोरम विश्वविद्यालय; डॉ० लौरा यरी केशवा, आईसीसीआर फेलो; सुश्री रोजमेरी डजूसिटू नागालैण्ड विश्वविद्यालय; प्रोफेसर अमर यूमनाम, मणिपुर विश्वविद्यालय; प्रोफेसर संजय हजारिका, सैफयूदीन किचलू चेयर, सेंटर फॉर नार्थ ईस्ट स्टडीज, जामिया मिलिया इस्लामिया; प्रोफेसर घनश्याम शाह, प्रोफेसर माधवन पलाट और प्रोफेसर जीसी त्रिपाठी (संस्थान के सभी राष्ट्रीय अध्येता); प्रोफेसर राज कुमार हंस, डॉ० सत्यव्रत दास, डॉ० शशि जोशी, डॉ० संजय पॉलिसकर, डॉ० पी नारायण एवं डॉ० स्वाधीनता महन्ता (संस्थान के सभी अध्येता।)

**गोष्ठी में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।**

1. बीके राय बर्मन : *एथनिक एस्याइरेशनस् एण्ड क्नाफिलिक्टस् इन नार्थ ईस्ट इण्डिया*
2. एच जॉन सेमा : *नागा पॉलिटिक्स : इश्यूज एण्ड प्राबलम्स*
3. घनश्याम शाह : *नेशन-स्टेट बिल्डिंग; डेलीमाज़ एण्ड चैलेन्जिज इन मल्टी-एथनिक सोसायटी*
4. एन जोय कुमार सिंह : *जैनिसिस ऑफ दी इनशोरजन्सी मूवमेंट इन मणिपुर*
5. जे जे वर्मन : *दी फ्यूचर ऑफ नार्थ ईस्ट; लुक ईस्ट ऑर लुक एराउन्ड*
6. तिपलुट नॉनजवरी : *एक्सल्यूशनेरी प्रैक्टिसिस् : दी मार्जनलाइजेशन ऑफ वूमैन इन स्टेट एण्ड पब्लिक पॉलिसिस*
7. कश्री मयूम विमलो देवी : *जैन्डर इश्यू : ए केस स्टडी ऑफ मणिपुर*
8. सी जौशा थॉमस : *हाऊ टू मेक डेमोक्रेसी वर्क इन इण्डियाज़ वायलेंट नार्थ ईस्ट*
9. मोनोरूल हुसैन : *वर्किंग ऑफ डेमोक्रेसी इन दी नार्थ ईस्ट*
10. माग्रेट च जामा : *कल्चरल पॉलिटिक्स एण्ड मॉडर्निटी*
11. लौरा यरी केशवा : *ट्रैडिशन मॉडर्निटी एण्ड रिलिज़न इन कोलोनियल सेंट्रल एशिया (टर्न ऑन 19थ एण्ड 20थ सेंचूरी)*

12. रोज़मेरी डजूसिटू : यूनिवर्सिटिज़ इन दी नार्थ ईस्ट एण्ड दी रोल ऑफ़ एनएचआरडी
13. अमर युमनाम : डैमोक्रेसी, प्रॉपर्टी राइट्स एण्ड डिबैल्पमैन्ट : दी नीड फॉर ए रिजनल एथिक्स
14. संजय हजारीका : आर्मड फोर्सिस स्पेशल पावर एक्ट

## 12 "मी एण्ड माई राईटिंग्स : वूमन राईटरस् फ्रॉम अफ्रीका एण्ड इण्डिया विषय पर संगोष्ठी (22-23 नवम्बर, 2010)

**मूलाधार :** संगोष्ठी का उद्देश्य औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक विस्तृत वर्णक्रम जो भौतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक आधार पर स्थानिक और अस्थायी तौर पर स्थित है, की महिलाओं की बहुस्वरता को एकत्रित करना था। यह लेखिकाओं के रूप में अपने व्यक्तिगत अनुभवों की बात करती हैं जो औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक विचार-विमर्श और स्वदेशी संगठन के विभिन्न बौद्धिक संगठनों से भिन्न हैं के अनुभवों से प्रकट होता है।

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, साहित्य अकादमी, इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली एवं भारती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली के सहयोग से संस्थान में 22-23 नवम्बर, 2010 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

**प्रतिभागी:-** प्रोफेसर यशोधरा मिश्रा, सरोजनी नायडू महाविद्यालय, भोपाल : डॉ० यव बोडे, धाना; डॉ० वैदेही मनीपाल; प्रोफेसर जयवन्ती डिमरी, हि०प्र० विश्वविद्यालय, शिमला; डॉ० रेखा शर्मा, हि०प्र० विश्वविद्यालय शिमला; प्रोफेसर जोय क्वनस्टेन्स कवीसीगा, काबले विश्वविद्यालय, यूगांडा; डॉ० प्राची गर्ग, नई दिल्ली; डॉ० हुमेरा अहमद, मुख्य पोस्टमास्ट जरनल, शिमला; डॉ० मेघा बहल, रोहिणी; डॉ० सृष्टि गुप्ता, गाजियाबाद; केरन किंग-अरीविस्ला, लागोज़ विश्वविद्यालय, नाइजरिया; डॉ० आशा कॉल, भारती महाविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० नन्दनी सी. सेन, भारती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; डॉ० देविका नरुला, कला एवं वाणिज्य दिल्ली महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; डॉ० सुकृता पाल कुमार, जाकिर हुसैन महाविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० अरशमीत कौर, नई दिल्ली; डॉ० नीतिका सक्सेना, दिल्ली; डॉ० शेरया भट्टाचार्यजी, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर; डॉ० मृदुला गर्ग, दिल्ली; सुश्री उर्मिला पवर, मुम्बई; डॉ० श्यामला भाटिया, शशि भार्गव, सतीश भाटिया, डॉ० अनिता चेरियन, प्रोफेसर राज कुमार हंस, डॉ० सत्यव्रत दास, डॉ० जया त्यागी, डॉ० योगेन्द्र सिंह सिकन्द, डॉ० सौम्यव्रत चौधरी, डॉ० प्राची खंडपेकर, डॉ० विजया सिंह और डॉ० स्वाधीनता महनता (संस्थान के सभी अध्येता) और डॉ० लोरा येरीकेशवा, आईसीसीआर अध्येता।

### संगोष्ठी में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।

1. जोय कीवसीगा : दी डोर इन अज़ार; वूमन राईटिंग्स इन यूगाण्डा
2. वैदेही : राईटिंग-ए लाईट इन डार्कनेसप
3. मशदुला गर्ग : डिसेन्ट एण्ड प्रोटेस्ट इन वूमनस् राईटिंग्स : दी हिन्दी एक्पीरियैन्स
4. केरन किंग-अरीविस्ला : दी मैरिज डायरैक्टिव

5. यशोधरा मिश्रा : *माई राईटिंग इन ए ग्लोबलाईज्ड वर्ल्ड*
6. याबा बाडो : *दी ब्रीच ऑफ स्पीरिट्स : दी राईटिंग ऑफ ट्रू मर्डर, एन अफ्रीकन गोथिक नॉवल*
7. उर्मिला पावर : *माई लाईफ एण्ड माई राईटिंग*
8. डॉ. वीना शर्मा : *फ्रॉम सिनडवी मोगना*

(इस अवसर पर दी विचिस ऑफ गम्बागा (याबा बाडो द्वारा निर्देशित फिल्म) भी दिखाई गई।)

### 13. दी ट्रैवलिंग पब्लिक : प्रशौशन एण्ड रिप्रेजेंटेशनस् ऑफ इण्डियन रेलवेज़ पर कार्यशाला (7-8 दिसम्बर, 2010)

**मूलाधार :** धीमी सुविधा से प्रकृति की अंतः स्थापित यात्रा अदृश्य हो गई, भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यांत्रिक समय और अन्तर को रेलवे ने नियमित कर दिया, नये विश्व की गतिशीलता, गति, नये जनमासन से विस्थापन और मिलन, नये स्थान, नये मार्ग जो आकार ले रहे हैं, भौतिक प्रकृति के अन्तर को तीव्र गति में विस्थापित कर दिया है। विचार के मत 'अन्तर और समय' तथा नये प्रयोगकर्ताओं के लिये खोल दिया है। नवीन अन्तर चालीसा ने मानस के साथ मानस के सम्बन्ध, मशीन तथा मानस, मानस का स्थान, मानस का समय, भूत, वर्तमान और भविष्य में बदलाव कर दिया है।

नये विश्व की क्या पहचान बन रही है? रेलवे की इसमें भूमिका क्या है? रेलवे विकास के लक्ष्यों को लेकर बढ़ रही है, आधुनिक विषयवस्तु का क्या स्वरूप होगा? जिसकी वह उत्पत्ति कर रहे है। आधुनिक युग को प्रतीतात्मक रेलवे ने विश्वास दिला दिया है जिसमें व्यक्ति अपनी अन्तर्निहित सामाज में जाति की अभारग्रस्त का भेदभाव, लिंग और धर्म, इनका क्या होगा? परिवर्तित हो रही तकनीकी पर साहित्य और प्रसिद्ध संस्कृति की क्या प्रतिक्रिया है? यह सात से आठ दिसम्बर 2010 तक आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में कुछ प्रश्न थे जिनपर मंथन तथा प्रस्तुतिकरण किया गया।

**वक्ता :-** डॉ0 डार्ड द्रूमोन्ड, एसोसियेट्स प्रिन्सिपलपल लैक्चरर इन हिस्ट्री एण्ड लीडस फॉर विक्टोरियन स्टडीज़, ट्रिन्टी यूनिवर्सिटी कॉलेज, लीडज़, यूके; प्रोफेसर कोलिन डिवेल, हेड, इन्स्टीच्यूट ऑफ रेलवे स्टडीज़ एण्ड ट्रांसपोर्ट हिस्ट्री, न्यूयार्क; यूके; डॉ0 अभय कुमार दुबे, अडिटर, इण्डियन लेंगेविज प्रोग्राम, सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डिबैलिंग सोसायटीज़, दिल्ली; श्री बिल एटीकेन, ट्रैवल राईटर, मसूरी; प्रोफेसर मुकुल केशवन्, इतिहास विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली।

### कार्यशाला में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।

1. डॉ0 द्रूमोन्ड : *दी प्रोडक्शन ऑफ ब्रिटिश पॉपुलर कलचरल प्रसैपशनस् ऑफ दी रोल ऑफ दी स्टीम रेलवे ऐज़ सिविलाईज़र' इन इण्डिया, 1853-1901 इन दी इल्लस्ट्रेशनस् ऑफ दी इल्लस्ट्रेटिड लंदन न्यूज़, दी ग्राफिक एण्ड दी किंग*

2. मुकुल केशवन : दी नैरेटिव फ़क्शन ऑफ़ दी रेलवेज़ इन लुकिंग थ्रू ग्लास
3. बिल एटीकेन : एस्थेटिक एण्ड दी लॉस ऑफ़ पब्लिक अफ़ैक्शन फॉर इण्डियन रेलसेज़
4. कोलन डिवेल : रेलवे इम्पीरियलिज़म, रेलवे नैशनलिज़म
5. अभय दुबे : लिट्टेरी रिप्रेजेन्टेशन ऑफ़ ट्रेन इन हिन्दी फ़िक्शन : ए पैरेरल ज़र्नी टू सिटीज़नशिप बिल एटीकेन और मुकुल केशवन ने भी उदघाटन सत्र के दौरान अपने सशजनात्मक कार्यों को पढ़ा
6. बिल एटीकेन : वेलेस ऑफ़ हैल : ब्रॉच लाईन टू एटर्नेटि
7. मुकुल केशवन : लुकिंग थ्रू ग्लास
8. थिडिप शुरुड : एट दी कतनी रेलवे स्टेशन

#### 14. 'चैलेंजिज टू डेमोक्रेसी इन साउथ एशिया' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (15-16 जनवरी, 2011)

**मूलाधार :** विषयवस्तु को चयनित करने के कई कारण हैं, इनमें से कुछ क्षेत्र के लोकतंत्र की कार्य प्रणाली से वास्तविक इच्छा को समझने के लिए उत्पन्न होता है, उनके इतिहास, ऐतिहासिक अवशेष जो आज भी समसामायिक राजनीति में दखल दे रहे हैं, वार्तालाप के द्वारा विवादास्पद विरोधाभास और प्रतिकूल उद्देश्य का आविर्भाव यदि हो सके तो तालमेल से उसका निवारण वैश्वीकरण के कारण किया जा सकता है। इसके परिणाम जिसने वार्तालाप सम्बन्धों से राजनीति और अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण के फलस्वरूप लोकतांत्रिक परिकल्पना को प्रवर्तित कर दिया है। इसका प्रथम प्रयोजन धूरी के पास देखा जा सकता है। "दक्षिणी अफ्रिका में लोकतंत्र क्या कर रहा है"?

इसका दूसरा सन्दर्भ धूरी के दूसरी ओर देखा जा सकता है। "दक्षिणी अफ्रिका लोकतंत्र के लिए क्या कर रहा है? इस प्रकार के कथन से हम लोकतंत्र की विषयवस्तु के प्रबन्ध पर संशोधन कर सकते हैं। मुख्यतः उत्तर और तत्पश्चात इसे "असुविधाजनक तथ्य" में कार्यरत लोकतंत्र के साथ प्रस्तुत किया जाए, जो अपने आप में सरल मूल्यांकन की ओर नहीं ले जाते। इसलिए विषयवस्तु का विरोधाभाव स्थापित नहीं होता। इसलिए शायद लोकतंत्र के विरोधाभास की विषयवस्तु पर पुनः मंथन की आवश्यकता है।

इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली में 'चैलेंजिज टू डेमोक्रेसी इन साउथ एशिया' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 15-16 जनवरी, 2011 को किया गया।

**प्रतिभागी :-** प्रोफेसर माईकल वेस्ट, प्रोफेसर ऑफ़ सोशोलॉजी, हिस्ट्री एण्ड अफ्रीकन स्टडीज़, बिनहंमटन यूनिवर्सिटी, बिनहंमटन, न्यूयार्क; प्रोफेसर रवि अरविन्द पलाट, डिपार्टमेंट ऑफ़ सोशोलॉजी, बिनहंमटन यूनिवर्सिटी, बिनहंमटन, न्यूयार्क; श्री दीपक थाना, निदेशक, सोशल साइंस बाहा, काठमंडू, नेपाल; मुहम्मद मूसा महमूद, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, अफगानिस्तान इन्डिपेंडेंट ह्यूमन राइट्स कमीशन काबूल, अफगानिस्तान; डॉ० लीना रिखिला तामन्ग, हैड ऑफ़ मिशन, इंटरनेशनल आईडीईए, नेपाल; प्रोफेसर समीर कुमार दास, राजनीतिशास्त्र विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय; प्रोफेसर संजय हजारिका, सैफ्यूटीन किचलू पीठ, सेंटर फॉर नॉर्थ इस्टर्न स्टडीज़,

जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली; प्रोफेसर नन्नदनी सुन्दर, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रोफेसर वलेरियन रॉडरिक्स, राजनीतिशास्त्र अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; डॉ० हरिश सेठी, कन्सल्टिंग अडिटर, सेमीनार, नई दिल्ली; डॉ० ई श्रीधरन, अकादमिक निदेशक, पेनिसलवेनिया विश्वविद्यालय इन्स्टीच्यूट फॉर दी एडवांस स्टडी ऑफ इण्डिया, इण्डिया हैबीटेड सेंटर, नई दिल्ली; डॉ० मैरी ई जॉन, निदेशक सेंटर फॉर वूमैनस् डिबैल्पमैन्ट स्टडीज़, नई दिल्ली; डॉ० उषा रामान्थन, दिल्ली; डॉ० रनबी ठाकुर, डिपार्टमेंट ऑफ ईस्ट एशियन स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय; सुश्री रीता मंचन्दा, साउथ एशियन फोरम फॉर ह्यूमन राइट्स, नई दिल्ली; डॉ० साभिया हुसैन, डॉ० आरआर नारायणन, सेंटर फॉर दलित एण्ड माइनोरिटीज़ स्टडीज़ जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली; एम्बैसेडर टीसीए रंगचारी, दिल्ली; श्री प्रान्चे गुहा ठाकुरता, दिल्ली; डॉ० के पी शंकरन, सेन्ट स्टीफनस कॉलेज, दिल्ली; श्री गोबिन्द तुकराल, चण्डीगढ़; डॉ० अर्जुन घोस, आईआईटी दिल्ली; डॉ० मोहेन्द्र सिंह, राजनीति शास्त्र विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ० बसन्ती रमन, उपनिदेशक, सेंटर फॉर वूमैनस् डिबैल्पमैन्ट स्टडीज़, दिल्ली; प्रोफेसर माधवन पटेल, राष्ट्रीय अध्येता, आईआईएएस; प्रोफेसर रामाश्रेय राय, दिल्ली; श्री सुमन्ता बनर्जी, देहरादून

### सम्मेलन में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।

1. रवि अरविन्द पलाट : बैंक टू दी फ्यूचर : ए वर्ल्ड-हिस्टोरिकल प्रस्पैक्टिव ऑफ इण्डियाज़ एस्से इन डेमोक्रेसी
2. समीर कुमार दास : डिबैल्पमैन्टल डेमोक्रेसी : डिबैल्पिंग डेमोक्रेसी ऑर डिबैल्पमैन्ट विदाउट डेमोक्रेसी इन इण्डिया
3. मैरी ई जॉन : बिटवीन वैलफेयर एण्ड पॉलिटिक्स : फेमिनिस्ट प्रस्पैक्टिव्स ऑन रिप्रिजेंटेशनस् एण्ड डेमोक्रेटिक गर्वनैस
4. ई श्रीधरन : कोलेशन पॉलिटिक्स एण्ड डेमोक्रेसी
5. वलेरियन रॉडरिक्स : इण्डियाज़ कन्टीच्यूशनल डेमोक्रेसी एण्ड सायलेंस ऑफ ईस्ट पब्लिक इन्स्टीच्यूशनस्
6. प्रान्जे गुहा ठाकुरता : पेड न्यूज़; हाउ क्रप्शन इन इण्डिया मीडिया अंडरमाईंडस् डेमोक्रेसी
7. संजय हजारीका : चैलेंजिज टू डेमोक्रेसी इन साउथ एशिया डायलॉग, सिक्वोरिटी एण्ड ड्रेकोनियल लॉज़; दी पीपल फैक्टर
8. लीना रिखिला : पॉलिटिक्स ऑफ इनक्लूज़न; डिबेटस् ऑन एकमोडेटींग डायवर्सिटी एण्ड इलाईट रजिस्ट्रैन्स इन नेपालस् कौन्सटीच्यूशनस्, राईटिंग प्रैक्टिस्
9. टीसीए रंगचारी : दी चैलेंजिज ऑफ डेमोक्रेसी इन पाकिस्तान
10. रीता मंचन्दा : नो वूमैन, नो डेमोक्रेटिक टीस : बियोन्ड प्रैजैन्स टू पार्टीसिपेशन
11. साभिया हुसैन : जैन्डर कम्यूनिटी आईडेंटिटी, डेमोक्रेटिक राईटस (दी केस ऑफ मुस्लिम वूमैन इन इण्डिया)



12. मुहम्मद मूसा महमूदी : चैलीजिज टू डेमोक्रेसी इन अफगानिस्तान
13. रनवी ठाकुर : टू मॉडलस् ऑफ पॉलिटिकल एण्ड इकोनोमिक डिबैल्पमैन्ट इन एशिया : चाईना एण्ड इण्डिया
14. माईकल वेस्ट : डेमोक्रेटिक स्ट्रगलस् इन जिम्बाबे : लैगोसिस एण्ड लाईस
15. गोबिन्द ठुकराल : पाकिस्तान, कॉट इन दी पैराडॉक्स ऑफ डेमोक्रेसी एण्ड डेमोक्रेसीजाईगेशनस्
16. दीपक थापा : ऑप्रेशनलाईजिंग इनक्लूज़न : नेपाली पॉलिटिक्स इन दी पोस्ट-2006 ईरा
17. सुमन्ता बनर्जी : वट इज इण्डिया डूईंग टू डेमोक्रेसी : रि-इनवैन्टिंग ऑन रिप्रैसिंग?
18. उषा रामानाथन : यूआईडी : ए प्रोजेक्ट टू मैप एण्ड टैग ए बिलियन प्लस
19. रामाश्रय राय : फॉल्ट लाईन ऑफ डेमोक्रेसी

### 15 चैलेंजिज टू इनक्लूसिव डिबैल्पमैन्ट इन नॉर्थ-वेस्ट इण्डिया : साईटस् स्टेज़रीज एण्ड पॉसिब्लिटीज़ पर संगोष्ठी (28-29 जनवरी, 2011)

**मूलाधार :** उतर-पश्चिम भारत, जिसने कुछ दशक पूर्व भारत के अन्य क्षेत्रों में ग्रामीण आधारभूत संरचना, कृषि और सामाजिक पूंजी संरचना की बात कही थी ने गम्भीर प्रतिवर्तित परिणाम झेले हैं। जगन्नाथ विकास को क्रमशः विरोध का सामना करना पड़ा है जबकि भूस्वामी हरित क्रांति में राज्य की भारी सबसडी और अपने व्यवसायिक कौशल से अपने लाभ को दुगना करते रहे, वहीं छोटे किसान ऋण तले दबते चले गए। आकस्मात समृद्धि जो पहले देखी गई थी को बनाए रखना कठिन हो गया, क्योंकि बुद्धिहीन घातक व्यवस्था विचलित नहीं हुई। छोटे किसान हरित क्रांति के दुःखान्त को समझने में असमर्थ रहे-या तो उन्होंने आत्महत्या कर ली-या अपने आप को भुलाने की कोशिश में शराबी बन गए, या इससे भी घातक मिथ्याभिमानी क्षणों में खो गए। आधुनिकता के युग में पीछे की ओर यात्रा घातक प्रारम्भिक सामाजिक परिणाम आदि आए जैसे महिला उत्पीड़न, सम्मान हत्या, आंतकवाद का आवसरिक चढ़ाव, जाति युद्ध कबूतरबाजी आदि। आधुनिकता की योजना उपद्रवी ताकतों में सिमट गई, क्योंकि यह कुछ ऊपर से आयतित की गई थीं और कुछ इसमें सुधार लाने के लिये सब की सहभागिता नहीं थी। इस समय फिर से पीछे जाकर विकास की प्रक्रिया को आरम्भ करना कठिन होगा। यह समय है कि हम इसे "अंतर्भाव विकास" की समस्याओं को देखते हुए इस पर मंथन कर सकें। अन्तर्भाव विकास अकेले सत्ताधीन को जिम्मेवारी देकर राज्य की समस्या के लिये असोचनीय होगी। वैश्वीकरण ने सरल, स्थापनीय और रेखीय मार्ग, विरोधाभास, प्रक्रिया और विकास की संभावनाओं के मध्य आ रहे हैं।

इस विरोधाभाव का मंथन करने के लिए चैलेंजिज टू इनक्लूसिव डिबैल्पमैन्ट इन नॉर्थ-वेस्ट इण्डिया : साईटस् स्टेज़रीज एण्ड पॉसिब्लिटीज़ विषय पर चन्डीगढ़ में सैंटर फॉर दी स्टडी ऑफ सोशल एक्सलूज़ल एण्ड इनक्लूसिव पॉलिसी, पंजाब विश्वविद्यालय चन्डीगढ़ में 28 से 29 जनवरी 2011 तक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी तीन खण्डों : निर्धारित, सामरिक महत्त्व और सम्भावनाओं में विभाजित किये गए थे।

## संगोष्ठी में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।

1. प्रोफेसर बीके नागला : सोशल एक्सलूज़न एण्ड अनईक्वल डिबैल्पमैन्ट
2. प्रोफेसर आरएस गुमान : अंडरस्टैंडिंग एक्सलूज़न इन दी कन्टैक्सट ऑफ नॉर्थ-वेस्ट इण्डिया
3. प्रोफेसर वीरेन्द्र पाल सिंह : चैलेंजिंग ऑफ इनक्लूसिव डिबैल्पमैन्ट : ए पैसिमिस्टिक नोट
4. सरदार जस्सबीर सिंह : प्लार्ट ऑफ दी ऐग्रीकलचरल वेज़ वर्कसज़ एण्ड दी कॉन्सिडरेशनल डेमोक्रेसी इन इण्डिया
5. श्री चन्द्रशेखर : डिबैल्पमैन्ट एण्ड एक्सलूज़न : ग्राउंड रियैलिटी ऑफ पंजाब
6. प्रोफेसर अनिता गिल : इनडीबीडैन्स ऑफ फारमर हाउसहोल्डस् इन पंजाब : चैलेंजिंग फॉर फार्मिनेशियल इनक्लूज़न
7. प्रोफेसर रौणकी राम : रीओरियेन्टिंग इनक्लूसिवनेस इन इन्क्लूसिव डिबैल्पमैन्ट : फोकस ऑन एम्प्लाइमेंट, एजुकेशन एण्ड हेल्थ
8. डॉ० सिमरण के सिद्ध और डॉ० शालिनी शर्मा : एक्सलूज़न ऑफ रुरल स्टूडेंट्स फ्रॉम हायर एजुकेशन इन पंजाब : रिज़नस् एण्ड रैमेडीज़
9. प्रोफेसर जगरूप सिंह सेखो : स्टक्चरल एक्सलूज़न ऑफ दी पीपल इन बॉडर बैल्ट इन पंजाब : एन इम्पैरिवल एक्सपलानेशन
10. डॉ० नवप्रीत कौर : अनवेलिंग चण्डीगढ़ : मिथ ऑफ दी मॉडर्न सिटी एण्ड रियेल्टी ऑफ कास्ट
11. डॉ० राजेश कुमार : मार्जनलाईजिंग इफेक्टस् ऑफ स्कूल एजुकेशन इन रुरल पंजाब
12. प्रोफेसर पीएस वर्मा : डिबैल्पमैन्ट स्टैजरीज़ एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन हरियाणा
13. प्रोफेसर सतीश शर्मा : स्टेट, मार्किट, इकोनोमी एण्ड रुरल डीजनरेशन
14. प्रोफेसर परमजीत सिंह जज : इनक्लूसिव डिबैल्पमैन्ट
15. डॉ० पीएल गर्ग : सोशल एक्सलूज़न डब्ल्यू.आर.टी. टू एजुकेशन एण्ड हेल्थ इन पंजाब
16. प्रोफेसर सुखदेव सिंह : प्लेस ऑफ दलितस् इन दी इकोनोमिक डिबैल्पमैन्ट ऑफ पंजाब
17. डॉ० इन्द्रजीत सिंह : मिर्चपुर : पॉलिटिक्स एण्ड कास्ट पोलराइज़ेशन
18. श्री डीआर चौधरी : एक्सलूज़नरी एजे ऑफ खाप पंचायतस् इन हरियाणा विद रैफरेंस टू वूमैन एण्ड दलितस्
19. प्रोफेसर के.गोपाल अय्यर : दी प्रैडिसिमेंट ऑफ शडयूलड कास्टस् इन हरियाणा विज़-ए-विज़ दी डॉमिनेन्ट कास्टस्
20. श्री धनपत सिंह : इकोनोमिक डिबैल्पमैन्ट एण्ड सोशल अंडरडिबैल्पमैन्ट इन हरियाणा

## 16 "सोशल एण्ड अकादमिक आडिट ऑफ दी इन्स्टीच्यूशनस् ऑफ हायर एजुकेशन दी नार्थ-ईस्ट पर संगोष्ठी (11-12 मार्च, 2011)

**मूलाधार :** विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से विद्वानों और नीति निर्धारकों का ध्यान उच्च शिक्षा की ओर आकर्षित हुआ है। इसकी अहम भूमिका वर्तमान की सामाजिक व्यवस्था में आर्थिक और तकनीकी विकास को बढ़ाने में रही है। जिसकी सराहना की गई, फिर भी इसने द्वैधवर्षिता और उलझन है। इस विचारधारा और बहिष्कार, राष्ट्रीय महत्त्व बनाम बैश्वी वचनवद्धता, बाजार दिगविनयास बनाम समीक्षक विद्वानों का उत्पाद, सामाज के विस्तृत स्तर को लाभान्वित करने के लिये विकास के लिये सामना और सहयोग करना है। 1948 के प्रथम विश्वविद्यालय शिक्षा की आयोग की मूल प्रकृति "सभ्यता के पथ प्रदर्शक विद्वानों को विश्वविद्यालय" में प्रशिक्षण देना था। विश्वविद्यालय जो राष्ट्र के शरण क्षेत्र के भीतरी अंग हैं। यशपाल आयोग की उच्च शिक्षा रिपोर्ट में प्रतिध्वनित हैं। रिपोर्ट की पहली पंक्ति "विश्वविद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ नवीन विचार उत्पन्न होते हैं, अपनी जड़े बनाते हैं और विकसित होते हैं तथा प्रबल हो जाते हैं" इसके साथ-साथ रिपोर्ट में इसपर भी बल दिया गया कि विश्वविद्यालयी शिक्षा रोजगार के साधनों के साथ जुड़ी हो जो सामाज की माँग है।

जहाँ तक भारत के उत्तर पूर्व का प्रश्न है कि यह क्षेत्र उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ गया है। उदाहरण के तौर पर सारे उत्तर पूर्वी क्षेत्र में पहला विश्वविद्यालय 1948 में गुवाहटी, असम में अस्तित्व में आया। इसके अतिरिक्त नॉर्थ ईस्ट्रन हिल यूनिवर्सिटी को जो 1973 में स्थापित हुई थी को छोड़ कर अधिकतम विश्वविद्यालय 80वें शतक के मध्य से 90 के अन्तिम शतक में अस्तित्व में आये। यद्यपि क्षेत्र का विकास हाल में हुआ जिनमें राज्य विश्वविद्यालयों को केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में परिवर्तित कर दिया तथा साथ ही नये केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किये गए, फिर भी इस क्षेत्र में आकादमिक कमी में कोई खास बदलाव नहीं आया है। क्षेत्र में व्यवसायिक संस्थान जिनमें इंजीनियरिंग और मैडिकल महाविद्यालयों आदि की कमी को झेल रहा है। अधिकतर महाविद्यालय कला संकाय के पाठ्यक्रम दे रहा है जिससे विद्यार्थियों को रोजगार पाने में असुविधा हो रही है, यद्यपि यह देखा जा सकता है कि निजी संस्थान व्यवसायिक पाठ्यक्रम रोजगार प्राप्ति के लिए दे रहे हैं उनकी सत्यता संदेहप्रद है, और अधिकतर मामलों में अच्छे की बजाये नुकसान हो रहा है उच्च शिक्षा के नये संस्थान जो अभी अस्तित्व में आये हैं उनमें भी विद्यार्थियों के लिए सीमित स्थान हैं जिसके प्रणामस्वरूप अधिकर विद्यार्थियों को मैट्रोपोलियन शहरों में जाना पड़ता है जहाँ उन्हें अच्छी आधारभूत सुविधाएँ और रोजगार के पाठ्यक्रम प्राप्त हो रहे हैं।

इन विषयों पर विचार विनिमय करने के लिए "सोशल एण्ड अकादमिक आडिट ऑफ दी इन्स्टीच्यूशनस् ऑफ हायर एजुकेशन दी नार्थ-ईस्ट" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्यतः भारत के उत्तर पूर्व क्षेत्र में निम्नलिखित विषयों पर मंथन किया गया।

- उच्च शिक्षा की राजनीतिक अर्थ व्यवस्था
- अनुदान और सामाजिक लेखा परिक्षण

- गुणवत्ता और मात्रा : मानव संसाधन और आधारभूत संरचना
- प्राप्यों की उपलब्धता
- पाठ्यक्रम और पाठ्य चर्चा—गुणवत्ता और सार्थकता

**वक्ता :-** प्रोफेसर ए.सी. भगवती, गुवाहटी; प्रोफेसर सुधांशु भूषण, नैशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल प्लांलिंग एण्ड एडमिन्सट्रेशन, नई दिल्ली; प्रोफेसर विनोद खदारिया, जाकिर हुसैन सेंटर फॉर एजुकेशनल स्टडीज़, स्कूल ऑफ सोशल सांईसिस, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय; प्रोफेसर अमर यूमन्म, मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल; प्रोफेसर अशोक बर्मन, जरनल सकेट्री ऑफ आईएफयूसीटीओ, कोलकाता; डॉ० कन्द्रपादास, इन्स्टीच्यूट ऑफ डिस्टैन्स एण्ड ओपन लर्निंग, गुवाहटी विश्वविद्यालय, गुवाहटी; प्रोफेसर श्रीनाथ बरूआ, उपकुलपति के.के. हैन्डीक्यू स्टेट ओपन विश्वविद्यालय, गुवाहटी; प्रोफेसर जॉए शंकर हजारिका, दारंग महाविद्यालय, तेजपुर; डॉ० गौतम चकमा, सहायक प्रोफेसर त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला; डॉ० बोलिंग हजारिका, जेबी महाविद्यालय, जोराहट; डॉ० नुरुल अमीन, जेबी महाविद्यालय जोराहट; डॉ० एच श्रीकान्त, राजनीति विज्ञान विभाग, एमईएचयू, शिलॉंग; डॉ० जेवी ननचूंगा, सहायक प्रोफेसर, राजकीय जे थैंकिमा, आईजॉल

### 17 “दी कैरेक्टर ऑफ माईन्ड” पर अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन (18–20 मार्च, 2011)

**मूलाधार :** कई सदियों से मानव मन दार्शनिक और वैज्ञानिक चिंतन की विषयवस्तु रहा है। प्रारम्भिक आधुनिक “प्राकृतिक दर्शनशास्त्रियों” का लक्ष्य “विचाराधिक शक्तियाँ” रहा है। इससे पूर्व ग्रीक दर्शनशास्त्री मानव के ज्ञान के प्रभाव जैसे हिसाब, संगीत और रेखागणित से मंत्रमुग्ध थे। इससे भी पहले पाननी अपने आप में आरम्भिक परम्पराओं, में सर्वव्यापक संरचना के अध्ययन का औपचारिक उद्घाटन किया था। केवल 50 वर्ष पूर्व मन के अध्ययन को “विज्ञान” “विचाराधिक विज्ञान” का नाम दिया गया। इससे क्या उद्घाटित हुआ और क्या यह विशिष्ट मन की विषयवस्तु है, नई या पुरानी, इसका क्या आविर्भाव है? क्या मन के स्वरूप के ज्ञान में वास्तविक रूप से वृद्धि हुई है जिससे इसका योजनाबद्ध अध्ययन आरम्भ हुआ है? क्या हम वास्तविक रूप से विचाराधिक मनःस्थिति को प्राप्त कर पाये हैं, या हम हमेशा इसकी बाहरी अभिव्यक्ति को रेखांकित कर रहे हैं जो सामाजिक-सांस्कृतिक विषय का मानव व्यवहार रहा है। क्या हम जानते हैं कि किस प्रकार का डाटा मन के सिद्धान्त पर सार्थक होगा? क्या यह सभी प्रश्न दोषपूर्ण या असमायिक हैं?

विचाराधिक विज्ञान का कुछ स्वतन्त्र विकास, या कुछ प्रश्नों का मंथन था जो शताब्दी पूर्व से भी अष्टिक वैश्लेषिक दर्शनशास्त्रियों ने “फिलॉसफी ऑफ माईन्ड” विधा का उद्घाटन करते समय रखे थे। अधिकतर दर्शनशास्त्रियों का मन का चिंतन करने में विरोधाभास है—कार्यात्मक—बहिष्कृत, भौतिकवाद और द्वैत—की संरचना की गई है। अब तक विचार—विनिमय और तर्क—वितर्क जटिल और रहस्यवादी हो गए हैं, फिर भी मन के स्वरूप की चेतना तथा सामरिक महत्त्व का निर्णय लगता है जो कहीं लुप्त है।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहयोग से संस्थान ने इस विषय पर विचार विनिमय करने के लिए “दी कैरेक्टर ऑफ माईन्ड” पर अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 18–20 मार्च, 2011 तक किया गया।

**प्रतिभागी :-** प्रोफेसर जी मिश्रा, सदस्य सचिव, आईसीपीआर, नई दिल्ली; डॉ० प्रबल दास गुप्ता लिंग्विस्टिक रिसर्च यूनिट, इण्डियन स्टैटिकल इन्स्टीच्यूट, कोलकाता; डॉ० अमिता चट्टर्जी, प्रैसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता; प्रोफेसर बारे स्मिथ, इन्स्टीच्यूट ऑफ फिलॉसफी, स्कूल ऑफ एडवांस स्टडी, लंदन विश्वविद्यालय, लंदन; प्रोफेसर मोहन माथेन, टोरान्टो विश्वविद्यालय; प्रोफेसर नैड बलॉक, दर्शनशास्त्र विभाग, न्यूयार्क विश्वविद्यालय, न्यूयार्क; प्रोफेसर सुसेन कैरी, दर्शनशास्त्र विभाग, हावर्ड विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज; प्रोफेसर जियूसै लोंगोवारडी, ट्रिस्टेट विश्वविद्यालय; प्रोफेसर जॉन मिखेल, प्रोफेसर ऑफ लॉ, जार्जटाउन विश्वविद्यालय विधि विभाग वाशिंगटन; प्रोफेसर अन्ना मारिया डी सीउलो मान्ट्रैल विश्वविद्यालय, कनाडा; प्रोफेसर टिमोर्थे जे क्रो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय; प्रोफेसर पारथा घोष, भौतिक विज्ञान संस्थान, कोलकाता; डॉ० समित्रा सरकार, दर्शन शास्त्र विभाग, जावेदपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता; डॉ० मुधुचन्द्र सेन, दर्शन शास्त्र विभाग, रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता; डॉ० मौशमी गुहा, दर्शन शास्त्र विभाग और स्कूल ऑफ कगनिटीव साइंस, जावेद विश्वविद्यालय, कोलकाता; डॉ० रवि एम सिंह, दर्शन शास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय; डॉ० सुसुरुत राय, कोलकाता।  
**सम्मेलन में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए।**

1. सिराज रसूल : दी पॉलिटिक्स ऑफ मैमरी एण्ड पब्लिक हिस्ट्री इन साउथ अफ्रीका
1. अमिता चट्टर्जी : दी नव-नया वैरियेशन ऑन कम्प्यूटरनेलिज्म
2. प्रबल दासगुप्ता : वृहतहरिस् स्ट्रेज़री फॉर फॉर्मलेशन इन लिंग्विस्टिक इन्क्वारी
3. जी मिश्रा : माईड एण्ड ईट्स यूनिवर्स : डिस्क्रीसिव कन्स्ट्रक्शन ऑफ थॉट स्ट्रक्चरस् इन इण्डियन ट्रैडिशन
4. जियूसै लोंगोवारडी : ह्यूमन डाईवर्सटी एण्ड थियोरी ऑफ माईन्ड
5. अन्ना मारिया डी सीउलो : एक्पलोरेशन ऑफ दी माईन्ड इनहैवीटैन्ट ऑफ नैचुरल वर्ल्ड
6. वौलफ्रॉम हिनज़ैन : दी एबोल्यूशन ऑफ रिकरसियन एण्ड कम्प्लैक्स थॉट
7. जॉन मिखेल : मॉरल ग्रामर : दी माईन्डस् हिडलस् रूलस् ऑफ मॉरल जजमेंट
8. मोहन मथेन : दी लॉजिकल स्ट्रक्चर ऑफ विजवल कन्टैन्ट
9. निर्मलागशु मुखर्जी : हाउ फॉर डज़ कम्प्यूटेशनल थियोरी गो
10. नैड बलाक : वाय कानशिसनैस रिसर्च इज़ डीफिकल्ट
11. विजय बरूआ : सैल्फ-एवेयरनैस एज़ सैल्फ-एकनॉलजमेंट
12. बारे समिथ : ह्यूमन सबजैक्टस-दी नार्रमल केस?
13. सुसेन कैरी : दी ओरिज़न ऑफ कन्सैप्टस : रिप्रेजेंटेशनस् ऑफ दी सोशल वर्ल्ड
14. पार्थ घोष : टैगोर एण्ड एनस्टेन पल्मव दी टूथ : ए कगनिटीव साइंस प्रस्पेक्टिव

## 18 “अंडरस्टेडिंग कोलैक्टिब एक्शन, वायलैन्स एण्ड पोस्ट-कोलोनियल डैमोक्रेसी पर कार्यशाला (19-20 मार्च 2011)

**मूलाधार :** लोकतंत्र का शायद पहले कभी हनन न हुआ होगा जैसाकि अब हो रहा है, आतंकवाद पर युद्ध, विदेश द्वेष, सुरक्षा सम्भ्रन्ति, जन आन्दोलन की हठधर्मी, पैतृक अधिकाधिक, नीतिपरक विरोध को बढ़ावा, धार्मिक और क्षेत्रीय अल्पमत विश्व की लोकतंत्रता के लिए बाधक बन गए हैं। इसमें लोकतांत्रिक ऐतिहासिक गठबंधन का पूंजीवाद और खुले बाजार में व्यवस्थक हिंसा को बढ़ाया है। लेकिन लोकतंत्र विवादस्पद सम्भावनाओं, सामूहिक प्रक्रिया और क्लेम अधिकारों, के प्रति जागरुकता के लिए द्वार भी खोलता है। यह सभी मुद्दे महत्त्वपूर्ण हैं और भारत के राजनीतिक अनुभवों में अभी भी जीवित हैं।

“अंडरस्टेडिंग कोलैक्टिब एक्शन, वायलैन्स एण्ड पोस्ट-कोलोनियल डैमोक्रेसी पर कार्यशाला में समसामयिक भारत में स्थापित लोकतंत्र का अनुभव और हिंसा की प्रकृति को आपस में सूत्र में रखना था। और इस प्रकार भविष्य के लिए एक सम्भावित अनुसंधान सूची तैयार करना था। इस कार्यशाला का दूसरा अहम पहलू उदार राजनीति का इस प्रकार के राजनीतिक मुहावरों का लिंग, पहचान, गौण और हाशिए पर रखे गए मर्दों का मूल्यांकन करना था।

कार्यशाला में भविष्य में अनुसंधान के लिए निम्न उद्देश्य रखे गए।

- विभिन्नदर्शनग्राही सादृश्य कुंजी है, लेकिन स्पष्ट नीतिपरक पूर्णमिभुखीकरण विरोध, हाशिए और गौण पर राजनीति और विमोचन
- आधुनिकता या लोकतंत्र या राज्य की दहलीज पर और उसकी विष्मता पर ऐतिहासिक संतुलित समझ, मुक्त राजनीति पर विलियन की चेष्टा नहीं होनी चाहिए।
- संरचना और भौतिक अभिव्यक्ति पर हिंसा को देखना चाहिए और नीतिवचन आयाम, लेकिन पवित्र दृष्टि में रहने चाहिए। शत्रुओं और विधायकों की हिंसा भिन्न है लेकिन शायद राजनीति संस्कृति में उनकी कई निरन्तर सम्भावनाएँ हैं।
- विषयपरक विमोचन विरोध और शत्रुता, विरोध के ब्लाक में एकरूपता होनी चाहिए। उसमें लिंग, नीतिपरक और धार्मिक प्रश्नों की दरार भी है।
- इसके साथ-साथ रुग्ण असुरक्षा और दैनिक घटनाओं जो हिंसा और लोकतंत्र को बनाती हैं का भी अध्ययन होना चाहिए।
- ऐतिहासिक बदलाव और आनुभविक अणवेषणों में सैद्धान्तिक साधन अनुपूरक होने चाहिए।

## 19 “थियोरी ऑफ आर्टस् एण्ड एस्थैटिक एकोर्डिंग टू अभिनवगुप्त पर अध्ययन सप्ताह (22–30 मार्च 2011)

**मूलाधार :** अध्ययन सप्ताह का आयोजन अभिनवगुप्त पर अभिनवगुप्त की प्रतिभाशाली पारंगत सैद्धान्तिक और धार्मिक (10–11थ सैचुरी एडी) की प्रकृति पर छानबीन के सन्दर्भ में करना था जो उनका सौन्दर्यशास्त्र का परिवर्तित सिद्धान्त जैसा कि आनन्दवर्धन के ध्वनि लोक और अभिनवभारती में वर्णित है। (भरतनाट्यशास्त्र पर टीका टिप्पणी) जिससे उन्हें भारतीय–देवता के रूप में मान्यता दी गई। संगोष्ठी का उद्देश्य अभिनवभारती और तंत्रलोक के ग्रंथों का अध्ययन करके उनके अनुभवों का मंथन करना था, जिसे विशेषज्ञों के व्याख्यानों और विचार–विनिमय से उसके ऐतिहासिक और दार्शनिक अभिनवगुप्त का सिद्धान्त की विषयवस्तु के आधाररूप को प्रायोगिक रूप में अर्जित करना था। जैसाकि कुटीयटम (डॉ० मधु मार्गी) और भरतनाट्यम (सुश्री आर्यानी भार्गव) ने प्रदर्शित किया।

अध्ययन सप्ताह का आयोजन भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा किया गया, इसका रोचनात्मक और शक्तिपूर्ण सलिल अभिनवगुप्त के अपने ही शब्दों में जहाँ वह कहते हैं “विज्ञान बाँटा नहीं जा सकता” <भिन्न>, जैसा कि (दृष्टि), एक पर्वत के शिखर पर व्यक्ति खड़ा है के समान था। देश–विदेश से लगभग 25 प्रतिभागियों ने इसमें सहभागिता की। उन्होंने विस्तृत स्तर पर जनमानस के आकादमिक संस्थानों तथा निजी संस्थानों का प्रस्तुतिकरण किया जिससे अध्ययन सप्ताह की सफलता अनुभवों और परिप्रेक्ष्यों के साथ प्राप्त हुई। वक्ताओं, संसाधन विद्वानों और सम्पन्न कलाकारों द्वारा विस्तृत स्तर पर अभिनवगुप्त अध्ययन से सम्बन्धित प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विधाओं का सभा को बहु–विषयक, विषयवस्तु, अनुभवों, अन्तर्दृष्टि और पर्यावलोकन का प्रस्तुतिकरण किया।

संगोष्ठी का आयोजन कुछ इस प्रकार से किया जिससे प्रतिभागियों को अनुभवरूप से पूर्व सौन्दर्यशास्त्र की ऐतिहासिक और दार्शनिक की सार्थकता का अभिनवगुप्त के (अभिनवभारती, तंत्रलोक) मूलग्रंथों का समीक्षात्मक अध्ययन तथा अन्त में उनके सिद्धान्त को साहित्य, काव्य, नश्य तथा संगीत में कार्यान्वयन हेतु मंथन किया, संगोष्ठी का उद्देश्य विषयपरक आधार तथा प्रभाव को सौन्दर्यशास्त्र की अन्तर्दृष्टि को प्रस्तुत करना था तथा उत्तर आधुनिक धारा प्रवह के समसामायिक ढांचे में सौन्दर्यशास्त्र का सम्भव कार्यान्वयन और तंत्र की पहचान करने के लिए विचार विनिमय करना था। विभिन्न विधाओं के व्याख्यान वेदों, अगमास, कला का सिद्धान्त, काव्य और रंगमंच पर थे। जिससे विभिन्न मार्गों तथा विषयवस्तु का एकात्मक परिप्रेक्ष्य में संग्रहित कर दिया तथा सौन्दर्य शास्त्र को विभिन्न स्तरों पर अवसर प्रदान करना था।

**प्रतिभागी :-** वाई श्रीधर रेड्डी, श्री श्री परमहंस योदनन्द अनुसंधान संस्थान, गडवाल, देव कमल गांगोली, विजुवल एण्ड सोनिक कलचर संकाय, इंटर नैशनल इन्स्टीच्यूट ऑफ इन्फर्मेशन टेकोनोलोजी, सैंटर फॉर ऐगजेक्ट ह्यूमैनिटीज़, हैदराबाद, अरगया बासु, फिल्म एण्ड टेलीविजन इन्स्टीच्यूट ऑफ इण्डिया, पुणे, डॉ० लेमायुम विश्वनाथ शर्मा, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, ईम्फाल, डॉ० हईन पुण्य मित्रा, त्रिवेणी देवी बलकोटिया महाविद्यालय, वर्धमान, मृनमॉए परमानिक, सीसीएल, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज़, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, डॉ० संजय द्विवेदी राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, डीमड विश्वविद्यालय,

भोपाल, डॉ० निलाशु कुमार अग्रवाल, इंग्लिश विभाग, फिरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली, हमसा स्टेन्टन, धर्म विभाग कोलमबिया विश्वविद्यालय, यूएसए, सुश्री सुषमा शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मासविम), जयपुर, सुश्री मिन्नी प्रिय आर., व्याख्याता, हिन्दी विभाग, स्नेला मारिस महाविद्यालय, चन्नेई, डॉ० ए. श्री महा लक्ष्मी संस्कृत अध्ययन विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, सुश्री सोनल निमवकार, व्याख्याता, सेंटर फॉर एगजैक्ट ह्यूमैनिटीज़, आईआईआईटी गिचहीवौली, हैदराबाद, डॉ० अलकेशनर्दा वैन्टा, श्री अरबिन्दु इन्स्टीच्यूट ऑफ रिसर्च इन सोशल साईंसिस, पाण्डीचेरी, डॉ० शिप्रा आर. उपाध्याय, दक्कन महाविद्यालय, पुरातत्व विभाग, पुणे, डॉ० नारायण दाश, व्याख्याता संस्कृत, रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय (स्वायत्त), कोलकाता, श्री तारिक अहमद, मीर इस्लामिक अध्ययन संस्थान, कश्मीर विश्वविद्यालय, विपन विजय, केरल, डॉ० वरुनजोति चौधरी, सहायक प्रोफेसर बंगाली विभाग, असम विश्वविद्यालय असम।

### अध्ययन सप्ताह में निम्नलिखित पत्र प्रस्तुत किये गए :

1. प्रोफेसर जीसी त्रिपाठी : वैदिक फाउन्डेशनस् ऑफ इण्डियन एस्थैटिक्स
2. प्रोफेसर सी राजेन्द्रन : लिट्टेरी थियोरी प्रायर टू अभिनवगुप्त
3. प्रोफेसर बैटीना बॉमर : मैटाफिजिकल बैकग्राउंड ऑफ एस्थैटिक्स इन अभिनवगुप्त
4. प्रोफेसर केडी त्रिपाठी : ए जनरल इन्ट्रोडक्शन टू न्यायशास्त्र एण्ड अभिनवभारती
5. प्रोफेसर राधाबल्लभ त्रिपाठी : रस थियोरी ऑफ अभिनवगुप्त
6. प्रोफेसर केडी त्रिपाठी : टैक्सटूअल रीडिंग्स् इन अभिनवभारती
7. प्रोफेसर बैटीना बॉमर : टैक्सटूअल रीडिंग्स् इन तंत्रलोक
8. प्रोफेसर सी राजेन्द्रन : कुन्तकस् थियोरी ऑफ आर्ट
9. प्रोफेसर राधाबल्लभ त्रिपाठी : अभिनवगुप्तस् कन्सैप्ट ऑफ नृत्य एण्ड दी इंटररिलेशनशिप विटबीन आर्टस्
10. प्रोफेसर केडी त्रिपाठी : टैक्सटूअल रीडिंग्स् इन अभिनवभारती—रसाध्याय
11. प्रोफेसर बैटीना बॉमर : टैक्सटूअल रीडिंग्स् इन तंत्रलोक
12. श्री मार्गी मधु और डॉ० के०जी० पॉलोस : डेमो—लैक्चर ऑन कुटियत्रम
13. डॉ० गौतम चट्टर्जी : अभिनवगुप्त एण्ड ग्लोबल एस्थैटिक्स
14. डॉ० केजी पॉलोस : इनफ्यूलेन्स ऑफ कश्मीर ट्रांजिशन ऑन केरल संस्कृत थियेटर
15. प्रोफेसर जीसी त्रिपाठी : इण्डियन थियोरी ऑफ एस्थैटिक्स एक्पीरियन्स इन विजूवल आर्ट्स
16. डॉ० एलीसा गंगसेर : दी कन्सैप्ट ऑफ डॉस इन अभिनवगुप्त
17. डॉ० प्रकाशन पाण्डेय : कन्सैप्ट ऑफ स्वतमप्रवेश इन अभिनवगुप्त
18. डॉ० आर्यानआनी भार्गव : डेमो—लैक्चर ऑन भरतनाट्यम्



19. प्रोफेसर बैटीना बॉमन : *रीडिंग्स इन तंत्रलोक*
20. प्रोफेसर गणेश दबे : *लोकेटिंग अभिनवगुप्त*
21. प्रोफेसर प्रकाशन पाण्डेय : *अभिनवगुप्तस्य थियोरी ऑफ स्वतमप्रवेश*
22. हसना स्नेनिटन : *प्रेजेंटेशन ऑन प्रॉबलम ऑफ भक्ति*
23. शिर्पा उपाध्याय : *शिव एण्ड पावर्ती इन ओरल नैरेटिव्स*
24. डॉ० अहिनपुन्य मित्रा : *ए क्वैस्ट फॉर पैरेरलस इन इण्डियन एण्ड वैस्टर्न एस्थैटिक्स : कान्त विज-ए-विज आनन्दवर्धन एण्ड अभिनवगुप्त*
25. डॉ० गौतम चट्टर्जी : *अभिनवगुप्तस्य कौन्ट्रीब्यूशन टू इण्डियन क्लासिक म्यूजिक*

### ग. अध्येताओं द्वारा साप्ताहिक संगोष्ठियाँ

संस्थान के अध्येता साप्ताहिक संगोष्ठियों का आयोजन करते हैं जिसमें संस्थान के अन्य विद्वान अन्तर्विश्वविद्यालय के सह-अध्येता एवं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संकाय के सभी सदस्य सहभागिता करते हैं। संस्थान के अध्येताओं द्वारा अपनी शोध परियोजना के सम्बन्ध में यह संगोष्ठियां होती हैं जो विद्वानों के साथ औपचारिक विचार-विमर्श के लिए अदान प्रदान करती है। आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित अध्येताओं द्वारा संगोष्ठियां आयोजित की गई :-

1. प्रोफेसर सतीश सी एकान्त : *फार्चूनेट फॉल : ए रीडिंग ऑफ यू आर आन्थमूर्तिस् समस्कारा ( 1 अप्रैल 2010)*
2. प्रोफेसर बीवी निमाडे : *नॉन-लिग्युविस्टिक एण्ड लिग्युविस्टिक, ओरल एण्ड रिटन (8 अप्रैल 2010)*
3. डॉ. कंचना नटराजन : *श्री विद्या शोभनम : (दी अस्पेशियस साँग ऑफ पुवर्ती) (15 अप्रैल 2010)*
4. डॉ० सत्यव्रत दास : *एरोटिक एण्ड फिलॉसिफिकल : ए नोट ऑन लव, लाईफ एण्ड थॉट (6 मई 2010)*
5. डॉ० समारिका निवानी : *दी पोर्टीगयूस इंटरफेस इन साउथईस्ट एशिया, 1511-1641 (13 मई 2010)*
6. डॉ० वीरभारत तलवार : *महाराष्ट्रीय नवजागरण में निरन्तरता (3 जून 2010)*
7. प्रोफेसर शीरिष चौधरी : *वन ग्रामर ऑर मैनी ग्रासरस (17 जून 2010)*
8. डॉ० संजय पालिसकर : *एसूरस एक्रॉस सैच्युरीज़ (24 जून 2010)*
9. प्रोफेसर एआर वासवी : *सुसाइडस एण्ड दी प्रीकैमियेन्ट ऑफ रुरल इण्डिया (1 जुलाई 2010)*
10. डॉ० मोहिन्द्र सिंह : *"रिलीजन ऑफ फिलिंग दी बैली" : एसैन्डैन्सी ऑु दी इकोनोमिक इन वर्नाकूलर डिस्कॉर्स (1870-1908) (8 जुलाई 2010)*
11. डॉ० अर्जुन घोष : *थियेटर, शेयरिंग, चैन्ज (15 जुलाई 2010)*
12. डॉ० रणजीता दत्ता : *दी मैकिंग ऑफ ए कैनन : रामानुज इन दी श्रीनिवास टैक्सटूअल ट्रेडिशन (11थ. टू 13थ सैच्युरी एडी) (22 जुलाई 2010)*

13. डॉ० सरोज ठाकुर : *हिडिम्बा : ए राक्षसी, ए देवी ऑर ए मानवी? (29 जुलाई 2010)*
14. प्रोफेसर राजकुमार हंस : *आईकोनोक्लासम ऑफ ए दलित पोएट इन दी मिड-नाईटीन्थ सैन्चूरी पंजाब (5 अगस्त 2010)*
15. डॉ० प्रमोद कुमार : *प्रेमचन्द के राजनीतिक उपन्यास : भारत राष्ट्र निर्माण की संग्राम गाथा (12 अगस्त 2010)*
16. डॉ० शशि जोशी : *रिलीजियस क्रॉसिंग : चाली एण्ड मोहन (19 अगस्त 2010)*
17. डॉ० वीना शर्मा : *दी कन्सैट ऑफ गॉड एण्ड मोडस् ऑफ नॉलेज़ ट्रॉसमिशन इन दी आकन सिप्रच्यूयल ट्रैडिशन एण्ड अद्वैत वैदान्त : ए कमपैरिटिव स्टडी (25 अगस्त 2010)*
18. डॉ० अनिता चेरियन : *परफॉर्मिंग दी नेशन : इन्स्टीच्यूशनस्, कलचरल पॉलिसी शेपिंग ऑफ ए नेशनल थियेटर इन पोस्ट-इण्डिपेंडेंस इण्डिया (25 अगस्त 2010)*
19. डॉ० पी नारायणन : *चैजिंग फेस ऑफ मीडिवल टैम्पल त्रिपुनथुरा : ए केस स्टडी (26 अगस्त 2010)*
20. डॉ० विजया सिंह : *फास्टर दैन फेरिज़, फास्टर दैन विचिजस् : सिनमैटिक लाईफ ऑफ दी इण्डियन रेलवेज़ (9 सितम्बर 2010)*
21. डॉ० सौम्याबर्त्रा चौधरी : *लिटयूरजी-सोवरजीनिटि, क्राईसटस्-फिसकुस : टू सिस्टमस् ऑफ डेबिट (23 सितम्बर 2010)*
22. डॉ० धन्जय सिंह : *प्रवासी श्रम इतिहास मौखिक दस्तावेज : भोजपुरी लोक साहित्य (30 सितम्बर 2010)*
23. डॉ० क्यूनी प्रधान सिंह : *डिबैलिंग दी हिल : ए कम्पैरिटिव प्रस्पेक्टिव इन दी स्टडी ऑफ शिमला, दाजलिंग, ओकटामुण्ड एण्ड माउन्ट आबू (19थ एण्ड 20थ सैन्चूरी) (30 सितम्बर 2010)*
24. डॉ० जया त्यागी : *कन्टैक्स्टनेशन एण्ड कम्पलायन्स : ए सोशियो हिस्टोरिकल स्टडी ऑफ रिलीजियस ऑवर्जैन्स, राईटस एण्ड रिचूवलस् प्रफॉमड वाई वूमैन (फॉम दी अर्ली हिस्टोरिक टू 1200 सीई) (30 सितम्बर 2010)*
25. डॉ० प्राची खण्डेपारकर : *दी मेकिंग ऑफ मराठी लिट्रेरी थियोरी डियूरिंग दी कोलोनियल ईरा (7 अक्टूबर 2010)*
26. प्रोफेसर माधवन पलाट : *वर्किंग क्लास वायलैन्स इन लेट इमपेरियल रशिया (21 अक्टूबर 2010)*
27. प्रोफेसर घनश्याम शाह : *हिन्द स्वराज : ए मौरोलिस्ट आउटक्राय अगेन्स्ट ग्लोबलाइजेशन (28 अक्टूबर 2010)*
28. डॉ० योगेन्द्र सिंह सिकन्द : *ए क्रिटिकल एनलाईसिस ऑफ डिस्कोर्सिस ऑफ इस्लामिक फेमिनिज़म (2 नवम्बर 2010)*

29. प्रोफेसर गंगम्युमई केमई : फ्यूडिलिज़म इन ग्री-कोलोनियल मणिपुर (11 नवम्बर 2010)
30. डॉ० स्वाधीनता महान्ता : डिबैल्पमैन्ट ऑफ असामीज़ मॉडर्न शॉर्ट स्टोरी डियूरिंग रामधेनू पीरियड (1940-1970) (2 दिसम्बर 2010)
31. डॉ० यूए विजय कुमार : सिनिथिस्स ऑफ वर्ल्ड रिलिज़नस : कन्ट्रिब्यूटिंग ए जनरल मैटाफिजिकल स्ट्रक्चर (2 दिसम्बर 2010)
32. प्रोफेसर जी सी त्रिपाठी : इण्डियन एसीटिक ट्रेडिशन इन दी अर्ली बुद्धिस्ट मोनास्टीसम (14 दिसम्बर 2010 )
33. प्रोफेसर राजकुमार हंस : दलित कौन्सिलरनेस एण्ड पंजाबी दलित लिटरेचर : कन्फ्रन्टिंग दी हेजेमोनिक डिस्कोर्स (24 मार्च 2011)
34. डॉ० सत्यव्रत दास : दी प्रोमिस ऑफ टाईम : टूवर्ड्स ए फेमिनोलॉजी ऑफ प्रोमिस (फ्यू प्रोविज़नली कन्क्लूसिव रिमार्कस् (30 मार्च 2011)
35. डॉ० सुषमिता चट्टर्जी : सैक्सवैल्टी, फेमिनी सिम्बोलिज़म एण्ड दी फिमेल इन बंगाल तांत्रिक बुद्धिज़म (31 मार्च 2011)
36. डॉ० पीयूष माथुर : टूवर्ड ए ग्लोबल कन्शौषन ऑफ एनवायरमेंटल सिटीजनशिप (31 मार्च 2011)

### घ. राष्ट्रीय अध्येता व्याख्यान माला

संस्थान ने राष्ट्रीय अध्येता व्याख्यान माला आरम्भ की हैं। राष्ट्रीय अध्येता का कार्यभार सम्भालने के पश्चात् वह अपने विषय की रुचि अनुसार व्याख्यान देते हैं। इन व्याख्यानों में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संकाय के सदस्यों तथा शहर के अन्य विद्वानों एवं संस्थान में ठहरे विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है।

1. प्रोफेसर माधवन पलाट : अलैगेंडर सोजेनिसिन, हिस्टोरियन डिक्लार्ड एण्ड प्रॉफिट ऑफ रिसर्निसिन (14 जुलाई 2010)
2. प्रोफेसर घनश्याम शाह : ग्रोथ, गवर्नेन्स एण्ड ह्यूमन डिबैल्पमैन्ट (4 अगस्त 2010)
3. प्रोफेसर गंगम्युमई केमई : फिलॉसफी ऑफ हिस्ट्री एण्ड दी हिस्ट्रोग्राफी ऑफ मणिपुर (8 सितम्बर 2010)
4. प्रोफेसर जीसी त्रिपाठी : एस्थैटिक एक्सपीरियैन्स ऑफ विज़ुवल आर्टस् : दी क्लासिक इण्डियन प्रस्पैक्टिव (14 अक्टूबर 2010)

### ड. आगन्तुक प्रोफेसर आगन्तुक विद्वान

संस्थान की शासी निकाय लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों को प्रोफेसर के रूप में अपनी ही विशेष रुचि के विषय पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित करती है। वह 3 से 4 सप्ताह तक संस्थान में ठहरते हैं एवं अन्य अध्येताओं के साथ औपचारिक विचारविनिमय करते हैं। आगन्तुक विद्वान संस्थान में निदेशक के आमंत्रण पर संस्थान में आते

है। वह अपने विषय की रुचि अनुसार संगोष्ठियां देते हैं। इन व्याख्यानों और संगोष्ठियों में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संकाय के सदस्यों तथा शहर के अन्य विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है।

### आगन्तुक प्रोफेसर

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान निम्नलिखित लब्धप्रतिष्ठित प्रोफेसरों को आमंत्रित किया गया :

1. प्रोफेसर बैटीना बॉमर, निदेशक, अभिनवगुप्त शोध पुस्तकालय, बनारस ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
  - *ऑसपिशियस बिगनिंग्स ऑर फिलॉसफी इन ए नटशैल : एन इन्द्रोडक्शन टू कश्मीर शैविज्म थ्रू इट्स मंगलश्लोकास् (22 अप्रैल 2010)*
  - *त्रिका एण्ड त्रिन्ट्री : टूवर्ड्स ए डायलॉग इन डैथ बिटवीन कश्मीर शैविज्म एण्ड क्रिश्चैनिटी (29 अप्रैल 2010)*
2. प्रोफेसर जेएस ग्रेवाल, संस्थान के पूर्व अध्यक्ष एवं निदेशक, मोहाली ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किए :
  - *लव एण्ड जैन्डर इन पंजाबी सूफी पोयट्री (24 मई 2010)*
  - *सोशल सिगनिफिकैन्स ऑफ दी ट्रीटमेंट ऑफ टेलस् एण्ड लव इन पंजाबी लिट्रेचर (26 मई 2010)*
3. प्रोफेसर मीना एलैग्जैन्डर, न्यूयार्क की सिटी विश्वविद्यालय के लब्धप्रतिष्ठित अंग्रेजी के प्रोफेसर ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
  - *रिफ्लैक्शनस ऑन पोईटिक प्रॉसेस (8 जून 2010)*
4. प्रोफेसर पवित्र कुमार रॉय : तिब्बतियन अध्ययन सारनाथ का केन्द्रिय विश्वविद्यालय, बनारस ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
  - *दी लैसन एण्ड रैलीवैन्स ऑफ दी बौद्धिसत्त्वा आईडल (9 जून 2010)*
  - *ऐथिक्स ऑफ प्राईड : अपरॉस बौद्धिकार्यवर्ता एण्ड दी इमेशन ऑफ क्रॉइसट (14 जून 2010)*
  - *इमोशनस् एण्ड दी बुद्धिस्ट इमोजिज ऑफ ह्यूमन प्रफैक्शन (25 जून 2010)*
5. प्रोफेसर रवि आनन्द पलाट, समाज शास्त्र विभाग स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, विहंगम्टन, न्यूयार्क ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
  - *डेन्जरस फॉरचूनस् : फाइनेन्शल क्राईसिस इन वर्ल्ड-हिस्टोरिकल प्रस्पैक्टिव (15 जून 2010)*
  - *कवरजैन्स विफोर डाईवर्जैन्स : यूरोसैन्ट्रीज्म एण्ड आल्टरनेटिव पैटर्नस् ऑफ हिस्टोरिकल चैन्ज (28 जून 2010)*
6. प्रोफेसर राफेले टोरेला, संस्कृत पीठ, ओरिएन्टल अध्ययन संकाय, रोम विश्वविद्यालय, "सापिन्जा" इटली ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये।

- *ओरेलिटी एण्ड राईटिंग इन प्री-मॉडर्न इण्डिया* (20 अगस्त 2010)
7. प्रोफेसर हरबंस मुखिया : पूर्व मध्ययुगीन इतिहास के प्रोफेसर एवं रैक्टर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये।
- *पौजिटिज्म, मार्क्सिज्म एण्ड थियोलॉजी : ब्रेक्स एण्ड कॉनियूनिटिज़* (15 सितम्बर 2010)
  - *टार्म इन अब्दुल फज़लस् हिस्ट्रोग्राफी* (22 सितम्बर 2010)
8. प्रोफेसर इंदू बागा, अवैथनिक सचिव, पंजाब अध्ययन संस्थान, चण्डीगढ़ ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
- *रैंडीकलिज़्म, रिकालिसैन्स एण्ड रजिस्टैन्स : ब्राईडिंग इण्डियन इण्डिया एण्ड ब्रिटिश इण्डिया* (I) (4 अक्टूबर 2010)
  - *रैंडीकलिज़्म, रिकालिसैन्स एण्ड रजिस्टैन्स : ब्राईडिंग इण्डियन इण्डिया एण्ड ब्रिटिश इण्डिया* (II) (5 अक्टूबर 2010)
9. प्रोफेसर अतलूरी मुरली, इतिहास विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये।
- *राईटिंग अबाउट इण्डियन नैशनलिज़्म* (27 अक्टूबर 2010)
10. प्रोफेसर शोमिष्ठा पांजा, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
- *शेक्सपीयर ऑन दी इण्डियन स्टेज़* (10 नवम्बर 2010)
  - *फेमिनिज़्म इन इण्डिया* (18 नवम्बर 2010)

### आगन्तुक विद्वान

1. प्रोफेसर विजय एच बरूआ, भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, नई दिल्ली ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
- *दी ऐथिक्स ऑफ सिटीजन एजैन्सी* (18 जून 2010)
2. डॉ० एम जी वासनजी, टोरेन्टो, कनाडा ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
- *फ्रॉम फिजिक्स टू हिस्ट्री एण्ड दी नॉवल* (21 जून 2010)
3. प्रोफेसर बी एन पटनायक, मैसूर ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
- *सोशियो-पॉलिटिकल ड्राईमैन्शनस् ऑफ फुटवाल राईटिंग* (7 जुलाई 2010)
  - *लक्ष्मी पुराण ऐंज ए प्रोटैस्ट टैक्टस्* (9 जुलाई 2010)

4. डॉ. एनके भट्टाचार्य, निदेशक केके बिरला फाउंडेशन, दिल्ली ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
  - *ट्रान्सलेशन ऐज ऐन इंटर-कलचरल डायलॉग* (16 जुलाई 2010)
5. प्रोफेसर लक्ष्मी बन्दलामुदी, न्यूयार्क की सिटी विश्वविद्यालय की मनोविज्ञान की प्रोफेसर ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
  - *डायलॉजिक्स ऑफ सैल्फ, दी महाभारत एण्ड कलचर* (1 सितम्बर 2010)
6. डॉ० सी टी दोरजी, भूटान ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये :
  - *एवोल्यूशन ऑफ बुद्धिज्म इन भूटान* (1 अक्टूबर 2010)

### च अतिथि विद्वान

1. डॉ. गीताजंलि श्री, लेखक, नई दिल्ली; *रिडिंग फॉर्म दी फिक्शनल वर्क्स* (23 जून 2010)
2. डॉ. चेतन घाटे, इण्डियन स्टैटिस्टिकल इन्स्टीच्यूट, नई दिल्ली : *दी 'वी. फ़ैक्टर' : डिस्ट्रीब्यूशन, टाईमिंग, एण्ड कोरिलेक्स ऑफ दी ग्रेट इण्डियन ग्रोथ टर्नराउन्ड* (29 जून 2010)

### छ अतिथि अध्येता

1. प्रोफेसर रीता कोठारी (अहमदाबाद) मेगवल और बाननी : *नैरेटिव्स ऑफ अनटचबिल्टी, ऐस्पेइरेशनस् एण्ड एंटरप्रेन्यूरशिप* (16 सितम्बर 2010)
2. प्रोफेसर आर एन मिश्रा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, स्कूल ऑफ स्टडीज़ इन एन्शियेन्ट इण्डियन हिस्ट्री, कलचर एण्ड आर्केलॉजी, जिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर संस्थान में 18 सितम्बर से 17 दिसम्बर, 2010 तक ठहरे। उन्होंने संस्थान में इस अवधि के दौरान कई व्याख्यान "इन ल्यू ऑफ गिल्डस् : आर्टिस्टस् ऑरगेनाइजेशनस् इन एन्शियेन्ट एण्ड अर्ली मिडिल इण्डिया" (18 नवम्बर 2010) प्रस्तुत किये।

### ज आईसीसीआर अध्येतावृत्ति

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध अनुसंधान परिषद के तत्वाधान से दो अध्येतावृत्तियाँ डॉ० लौरा येरिकेशवा, एसोसियेट प्रोफेसर, इन्स्टीच्यूट ऑफ ओरियेन्टल स्टडीज़, यूनेस्को चेयर कोर्डिनेटर, कजाकिस्तान और डॉ० कजनूरी ससाकी, डिपार्टमेंट ऑफ इण्डियन फिलॉसफी एण्ड बुद्धिस्ट स्टडी, दी यूनिवर्सिटी ऑफ टोकियो, जपान को प्रदान की।

इस अवधि में डॉ० लौरा येरिकेशवा ने "ऑफ कलचर एण्ड रिलिज़न : दी सिस्टम थियोरी इन सेंट्रल एशियन कन्टेक्सट" (25 नवम्बर 2010) विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

### झ अध्येताओं से प्राप्त मोनोग्राफ

डॉ० गांगिया मुखजी कृत : *फिलॉस्फी ऑफ इंटरग्रेशन एण्ड रिक्न्साईलेशन : ए स्टडी ऑफ दी पॉलिटिकल थॉट, ईटस कन्टैक्टस, एण्ड दी फॉर्म ऑफ ईटस प्रैजैन्टेशन, इन गाँधी एण्ड टैगोर (प्रारूप)*

प्रोफेसर एस एन दुबे कृत : *आईडियाज़ एण्ड मूवमेंट्स इन दी ऐज़ ऑफ मौर्याज़ (विद स्पेशल रैफरेंस टू पाली एण्ड अधर्मगधी सोर्सिस)*

डॉ० कंचना सीवी नटराजन कृत : *ट्रान्सलेशन एण्ड स्टडी ऑफ अब्यूदेई अकालस् साँगस् : एन एग्जामिनेशन ऑफ रिलिजियस् एण्ड फिलॉसिफिकल व्यूज़*

प्रोफेसर सतीश सी एकान्त कृत : *पोस्टकोलोनियल इण्डियन लिट्रेचर : टूवर्ड ए क्रिटिकल फ्रेमवर्क*

प्रोफेसर वीर भारत तलववार कृत : *नवजागरण : इतालवी बंगला महाराष्ट्रीय, और हिन्दी : एक तुलनात्मक अध्ययन*

प्रोफेसर शरीश चन्द्र चौधरी कृत : *नॉलेज ऑफ लैंग्वेज़ एण्ड दी मल्टीलिग्वल माईंड : वन ग्रामर और मैनी ग्रामरस्? (वर्किंग पेपर)*

डॉ० अर्जुन घोष कृत : *फ़िडम फॉम प्रोफिट इसचयूइंग कापीराईट इन रजिस्ट्रैन्स आर्ट*

डॉ० सरोज ठाकुर कत : *फाइंडिंग ए वायस : रिइन्क्रिप्शन ऑफ हिन्डिबा इन कन्टपरेरी इण्डियन लिट्रेचर, टाईबल लिट्रेचर एण्ड फोक टेलस् (प्रारूप)*

जेएस गाँधी कशत : *प्रोफैशन्स एण्ड देयर रोल इन दी फॉर्मेशन ऑफ स्टेट पॉलिटी : केस स्टडी ऑफ हिमाचल प्रदेश*

प्रोफेसर जयवन्ती डिमरी कशत : *दी इमेजिज एण्ड रिप्रैजेंटेशनस् ऑफ दी रुरल वूमैन इन दी नॉवलस् ऑफ वूमैन राईटरस्*

डॉ० समारिका नवानी कशत : *एक्सप्लोरिंग लिंकेजिज : दी कोरोमन्डेल कोस्ट, आर्कीपेलोगो साउथ ईस्ट एण्ड दी पॉर्चीग्यूज़ इन दी 17थ सेंचूरी*

डॉ० सत्यब्रत दास कशत : *दी कमिंग टाईम दी ऐथिक्स ऑफ रिडेमपीच्युशन एण्ड दी प्रॉमिस ऑफ टाईम*

प्रोफेसर राजकुमार हंस कशत : *हिस्ट्री ऑफ पंजाबी दलित लिट्रेचर एण्ड ईटस् स्पेस इन दी हिस्ट्रोग्राफी ऑफ पंजाब*

### ड मानविकी व सामाजिक विद्वानों के लिये अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र

संस्थान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आधार पर मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूएसी) के रूप में काम करता है। मानविकी व सामाजिक विज्ञान अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र ने तीन

प्रकार के कार्यक्रम सतबद्ध किए:- (1) सह-अध्येताओं की योजना (2) देश के भिन्न भागों में शोध संगोष्ठियाँ आयोजित करना और (3) संस्थान में राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय रुचि की महत्वपूर्ण समस्याओं के विवेचनार्थ अध्ययन सप्ताह आयोजित करना। यह केन्द्र देश के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों को तीन वर्ष के कार्यकाल में प्रतिवर्ष एक-एक महीने के लिये (क) अपने शोध को पूरा करने के लिये कार्य कर रहे हैं, (ख) वाचस्पति कार्य को प्रकाशन हेतु संशोधन करने के लिये, (ग) संस्थान के पुस्तकालय की सुविधाओं को प्रयोग करने के लिये और (घ) संस्थान के अध्येताओं से तथा संस्थान में पधारे देश और विदेश के आगन्तुक प्रोफेसरोँ एवं आगन्तुक विद्वानों से विचारविमर्श करने के लिये आमंत्रित करता है। सह-अध्येताओं को संस्थान की राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों जोकि संस्थान का एक निरंतर कार्यक्रमलाप है, में भाग लेना आवश्यक है। सह-अध्येताओं को अपने कार्य के अतिरिक्त संस्थान की अकादमिक गतिविधियों में प्रतिभागिता अनिवार्य है उन्हें केन्द्र में ठहराव के दौरान कम से कम एक गोष्ठी प्रस्तुत करना आवश्यक है। सह-अध्येताओं को संस्थान की पत्रिका में अपना शोध-पत्र देने का विकल्प है।

### (1) आईयूसी सहअध्येता

समीक्षाधन वर्ष के दौरान देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से 115 प्राध्यापकों ने सह अध्येता के रूप में आये। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान सह-अध्येता जो संस्थान में आए उनके द्वारा दी गई प्रस्तुत संगोष्ठियां निम्न प्रकार से हैं :-

#### अप्रैल

डॉ० प्रेम आर भारद्वाज (पाँवटा साहिब) : *डायनैमिक्स ऑफ रिलिजियस कनवर्शन इन एचपी पैराडॉक्स ऑफ मैनुफैक्चर्ड अनसरानिटिज़* (19 अप्रैल 2010)

डॉ० अतानू भट्टाचार्य (वल्लभ, गुजरात) : *दी टेकोनोलोजी रिजोम डिगिस्टेशन एण्ड पैडाजोजी* (19 अप्रैल 2010)

डॉ० सुधीर बाहुसाहिब वाडेकर (अहमदनगर) : *फार्मर्स मूवमेंट : ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ भारतीय किसान यूनियन एण्ड दी शतकारी संगठन* (19 अप्रैल 2010)

डॉ० पार्थ दत्ता (दीनाजपुर, पश्चिम बंगाल) : *लेवर कंट्रोल एण्ड सोशल सिक्वोरिटी ए स्टडी ऑफ जूट मिलहैण्डस् ऑफ बंगाल ( प्री- इन्डिपेंडेंस )* (20 अप्रैल 2010)

डॉ० अर्पणा जोशी (मुरादाबाद) : *वूमैन एण्ड पॉलिटिकल पार्टीसिपेशन- अमर्जिंग पैटर्नस्* (20 अप्रैल 2010)

डॉ० समीरा मैत्री (लखनऊ) : *सरवाईवल एण्ड स्स्टैनेबिल्टी : ए स्टडी ऑफ ह्यूमन फोरेस्ट इन्ट्रैक्शन अमंग दी भोटिया ट्राईबलस् ऑफ उत्तरांचल (इण्डिया)* (20 अप्रैल 2010)

डॉ० कर्ण सिंह (मोहिन्द्रगढ़, हरियाणा) : *दलितिज़म एण्ड फेमिनिज़म : थियोरैटिकल एक्प्लोरेशनस्* (20 अप्रैल 2010)

डॉ० नन्दन नवान (कोलकाता) : *एमबाईडिड एनर्जी इन कम्पोजीटीज़ ऐंज़ ए टूल फॉर इकोनोमिक डिसिज़न मैकिंग* (21 अप्रैल 2010)



- डॉ० संगीता सारस्वत (शिमला) : *समायिक काव्य में व्यंग* (21 अप्रैल 2010)
- डॉ० नमिता सेठी (नई दिल्ली) : *फिल्म अडाशानस् ऑफ देवाज़* (21 अप्रैल 2010)
- डॉ० मशदुला शारदा (शिमला) : *इण्डियन फ़ैडरलिज़म एण्ड पार्टी पॉलिटिक्स* (23 अप्रैल 2010)
- डॉ० श्रीमती लक्ष्मी सिन्धु (शिमला) : *रिसैन्ट फर्टीलिटी ट्रेन्स इन इण्डिया : एन एंपराईज़ल* (23 अप्रैल 2010)
- डॉ० अनुपमा टंडन (तोमर) (शिमला) : *फैक्टर्स इनफ्यूलेंसिंग दी नॉन यूटिलाईजेशनस् ऑफ प्राईमरी हेल्थ सेंटरस् इन रुरल एरियाज़ ऑफ हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट इन हिमाचल प्रदेश* (23 अप्रैल 2010)

## मई

- डॉ० अजय प्रताप (बनारस) : *रॉक आर्ट ऑफ मिर्जापुर सम प्रस्पेक्टिवस्* (21 मई 2010)
- डॉ० रमेश चन्द्र मीणा (बुन्दी, राजस्थान) : *हिंसा बनाम आदिवासी सन्दर्भ : कथा साहित्य* (21मई 2010)
- डॉ० उमेश कुमार सिंह (वर्धा ) : *साहित्य में मछुआ समाज : एक तुलनात्मक अध्ययन* (21 मई 2010)
- डॉ० अनिता दाश (कटक) : *फाईनेन्शाल अटौनमी, डिजीज़न मैकिंग एण्ड एम्पावरमेंट* (22 मई 2010)
- डॉ० राम पूजन सिंह (खगारिया, विहार) : *कविता और सौन्दर्य* (22 मई 2010)
- डॉ० समिता झाकड (राजस्थान) : *वापसी सिधवास दी पाकिस्तानी ब्राईड : ए फेमिनिस्ट स्टडी* (22 मई 2010)
- डॉ० शिव प्रसाद बिहेरा (उडीसा) : *राजा राम मोहन राय : पाईनियर ऑफ इण्डियन रिसेन्स* (24 मई 2010)
- डॉ० आर सुरेश (कोलाम, केरल) : *तिब्बत एण्ड चाईना : ए ह्यूमन राईट प्रस्पेक्टिव* (24 मई 2010)
- डॉ० के सत्यनारायणना (हैदराबाद) : *लॉ एण्ड कास्ट : दी तसुन्दुर दलित मैसक्रे कास्ट* (24 मई 2010)
- डॉ० विक्रमादित्य के चौधरी (बनारस) : *नॉलेज़ एण्ड कलचर अंडर ग्लोबलाईजेशन : (री) फौर्मेशन ऑफ स्प्याटियल आईडेंटिटीज़* (24 मई 2010)
- सुश्री सोनाली अग्रवाल (दिल्ली) : *आउट ऑफ दी क्लोसेट? दी दोस्ताना ट्रोप इन हिन्दी सिनेमा* (25 मई 2010)
- डॉ० ममता मोकटा (शिमला) : *चैलेंजिज़ ऑफ गुड गर्वनैस इन इण्डिया* (25 मई 2010)
- डॉ० बलगनापथी (कुप्पम) : *रीडिंग दी हिस्ट्रीज़ ऑफ इण्डियन फिलॉस्फी : सम रिफ्लैक्शन* (25 मई 2010)
- डॉ० रघुवंश मणि त्रिपाठी (बस्ती, यूपी) : *हिस्ट्री एण्ड लिट्रेचर* (25 मई 2010)
- सुश्री मुकुल चतुर्वेदी (नई दिल्ली) : *रिमैम्बरिंग एण्ड फॉरगैटिंग दी डट्टी वॉर इन अर्जेन्टीना : ए स्टडी ऑफ जो फिशर मदरस् ऑफ दी डिसअपियर्ड एण्ड ऐलिसा पैट्रोनिस टेलस् ऑफ डिसअपियरैन्स एण्ड सरवाईबल* (26 मई 2010)

डॉ० स्वाती मण्डल अधिकारी (कोलकाता) : *टैम्पल ऑफ देव टिकरा : एन एग्जामपल ऑफ ऐस्थैटिक अमालेगेशन*  
(26 मई 2010)

डॉ० गोपाल शरण पाण्डेय (झारखंड) : *हिन्दी साहित्य में हास्य व्यंग* (26 मई 2010)

## जून

डॉ० रवीन्द्र सिंह (नई दिल्ली) : *पंजाबी डायसपोरा लिट्रेचर एण्ड कन्टम्परेरी कनसर्न (विद स्पेशल रैफरेंस टू पंजाबी डायसपोरा इन यूके)* (14 जून 2010)

डॉ० सिद्धार्थ सिंह (बनारस) : *वट जेपनीज़ लिरिज़न कैन टीच दी रिलिजियस फन्डामेंटलिस्ट?* (14 जून 2010)

डॉ० दिनेश कुमार ओझा (बनारस) : *एनशियेन्ट ग्रीक आर्डियाज़ एण्ड दी इम्पीरियल हिस्टीरियोग्राफी इन इण्डिया*  
(14 जून 2010)

सुश्री देवेन्द्र पाल कुमार (लुधियाना) : *वूमैन इन पीआरआईस : अमर्जिंग इश्यूज़ एण्ड चैलेंजिज इन बॉडर डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ पंजाब* (15 जून 2010)

डॉ० शिवादासन पी (कालीकट) : *लेट नाईनटीथ सैन्चुरी सैंसिस इन त्रावनकोर : रयूमर एण्ड रजिस्ट्रैन्स* (15 जून 2010)

सुश्री अनुराधा एम शर्मा (दाहूद, गुजरात) : *दी पंचतंत्र एण्ड जैन्डर कनस्ट्रक्शनस्* (15 जून 2010)

डॉ० संजीव कुमार एच. एम. (इलाहाबाद) : *मॉडर्निटी एण्ड दी प्रावलम्स ऑफ डेमोक्रेसेशन इन एशिय (16 जून 2010)*

डॉ० मनबन्धु पाठक (पुणे) : *ट्यूमन राईटस् एण्ड राईटस् ऑफ वूमन : इश्यूज़ एण्ड चैलेंजिज इन इण्डिया विद स्पेशल रैफरेंस टू अरुणाचल प्रदेश* (16 जून 2010)

डॉ० मनीष सिन्हा (बौद्धगया) : *रिइनवैन्टिंग 1857 : दी अदर वूमैन ऑफ 1857* (16 जून 2010)

डॉ० मनोज कुमार पाण्ड्या (वनासबाडा, राजस्थान) : *परियोजन मूलक हिन्दी अवधारणा प्रासंगिकता और विविध आयाम*  
(17 जून 2010)

डॉ० आरएन शुक्ला (गाजियाबाद) : *विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास "दिवार में एक खिड़की रहती थी" – मैं घर, मानव और प्रकृति* (17 जून 2010)

डॉ० सरस्वती वी कूपवेडे (बेलगाँव) : *डायसपोरा, डिस्प्लेसमेंट एण्ड एसेमीलेशन विद स्पेशल रैफरेंस टू झुम्मा लहडीस् नॉवल "दी नेमसेक"* (17 जून 2010)

श्री सुनील अग्रवाल (लुधियाना) : *जॉन नॉश, एलीनर ऑस्ट्रम एण्ड एन आइडिया ऑफ मनी : ए स्पैक्युलेटिव एक्सरसाईज़ इन इंटरलिंग्विजिंग* (18 जून 2010)

डॉ० अन्जु बाला (अम्बाला) : *मदर-डॉटर रिलेशनशिप : सम रिफ्लेक्शनस् फ्रॉम स्लैक्टिड नॉवलस् इन इंग्लिश*  
(18 जून 2010)

- डॉ० महेश्वर मिश्रा (खगारिया) : *अर्थ चिन्तन के सन्दर्भ में सोफ्टवाद की भूमिका* (18 जून 2010)
- डॉ० प्रीति शर्मा (टाँक, राजस्थान) : *महाबलीपूरम रिलीफ : ए प्रोक्रामेलेशन ऑफ ब्राह्मिनिकल हेजोमोनी* (18 जून 2010)
- डॉ० भूपिन्द्र सिंह (हिसार, हरियाणा) : *जॉग्रोफिकल एप्पाईज़ल ऑफ मालीगनेट नैपोलिज़म इन हरियाणा* (18 जून 2010)
- डॉ० उपासना पाण्डेय (बनारस) : *दी प्रॉबलम विद पोस्टमॉडर्न गाँधी* (22 जून 2010)
- डॉ० योगेश स्नेही (अमशतसर) : *आईडेंटिटी, प्रैक्टिसिस् एण्ड हिस्ट्रोग्राफी : एक्सप्लोरिंग पॉपुलर स्पेसिस् इन मॉडर्न एण्ड कन्टमपरेरी सोशल फॉरमेशन ऑफ पंजाब* (22 जून 2010)

## जुलाई

- डॉ० संजीव कुमार सिन्हा (डुमका, झारखण्ड) : *एक्सलूज़न इन दी ऐज़ ऑफ ग्लोबलाइज़ेशन एण्ड फेट ऑफ डैमोक्रेसी : विद स्पेशल रैफरेंस टू एसटीस् ऑफ झारखण्ड* (20 जुलाई 2010)
- डॉ० एच श्रीकथ (शिलाँग) : *नेशन बिल्डिंग एण्ड राईट टू सैल्फ-डिटर्मिनेशन : रिफ्लेक्शनस् ऑन शैशानिस्ट मूवमेंटस् इन नार्थ-ईस्ट इण्डिया* (20 जुलाई 2010)
- डॉ० मनोज कुमार हरिलाल जोशी (राजकोट) : *रमेश पारिख के गीतों में मीरानभूति* (20 जुलाई 2010)
- डॉ० राजेश जे रावल (राजकोट) : *'श्री अविन्ददर्शन' के सन्दर्भ में पंत और सुन्दरम् के काव्य की प्रासंगिकता* (21 जुलाई 2010)
- डॉ० अनुभव श्रीवास्तव (संत कबीर नगर) : *भारतीय संस्कृति के समन्वयात्मक प्रवर्धन* (21 जुलाई 2010)
- डॉ० उमेश कुमार (दरभंगा, बिहार) : *भारतीय लोकचित्र में प्रतिकात्मक अवधारणाओं का मनोसामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन* (21 जुलाई 2010)
- डॉ० राजेश चन्द्र मिश्रा (सन्त कबीर नगर) : *गाँधी का मैनीफैस्टो : हिन्द स्वराज* (22 जुलाई 2010)
- डॉ० जयश्री समान्त्रे (हमीरपुर) : *क्वालिटी ऑफ लाईफ इन हिमालयन रिज़न : विद स्पेशल रैफरेंस टू हिमाचल प्रदेश ए कन्सिच्युयल फ्रेमवर्क* (22 जुलाई 2010)
- डॉ० दिवेन्द्र कुमार सिंगला (पटियाला) : *हिन्दू सक्सेशन एक्ट, 1956 : ए स्टैप फारवर्ड टू इक्वैलिटी* (22 जुलाई 2010)

## अगस्त

- डॉ० ज्योति सिन्हा (जॉनपुर) : *राग, रोग और रोजी-अंतःसम्बन्धों की विवेचना (एक परिचय)* (23 अगस्त 2010)
- डॉ० सुदक्षणा गुप्ता (कोलकाता) : *ग्लोबलाइज़ेशन एण्ड एजूकेशन विद स्पेशल रैफरेंस टू अर्बन इण्डियन वूमैन* (23 अगस्त 2010)
- डॉ० विरेन्द्र सिंह यादव (जालौन, यूपी ) : *दलित चिन्तन : संघर्ष और मुक्ति के नए क्षितिज* (23 अगस्त 2010)

डॉ० प्रीति सागर (वर्धा) : स्त्री आत्मकथाएँ और स्त्री प्रश्न (24 अगस्त, 2010)

डॉ० सुनील खोंसला (लुधियाना) : ह्यूमन राईट्स इन सर्च ऑफ मॉडल इन इण्डियन ट्रेडिशन (24 अगस्त 2010)

डॉ० मीति मलिकार्जुन (शिमोगा, कर्नाटक) : लैंग्वेज एनडैन्जरमेंट : दी फेट ऑफ इडिजिनियस लैंग्वेजिज (ए थियोरेटिकल एप्रोच) (25 अगस्त 2010)

श्री एस सिराज अहमद (शिमोगा, कर्नाटक) : सिटी ऐंज सोसायटी सिटी ऐंज मेटाफर (25 अगस्त 2010)

डॉ० आर नलनी (पांडेचेरी) : मैसक्यूलिनिटिज़ एण्ड इमौशनल वायलैन्स इन दी वर्कप्लेस : एन ओवरव्यू (25 अगस्त 2010)

## सितम्बर

डॉ० रजीव बारगोटी (पुणे) : कन्टम्परेरी आर्कीटेक्चर-ए केस स्टडी ऑफ नैशनल डिफैन्स अकादमी, (इण्डिया) (18 सितम्बर 2010)

डॉ० लीना चौहान (हाथरस, यूपी) : सप्तम दशक से बारहवें तक की महिला कथाकारों की कथाएँ और असमान्य मनो-विज्ञान (18 सितम्बर 2010)

डॉ० हरिन्द्र कौर (पटियाला) : श्रीकिंग नैचुरल रिसोर्स बेस : दी केस स्टडी ऑफ बंगला ट्राईब ऑफ पंजाब (18 सितम्बर 2010)

डॉ० विजय कुमार (डुमका, झारखण्ड) : रिजर्वेशन पॉलिसी एण्ड ज्यूडिशियल रिसर्पांस इन इण्डिया : क्रियेटिंग मोर कनफ्यूज़न दैन स्ट्रीमलाईलिंग दी इश्यू (20 सितम्बर 2010)

डॉ० एस इन्दिरा (पांडेचेरी) : प्रैगमैटिक इम्प्लीकेशनस् ऑफ ट्रस्टशिप (20 सितम्बर 2010)

डॉ० फुलक चन्द्र देवनाथ (मिजोरम) : सोशियो-इकोनोमिक कन्डीशन ऑफ दी ओबीसी इन डुबरी डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम (20 सितम्बर 2010)

डॉ० शान्तन सिंह नेगी (श्रीनगर, गढ़वाल) : संस्कृतनाईजेशन अमंग दलितस् इन उत्तराखण्ड डियूरिंग 20थ सैन्चुरी : ए हिस्टोरिकल स्टडी (21 सितम्बर 2010)

श्री गोविन्दा एनएस (सुब्रामान्य, कर्नाटक) : दी यूरोपीयन प्रसैप्शन ऑफ ब्राह्मिणस् टिल 19थ सैन्चुरी (21सितम्बर 2010)

डॉ० कॉस्तव चक्रवर्ती (दार्जलिंग) : पॉलिटिकली डिफाईड एण्ड डिस्कशलि गलैमोज़ाईड नार्थ इण्डिया हिजडा आईडैन्टिटी-कन्सट्रक्शन ऑफ दी तृतीय प्रकृति इन इण्डियन ट्रेडिशन : एक्सप्लोरिंग दी पॉसिबिल्टी ऑफ ए थर्ड प्रस्पैटिव ऑफ सैक्सुयल/जैन्डर स्ट्रैफिकेशन (21 सितम्बर 2010)

डॉ० महेश श्रीवास्तव (राजनन्दनगाँव, छत्तीसगढ़) : दी सिच्यूवेशन ऑफ मिडिवल फेसीलिटीज़ इन दी ट्राईबल एरियाज़ (विद स्पैशल रैफरेंस टू प्रिमिटिव ट्राईबस् इन छत्तीसगढ़) (22 सितम्बर 2010)

डॉ० शिलिका घोस (कोलकाता) : *चैजिंग लैग्वेज ऑफ प्रीटिड एडवरटाईमैन्ट्स : बंगाली न्यूज पेपर फ्रॉम 1947 टू 1970* (22 सितम्बर 2010)

डॉ० मदन लाल (शिमला) : *लैन्ड यूज़ चैजिज इन हिमाचल प्रदेश : ए स्पैटियो-टैम्पोरल एनालाईजिज* (22 सितम्बर 2010)

डॉ० अजय कुमार झा (दिल्ली) : *कवि शिक्षा की अवधारणा एवं कशमिन्द्रा का अतीत विषयक सिद्धान्त* (23 सितम्बर 2010)

डॉ० अरविन्द सिंह (मुरादाबाद) : *चाईनाज़ सुपर पावर स्टेटस : इम्प्लीकेशनस् दी ग्लोबल ऑर्डर एण्ड इण्डिया* (23 सितम्बर 2010)

डॉ० शिव शरण कौशिक (उदयपुर) : *आत्मसक्षातकार की प्रक्रिया : प्रभा खेतान का रचना कर्म* (23 सितम्बर 2010)

डा० चन्द्रभान सिंह यादव (मुरादाबाद) : *मीडिया और महिला* (24 सितम्बर 2010)

श्री पंकज राय (मिजोरम) : *वायलैन्स इन विजय तेंदूलकरस् प्लेज* ( 24 सितम्बर 2010)

### अक्तूबर

डॉ० सियाराम मिश्रा हलधर (दिल्ली) : *एन आउटलाईन ऑफ बुद्धिस्ट इकोनोमिक थियोरी एण्ड प्रैक्टिस* (12 अक्तूबर 2010)

डॉ० उदयभान सिंह (रायबरेली) : *प्रॉब्लमस् एण्ड प्रॉस्पेक्टस् ऑफ एजिंग इन इण्डिया* (12 अक्तूबर 2010)

डॉ० राकेश रंजन (बिहार) : *हिन्दुस्तानी संगीत : एक अवलोकन* (13 अक्तूबर 2010)

डॉ० सुशान्त कुमार बर्धान (सूरी, बेरभुम, पश्चिम बंगाल) : *एन इन्टैन्सिव स्टाईलिस्टिक रीडिंग ऑफ जयन्त महजपात्रा जॉन* (13 अक्तूबर 2010)

डॉ० निशी पुल्लुगुथा (कोलकाता) : *नेमस एण्ड डायसपोरिक आईडैन्टिटी : ए रीडिंग ऑफ झुम्पा लहडीस् 'दी नेमसेक'* (15 अक्तूबर 2010)

श्री सन्तोष कुमार मेहर (नुपाडा, उडीसा) : *कन्ट्रैच्युवल अरेंजमेंटस् इन सीजनल माईग्रेशन* (15 अक्तूबर 2010)

डॉ० सुनेत्रा मित्रा (कोलकाता) : *ग्रेंडवर एण्ड वालोर : वालीबुड एण्ड इण्डियाज़ फाईटिंग पर्सनलस्* (20 अक्तूबर 2010)

डॉ० प्रतुल कुमार पाण्डेय (नुपाडा, उडीसा) : *नरेगा इन उडीसा : लूपोलज़ नीड टू प्लगड* (20 अक्तूबर 2010)

डॉ० विनोद कुमार सिन्हा (वेस्ट कामेंग, एपी) : *वूमेन इमानिसिपेशन : गाँधी एण्ड प्रेमचन्द* (22 अक्तूबर 2010)

डॉ० अनिल कुमार सिंह (खिड़किया, एमपी) : *खूनी भण्डारा : मुगल कालीन जल संरक्षण एवं आपूर्ति की अनूठी योजना का एक ऐतिहासिक अध्ययन* (22 अक्तूबर 2010)

डॉ० राजेश कुमार साहू (नुपाडा, उडीसा) : *नाईनटीन्थ सैन्चुरी वैस्टर्न उडीसा एण्ड महिमा मूवमेंट* (22 अक्टूबर 2010)

### नवम्बर

डॉ० मधुमिता सेन (कोलकाता) : *दी इवॉलविंग फेमिली-ब्रेकिंग दी बाउन्ड्रीज़ ऑफ दी कौलैक्टिव माइन्डसेट*

श्री डीएस सोमशेखर (शिमोगा, कर्नाटक) : *डिब्लपमैन्ट प्रोजेक्ट इन शिमोगा डिस्ट्रिक्ट : इकोलोजिकल, एनवायरमेंटल एण्ड कलचरल इश्यूज़* (1900-2010)

श्री सुखनन्दन सिंह (हरिद्वार) : *भारतीय प्रिंट मीडिया में आध्यात्मिक पत्रकारिता : स्वरूप, सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ*

डॉ० केके विश्वकर्मा (लखनऊ) : *ह्यूमनिज़म एण्ड लिट्रेचर : ए क्रिटिक*

डॉ० दलीप वी चवन (ननदेद) : *बियोन्ड सोशियोलिंग्विस्टिक्स : लैंग्वेज एजुकेशन, कास्ट एण्ड पावर इन कोलोनियल वैस्टर्न इण्डिया*

डॉ० अम्बालिका सूद जेकव (पटियाला) : *म्यूजिकल मोडस : दी ट्रेडिशन डैट कौटिन्यूज इन आर्ट*

### मार्च 2011

डॉ० अश्वनी कुमार सिंह : *उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की गायन शैली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में* (14 मार्च 2011)

डॉ० गुरंग ए भवसार : *तबला वादय और हजरत अमीर खुसरो : एक अनवेषण* (14 मार्च 2011)

डॉ० हरिश ठाकुर : *इवेडिंग डायनमिक्स इन इण्डो-चाईना रिलेशनस्* (14 मार्च 2011)

डॉ० सुरेश आर : *इण्डिया एण्ड दी तिब्बतियन इश्यू : ए ह्यूमन राईटस् प्रस्पेक्टिव* (14 मार्च 2011)

डॉ० संदीप सिन्हा : *मैडिसन इन कनाडा : एन इण्डियन एक्सपीरियेन्स* (15 मार्च 2011)

डॉ० राज कुमार : *गाँधी एण्ड गर्वनेस इन ग्लोबलाइज्ड रिजीम* (15 मार्च 2011)

डॉ० अनुपमा टंडन (तोमर) : *एक्सप्लोरिंग दी डिटरनिमेंटस् ऑफ हैल्थ सीकिंग बिहेवियर एण्ड प्रसैपशनस् ऑफ नीड फॉर प्रीवेन्टिव हैल्थ केयर अमंग रुरल एण्ड अर्बन वूमैन ऑफ शिमला* (15 मार्च 2011)

डॉ० नूज़ट ज़मन : *चाईल्ड लेबर : कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ चाईल्ड लेबर ऑफ मध्य प्रदेश एण्ड हिमाचल प्रदेश* (15 मार्च 2011)

श्री फुलक चन्द्र देवनाथ : *ऐजुकेशन ऑफ दी अदर बैकबर्ड क्लासिस इन डूबरी डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम* (16 मार्च 2011)

डॉ० संगीता सारस्वत : *संत कबीर एवं महात्मा गाँधी के विचार दर्शन में समयता* (16 मार्च 2011)

डॉ० गौरी शंकर झा : *डायसपोरिक पोइट्री ऐंज ट्रेवल लिट्रेचर : दी केस ऑफ डोम मोरेस* (16 मार्च 2011)

डॉ० गीताजंलि महेन्द्रा : *प्रॉबलमैटिक्स ऑफ ट्रांसलेशन इन प्रैक्सिस* (16 मार्च 2011)

डॉ० सर्वेश पाण्डेय : हिन्दी भाषा में पदक्रम (21 मार्च 2011)

डॉ० दुर्गा प्रसाद सिंह : त्रिनिडाड कॉर्निवाल : जैनसिस एण्ड इण्डियन इनफ्यूलेन्स (21 मार्च 2011)

श्री पंकज राय : स्लीपिंग विद इवल : ए स्टडी ऑफ वायलैन्स इन स्लैक्टिड प्लेज़ ऑफ विजय तेंदुलकर (21 मार्च 2011)

## (2) आईयूसी के अर्न्तगत आयोजित संगोष्ठियां ।

### 1. सप्रिंग स्कूल ऑन दी "महाभारता टूडे" (14-28 अप्रैल, 2010)

**मूलाधार :** महाभारत भारत का प्राचीनतम ग्रंथ है, जिसमें आधुनिक भारतीयों की महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठापन है। आधुनिकता में यदि (विशेषरूप से जिन्होंने पश्चिमी मृदविज्ञान के साथ जुड़ी हुई विषयवस्तु) महाभारत एक अभिलेख है और जीवित ग्रंथ-अपने में पूर्ण एक स्रोत पुस्तक और स्थाई ग्रंथ-एक सम्पूर्ण रचना है।

उत्खनन में रुचि रखने वाले व्यवसायिकों के लिये महाभारत सूचना का भण्डार है-और व्यवसायिक विशेषज्ञ हों-कहा जाए-मानवविज्ञानी या इतिहासकार या समाजशास्त्री या भाषाविद या साहित्यिक समीक्षक जो मंथन कर सकें-अन्तिम रूप से इसपर कुछ काम कर सकें। दूसरी ओर महाभारत पर काम करते हुए उनके लिये कोई महत्त्व नहीं है-जो इससे सहमत नहीं हैं- "वर्तमान" की अनिवार्यता जिसमें "घटनाओं" जो पहले से ही इसमें संग्रहित हैं उनके लिये पुनारवृत्ति ही है। एक अलौकिक अनुभूति जो मुख्यतः नीति-विषयक धर्मसंकट है-सैद्धान्तिक विरोधाभास, अपरिहार्य गतिरोध जो आधुनिक व्यक्ति की मनोदशा को अभिवाज्य के हर प्रस्ताव में निष्फल कर देता है, पहले से ही विद्यमान जाँच बिन्दुओं को संकट में डाल देता है।

संस्थान में 14 से 28 अप्रैल 2010 तक बसंत स्कूल का आयोजन महाभारता टूडे पर किया गया। संस्थान के अध्यक्षता प्रोफेसर संजय पालीसकर ने प्रतिभागियों एवं संसाधन विद्वानों का स्वागत किया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने निदेशकीय टिप्पणी प्रस्तुत की। प्रोफेसर संजय पालीसकर और प्रोफेसर शिवाजी बन्दोपाध्याय, सेंटर फॉर स्टडीज़ इन सोशल साइंसिस, कोलकाता, स्कूल के संयोजक थे।

**संसाधन विद्वान** - प्रोफेसर जीसी पाण्डेय, नई दिल्ली; प्रोफेसर गणेश दवे, बडोदा; प्रोफेसर सरोजा भाटे, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे; प्रोफेसर अनिरवन दास, सीएसएसएस, कोलकाता; प्रोफेसर राधाबल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली; प्रोफेसर बोद्धिस्तवाकार, सीएसएसएस, कोलकाता; प्रोफेसर वृन्दा डालमिया, हवाई विश्वविद्यालय; प्रोफेसर अरिनदम चक्रवर्ती, हवाई विश्वविद्यालय; प्रोफेसर प्रबल कुमार सेन, कलकता विश्वविद्यालय, कोलकाता; प्रोफेसर उमा चक्रवर्ती, नई दिल्ली; डॉ० इनाकशी मित्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रोफेसर सिवेश भट्टाचार्य, कोलकाता; डॉ० गागिया मुखर्जी, इलाहाबाद; प्रोफेसर निरम्भप्रसाद बहादुरी, कोलकाता और प्रोफेसर भालचन्द्र निमाडे, आईआईएस।

**प्रतिभागी :** डॉ० ए श्रीमहा लक्ष्मी, हैदराबाद; डॉ० रचना भंगोकर, बडोदरा; डॉ० तनुतरुशना पाणीग्रही, भुवनेश्वर; सनादना सेन : कोलकाता; सुश्री मौशमी राँय, दर्शनशास्त्र और धर्म विभाग, विश्वभारती, शान्ति निकेतन; सुश्री अपिस्ता हलदर, तुलनात्मक साहित्य विभाग, विश्वविद्यालय; सुश्री रंगना बनर्जी, कोलकाता; निशान्त के नारायणन, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; अमित नेन्दू भट्टाचार्य, दी इंग्लिश एण्ड फॉरन लैंग्वेजिज विश्वविद्यालय, हैदराबाद; एमजी हेगडे, कुमता, कर्नाटक; स्नानतनु बनर्जी, बिधन चन्द्र महाविद्यालय, वर्धमान; डॉ० पीनक शंकर भट्टाचार्य, अंग्रेजी विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस; डॉ० रवि खनगई, अम्बेडकर महाविद्यालय, फतिक्रो; अनेवल भट्टाचार्य, नाडिया; सुश्री अमेल शारोन, नई दिल्ली; श्री हर्षवर्धन कुमार, दिल्ली; डॉ० ध्रुव बहादुरी, कोलकाता, प्रोफेसर विद्यानन्द झा, कोलकाता; श्री अभिषेक मित्रा, जावेदपुर, कोलकाता; डॉ० चन्दन कुमार पाण्डा; दी इंग्लिश एण्ड फॉरन लैंग्वेजिज, विश्वविद्यालय, हैदराबाद; श्री कूशिक रामू; डॉ० ए किशोर रेड्डी, डॉ० बीआर अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद; ध्रुवज्योति सरकार, नवदीप विद्यासागर महाविद्यालय, नाडिया और श्री नाहिद अखतर सदिकी, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

## 2. "मॉडर्निटी एण्ड चैजिंग सोशल फ़ैब्रिक ऑफ पंजाब एण्ड हरियाणा" पर संगोष्ठी (27-29 सितम्बर 2010)

**मूलाधार :** पंजाब और हरियाणा में समसामायिक सामाजिक संरचना की जटिलताओं पर मंथन करने के लिये "मॉडर्निटी एण्ड चैजिंग सोशल फ़ैब्रिक ऑफ पंजाब एण्ड हरियाणा" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन 27 से 29 सितम्बर 2010 तक किया गया। उत्तर आधुनिक अध्ययन हाल ही में आविर्भाव के होते हुए जिन्हें समीक्षक 'आधुनिकता के मद को भावात्मक बोध' में प्रदर्शित करता है।

समसामायिक संरचना के लिये आधुनिकता अत्याधिक महत्त्व रखती है। इसके अतिरिक्त सैद्धान्तिक दृष्टिकोण, आधुनिकता एक व्यवस्था है, जो भारतीय संविधान को पर्याप्त प्रदर्शित करती है, वैकल्पिक या रूढ़िवादी परम्पराओं के विरुद्ध बहुविध ऐतिहासिक सम्भावनाओं को प्रस्तुत करती है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जब प्रासंगिक परम्पराओं में पहले भी कई बार विवाद हो चुका है जिनमें उपनिवेशी हस्ताक्षेप रहा है।

आधुनिकता वैचारिक विषयवस्तु विशेष रूप से भारतीय सन्दर्भ में रही है जिसका सामाजिक और राजनैतिक विद्वानों ने सैद्धान्तिक रूप प्रदर्शित किया है, लेकिन यह सामाजिक संरचना के वृहत-दृष्टिकोण में प्रारम्भिक स्वरूप में ही है। इसलिए क्षेत्रीय विविधता को एक ओर स्थापित करना था और दूसरी ओर इसकी दार्शनिक और वस्तुपरकता का भी मंथन करना था। क्षेत्रीय सन्दर्भ में इसकी विकास की प्रक्रिया को भी "राज्य अनुस्थापन आधुनिकता" को भी लक्षित करना था, यह प्रक्रियाएँ वैश्वीकरण के साथ संचयन कर रही हैं और इसको विरोधात्मक करना था, पंजाब और हरियाणा के बदले हुए सामाजिक परिवेश का मूल्यांकन और विचार-विनिमय करना था।

डीएवी महाविद्यालय, अमृतसर के इतिहास विभाग के डॉ० योगेश स्नेही और पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के दर्शन शास्त्र विभाग के डॉ० ललन एस बागेल संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने क्षेत्र के विद्वानों का स्वागत किया। डॉ० योगेश स्नेही ने संगोष्ठी की विषयवस्तु की जानकारी दी। प्रोफेसर जेएस ग्रेवाल ने मूल सिद्धान्त पर भाषण दिया।



**प्रतिभागी :-** डॉ० अक्षय कुमार, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़; प्रोफेसर के गोपाल अय्यर, चण्डीगढ़; श्री निदिश त्यागी, चीफ न्यूज आडिटर, दी ट्रिब्यून, चण्डीगढ़; प्रोफेसर अंजली गेरा रॉय, एचएसएस विभाग, आईआईटी खडगपुर; डॉ० शिवानी चौपडा, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग डीएवी महाविद्यालय, चण्डीगढ़; डॉ० हरमीत सिंह किंगरा, अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र विभाग पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना; डॉ० अजय कुमार, जीरकपुर; कवंर चन्द्रदीप सिंह, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चण्डीगढ़; प्रोफेसर मनजीत सिंह, समाज शास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़; श्री अम्बुज शर्मा, दर्शन शास्त्र विभाग, देव समाज कन्या महाविद्यालय, पंजाब; श्री ताहिर अशरफ सहिकी, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर; डॉ० मीनाक्षी प्रसाद मिश्रा, ऐपैक्स इन्स्टीच्यूट ऑफ टेकोनोलोजी एण्ड मैनेजमेंट, भुवनेश्वर; डॉ० धर्मजीत सिंह, अंग्रेजी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; डॉ० जतिन्द्र सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; डॉ० कृष्ण चन्द, सैंटर फॉर रिसर्च इन रुरल एण्ड इन्डस्ट्रीयल डिव्लपमेंट, चण्डीगढ़; श्री राजीव गोधरा, हरियाणा; डॉ० मुज्जफर अली माला, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़; डॉ० सैय्यद जुनेद, दर्शन शास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़; डॉ० पुण्यश्री पाण्डा, भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, भुवनेश्वर, डॉ० राजेश कुमार जयसवाल, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चण्डीगढ़; डॉ० राजेश कुमार शर्मा, अंग्रेजी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; श्री दिपत्रे कुकू सिमैनस, समाज शास्त्र विभाग, दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल, दिल्ली; सुश्री महिमा मनचन्दा, इतिहास विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली; डॉ० सुखपाल सिंह, अर्थशास्त्र एवं सामाजिक विभाग, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना; श्री विश्वाभारती, पत्रकार, हिन्दूस्तान टाइम्स, चण्डीगढ़; डॉ० भूपेन्द्र यादव, नेहरु स्मारक संग्राहलय और पुस्तकालय, नई दिल्ली; श्री आशिश ऐलेगजेन्डर, मोहाली; डॉ० नोनीसा दत्ता, दिल्ली; प्रोफेसर राजकुमार हंस, अध्येता आईआईएस; डॉ० हरिन्द्र कौर दूरस्थ शिक्षा विभाग पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; श्री पाट्रिक फोलीसर, डिपार्टमेंट फॉर मीडिया ऐन्थ्रोपोलोजी, हैडीलवर्ग विश्वविद्यालय जर्मनी।

### संगोष्ठी में निम्न शोध पत्र प्रस्तुत किये गए :

1. राजेश शर्मा : *ऑन एब्यूजिज ऑफ डिस्कोर्सिस ऑफ दी मॉडर्न एण्ड दी पोस्टमॉडर्न : सम केसिस फ्रॉम पंजाब*
2. नोनिका दत्ता : *मैमोरी एण्ड हिस्ट्री : क्राफटिंग ए डॉटरस् टेस्टोमनी*
3. महिमा मनचन्दा : *कॉपिंग विद मॉडर्निटी : सिख कन्या महाविद्यालय, फिरोजपुर*
4. ललन बघेल : *मॉडर्निटी एण्ड पॉलिटिक्स ऑफ रिप्रेजेंटेशन इन दी फॉर्मेशन ऑफ दलित पब्लिक स्फीयर इन पंजाब*
5. हरिन्द्र कौर : *मॉडर्नाइजेशन एण्ड दी डीनोटीफाइड टाईबस् इन पंजाब : ए केस स्टडी ऑफ बंगाला*
6. अजय कुमार : *खाप पंचायत : एक सामाजिक, आर्थिक अवलोकन*
7. भूपेन्द्र यादव : *फ्रॉम एसोशियेशनस् टू हॉफ पंचायतस् : दी जाटस् ऑफ हरियाणा*
8. अम्बुज शर्मा : *ऑनर किलिंग : ए स्टडी ऑन ऑनर प्रैडिसिमेंट*

9. ताहिर अशरफ सिद्धिकी : पाट्रीचरी एपीटोमाईजड फाईटिंग फिमेल फोईटसाईड इन पंजाब एण्ड हरियाणा
10. राजीव गोधरा : फॉरमेशन ऑफ पब्लिक स्फीयर एण्ड आल्टरनेटिव पॉलिटिक्स ऑन हरियाणा
11. जतिन्द्र सिंह : मॉडर्निटी : स्टेट एण्ड इन्स्टीच्युशनलाईजेशन ऑफ डिसेन्ट : ए क्रिटीकल एनालाईसिस ऑफ दीपंजाब स्टेट कमीशन फॉर शैडयूलड कास्टस्
12. कवर चन्द्रदीप सिंह : दी सोशियो-इकोनोमिक पॉलिटिक्स ऑफ पंजाब : दी अकाली-बीजेपी रिलेशनस् रेट्रोस्पेक्ट एण्ड प्रॉस्पेक्ट
13. धर्मजीत सिंह : डी-पोलीटाइजेशन ऑफ यूनिवर्सिटीस् एण्ड दी फ्यूचर ऑफ डिसेन्ट : स्टूडैन्टस् प्रस्पेक्टिव
14. मनजीत सिंह : बाउन्डिड लेबर इन कैप्टलिस्ट अगोरियन इकोनोमी ऑफ पंजाब
15. विश्वभारती : डेबिट, एक्सप्लोटेशन, स्यूसाईटस् एण्ड रजिस्ट्रैन्स : ए जनलिस्टस् फील्ड नोटस् ऑन एग्रीकलचरल लेबरलस् ऑफ पंजाब
16. के गोपाल अय्यर : लैण्ड राईटस् एण्ड हाऊजिंग राईटस् फॉर वीकर सैक्शनस् इन पंजाब एण्ड हरियाणा
17. सुखपाल सिंह और हरमीत सिंह किंगरा : फारमर्स डिस्ट्रैस इन ग्रीन रैवोल्यूशन बैल्ट ऑफ इण्डिया
18. नीदीश त्यागी : मॉडर्निटी एण्ड मीडिया इन दी टाईम्स ऑफ ग्लोबलाईजेशन : कन्टैस्टयूलाईजिंग ए केस स्टडी ऑफ पंजाब एण्ड हरियाणा फ्रॉम ए जनलिस्ट प्रस्पेक्टिव
19. कश्ण चन्द्र : क्रिटीकल इश्चूज़ इन इलिगल माईग्रेशन : ए वे आउट टू सेव आवर यूथ
20. जितेन्द्र प्रसाद हरियाणा : दी फॉरमेशन ऑफ डिग्रिल आईडैन्टिटी : दी केसिस ऑफ मियोस इन हरियाणा
21. अंजली गेरा रॉय : जाट स्टारस् : न्यू लाईफ ऑफ ओरेलिटी इन दी साईबरस्पेस यूजिंग इन भांगड़ा रिवाइवल इन पंजाब ऐज़ ए केस स्टडी
22. पाट्रीक फोलिचर : पिंड दी आवाज-दी वायस ऑफ दी विलेज़? रिप्रैजेंटिव रुरलेटी एण्ड कास्ट इन पंजाबी पॉप म्यूजिक बीडियोज़
23. पुण्यश्री पाण्डा और मीनाक्षी प्रसाद मिश्रा : दी पंजाब ऑफ बॉलीवुड वर्सेस दी पंजाब ऑफ न्यूजपेपरस् : टेकिंग स्टॉक ऑफ दी कन्टम्परेरी इमेज़ ऑफ पंजाब इन डिफरेंट मीडिया
24. डीडाईपीत्रे कूकु सीमेन्स : कमिंग आउट एण्ड कमिंग ऑफ ऐज़ इन रुरल पंजाब : ऐन इथनोग्राफी ऑफ एडोलसेन्ट सेम सैक्स सैक्सचूलिटी
25. अक्षय कुमार : पंजाब दलित ऑटोबायोग्राफी : स्ट्रक्चरड ऐनर
26. शिवानी चौपडा : रिफ्लैक्शनस् ऑफ सैक्सचूलिटी इन दी लिट्रेचर ऑफ प्रीफरेल राईटस् इन: इन कन्टैक्टस् ऑफ हरियाणवी वूमन शॉर्ट स्टोरी राईटस्

### 3. "लाईफ एण्ड थॉट ऑफ गांधी पर शरद स्कूल (1-15 दिसम्बर 2010)

**मूलाधार :-** द्वितीय "लाईफ एण्ड थॉट ऑफ गांधी पर शरद स्कूल का आयोजन 1-15 दिसम्बर तक किया गया। इसका चयन पूर्ण भारत से प्राप्त आवेदन पत्रों के आधार पर किया गया। संस्थान में 130 आवेदन पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 25 प्रतिभागियों को चयनित किया गया। विगत वर्ष के आधार पर इस वर्ष चार गुना आवेदन पत्र शरद स्कूल के लिये प्राप्त हुए।

स्कूल के लिए दो बैच बनाए गए। प्रथम बैच में से 9 प्रतिभागियों का चयन उच्च अध्ययन के लिये किया गया। उच्च अध्ययन में स्वअध्ययन और व्याख्यान तथा एक रंगमंच कार्यशाला थी जिसका उद्देश्य गाँधी के चिन्तन पर विस्तृत चिन्तन करना था। संस्थान के अध्यक्षता डॉ० सौम्यबत्रा चौधरी ने रंगमंच कार्यशाला में अपना सहयोग दिया।

गाँधी चिंतन का मूल दृष्टिकोण, स्वभाव और उनका वक्तव्य और गाँधी के नये समीक्षक तथा उनके चिंतन की सार्थकता का प्रश्न और राजनैतिक सम्बंधता के संकाय के साथ पहले बैच के 22 प्रतिभागियों ने दो सप्ताह तक मंथन किया।

प्रोफेसर एसआर मैहरोत्रा ने स्कूल का उद्घाटन किया। स्कूल में निम्नलिखित विद्वानों ने संसाधन संकाय के रूप में सहभागिता की। डॉ० शशि जोशी, डॉ० संजय पालिशकर, डॉ० मोहिन्द्र सिंह, प्रोफेसर घनश्याम शाह : प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा और श्री फिरोज अब्बास खान और डॉ० गांगिया मुखर्जी। इन व्याख्यानों में मुख्यतः सैद्धान्तिक पक्ष, गाँधी की ईसाई धर्म से सम्बंधता, गीता, पूर्व-गाँधी सामाजिक चिंतन और सुधार व्यवस्था गाँधी चिंतन पर विश्वास का पक्ष तथा पर्यावरण और गाँधी की उत्तर-स्वतंत्रता सामाजिक प्रवृत्ति, गाँधी की आत्मकथा आदि थे। इन व्याख्यानों के अतिरिक्त प्रतिभागियों ने गाँधी के मुख्य ग्रंथों पर मंथन किया जिनमें उनके आत्मकथा, हिन्द स्वराज, दक्षिणी अफ्रिका में सत्यग्रह सार्थक कार्यक्रमों, स्वस्थ की कुंजी और यरवेदा मन्दिर आदि थे।

#### स्कूल में निम्नलिखित शोध पत्र संसाधन विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए।

1. डॉ० गांगिया मुखर्जी : मैनी लाईफ्स ऑफ गाँधी : दी बायोग्राफिकल ट्रेडिशन
2. प्रोफेसर हरिश त्रिवेदी : गाँधी इन लिटरेरी इमैजिनेशन
3. डॉ० मोहिन्द्र सिंह : क्रियेशन ऑफ दी पब्लिक सफीयर
4. प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा : रैलैवैन्स ऑफ ट्रस्टशिप
5. श्री फिरोज अब्बास खान : फिलिमिंग गाँधी
6. डॉ० शशि जोशी : गाँधी एण्ड दी इण्डियन लैफ्ट
7. डॉ० सौम्यबत्रा चौधरी : एसएचओएमयू : ए थियेटर वर्कशॉप फॉर एडवांसड बैच

**प्रतिभागी :** आशीष कुमार दास, सेंटर फॉर दी स्टडी ऑफ सोशल सिस्टमस्, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; रोशन वरगीज वी, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; राजू पी थॉमस, एम जी विश्वविद्यालय, कोटयाम, गरिमा धाभाई, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; हिमाद्रि चट्टर्जी, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; आशीष उपेन्द्र मेहता, नई दिल्ली; प्रदने शिडोर, केरवन नगर, पुण; मुकेश पाण्डुरंग झोगले, वालचन्द कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शोलापुर, महाराष्ट्र; दिलीप कुमार दाश, समाज शास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय; देवर्षि तालुकधर, विवेकानन्द कन्या महाविद्यालय बरिशा, कोलकाता; राधा कपूरिया, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; शाहजुन ज़मान अहमद इतिहास विभाग, स्वाहिद पोलिक फुकन महाविद्यालय, नामती, असम; सुलतान अली अहमद, अंग्रेजी विभाग बीएच बुरपेता महाविद्यालय, असम; ज्योतिया घोष, हरियाणा; राहुल कुमार ईश्वर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्राग नाथेने, नागपुर; सी भरत कुमार, भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, इन्दौर; पारस के झा, अहमदाबाद; हारमोनी सिगानपोरिया, अहमदाबाद; ऋतिष कुमार शाह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; विजेन्द्र सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; खवाजा आजुजीद्दीन, हैदराबाद; नूरजहाँ मोमिन, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; विदू भूषण दाश, स्कूल ऑफ रुरल डिब्लपमेंट, टाटा इन्स्टीच्यूट ऑफ सोशल सांईसिस, तुलजापुर, ओसमानाबाद, महाराष्ट्र; अनिषा पल्लवी गुप्ता, यूएसए; नवीन कुमार वासुदेवन, वैलोर, नोकलियनजा, आका अयनगिती लॉगकुमेर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

## त. अन्य कार्यक्रम

प्रोफेसर एनरीक्यू एस्पाडा लिमा, इतिहास विभाग सतना काटरीना का फ़ैडरल विश्वविद्यालय, द्वारा **“फ़ॉम स्लेवरी टू फ्रीडम इन दी साउथ ऑफ ब्राजील** द्वारा विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। (26 मार्च 2010)

प्रोफेसर मीना एलेगजैन्डर, न्यूयार्क के सिटी विश्वविद्यालय की लब्धप्रतिष्ठित अंग्रेजी की प्रोफेसर द्वारा **कविता पाठ सत्र** (3 जून 2010)

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने **विज़न डाक्यूमेंट** ऑफ दी इन्स्टीच्यूट टू दी फ़ैलोज़ एण्ड एसोसियेट ऑफ इंटरयूनिवर्सिटी सेंटर ऑफ यूजीसी, पर व्याख्यान प्रस्तुत किया (16 जून 2010)

प्रोफेसर रौनक जहाँ और प्रोफेसर रहमान शोबन, सेंटर फॉर पॉलिसी डायलॉग, ढाका, बंगलादेश द्वारा **“दी चैलेजिज ऑफ डेमोक्रेटिक कन्सोलिडेशन इन बंगलादेश”** पर विशेष भाषण प्रस्तुत किया गया।

शबनम बीरमानी द्वारा **हद अनहद बाउन्डिड बाउडलैस** चलचित्र दिखाया गया (कबीर पर एक फिल्म जिसका प्रभाव भारत और पाकिस्तान पर है।) (18 अगस्त 2010)

संजय दिवेदी द्वारा संगीत संध्या (24 मार्च 2011)

**कोटियाटम** का परिचय – मधु मार्गी द्वारा व्याख्यान (24 मार्च 2011)

सुश्री आर्यानी भार्गव द्वारा **भरतनाट्यम** की प्रस्तुति (28 मार्च 2011)

**4 प्रकाशन :** संस्थान प्रकाशनार्थ अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत प्रबन्धों आगन्तुक प्रोफेसरों और आगन्तुक विद्वानों द्वारा व्याख्यानों और संस्थान में आयोजित संगोष्ठियों की कार्यवाहियां एवं दो अर्धवार्षिकी जरनल समरहिल : आईआईएस रिब्यू एण्ड स्टडीज़ इन ह्यूमैनिटीज़ एण्ड सोशल साइंसिस प्रकाशित करता है। संस्थान के पास लगभग 500 प्रकाशन हैं। संस्थान ने प्रकाशन के लिए विविध-कांटेदार नीति अपनाई है – वर्ष 2009 से आरम्भ की गई सहप्रकाशन योजना के अच्छे परिणाम निकले हैं और आईआईएस-ओयूपी श्रृंखला के अन्तर्गत पहली पुस्तक *रैकोगनाइजिंग डाइवर्सिटी : सोसायटी एण्ड कल्चर इन दी हिमालय* प्रकाशित हुई है। दो अन्य पुस्तकें डाइवर्सिटी श्रृंखला के अन्तर्गत ओयूपी के सहप्रकाशन के अधीन प्रकाशन के अंतिम चरण में है। अन्य अग्रणी प्रकाशकों जैसे सेज़, ओरियेन्ट ब्लैक्सवन, रॉटलेगे ने कुछ पुस्तकें सहप्रकाशन के लिये ली हैं। इन सभी सहप्रकाशन प्रबन्धों के अन्तर्गत प्रकाशन का व्यय सहप्रकाशकों द्वारा किया जा रहा है। और वह संस्थान को रायल्टी और कुछ मुक्त पुस्तकें भी दे रहे हैं। (जो कि लेखक के साथ बाँटी जाती है।) इस तरह संस्थान अपनी प्रकाशन नीति को जारी रखेगा और सहप्रकाशन कार्यक्रम को भी विस्तृत करेगा।

अलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान ने पुस्तक विक्रय से 9,29,236 रूपये अर्जित किये। समरहिल, आईआईएस रिब्यू का पिछले अंक भी प्रकाशित किये गए हैं, वर्ष 2009 का अंक *स्टडीज़ इन ह्यूमैनिटीज़ एण्ड सोशल साइंसिस* प्रैस में है। इस तरह एसएचएसएस भी क्रमिक हो जायेगा। संस्थान द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं :

1. प्रोफेसर चेतन सिंह द्वारा सम्पादित : *रैकोगनाइजिंग डाइवर्सिटी : सोसायटी एण्ड कल्चर इन दी हिमालय (ओयूपी के सहप्रकाशन)*
2. प्रोफेसर वैटीना बौमर कृत : *अभिनवगुप्तस् हैरिमैन्टिक्स ऑफ दी एबसोल्यूट अनूतरप्रक्रिया : ए इंटरप्रेशन ऑफ हिज़ प्रतिक्षा विवरणा (डीके प्रिंटवर्ड के सहप्रकाशन)*
3. एसआर मेहता कृत : *न्यू अन्डरस्टैंडिंग ऑफ इण्डियन सोसायटी : एनकाउंटरस् विद सोशलॉजी*
4. जेएस ग्रेवाल कृत : *लव एण्ड जैन्डर इन दी ऋग्वेद एण्ड मीडिवल पंजाब*
5. शिवेश भट्टाचार्य कृत : *अन्डरस्टैंडिंग इतिहास*
6. "शिपिंग पैरीमीटरस् : सोशल एण्ड ऐथिकल इम्प्लीकेशनस् ऑफ ह्यूमन जैनोमिक रिसर्च" संगोष्ठी की रिपोर्ट
7. पीके राय कृत : *श्री लैक्चरस् ऑन लविंग कार्डिनैस*
8. विजयनन्द कार कृत : *सैक्यूलरिज़म एण्ड नैशनल इंट्रीग्रेशन*
9. एवी अफान्सो एवं जस्टिस आनन्द द्वारा सम्पादित : *ह्यूमन राईटस् इन इण्डिया : थियोरी एण्ड प्रैक्टिस*
10. *समरहिल आईआईएस रिब्यू (2010, वो. 1)*
11. *समरहिल आईआईएस रिब्यू (2010, वो. 1)*

## 5 विक्रय एवं जनसम्पर्क

शिमला आने वाले पर्यटकों के लिये राष्ट्रपति निवास एक आकर्षण का केन्द्र है। मूलभूत सुविधाओं में अतिरिक्त सुविधाएँ देने के साथ संस्थान में पर्यटकों की संख्या हर वर्ष बढ़ रही है। गत वित्तीय वर्ष की तुलना में पर्यटकों की 24 प्रतिशत बढ़ौतरी हुई है। 1 अप्रैल 2010 से 31 मार्च 2011 तक की समय अवधि में संस्थान में 1,26,292 पर्यटक (1,18,176 स्वदेशी और 8,116 विदेशी) वर्ष 2009-10 के 96,984 पर्यटकों की तुलना में संस्थान में पधारे।

आलोच्य वर्ष के दौरान 24,95,540.00 रुपये की आय पर्यटकों के प्रवेश टिकटों से हुई। जबकि वाहनों का प्रवेश और कैमरों के प्रयोग से 6,16,460.00 रुपये की आय हुई। इस प्रकार वर्ष के दौरान प्रवेश टिकटों की विक्री से कुल आय 31,12,000.00 रुपये हुई।

### सोविनियर शॉप

वर्ष 2009 के अंतिम समय में संस्थान ने पुराने फायर स्टेशन और दो गैरजों का पुनरुद्धार करके सोविनियर-कम-बुक-कॉफी शॉप को स्थापित किया। सोविनियर शॉप बहुत ही अच्छे ढंग से चल रही है। तथा संस्थान द्वारा प्रदत्त सुविधाओं को संस्थान में आने वाले आंगतुकों ने बहुत सराहना की है। सोविनियर शॉप में रखी गई वस्तुएँ पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। वर्ष के दौरान सोविनियर की निम्नलिखित वस्तुएँ बेची गई : वायसरिगल लॉज की पुस्तक (2314) : पैन (826) : टोपियाँ (656) : पिकचर पोस्टकार्ड (21,526) : कॉफी मग (1453) : स्वेटशर्ट्स (427) : टीशर्ट्स (448) : ग्रीटिंग कार्ड (824) : टेबल कैलेन्डर (42) : स्कार्फ (44) : और बैग (20)। सोविनियर की बिक्री से कुल आय 3,48,093.00 रुपये थी।

आईआईएस बुक शॉप : आईआईएस बुक शॉप में देश के अग्रणी प्रकाशकों जैसे ऑक्सफोर्ड, ओरियन्ट ब्लैक्सवन, सेज, परमानेट ब्लैक की पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त संस्थान के अपने प्रकाशन भी हैं। वर्ष के दौरान संस्थान ने इन प्रकाशकों की 1379 पुस्तकें बेची तथा इन पुस्तकों की बिक्री से 1,43,535.00 रुपये की आय हुई। इसी प्रकार बुक शॉप में संस्थान द्वारा प्रकाशित 930 पुस्तकें बेची गईं। जिससे 1,42,800.00 रुपये की आय हुई। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बाहरी क्रेताओं को 3382 पुस्तकें बेची गईं जिससे वर्ष के दौरान 7,86,436.00 रुपये की आय हुई। अतः वर्ष के दौरान संस्थान के प्रकाशनों की कुल बिक्री से 9,29,236.00 रुपये की आय हुई। संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री को और बढ़ाने हेतु संस्थान ने हाल ही में फिलिपकार्ड ऑनलाईन सर्विसिस् प्रा0 लि0 से हाल ही में प्रबन्ध किये हैं। संस्थान के सभी प्रकाशनों के कवर पेज की फोटो, हर पुस्तक की विवरणावली और ग्रंथसूची का विवरण उनकी बैबसाईट पर उपलब्ध है। फिलिपकार्ड ऑनलाइन सर्विसिस् का प्रदर्शन उत्साहवर्धक है।

फायरस्टेशन परिसर को आगे विकास करने के लिए स्वीमिंग पूल और सुकैश कोर्ट का जीर्णोद्धार करके 'पूल थियेटर' और 'कोर्ट गैलरी' में परिवर्तित किया गया है। पूल थियेटर का प्रयोग सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शास्त्रीय फिल्मों को दिखाने हेतु और संगोष्ठी और व्याख्यानों के आयोजन के लिये लाया जायेगा। अभी हाल ही में श्री मधु मार्गी और सुश्री आर्यानी भार्गव द्वारा 'पूल थियेटर' में अभिनवगुप्त की सौन्दर्य शास्त्र पर डेमो

प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन अभिनवगुप्त पर अध्ययन सप्ताह का एक भाग था, जो संस्थान द्वारा मार्च 2011 में आयोजित किया गया था। संस्थान ने रविन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती के अवसर पर एक त्रीदिवसीय फिल्म फ़ैस्टीवल 'टैगोर थ्रू फिल्मस्' का आयोजन इस थियेटर में किया। पूल थियेटर का उद्घाटन सुश्री विभा पुरी दास, शिक्षा सचिव द्वारा 29 अप्रैल 2011 को किया गया।

पर्यटकों के आकर्षण के लिये कोर्ट गैलरी भी खोली गई है। हमने इसमें वायसरीगल लॉज के 40 दुर्लभ छायाचित्र लगाए हैं जिन्हें संस्थान द्वारा मिडलसैक्स विश्वविद्यालय और ब्रूड एस्टेट से प्राप्त किया गया था। कोर्ट गैलरी का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा द्वारा 8 सितम्बर 2010 को किया गया था।

#### कॉफी शॉप

संस्थान ने फायर स्टेशन कैफे में मुरम्त करके कॉफी शॉप खोली है जिसे पहले फायर स्टेशन के नाम से जाना जाता था। चाय, कॉफी, शीतल पेय, टोस्ट, सैंडविच, बिस्कुट, इडली साँबर तथा अन्य खाद्य पदार्थों को कैफे में दिया जाता है।

कैफे फैलोज़ मैस/कैन्टीन के सीधे निरीक्षण के अधीन है। कैफे में तीन व्यक्तियों को अनुबन्ध पर रखा गया है।

वर्ष के दौरान कैफे का आय व्यय लेखा इस प्रकार है :

माह	आय (रु)	व्यय (रु)	कुल लाभ (रु)
अप्रैल	61,078 /—	32,365 /—	28,713 /—
मई	1,02,502 /—	69,797 /—	32,705 /—
जून	1,40,437 /—	97,988 /—	42,449 /—
जुलाई	62,117 /—	26,396 /—	36,321 /—
अगस्त	36,863 /—	18,819 /—	18,044 /—
सितम्बर	38,444 /—	18,108 /—	20,336 /—
अक्टूबर	47,898 /—	28,861 /—	19,037 /—
नवम्बर	39,445 /—	22,973 /—	16,472 /—
दिसम्बर	47,736 /—	23,408 /—	24,328 /—
जनवरी	27,444 /—	17,210 /—	10,324 /—
फरवरी	22,604 /—	11,286 /—	11,318 /—
मार्च	42,831 /—	29,231 /—	13,600 /—

संस्थान कैफे में और वस्तुओं को देने का प्रयास कर रहा है क्योंकि यह पर्यटकों द्वारा, संस्थान के अध्येताओं, आईयूसी ऐसोसियेट्स, अतिथियों और कमियों द्वारा सहराई गई हैं।

## 6 पुस्तकालय

### 1. परिचालन कक्ष में पूर्ण स्वचलित प्रणाली को जोड़ना

पुस्तकालय ने बार-कोर्डिंग प्रणाली से पासबुक के द्वारा पुस्तकों को लेना व वापिस करने की प्रणाली को समाप्त कर दिया है। परिचालन कक्ष अब पूर्णतः स्वचलित है। पुस्तकालय के सदस्य बार-कोर्डिंग पुस्तकालय सदस्य कार्ड से मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (लिवसिस) से पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

### 2. संस्थागत प्रतिस्थापन

पुस्तकालय ने संस्थागत प्रतिस्थापन (आईआर) ओपन सोर्स (डीएसपीएसीई) सॉफ्टवेयर को विकसित किया है। डीएसपीएसीई आरम्भ में एमआईटी प्रैस, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रैस और एचपी लैब द्वारा विकसित किया गया था। परिसर की एलएएन द्वारा निम्नलिखित सूचनाएँ प्रतिस्थापन द्वारा प्राप्य हैं।

क. आईआईएस **प्रकाशनों का मूल-डाटा** : संस्थान अध्येताओं द्वारा दी गई पाण्डुलिपियों को प्रकाशित करता है। पुस्तकालय ने 197 पुस्तकों का मूल-डाटा अपलोड किया है जिसमें प्राक्कथन, अधार-पूर्ति, सांरांश पृष्ठ और पाण्डुलिपि का मैटाडाटा है।

ख. **पूर्ण पाठय पुस्तकें** : हाल ही में प्रकाशित पुस्तक "अन्डरस्टैंडिंग इतिहास" की पूर्ण पाठय पुस्तक।

ग. नमूना पूर्ण पाठय लेख : 2009-10 की निदेशक की रिपोर्ट और आमंत्रित विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किये गए व्याख्यान।

### 3. पुस्तकालय सदस्यता

पुस्तकालय में पूर्व सहअध्येताओं एवं अकादमिक समुदाय को सदस्यता प्रदान की है। इस नई सदस्यता योजना के अन्तर्गत सदस्य पुस्तकालय में आ सकेंगे और पुस्तकालय के लाईसेंस ई-रिसोसिस् का लाभ उठा सकेंगे।

### 4. इलैक्ट्रॉनिक डाक्यूमेंट डिलिवरी सर्विस

पुस्तकालय के पास कई इलैक्ट्रॉनिक संसाधन प्राप्य हैं। संस्थान के सह अध्येता अपनी सह अध्येतावृत्ति कार्यक्रम के दौरान इन ई-संसाधनों का प्रयोग करते हैं। जब वह वापिस अपने संस्थानों में चले जाते हैं वह इस सुविधा से वंचित हो जाते हैं। पुस्तकालय ने सह अध्येताओं के लिए इलैक्ट्रॉनिक डाक्यूमेंट डिलिवरी सिर्वासिस को आरम्भ किया है। वह अब इलैक्ट्रॉनिक फार्मेट में उपलब्ध पूर्ण पुस्तक के लेखों को प्राप्त करने के लिये आवेदन कर सकते हैं। उन्हें तुरन्त सेवाएँ देने के लिये पुस्तकालय ने वरचूल रैफरेन्स डैक्स स्थापित किया है। सह अध्येता किसी आलेख के लिये पुस्तकालय के वरचूल रैफरेन्स डैक्स को ई-मेल द्वारा आवेदन कर सकते हैं। पुस्तकालय 24 घण्टों की अवधि के भीतर उनके आवेदनों पर कार्यवाही करता है।



## 5. कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रैस और वार्षिक रिव्यूज़ अभिलेखों का इलैक्ट्रानिक प्राप्य

पुस्तकालय ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रैस और वार्षिक रिव्यूज़ अभिलेखों को क्रय करके अपने पुस्तकालय को विकसित किया है। यह ई अभिलेख इन दो प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के वो.-1 और अंक-1 प्राप्य है।

## 6. ब्रिटिश पुस्तकालय से छायाचित्र

पुस्तकालय ने ब्रिटिश पुस्तकालय, लंदन से 17 संस्थान के दुर्लभ छायाचित्र प्राप्त किये हैं। मीडिलसेक्स विश्वविद्यालय ने छायाचित्रों का अधिग्रहण किया एवं संस्थान को दान में प्रदान किये हैं।

## 7. नया सरवर कक्ष

संस्थान के पास अस्सी से भी अधिक कम्प्यूटर एवं तीन सरवर हैं। प्रयोगकर्ताओं को रुकावट रहित इंटरनेट की सुविधाएँ देने के लिये पुस्तकालय ने अलग से सरवर कक्ष स्थापित किया है। यह तीनों सरवर जैसे इंटरनेट सरवर, पुस्तकालय वैब सरसर और पुस्तकालय डाटावेस सरसर इन नए सरवर कक्ष में रखे गए हैं। इस नए सरवर कक्ष से नेटवर्क मैनेज़र को प्रांगण में नेटवर्क की सुविधा प्रदान करने के लिए सुविधा प्राप्त हुई है।

## 8. आईसीटी आधारभूत संरचना

पुस्तकालय में 5 नए कम्प्यूटर आईसीटी आधारभूत संरचना हेतु ई-रिसोर्स प्राप्य करने के लिए लगाएँ हैं। 12 कम्प्यूटर पूर्णतः संस्थान के अध्येताओं एवं सह-अध्येताओं के लिए ई-रिसोर्स प्राप्य के लिए रखे गए हैं।

## 9. पुस्तकालय फर्नीचर

पुस्तकालय में प्रयोगकर्ताओं को आकर्षित करने के लिये 15 नए कम्प्यूटर डैस्क, 12 पठनीय डैस्क और 15 गौदरेज के रैक खरीदे गए हैं।

## 10. पुस्तकालय को धूल मुक्त करने का अभियान

पुस्तकालय में इसे धूल मुक्त पुस्तकालय बनाने का अभियान आरम्भ किया है। पुस्तकालय सदस्यता शुल्क से अर्जित आय से पुस्तकालय को धूल मुक्त किया जा रहा है। इस कार्य के लिये 15 फरवरी 2011 से 4 श्रमिकों को साफ करने के लिए लगाया गया है और वह पुस्तकालय के हर कोने को साफ कर रहे हैं।

## 11 दृश्य एवं श्रव्य सरबर

दृश्य एवं श्रव्य पुस्तकालय के विकास के लिए एक सरबर का कय मीडिया के समस्त विषयवस्तु को अपलोड करने के लिए किया गया है। संगीत के सैंपल और लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा दिये गए व्याख्यानों को सरवर में अपलोड कर दिया है।

## 12 लाईसेंस साफ्टवेयर संस्थापन

पुस्तकालय में सभी नकली साफ्टवेयर जो संस्थान द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे थे को बदलकर लाईसेंस साफ्टवेयर लगा दिये हैं।

## 13 प्रो० एच० एस० श्रीवास्तव द्वारा पुस्तकों का उपहार

पुस्तकालय ने प्रो० एच० एस० श्रीवास्तव, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश से उनकी व्यक्तिगत संग्रह की पुस्तकें उपहार स्वरूप प्राप्त की।

## 14. व्याख्यान श्रृंखला

पुस्तकालय ने सरदार जोगिन्द्र सिंह रामदेव इलनयूस, यूएसए द्वारा स्थापित सतकाल ट्रस्ट के सहयोग से "फैडरेटिड सर्च इंजन" व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया। पुस्तकालय और हिमाचल प्रदेश और पड़ोसी राज्यों के कम्प्यूटर व्यवसायिकों ने इन व्याख्यानों में सहभागिता की।

## 7. औषधालय

संस्थान में एक आवासी चिकित्सा अधिकारी, व एक फार्मासिस्ट सहित सुसज्जित औषधालय है जो संस्थान के अध्येताओं सहअध्येताओं, कर्मचारियों और उनके परिवारों को चिकित्सीय सहायता प्रदान करता है। आलोच्य वर्ष के दौरान लगभग 4172 रोगी ईलाज के लिये औषधालय में आये और आवासी चिकित्सा अधिकारी आपात स्थिति में 46 घरों में गई। संस्थान में निरंतर स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने की प्रथा आरम्भ की गई है। अलोच्य वर्ष के दौरान 2 स्वास्थ्य शिविर आयोजित किये गए। पहला स्वास्थ्य शिविर महिलाओं एवं बच्चों के लिए था जिसमें लगभग 150 रोगियों की जाँच की गई। जिन बच्चों की जाँच की गई उनमें से लगभग 70 प्रतिशत बच्चों को खून की कमी थी तथा उन्हें संतुलित आहार की सलाह दी गई। दवाईयाँ भी दी गई तथा विभिन्न टॉनिक भी बताए गए।

दूसरे स्वास्थ्य शिविर में आँखें की जाँच की गई जिसमें 92 रोगियों की जाँच की गई। खराब आँखों की जाँच करके उन्हें ऐनकें लगवाने की सलाह दी गई। दांतों को ठीक प्रकार से ब्रश करने की भी सलाह दी गई।

बच्चों के लिये 15 फरवरी 2011 को एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मैडिकल कॉलेज शिमला से विशेषज्ञ को आमंत्रित किया गया जिन्होंने बच्चों की जाँच की तथा उनकी शिकायतों का निवारण करते हुए उन्हें संतुलित आहार की सलाह दी गई।

### महिला कल्याण केन्द्र/कम्प्यूटर केन्द्र

महिला कल्याण केन्द्र का उद्देश्य परिसर में रह रही महिलाओं की प्रतिभाओं को उजागर करना है। संस्थान के निदेशक द्वारा 4 दिसम्बर, 2009 को उद्घाटन के पश्चात् केन्द्र ने कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। यह स्वावलम्बन एवं स्वप्रतिभा को दिखाने का अवसर प्रदान करता है।

परिसर में रह रहे आवासियों के लिये कम्प्यूटर ज्ञान का परिचय करवाने के लिये कम्प्यूटर केन्द्र खोला गया है। संस्थान के कर्मचारी, बच्चे और गृहणीयाँ इसकी सदस्य हैं। इसका मुख्य उद्देश्य सदस्यों को कम्प्यूटर जगत के मूल ज्ञान को समझाना है।

अलोच्य वर्ष के दौरान महिला कल्याण केन्द्र द्वारा निम्नलिखित कार्य किये गए :-

1. परिसर में रह रही महिलाओं के लिये कम्प्यूटर साक्षरता कक्षाओं को आरम्भ किया गया है। लगभग एक दर्जन विद्यार्थियों की नियुक्ति की गई, अन्य एक दर्जन इससे जुड़ने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।
2. सिलाई कक्षाओं का आरम्भ किया गया, लगभग एक दर्जन प्रशिक्षणार्थी इसके प्रथम बैच में अगस्त तक नियुक्त किये गए।
3. हस्त निर्मित ऊनी कपड़े जिनका मूल्य लगभग 5000/-रूपये था अनुरोध पर दानशील संस्थाओं को सप्लाई किये गए।
4. आईआईएस को सम्मेलन बैग जिनका मूल्य लगभग 50,000/-रूपये था अनुरोध पर सप्लाई किये गए।
5. इस सप्ताह आईआईएस को 400 कपड़े के बैग जिनका मूल्य लगभग 6000/-रूपये है सप्लाई किये जायेंगे।
6. महिला कल्याण केन्द्र के सदस्यों ने दिवाली मेले का आयोजन किया। संस्थान परिसर में रह रही महिलाओं ने विविध प्रकार भोजन तैयार करके सबको खिलाया।

इस सारे प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सदस्यों को स्वावलम्बी बनाना है तथा उनकी कला को विकसित करना है।

### 7. सम्पदा का रखरखाव तथा विशेष मुरम्मतें ।

आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान परिसर का सीपीडब्ल्यूडी की सिविल और विद्युत विभागों द्वारा दैनिक रखरखाव और विशेष मुरम्मतों का कार्य किया जाता रहा है। भारतीय पुरातत्व विभाग राष्ट्रपति निवास परिसर के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार के कार्य में योजनाएँ बनाकर इस पर राष्ट्रपति निवास के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार का कार्य आरम्भ कर दिया है, विशेषरूप पब्लिक ऐन्ट्री भवन और मुख्य भवन के बरामदों की छतों की मुरम्मत का कार्य। संस्थान अलोच्य वर्ष में मुख्य कार्य इस परिसर के रखरखाव के लिये कर रहा है उनकी सूची निम्न प्रकार है :

### क. महानिदेशक भारतीय पुरातत्व विभाग के साथ बैठक

स्मारकों के लिए संशोधित अधिनियमों के कारण राष्ट्रपति निवास भवन परिसर के जीर्णोद्धार के लिए उचित कदम उठाना सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के बिना कठिन हो गया है- क्योंकि भवन 100-300 मीटर के

रेडियस के अन्तर्गत आता है। इस नई स्थिति में संस्थान के निदेशक ने डॉ० गौतम सेनगुप्ता, महानिदेशक भारतीय पुरातत्व विभाग के साथ 22 मई 2010 को एक बैठक आयोजित की। इस बैठक में श्री एस. बी. एस. सेंगर, क्षेत्रीय निदेशक (उत्तरी वृत्त), डॉ० टी. आर. शर्मा, अधीक्षण पुरातत्वविद, हिमाचल वृत्त, श्री आर.एम. कन्डवाल, सहायक पुरातत्वविद और डॉ० एस. के. गोयल, सम्पदा निरीक्षक, आई.आई.ए.एस. उपस्थित थे। इस नये सन्दर्भ में (अधिनियम का संशोधन) जीर्णोद्धार, मुरम्मत और दैनिक रखरखाव के विषयों पर चर्चा की गई। बैठक के दौरान महानिदेशक भारतीय पुरातत्व विभाग ने सूचित किया कि सक्षम प्राधिकारी किसी प्रकार के जीर्णोद्धार के लिये अनुमति प्रदान करेंगे, जो उस समय वहाँ नहीं थे, यह आशा की जाती है कि आगामी तीन महीनों में समिति गठित हो जायेगी। संस्थान के निदेशक द्वारा महानिदेशक भारतीय पुरातत्व विभाग के साथ निम्न मर्दों पर चर्चा की गई :

1. आईयूसी के सहअध्येताओं के लिये क्रेंची लाईन का बिना पारम्परिक स्वरूप या बाहरी पुराभाग बदले जीर्णोद्धार कर हॉल ऑफ रैजिडेंस बनाने पर चर्चा की गई। जीर्णोद्धार का कार्य केवल भवन के अन्दर ही किया जायेगा।
2. विदेशी विद्वानों के लिये बिलासपुर हाउस का बिना पारम्परिक स्वरूप या बाहरी पुराभाग बदले जीर्णोद्धार के कार्य पर भी चर्चा की गई। जीर्णोद्धार का कार्य केवल भवन के अन्दर ही किया जायेगा।
3. राष्ट्रपति निवास के दैनिक रखरखाव पर भी चर्चा की गई।
4. स्वीमिंग पूल परिसर (फेज़ II) के जीर्णोद्धार पर भी चर्चा की गई।
5. अन्त में महानिदेशक भारतीय पुरातत्व विभाग से भारतीय पुरातत्व विभाग के कार्यालय को संस्थान परिसर में नए स्थान पर बदलने पर चर्चा की गई। उन्होंने इसे स्वीकार किया तथा स्थानीय कार्यालय के अधिकारी को आवंटित नए स्थान पर बदलने के आदेश दिये।

### **ख. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सिविल एवं विद्युत) के अधिकारियों के साथ बैठक**

संस्थान के निदेशक केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सिविल) और (विद्युत) के अधिकारियों के साथ निरन्तर बैठकें करते रहे ताकि चल रहे कार्यों का मूल्यांकन किया जा सके तथा सम्पदा की हालत में सुधार के लिये अन्य विकास कार्य को भी किया जा सके। क्योंकि अब संस्थान में देश और विदेश से अधिक अध्येता हैं, घरों का आधारभूत विश्वस्तर पर रखना होगा।

### **ग. अध्येताओं के आवासों की मुरम्मत एवं जीर्णोद्धार**

संस्थान के निदेशक ने परिसर का निरीक्षण किया जिसमें अध्येताओं के आवास भी थे और यह पाया कि अध्येताओं के आवासों की हालत ठीक नहीं है और उसपर तुरन्त कार्यवाही करने की आवश्यकता है। उन्होंने केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों से इस विषय पर विस्तृत चर्चा की। इन चर्चाओं के फलस्वरूप अध्येताओं के आवासों में निम्न कार्य प्रस्तावित किये गए जिनकी मुरम्मत की जानी थी।

1. अध्येताओं के आवासों की मुरम्मत एवं जीर्णोद्धार जिसमें मुख्यतः उनके शौचालय और स्नानागार सम्मिलित हैं उन्हें अगामी तीन माह में कर दिया जायेगा। कोट्रीन हॉल एनेक्सी, प्रथम तल, ग्रास शेड, जाकिर हुसैन हाउस सैट न0 4, पोस्ट मास्टर फ्लैट, डेलविला सैट न0 2 आदि का कार्य इस समय तक पूर्ण कर लिया गया है।
2. अध्येताओं के आवासों में अन्य मुरम्मत के कार्य जैसे शेष अध्येताओं के आवासों में ग्रास शेड, डीएसपी कॉटेज, जाकिर हुसैन सैट न0 4, पोस्ट मास्टर फ्लैट में पी0वी0सी0 बिछाने का कार्य प्रथम तिमाही में पूर्ण कर लिया गया है।
3. कर्जन कॉटेज के सैट न0 3 में सीढ़ियों की मुरम्मत और जाल बिछाने का कार्य आलोक्य वर्ष की द्वितीय तिमाही में पूर्ण कर लिया गया है।
4. अलोक्य वर्ष के दौरान केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (विद्युत) ने अध्येताओं के आवासों के रसोई घरों में गीज़रों का प्रबन्ध कर दिया है।
5. संस्थान परिसर के आवासों में बाहर से पेंट करने का कार्य – पहाडी शैली का रंग अपनाया गया है।

अलोक्य वर्ष की प्रथम तिमाही में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को निर्देश दिये कि वह पहाडी शैली के स्वरूप के उचित रंग का चयन करें जिससे कि भवनों को बाहर से पेंट किया जाना है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने निदेशक के निदेशों का पालन किया। उन्होंने आईयूसी हॉस्टल, डेलविला, कर्जन कॉटेज, फ़ैलोज़ हाउस, जाकिर हुसैन हाउस, रैडस्टोन, कोट्रीन आदि भवनों में यह कार्य पूर्ण कर दिया है। इस नई रंग योजना से संस्थान परिसर के भवनों की अपनी एक पहचान बन गई है।

#### **घ. कर्मचारियों के आवासों में किये कार्य**

1. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा अलोक्य वर्ष के दौरान ब्लाक-ए, ब्लाक बी, स्टैरी कॉटेज आदि भवनों में छत, गट्टर, वर्षा नालियाँ आदि का कार्य पूर्ण कर दिया है।
2. आलोक्य वर्ष के दौरान मिल्ट्री बैरग के 17 क्वाटरों, आउट हाउस और माली लाइन (नजदीक स्केयरहॉल) में रसोई घरों में लकड़ी की शैल्फ लगाने का कार्य पूर्ण कर दिया है।
3. प्रथम तिमाही में संस्थान परिसर के सभी आवासों की पानी की टांकियों की सफाई की गई एवं यह कार्य पूर्ण कर दिया गया है।
4. अलोक्य वर्ष के दौरान केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा फायरमैन लाईन, बी ब्लाक (पीछे का भाग) में फर्श की मुरम्मत का कार्य पूर्ण कर दिया है।
5. अलोक्य वर्ष की दूसरी तिमाही में इलैक्ट्रिक सुपरवाईज़र क्वाटर की मुरम्मत का कार्य आरम्भ किया गया एवं इसे पूर्ण कर दिया गया है।
6. दूसरी तिमाही में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा 12 फेमिली लाईन भवन का कार्य भी आरम्भ किया गया है।

## ड संस्थान परिसर की सफाई एवं विविध

1. संस्थान में गर्मी के महीनों में भारी मात्रा में पर्यटक संस्थान में आते हैं और वह परिसर में कूड़ा कर्कट फैंकते हैं। संस्थान इस कूड़े की समस्या से जूझ रहा है जोकि बन्दरों द्वारा फैलाई जा रही है जिससे न केवल संस्थान की शान्ति भंग होती है बल्कि इसके उद्यानों को क्षति पहुँच रही है, डस्टबीनों से भी गंदगी फैल रही है। अलोच्य वर्ष के दौरान निदेशक ने सम्पदा विभाग से संस्थान परिसर को स्वच्छ रखने के लिये आकर्षित किया। सम्पदा विभाग ने संस्थान परिसर को साफ रखने के लिये एक विशेष अभियान चलाया और परिसर की पहाड़ियों पर पड़े कूड़ा कर्कट प्लास्टिक के लिफाफे और बोतलें जो पर्यटकों और अन्य आगन्तुकों द्वारा फैंकी गई थी को साफ कर दिया। नगर निगम द्वारा संस्थान परिसर में रह रहे कर्मियों के घरों से घर-घर से कूड़ा कर्कट ले जाने की योजना कार्यान्वित की। संस्थान परिसर की सफाई में काफी सुधार हुआ है।
2. अलोच्य वर्ष के दौरान टेनिस कोर्ट के पास की नालियों की मुरम्मत का कार्य भी पूर्ण हो गया है। इसस कार्य के पूर्ण हो जाने से 70 हजार लिटर की क्षमता रखने वाले नया संचाई टैंक भी शुरु हो गया है और इसमें उद्यानों के लिये पानी जमा करने की क्षमता भी बढ़ गई है।

## च आईआईएस भवन का संरक्षण एवं जीर्णोद्धार

1. संरक्षण वास्तुकार द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट योजना रिपोर्ट के मूल्यांकन का कार्य इस क्षेत्र के विशेषज्ञों जिनमें भारतीय पुरातत्व विभाग व केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के विशेषज्ञ प्रतिनिधि भी थे, के साथ कई बैठकों पश्चात् निष्पादित कर लिया गया। इस प्रकार की अन्तिम बैठक जो 21 जुलाई 2010 को आयोजित की गई थी, संरक्षण वास्तुकार ने एक प्रस्तुति दी और मूल्यांकन समिति ने वास्तुकार सुश्री आभा नारायण लांबा से अनुरोध किया कि वह कार्यान्वयन योजना तैयार करें और साथ ही अनुमानित बजट आकलन भी दें। सुश्री आभा नारायण लांबा ने चतुर्थ संस्करण जिसमें उत्कृष्ट योजना और उत्कृष्ट योजना के कार्यान्वयन के लिये अनुमानित बजट भेज दिया।
2. भारतीय पुरातत्व विभाग ने मुख्य भवन के बरामदों की छतों के संरक्षण का कार्य आरम्भ किया जिसकी स्वीकृति संस्थान ने विगत वर्ष में दे दी थी। आलोच्य वर्ष के दौरान अभी भारतीय पुरातत्व विभाग इस कार्य को पूरा नहीं कर पाया है तथा अभी भी काम चल रहा है और इसमें पूर्ण रूप से क्षति क्षेत्र पुस्तकालय हॉल भी सम्मिलित है।

## आर्ट गैलरी का शुभारम्भ

अलोच्य वर्ष के दौरान स्वीमिंग पूल परिसर के एक भाग का कार्य संस्थान पूर्ण कर सका जिसमें आर्ट गैलरी को स्थापित किया गया जिसे यहाँ कोर्ट गैलरी कहते हैं। आर्ट गैलरी (कोर्ट गैलरी) का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा द्वारा 8 सितम्बर 2010 को किया गया।

## स्वीमिंगपूल परिसर-फेज-II – दी थियेटर

अलोच्य वर्ष के दौरान स्वीमिंग पूल परिसर के जीर्णोद्धार का कार्य पूर्ण किया गया और वहां एक रंगमंच की स्थापना की गई। अब यह रंगमंच पूरी तरह कार्यात्मक एवं इसमें कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

## उत्कृष्ट योजना रिपोर्ट का कार्यान्वयन

अलोच्य वर्ष के दौरान निदेशक ने उत्कृष्ट योजना रिपोर्ट को कार्यान्वित करने के लिये प्रभावी कदम उठाये। इसे आरम्भ करने के लिये निदेशक ने परियोजना कार्यान्वयन समिति का गठन किया जो उत्कृष्ट योजना रिपोर्ट को लागू करने के लिये स्थाई समिति होगी। उत्कृष्ट योजना रिपोर्ट को कार्यान्वित करना जटिल और अतिविशाल कार्य है जिसे संस्थान ने राष्ट्रपति निवास भवन का व्यापक स्तर पर संरक्षण करना है।

## क्रेंची लाईन का जीर्णोद्धार

संस्थान के निदेशक ने महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व विभाग के साथ बैठक करके अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र के सह अध्यक्षों के लिये "हॉल ऑफ रैजिडैन्स" बनाने के लिये क्रेंची लाईन भवन के जीर्णोद्धार के प्रस्ताव को अन्तिम रूप दे दिया। महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व विभाग ने सैद्धान्तिक रूप से अपनी सहमति दे दी कि भारतीय पुरातत्व विभाग निकट भविष्य में जीर्णोद्धार का कार्य आरम्भ कर देगा। भारतीय पुरातत्व विभाग से अनुरोध किया गया है कि वह जीर्णोद्धार के कार्य को अन्तिम रूप दे दें।

## बिलासपुर हाऊस का जीर्णोद्धार

संस्थान के निदेशक ने केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ बिलासपुर हाऊस के जीर्णोद्धार को अन्तिम रूप देने के लिये कई बैठकें की। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग से अनुरोध किया गया कि भवन के जीर्णोद्धार को पूरा करने के लिये आवश्यक कदम उठाये जाएं। इसके जीर्णोद्धार के पश्चात् बिलासपुर हाऊस भवन विदेशों से पधारे विद्वानों को ठहराने के प्रयोग में लाया जायेगा। यह आशा की गई थी कि यह कार्य विगत वित्तीय वर्ष में पूरा हो जायेगा लेकिन कुछ अपरिहार्य कारणों के फलस्वरूप यह मई 2011 के अन्त तक पूरा हो जायेगा।

## संस्थान परिसर के सात भवनों का जीर्णोद्धार

अलोच्य वर्ष की अन्तिम तिमाही में यह निर्णय लिया गया कि अध्यक्षों के आवासीय भवनों जैसे कलेयर विला (दो सैट), प्रौस्पैक्ट हिल ए ब्लॉक (चार सैट), स्टेरी कॉटेज (दो सैट), डीएसपी कॉटेज (दो सैट), फैलोर्ज हाऊस (तीन सैट), ग्रास शैड (एक सैट), बिलासपुर हाऊस (आठ सैट) का जीर्णोद्धार किया जायेगा।

## आईयूसी हॉस्टल को अध्यक्षों के आवास के लिये बदला जाना ( 6 सैट)

अलोच्य वर्ष की अन्तिम तिमाही में यह निर्णय लिया गया कि आईयूसी हॉस्टल बिल्डिंग का जीर्णोद्धार करके अध्यक्षों के लिये नये छः घर बनाए जाये, जैसे ही क्रेंची लाईन भवन का जीर्णोद्धार करके उसे आईयूसी

सह अध्येताओं के लिये "हॉल ऑफ रैजिडैन्स" तैयार हो जाता है। इस काम के लिये केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा आकलन प्राप्त हो गए हैं एवं आईआईएस ने इसकी सैद्धान्तिक स्वीकृति केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को दे दी है।

### अग्निश्मन व्यवस्था का मूल्यांकन

2010-11 के अलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान ने अग्निश्मन व्यवस्था को आर पी निवास भवन में सार्थक करने के कदम उठाए हैं। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (विद्युत) एवं महानिदेशक (फायर सर्विस) हिमाचल प्रदेश से अनुरोध किया गया है कि वह संस्थान भवन का निरीक्षण करके इसकी सुरक्षा के लिये सुझाव दें। इस समय संस्थान के पास इसका पुराना फायर सिस्टम है जिसका निरीक्षण किया जाना है, निरीक्षण करके इसे तैयार रखना है। यह प्रस्ताव फायर सैफटी लॉज ऑफ दी लैंड (एनसीबी 2005) के आधार पर है। इसके लिये लगातार अभ्यास की आवश्यकता है और प्रत्येक कर्मचारी को इसके ज्ञान की आशा की जाती है। ताकि वह संकट की घड़ी में काम कर सकें। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने एनसीबी 2005 के अन्तर्गत सुझाये गए मानकों के अनुसार भवन की सुरक्षा के लिये विस्तृत आकलन प्रस्तुत कर दिये हैं।

### हाल ही में किये अन्य कार्य

1. अलोच्य वर्ष में पुस्तकालय में पार्टीशन का कार्य निष्पादित किया गया।
2. उद्यान क्षेत्र के तीन गेट बदले गए।
3. मिल्ट्री वैरग न0 3 के सर्वेन्ट क्वाटर की मुम्मत का कार्य निष्पादित किया गया।

### 8. लेखे एवं बजट

वर्ष 2010-2011 व वर्ष 2011-2012 के अनुमोदित संशोधित आंकलन निम्नलिखित है:-

	संशोधित आंकलन	बजट आंकलन
	2010-2011	2011-2012
	(रुपए लाखों में)	
योजनेत्तर	633.00	684.00
योजनागत	430.59	480.00

वर्ष 2010-11 के परिक्षित वार्षिक लेखे महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल प्रदेश शिमला द्वारा अनुलङ्क-1 पर हैं।



## ख) आई०यू०सी० लेखे

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) स्कीम के लेखे सनदी लेखाकारों मैसर्जस राजिन्दर रवि और हरीश, शिमला द्वारा परिक्षित किए जाते हैं। वर्ष 2010-2011 का व्यय 32, 13 लाख रु, था।

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अर्न्तविश्वविद्यालय (आईयूसी) केन्द्र स्कीम के वर्ष 2010-2011 परिक्षित लेखों की विवरणी अनुलंगक-11 पर है।

## 9. उद्यान

संस्थान का एक अपना सुन्दर उद्यान है जिसमें विभिन्न फूलों, पौधों और वृक्षों की प्रजातियाँ हैं। विश्व में शायद इस प्रकार के प्राकृतिक दृश्य का उद्यान एक ही है। उद्यान वर्षा पर निर्भर हैं जो इसकी सिंचाई एवं रखरखाव करता है। उद्यान विभाग न केवल इसका रखरखाव कर रहा है बल्कि और नई पहल कर रहा है। “विरासत सैर” के विकास का कार्य प्रगति पर है। उद्यानों को और आकर्षित बनाने के लिये शरदपौध का पौधारोपण किया गया है। संस्थान के खुले भाग में बांसो का पौधारोपण हरित बाड़ के लिये किया गया है। छायादार मार्ग पौधारोपण के लिए कई पॉपलर विलोज़ का पौधारोपण किया गया है। कुछ विलोज़ और पॉपलर का पौधारोपण वर्षा ऋतु में किया जायेगा क्योंकि ग्रीष्म ऋतु में पानी की कमी होती है। उद्यानों की सुन्दरता के लिये कुछ नये सजावटी पौधे खरीदे गए हैं। एक नया संचाई टैंक काम करने लग गया है। भवन के पीछे लगे फव्वारों की मुरम्मत करवा ली गई है तथा इन्हें सुनिश्चित रूप चलाने के लिये प्रयास किये जा रहे हैं। हिमालयन रिसर्च ग्रुप और डॉ० वाईएस परमार उद्यानकी एवं वानकी विश्वविद्यालय एवं अन्य सरकारी विभागों से संस्थान की खाली भूमि पर पौधारोपण के लिये बातचीत की गई है और उनसे संस्थान के उद्यानों के विकास के लिये तकनीकी मार्गदर्शन का भी अनुरोध किया गया है। संस्थान में आयोजित आर्टिस्ट कैम्प में एक मूर्ति तैयार की गई जिसे उद्यान में स्थापित कर दिया गया है।

## निदेशक की अकादमिक गतिविधियाँ

1. मैसर्ज सेज़ पब्लिकेशन, दिल्ली द्वारा आयोजित पुस्तक विमोचन समारोह में 5 अप्रैल, 2010 को भाग लिया। संस्थान की अध्यक्षता डॉ० अन्नू कपूर द्वारा लिखित पुस्तक *वूलनरेवल इण्डिया : ए जॉर्नीफिकल स्टडी ऑफ डिजास्टर* जो उन्होंने संस्थान में अपनी फेलोशिप के दौरान अगस्त 2003 से मार्च 2006 में लिखी थी। जिसका प्रकाशन सेज़ पब्लिकेशन, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया है।
2. भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश के प्रथम अकादमिक परिषद का सदस्य तीन वर्ष के लिये मनोनित किया गया।
3. सेवा मन्दिर, उदयपुर में 19 अप्रैल 2010 को वार्षिक मोहन सिन्हा मेहता स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत किया।
4. “बिटवीन बींग प्रीन्सिपल्ड एण्ड बींग प्रैगमेटिक” विषय पर हरिश-चन्द्र शोध संस्थान (एचआर), इलाहाबाद में 19 जुलाई 2010 को स्थापना दिवस पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

5. संस्थान के प्रकाशन "स्पीकिंग ऑफ गाँधीज़ डैथ" का त्रिडिप शुरू के साथ सम्पादन किया।
6. यूएनईसीए, इंटरनैशनल आईडीए एडिस-अबाबा, इथोपिया द्वारा आयोजित "कस्टमरी गर्वनैन्स एण्ड डैमोक्रेसी बिल्डिंग : एक्सप्लोरिंग दी लिंकेजिज़" अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में 14-18 सितम्बर 2010 तक भाग लिया।
7. एस राजारतनम् स्कूल ऑफ इंटरनैशनल स्टडीज़, सिंगापुर में 25-26 नवम्बर 2010 को 4थ एनूअल कन्वेंशन ऑफ दी कॉन्सोर्ट्रियम ऑफ नॉन-ट्रेडिशनल सिक्योरिटी स्टडीज़ इन एशिया (एनटीएस-एशिया) में भाग लिया।
8. इण्डिया इंटरनैशनल सैन्टर, दिल्ली में 18 दिसम्बर 2010 को 50थ एनीवर्सरी लैक्चर ऑफ इण्डियन ह्यूमनिस्ट यूनियन ए ह्यूमनिस्ट मैसेज़ इन थ्री एपीसोड पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
9. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद में राजनीति विज्ञान विभागीय समिति की बैठक में भाग लिया और 20 जनवरी 2011 को "इण्डियन डैमोक्रेसी इन दी हॉल ऑफ मीररस् विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
10. स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, बिंगहटम में "इण्डियन डैमोक्रेसी इन दी हॉल ऑफ मीररस् विषय पर 4 फरवरी 2011 को व्याख्यान प्रस्तुत किया।
11. नैशनल डेमोक्रेटिक इन्स्टीच्यूट (एनडीआई), वाशिंगटन, डी.सी. द्वारा आयोजित डीपनिंग एनगेज़मेंट विद अमर्जिंग डैमोक्रेटिंग पॉवरस् ऑन डैमोक्रेसी अस्सिस्टैन्स गोलमेल में भाग लिया।
12. कोर सलाहकार ग्रुप के सदस्य होने के नाते पीस रिसर्च इन्स्टीच्यूट, ओसलो (पीआरआईओ) द्वारा ब्रसेल्स में किक ऑफ मीटिंग में कल्चर ऑफ गर्वनैन्स एण्ड कन्फ्लिक्ट रैजोल्यूशन इन यूरोप एण्ड इण्डिया (सीओआरई) परियोजना को नियमित एवं अन्य पहलुओं को स्थापित करने के लिये 11 फरवरी 2011 को आमंत्रित किया गया।
13. इंटरनैशनल इन्स्टीच्यूट फॉर डैमोक्रेसी एण्ड इलैक्ट्रोल अस्सिस्टैन्स (आईडीईए), स्टॉकहोम, स्वीडन, एक बहुपक्षीय संस्थान है, जिसका भारत भी सदस्य है, पाँच सदस्य बाह्य मूल्यांकन ग्रुप को नये अन्तराष्ट्रीय नीति लक्ष्य के 2012-2017 के मूल्यांकन हेतु कार्यशाला में 16 फरवरी 2011 को आमंत्रित किया गया।
14. सेंटर फॉर सोशल स्टडीज़ (सीईएस), कोयम्बारा, पुर्तगाल द्वारा आयोजित "पॉर्चुगल बिटवीन डिस्क्वायटस् एण्ड चैलेंजिज़" सम्मेलन में भाग लेने के लिये 17 और 18 फरवरी 2011 को आमंत्रित किया गया।
15. माननीय प्रधानमंत्री की स्वीकृति से संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित "लिविंग एण्ड डार्डवर्स कलचरल ट्रेडिशनस् ऑफ इण्डिया" संयोजन समिति का सदस्य होने के फलस्वरूप 11 जनवरी 2011 को पहली बैठक में सहभागिता की।
16. एडवायज़री बोर्ड ऑफ कोलोबरेटिंग प्रोजेक्ट (4थ यूरोपियन कमिशनस् 7थ फ्रेमवर्क प्रोग्राम) 'दी सैमेनेटिक्स ऑफ टॉलेरेन्स एण्ड एन्टी-रेसिज़म इन यूरोप : इन्स्टीच्यूशनस् एण्ड सिविल सोसायटी ऑन ए कम्पेरिटिव

प्रोस्पैक्टिव ( टॉलरेन्स) (2010-2013) का सदस्य होने के कारण पुर्तगाल में 17 फरवरी 2011 को सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।

17. संसदीय अध्ययन की राज्यसभा फैलोशिप का खोज और सलाहकार समिति का सदस्य होने के फलस्वरूप 28 जनवरी 2011 को राज्यसभा में बैठक के दौरान फैलोशिप अवार्डस का मूल्यांकन किया।
18. नेहरु स्टडीज़, सेंटर ऑफ़ दी यूनिवर्सिटी ऑफ़ जम्मू के सलाहकार समिति का वाह्य विशेषज्ञ मार्च 2011 में मनोनीत किया गया।

### प्रशासनिक एवं अन्य सूत्रपात

#### विरासत की सैर

वायसरीगल लॉज का राष्ट्रपति निवास, पोस्ट 47 परिष्कृत भवन है। वर्ष में एक लाख से भी अधिक देसी और विदेशी पर्यटक निवास में पधारते हैं। भवन के पीछे के भाग को संवारा गया है और हमने यह निर्णय लिया है कि भवन के सभी भागों का प्रयोग सुनिश्चित किया जाये—इससे भवन के सभी भागों के रखरखाब को सुनिश्चित किया जा सकेगा। हमारा प्रस्ताव है कि विरासत की सैर को आरम्भ किया जाए जो पर्यटकों के लिए एक यादगार सैर होगी—यह सैर दो घण्टे की अवधि की होगी। इस सैर से यह सुनिश्चित किया जायेगा कि परिसर के अधिकतम भाग और भवन को देखा जा सकेगा। इस सैर के द्वारा आय के साधनों में भी बृद्धि होगी जिसे संस्थान के रखरखाब के लिए प्रयोग में लाया जायेगा।

#### एफसीआरए

संस्थान ने गृह मंत्रालय (एमएचए), भारत सरकार से विदेशी सहयोग अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकरण हेतु आवेदन किया था। गृह मंत्रालय ने अपने पत्र संख्या 11/21022/78(0007)/2010-एफसीआरए II, दिनांक 16/12/2010 को इस अधिनियम के अन्तर्गत स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस स्वीकृति द्वारा संस्थान के लिये पूंजी/अंशदान के नये स्रोत खुलेगें जिन्हें विस्तार, मूलभूत सुविधाओं में सुधार, परिसर का रखरखाब और इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग वित्त समिति/प्रबन्ध समिति/सोसायटी की स्वीकृति से रचनात्मक कार्यों में प्रयोग किया जायेगा। यहाँ यह कहना तर्क संगत होगा कि इससे सहकारी क्षेत्र की लोकहितेषी संस्थाओं और धनाड्य व्यक्तियों से पूंजी प्राप्त करने के अवसर प्राप्त होंगे।

#### पारिस्थितिक (इकोलोजीकल) की कायकल्प

संस्थान के पास 80 एकड़ का भू-भाग है जिसमें अधिकतर भू-भाग वनों का है। संस्थान ने विस्तृत स्तर पर पौधारोपण का कार्य आरम्भ किया है जैसे छायादार मार्ग पौधारोपण (सड़क के किनारे) खाली भाग पर पौधारोपण करके उसे भरना आदि। इससे न केवल परिसर में हरियाली बढ़ेगी बल्कि संस्थान पारिस्थितिक मित्रता (इको-फ्रैन्डली) भी बढ़ेगी। संस्थान आगामी वर्ष ऋतु में विस्तृत स्तर पर पौधारोपण का अभियान चलायेगा और इसके लिये राज्य सरकार के वन विभाग से भी सहयोग लिया जायेगा।

## खेल परिसर

वर्ष के दौरान हमने खेल मंत्रालय, भारत सरकार से विचार विमर्श किया है एवं उनसे विद्यमान आधारभूत खेल संरचना को विकास करने के लिए प्रस्ताव देने का अनुरोध किया है। इस पहल से संस्थान के सामान्य के परिवेशी में सुधार होगा और अतिरिक्त पाठ्यचर्या कार्याकलापों में अतिरिक्त सुविधाओं का प्रावधान होगा।

- वर्ष के दौरान फ़ैलोशिप अवार्ड समिति की दो बैठकें प्रथम 14 मई 2011 एवं द्वितीय 14 दिसम्बर 2011 को आयोजित की गईं। प्रथम बैठक में फ़ैलोशिप अवार्ड समिति ने 16 विद्वानों को फ़ैलोशिप अवार्ड देने की सिफारिश की। उनमें डा० मानव रत्ती, डा० क्यूनी प्रधान सिंह, डा० नन्दिनी चौधरी सेन, डा० माईकल क्रूज़, डा० यू.ए. विनय कुमार, डा० धन्नजय सिंह, डा० रीता बनर्जी, डा० आर. स्वर्णलता, डा. जया त्यागी, डा. मलारिका सिन्हा रॉय, डा. पीयूष माथुर, डा. प्राची खण्डेपकर, डा. सतीश के. शर्मा, डा० स्वाधीनता महन्ता, डा. योगेन्द्र सिंह, और डा. सुषमिता चटर्जी थे। द्वितीय बैठक में फ़ैलोशिप अवार्ड समिति 06 विद्वानों को फ़ैलोशिप अवार्ड देने की सिफारिश की। उनमें अमृतरंजन बासु, श्री अदिति नाथ सरकार, डा० बाबु कलाथपारामबी थारिथ, डा० जी. अल्लोयसिस, प्रोफ़ेसर के. गोपाल अय्यर, प्रोफ़ेसर कविता पंजाबी, डॉ० मनीष कुमार ठाकुर, डॉ० मनीषा गंगहार, डॉ० मीरा आशर, श्री ओम प्रकाश बाल्मीकी, डॉ० सोहनी रॉय, डॉ० वृन्दा डालमिया, डॉ० यशोधरा मिश्रा, डॉ० योगेश स्नेही, डॉ० सुखपाल सिंह और डॉ० सरफराज़ अहमद थे।
- श्री एस० पी० ठाकुर, भा० प्र० स० (बैच 1986, उडीसा कॉडर) ने 22 सितम्बर, 2010 को सचिव का पदभार ग्रहण किया।
- आलोच्य वर्ष के दौरान अनुभाग अधिकारी (उद्यान) का पद भर दिया गया।
- सचिव के निजी सचिव के पद को विभागीय पदोन्नति से भर दिया है।
- राष्ट्रपति निवास भवन में अग्निश्मन व्यवस्था को संगठित किया जा रहा है।
- बुक-कम-सोविनियर शॉप में बिक्री बढ़ाने के लिये क्रेडिट कार्ड द्वारा भुगतान की व्यवस्था को शीघ्र ही आरम्भ कर दिया जायेगा।
- अध्येताओं की शिकायतों को दूर करने के लिये विशेष कदम उठाये गये हैं। इस दिशा में सचिव के कार्यालय में एक रजिस्टर रखा गया है जिसमें अध्येता अपनी शिकायत लिख सकते हैं। अध्येताओं द्वारा इसकी प्रशंसा की गई है।
- 21 अप्रैल 2010 को चोरी हुई घन्टी के पश्चात् सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। सुरक्षा व्यवस्था की कार्य प्रणाली का मूल्यांकन किया गया और फर्म के साथ अनुबन्ध रद्द कर दिया गया क्योंकि उनकी सेवाएँ सन्तोषजनक नहीं थी। परिसर की सुरक्षा व्यवस्था की मॉटर्निंग करने के लिए संस्थान के अधिकारियों द्वारा रात के समय जाँच आरम्भ कर दी गई है।
- संस्थान द्वारा प्रभावी कदम उठाने से अध्येताओं द्वारा पाण्डुलिपियाँ संस्थान को सौंपने में वृद्धि हुई है। विगत वर्ष, एक अध्येता को छोड़कर सभी अध्येताओं द्वारा पाण्डुलिपियाँ संस्थान को सौंप दी गईं। दोषी अध्येता को शीघ्र पाण्डुलिपि सौंपने के लिए प्रशासन द्वारा पत्र व्यवहार किया जा रहा है।

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग  
 प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)  
 हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

क्रमांक:जी.आइ.ए.सैल/एस.ए.आर./आई.आई.आई.ए.एस./2011-12/298-300 दिनांक: 21/9/2011

सेवा में,

सचिव  
 भारत सरकार  
 मानव संसाधन विकास मंत्रालय  
 उच्चतर शिक्षा विभाग  
 शास्त्री भवन  
 नई दिल्ली-110001

विषय:- भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के वर्ष 2010-2011 के लेखों का सीएजी (डीपी एण्ड सीएस) एक्ट 1971 की धारा 20 (1) के अधीन प्रमाणीकरण करना।

महोदय,

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान के लेखाओं की परीक्षा का कार्य वित्त मंत्रालय, भारत सरकार (आर्थिक मामले विभाग, बजट डिविजन), नई दिल्ली के पत्र संख्या: एफ न. 1(20)-बी (आर) 2008 दिनांक 19.8.2008 के अनुसार वर्ष 2012-13 तक 5 वर्षों के लिए सौंपा गया है। अतः मैं इस पत्र के साथ वर्ष 2010-11 के प्रमाणित लेखें लेखा परीक्षा रिपोर्ट के साथ भेज रहा हूँ।

लेखा परीक्षा के द्वारा पाई गई त्रुटियों से मंत्रालय को अवगत करवा दिया है और संस्थान को लेखा परीक्षा एवं निरीक्षण रिपोर्ट के द्वारा सूचित कर दिया है।

यह भी सुनिश्चित कर लें कि संसद में प्रस्तुत करने से पहले प्रमाणित लेखें व भारत के नि. एवं म. ले. द्वारा जारी पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट संस्थान की समिति से स्वीकृत करवा ली गई है। संसद के दोनों सदनों में लेखा परीक्षा रिपोर्ट तथा प्रमाणित लेखों को पटल पर रखने की तिथि इस कार्यालय को सूचना रिकार्ड हेतु भेजने की कृपा करें।

संलग्न: उपरोक्त

भवदीय

ह.

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

प्रतिलिपि : निदेशक, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला को वर्ष 2010-11 के प्रमाणित लेखों एवं पृथक लेखापरीक्षा रिपोर्ट और प्रबन्धन पत्र के साथ सूचना एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है। यह भी सुनिश्चित कर लें कि संसद में प्रस्तुत करने से पहले प्रमाणित लेखें तथा पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट संस्थान की समिति से स्वीकृत करवा ली गई है।

ह.

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संलग्न: उपरोक्त

प्रतिलिपि : भारत के नियंत्रक-महालेखापरिक्षक, 10- बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली को मुख्यालय के पत्र संख्या 71433-रिपोर्ट(एसडब्ल्यूए.एनआई) 215-2011 दिनांक 02/9/2011 के संदर्भ में मंत्रालय/आईआईएस को प्रेषित की गई। मुख्यालय की प्रारूप पृथक लेखा परीक्षा पर निरीक्षण के उतरों का विवरण एवं निर्धारित प्रोफार्मा में लेखापरीक्षा की प्रगति भी संलग्न है।

ह.

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संलग्न: उपरोक्त

### 31 मार्च, 2011 को समाप्त वर्ष के लिए, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के लेखाओं पर भारत के नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक का पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

हमने 31 मार्च, 2011 तक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के संलग्न तुलन-पत्र, तथा उस तिथि को समाप्त वर्ष हेतु आय एवं व्यय लेखा/प्रप्तियां एवं भुगतान लेखाओं की भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के संघ सम्बन्धी विधान पत्र की धारा 60 के साथ पठित नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक के (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा की शर्त) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अन्तर्गत लेखापरीक्षा कर ली है। यह लेखापरीक्षा 2012-13 की अवधि के लिए हमें सौंपी गई है। इन वित्तीय विवरणों का उत्तरदायित्व स्वायत्त निकाय के प्रबन्धन का है हमारा उत्तरदायित्व हमारी लेखापरीक्षा पर आधारित इन वित्तीय विवरणों पर मत व्यक्त करना है।

2. इस पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में केवल वर्गीकरण, उत्तम लेखाकरण प्रथाओं के साथ अनुरूपता, लेखाकरण सम्बन्धी मानकों और प्रकटन मानकों आदि के सम्बन्ध में केवल लेखाकरण व्यवहार पर नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक (सीएजी) की टिप्पणियां शामिल हैं। कानून, नियमों एवं विनियमों (औचित्य एवं नियमितता) तथा दक्षता एवं निष्पादन पहलुओं आदि के अनुपालन के सम्बन्ध में वित्तीय लेन-देन पर लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां आदि कोई हों, निरीक्षण प्रतिवेदनों/भारत के नियन्त्रक-महा-लेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के माध्यम से अलग से सूचित की जाती है।

3. हमने भारत में सामान्यतया रूप से स्वीकार किए गए लेखापरीक्षण मानकों के अनुसार अपनी लेखापरीक्षा की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि हम इस विषय में समुचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए कि क्या वित्तीय विवरण मिथ्या विवरणों से मुक्त है, योजना बनाते हैं और लेखापरीक्षा करते हैं। लेखापरीक्षा में नमूना के आधार पर जांच करना, राशियों का समर्थन करने वाले साक्ष्यों और वित्तीय विवरणों में किए गए प्रकटन शामिल होते हैं। लेखापरीक्षा में प्रयुक्त किए गए लेखाकरण सिद्धान्तों तथा प्रबन्धन द्वारा किए गए महत्वपूर्ण अनुमानों के निर्धारण और वित्तीय विवरणों के समग्र प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी शामिल है। हम विश्वास करते हैं कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे मत के लिए समुचित आधार प्रधान करती है।

4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम रिपोर्ट करते हैं कि :-

1. हमने वे समस्त सूचना और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिये हैं, जो लेखापरीक्षा के उद्देश्यार्थ हमारे सर्वोत्तम जानकारी तथा विश्वास के लिए आवश्यक थे।
2. इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियाँ एवं भुगतान लेखा की भारत सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा निर्धारित फॉर्मेट में तैयार किया गया है।
3. हमारी राय में भारत उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा लेखाओं को उपयुक्त बहियों और अन्य सम्बद्ध अभिलेखों, जहां तक ऐसी बहियों के सम्बन्ध में हमारी जाँच से प्रकट होता है, का अनुरक्षण भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान के संघ सम्बन्धी विधान-पत्र की धारा 60 के अन्तर्गत यथा अपेक्षित किया गया है।

4. हम आगे रिपोर्ट करते हैं कि:

क **तुलन-पत्र**

**अचल परिसम्पतियाँ (अनुसूची-3) : 1503.35 लाख रु०**

अनुसूचित के लेखाओं के सामान्य फॉर्मेट द्वारा निर्धारित फॉर्मेट में परिसम्पत्ति वार विवरण को दर्शाते हुए नहीं बनाया गया है। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने उसी फॉर्मेट में यथा निर्धारित मूल्यद्वारा प्रभारित नहीं किया है।

ख. **आय एवं व्यय लेखा**

**अन्य प्रशासनिक खर्च (अनुसूची 12) : 573.39 लाख रुपये**

उपरोक्त की अन्तिम व्यय के रूप में निक्षेपों की गलत गणना करने के कारण 190.39 लाख रुपये की अत्योक्ति हुई जो संस्थान द्वारा मार्च 2011 में केन्द्रीय लोक निर्माण मण्डल, शिमला को आवासीय एवं गैर आवासीय भवनों के अनुरक्षण (30.05 लाख रुपये), राष्ट्रपति निवास भवन के संरक्षण तथा पुनरुद्धार (26.26 लाख रुपये), राष्ट्रपति निवास भवन की विशेष मुरम्मत एवं अनुरक्षण (119.08 लाख रुपये) तथा विद्युत कार्य (15.00 लाख रुपये) के लिये दिये थे। जिसके परिणामस्वरूप वर्ष में 'व्यय' तथा 'घाटे' की अत्योक्ति तथा "पूँजी निधि" व "चालू परिसम्पतियों, ऋण तथा अग्रिमों" की प्रत्येक में रु० 190.39 लाख तक की न्यूनोक्ति हुई।

ग. **सहायता अनुदान**

रु० 11.06 करोड़ (गत वर्ष के अव्ययित शेष: 1.25 करोड़ रु० तथा वर्ष के दौरान अनुदान : 9.81 करोड़ रु०) की कुल उपलब्ध निधियों में से भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान 31 मार्च 2011 तक 0.2 करोड़ रुपये के शेष को छोड़कर 11.04 करोड़ रुपये की राशि का प्रयोग कर सका।

घ. **प्रबन्धन पत्र**

उन कमियों को, जिन्हें इस लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में सम्मिलित नहीं किया गया है, निदेशक, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के ध्यान में 'प्रबन्धन पत्र' के माध्यम से लाया गया है ताकि उन पर उपचारी/सुधारात्मक कार्यवाई की जा सके।

v. पूर्ववर्ती परिच्छेदों में हमारी अभ्यक्तियों के अनुसार हम रिपोर्ट करते हैं कि इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियाँ एवं भुगतान लेखा, लेखा-बहियों के अनुरूप हैं।

vi. हमारी राय में और हमारी सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार लेखाकरण नीतियाँ एवं लेखाओं पर टिप्पणियों के साथ पठित तथा उपर्युक्त उल्लिखित महत्वपूर्ण मामलों और इस लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के अनुबन्ध में उल्लिखित अन्य मामलों से सम्बन्धित उक्त वितीय विवरण भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण के सिद्धांतों के अनुरूप सही एवं उचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं:-



- क जहां तक यह 31 मार्च 2011 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के कार्यों के तुलन-पत्र से संबंधित है: तथा
- ख जहां तक यह उस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए 'घाटे' के आय एवं व्यय लेखे से संबंधित है।

**भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से**

**(जे. विल्सन)**

**महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल प्रदेश**

**स्थान: शिमला**

दिनांक: 21/10/2011

### अनुबन्ध

#### (क) आन्तरिक लेखापरीक्षा प्रणाली की पर्याप्तता

संस्थान द्वारा कोई भी आन्तरिक लेखापरीक्षा प्रणाली शुरु नहीं की गई है। इन कार्यों के निष्पादनार्थ अपने स्टाफ के मार्ग दर्शन के लिये संस्थान ने अपनी लेखाकरण एवं लेखापरीक्षा से सम्बन्धित नियमपुस्तिकाओं को तैयार नहीं किया है। इस प्रकार, प्रणाली में कमियों व दोष के परिदृश्य में यह सिफारिश की जाती है कि स्टाफ के मार्गदर्शन के लिये लेखीकरण/लेखापरीक्षण नियम पुस्तिका मैनुअल अपने कर्मचारियों के मार्ग दर्शन के लिए बनाएँ और आन्तरिक लेखापरीक्षा करने के लिये प्रभावी आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली शुरु की जानी चाहिए।

#### (ख) आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली की पर्याप्तता

संस्थान के आकार तथा कार्यकलापों की प्रकृति के परिदृश्य में आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली पर्याप्त है।

#### (ग) अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु – सूचियों की भौतिक सत्यापन प्रणाली

अचल परिसम्पतियों के रजिस्ट्रों का अनुरक्षण नहीं किया गया है। 1999 से अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु-सूचियों का भौतिक सत्यापन भी नहीं किया गया है।

#### (घ) सांविधिक देयताओं की अदायगी में नियमितता।

संस्थान द्वारा सभी सांविधिक देयताओं की नियमित रूप से सम्बन्धित प्राधिकारियों को अदायगी की गई थी।

**भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग**  
**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003**

क्रमांक: जीआईए सैल/एसएआर/आईआईएस, शिमला/2011-12/303 दिनांक: 21/9/2011

सेवा मे

**निदेशक**

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान**

**शिमला**

**विषय : प्रबन्धन पत्र : लेखा परीक्षा के दौरान आन्तरिक नियंत्रण/लेखा रिकार्ड/व्यवस्था में पाई गई कमियाँ।**

महोदय,

इस कार्यालय द्वारा वर्ष 2010-11 के भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला के वार्षिक लेखों की लेखापरीक्षा की गई तथा उन पर दिनांक 21/9/2011 द्वारा पृथक लेखा प्रतिवेदन जारी किया गया है। लेखापरीक्षा के दौरान निम्नवत कमियाँ पाई गई जिन्हें लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में सम्मिलित नहीं किया गया। तथापि, संशोधन तथा उपचारी कार्यवाही हेतु इन्हें आपके ध्यान में लाया जा रहा है।

**क. अचल परिसम्पतियाँ (अनुसूची-3)**

**1530.35 लाख रुपये**

1. अचल परिसम्पतियों को निर्धारित रजिस्टर (जीएफआर 19) के अनुसार नहीं बनाया गया है।
2. अचल परिसम्पतियों में 10.07 लाख रुपये की अचल परिसम्पतियाँ प्रदर्शित है जिन्हें पहले से ही अप्रयोग्य घोषित किया जा चुका है परन्तु इनके अनुमानित घाटे का प्रावधान नहीं किया गया है। इसके फलस्वरूप प्रत्येक 10.07 लाख रुपये की "अचल परिसम्पतियों" और 'पूँजीगत निधि' तथा "वर्ष हेतु अधिशेष" का घाटा हुआ है।

**(ख) चालू सम्पतियाँ, ऋण एवं पेशगियाँ (अनुसूची-4 और 4ए)**

**312.27 लाख रुपये**

**ऋण एवं पेशगियाँ (अनुसूची-4ए)**

**34.08 लाख रुपये**

1. ऋण एवं पेशगियाँ 30.81 लाख रुपये ऋण एवं पेशगियों मे 16.40 लाख रुपये की विविध वसूली तीन वर्ष से (1972-73 से 2005-06) बकाया है और इनकी वसूली सन्देहप्रद है। इनकी सही वसूली के लिए

प्रावधान लेखाओं में किया जाना था। इसका प्रावधान न किये जाने के कारण 16.40 लाख रुपये प्रत्येक "ऋण एवं पेशगिया", वर्ष के लिए हेतु "अधिशेष" और "पूँजीगत निधि" में न्यूनोक्ति हुई।

2. 0.2 लाख रुपये की विविध पेशगियाँ (30.31 लाख रुपये) जो सबस्डरी लेखा वही में प्रदर्शित की गई हैं, में फर्क है (31.3 लाख रुपये) इसके फलस्वरूप "सहायता अनुदान" और "विविध पेशगियों" में न्यूनोक्ति हुई है।

### (ग) चालू देयदारों एवं प्रावधान (अनुसूची-2)

**513.5 लाख रुपये**

#### प्रावधान

उपरोक्त में सहयोगियों (फैलोज़) तथा कर्मचारियों के मंहगाई भत्ता (4.22 लाख रुपये) ट्यूशन फीस (3.00 लाख रुपये और पेंशन प्रभार 6.90 लाख रुपये) 14.12 लाख रुपये के दायित्व सम्मिलित नहीं हैं। इसके परिणामस्वरूप 'चालू देयताओं तथा प्रावधानों' घाटा तथा प्रत्येक 14.12 लाख रुपये तक 'वर्ष हेतु अधिशेष' तथा 'पूँजीगत निधि' की अत्योक्ति हुई।

#### (घ) सामान्य

(1) संस्थान ने भविष्य निधि को लेखाओं विवरणों को रूप से रखने की बजाय पृथक भविष्य निधि अंशदान और उसके उपर मिलने वाले ब्याज को जीआईए लेखाओं के साथ मिला दिया है इसके अतिरिक्त संस्थान ने भारत सरकार के भविष्य निधि अंशदान के निर्देशों दिनांक 24 जनवरी 2005 का अनुपालन नहीं किया है।

(2) वर्ष के दौरान 13.12.लाख रुपये की अचल परिसम्पतियों को भारत सरकार की पूर्व अनुमति के बिना बट्टे-खाते में डाल दिया। यह तथ्य "लेखाओं पर टिप्पणी" में प्रदर्शित नहीं किया गया।

(3) संस्थान द्वारा समायोजन की प्रबिष्टियों के लिए कोई जरनल नहीं बनाया गया है।

(4) 5.09 लाख रुपये के नामे देनदार छः मास की अवधि से भी अधिक है जिनमें 3.45 लाख रुपये के नामे देनदार तीन वर्ष की अवधि से अधिक है (4 से 10 वर्ष 2.19 लाख और 11 से 19 वर्ष के 1.26 लाख रुपये) इन नामेदेनदारों, को न तो "अच्छा" और "बुरा" और "सन्देहप्रद" वियोजन किया गया है और न ही इन्हें "लेखाओं पर टिप्पणी" में प्रदर्शित किया गया है।

भवदीय

ह.

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

तुलन पत्र



भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
31 मार्च 2011 का तुलन पत्र

पूँजीगत निधि एवं देयताएं	अनुसूची	(रूपये) 31.3.2011 को	31.3.2010 को
पूँजीगत निधि	1	13,02,57,029.03	13,42,02,015.90
चालू देयताएँ और प्रावधान	2	51,30,4871.40	5,06,22,908.40
<b>कुल जोड़</b>		<b>18,15,61,900.43</b>	<b>18,48,24,924.30</b>
<b>परिसम्पतियाँ</b>			
स्थाई परिसम्पतियाँ	3	15,03,34,707.73	14,28,14,552.73
चालू परिसम्पतियाँ	4	31,22,7,192.70	4,20,10,371.57
<b>जोड़</b>		<b>18,15,61,900.43</b>	<b>18,48,24,924.30</b>

शिमला -171005  
दिनांक 25.5.2011

ह0  
लेखा अधिकारी

ह0  
सचिव

ह0  
निदेशक





**आय एवं व्यय लेखा**



<b>भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला -171005</b>		
<b>तुलन पत्र के भाग को तैयार करने के लिए संगलित 1 से 4 तक अनुसूचियाँ</b>		
<b>अनुसूचियाँ</b>	<b>31.3.2011 को समाप्त वर्ष</b>	<b>31.3.2010 को समाप्त वर्ष</b>
<b>अनुसूची 1</b>		
<b>पूँजीगत निधि</b>		
<b>अथ शेष</b>	<b>13,42,02,015.90</b>	<b>13,53,29,412.12</b>
जमा करें वर्ष के दौरान प्राप्त	29,63,6,461.00	2,63,94,083.00
घटाएँ वर्ष के दौरान कटौतियाँ	29,85,3,824.00	2,96,36,461.00
आय और व्यय लेखों से हस्तांतरित कुल आय/(व्यय) को जमा (घटाएँ) करें	-37,27,623.87	21,14,981.78
<b>वर्ष के अन्त मे शेष</b>	<b>13,02,57,029.03</b>	<b>13,42,02,015.90</b>
<b>अनुसूची 2</b>	<b>31.3.2011 को समाप्त वर्ष</b>	<b>31.3.2010 को समाप्त वर्ष</b>
<b>चालू देयताएँ और प्रावधान</b>		
<b>क चालू देयताएँ</b>		
1. नामे देनदार		
2. अन्य देयताएँ		
(क) अन्य प्रेषण	45,770.00	45,770.00
(ख) भ0 निधि ब्राडशीट	20,85,0,127.40	2,00,76,682.40
(ग) टीडीएस देय	0.00	5,53,979.00
(घ) भ.नि./बीमा भुगतान	1,38,939.00	54,699.00
(ङ) नई पेंशन योजना	4,01,873.00	2,55,317.00
(च) कर्मचारी कल्याण संस्था वसूली	14,338.00	0.00
(ख) प्रावधान		
क) ग्रेच्यूटी	1,94,13,917.00	1,86,92,102.00
ख) अवकाश का भुगतान	10,43,9,907.00	1,09,44,359.00
<b>जोड़</b>	<b>51,30,4,871.40</b>	<b>5,06,22,908.40</b>
<b>अनुसूची 3</b>	<b>31.3.2011 को समाप्त वर्ष</b>	<b>31.3.2010 को समाप्त वर्ष</b>
1.4.2010 को परिसम्पतियों का अथशेष	14,28,14,552.73	13,70,49,162.73
चालू वर्ष की परिसम्पतियों को जमा करें	88,32,556.00	87,98,815.00
पूर्व अवधि का समायोजन	66,000.00	0.00
वर्ष के दौरान बट्टे खाते में डाली गई परिसम्पतियाँ	12,46,401.00	30,33,425.00
<b>जोड़</b>	<b>15,03,34,707.73</b>	<b>14,28,14,552.73</b>

अनुसूची 4	31.3.2011 को समाप्त वर्ष	31.3. 2010 को समाप्त वर्ष
<b>क. चालू परिसम्पतियाँ</b>		
<b>1.भण्डार</b> (परिषद् द्वारा मूल्यांकित एवं प्रमाणित)		
भउअसं के प्रकाशनों का भण्डार	23,67,907.94	23,10,676.14
भउअसं के प्रकाशनों का भण्डार सहप्रकाशकों के पास	13,72,622.00	9,93,862.00
<b>2.नामे देनदार</b>		
(क) छ: महीने से अधिक देनदारी	5,09,144.83	4,81,865.50
(ख) केलोनिवि से वसूली	16,52,253.00	16,52,253.00
(ग) हि.प्र विश्वविद्यालय से वसूली	36,864.00	36,864.00
(घ) श्री मानस रे और ए.सी. चौधरी से टीडीएस की वसूली	90,542.00	4,000.00
(ङ) श्री मानस रे से भ.नि. अंशदान	2,397.00	2,397.00
<b>3.अथशेष नगद</b>		
क) अथशेष नगद		
ख) अग्रदाय शेष	30,000.00	30,000.00
<b>4. बैंक मे शेष</b>		
<b>चालू खाते</b>		
क) भ. स्टेट बैंक खाता न. 10116685058	54,066.51	1,23,14,156.51
ख) कैनरा बैंक खाता न. 437	37,842.00	99,860.00
ग) भ. स्टेट बैंक नई दिल्ली खाता 24	6,671.00	6,671.00
घ) भ. स्टेट बैंक डिफैन्स कॉलोनी खाता न. 62212	4,528.02	4,528.02
<b>बचत खाते</b>		
क) भ. स्टेट बैंक खाता (भ.नि. खाता)	12,30,627.40	19,56,875.40
नई पेंशन निधि अंशदान	4,01,873.00	2,55,317.00
नई पेंशन निधि अंशदायी	4,01,873.00	2,55,317.00
<b>अनुसूची 4 ख जमा खातों</b>		
क) भ. स्टेट बैंक के पास एफडीआर (आरपी निवास के अनुरक्षण एवं संरक्षण के लिए)	—	—
ख) भ. स्टेट बैंक के पास (भ.नि के लिए एफडीआर)	19,61,9,500.00	1,81,19,807.00
1. एफडीआर भ.स्टेट बैंक बालूगंज रु 1,92,50,000.00		
2. आरबीआई के प्रोमजरी नोट रु 1,02,000.00		
3. भ स्टेट बैंक शिमला मे पास विशेष जमा रु 2,67,500.00		
जोड़	रु 1,,96,19,500.00	
<b>जोड़ (क)</b>	<b>27,81,8,711.70</b>	<b>3,85,24,449.57</b>

अनुसूची 4 क ऋण पेशगियाँ और परिसम्पतियाँ		
क. ऋण एवं पेशगियाँ	33,07,668.00	34,25,109.00
ख. डाक एवं तारघर के पास जमा अमानत	36,200.00	36,200.00
ग. विनीत गैस के पास जमा अमानत	19,000.00	19,000.00
घ. नगर निगम के पास जमा	980.00	980.00
ड. पेट्रोल के लिए जमा	40,000.00	0.00
च. अन्य	4,633.00	4,633.00
<b>जोड़ (ख)</b>	<b>34,08,481.00</b>	<b>34,85,922.00</b>
<b>जोड़ (4 और 4 क)</b>	<b>31,22,7,192.70</b>	<b>4,20,10,371.57</b>

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला -171005			
वर्ष 2010-2011 का आय व्यय लेखा			
रुपयों में			
आय	अनुसूची	31/3/2011	31/3/2010
प्राप्त अनुदान	5	9,81,08,000.00	8,98,00,000.00
शुल्क/ अंशदान प्राप्त प्रकाशनों तथा रायल्टी से प्राप्त आय	6 7	54,900.00 11,53,632.33	14,150.00 5,10,142.64
अर्जित ब्याज	8	11,87,098.00	22,58,742.00
अन्य आय	9	63,85,152.00	37,64,931.00
भण्डार में बढत/कमी	10	4,35,991.80	1,08,013.14
<b>कुल जोड (क)</b>		<b>10,73,24,774.13</b>	<b>9,64,55,978.78</b>
<b>व्यय</b>			
प्रशासनिक व्यय	11	52,40,1,214.00	4,50,52,179.00
अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	12	57,33,8,783.00	4,62,55,393.00
वर्ष के दौरान विक्रय प्रक्रिया स्थाई सम्मतियों की निलामी समायोजन अवधि से पहले		13,12,401.00	30,33,425.00
<b>कुल जोड (ख)</b>		<b>11,10,52,398.00</b>	<b>9,43,40,997.00</b>
आय की अधिकता/(व्यय) (क-ख)		-37,27,623.87	21,14,981.78
पुर्जीगत निधि में अधिक/कम अथशेष		-37,27,623.87	21,14,981.78

शिमला -171005  
दिनांक 25.5.2011

ह0  
लेखा अधिकारी

ह0  
सचिव

ह0  
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला -171005 आय व्यय लेखों के भाग का तैयार करने के लिए संगलित 5 से 12 तक अनुसूचियाँ		
अनुसूचियाँ	31 .3. 2011 को समाप्त वर्ष	31. 3. 2010 को समाप्त वर्ष
<b>अनुसूची 05</b>		
<b>अनुदान प्राप्त</b>		
मा.सं.वि.म. से प्राप्त अनुदान (योजनेतर)	54,49,3,000.00	
मा.सं.वि.म. से प्राप्त अनुदान (योजनागत)	39,70,0,000.00	8,98,00,000.00
मा.सं.वि.म. से प्राप्त अनुदान (योजनागत-एनईआर)	36,45,000.00	
भा.दा.अनु.परिषद दिल्ली से प्राप्त अनुदान	2,70,000.00	0.00
<b>जोड़</b>	<b>9,81,08,000.00</b>	<b>8,98,00,000.00</b>
<b>अनुसूची 06</b>	<b>31 .3. 2011 को समाप्त वर्ष</b>	<b>31. 3. 2010 को समाप्त वर्ष</b>
<b>शुल्क / अशंदान प्राप्त</b>		
1) पत्रिकाओं से प्राप्त अशंदान	300.00	750.00
2) पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	54,600.00	13,400.00
<b>जोड़</b>	<b>54,900.00</b>	<b>14,150.00</b>
<b>अनुसूची 07</b>	<b>31 .3. 2011 को समाप्त वर्ष</b>	<b>31. 3. 2010 को समाप्त वर्ष</b>
<b>रॉयल्टी, प्रकाशनों आदि से आय</b>		
1. भ. उ. अ. स. के प्रकाशनों से आय	11,48,672.33	4,22,714.00
2. सहप्रकाशकों से प्रकाशनो की आय	4,960.00	87,428.64
<b>जोड़</b>	<b>11,53,632.33</b>	<b>5,10,142.64</b>

अनुसूची 08	31 .3. 2011 को समाप्त वर्ष	31. 3. 2010 को समाप्त वर्ष
<b>अर्जित ब्याज</b>		
1. सावर्धिक जमा पर		
क) अनुसूचित बैंक की एसटीडीआर	.00	9,18,595.00
अनुसूचित बैंक		
ख) अन्य		
भ.नि. जमा पर ब्याज	11,87,098.00	13,40,147.00
<b>जोड़</b>	<b>11,87,098.00</b>	<b>22,58,742.00</b>

अनुसूची 09	31.3. 2011 को समाप्त वर्ष	31. 3. 2010 को समाप्त वर्ष
<b>अन्य आय</b>		
1) टिकट बूथ की प्राप्तियाँ	44,84,604.00	27,72,272.00
2) फल/पौध की बिक्री	16,875.00	13,790.00
3) कर्मचारियों को दी गई पेशगी से अर्जित ब्याज से आय	2,47,972.00	78,273.00
4) किराया एवं फर्नीचर की वसूली से आय	2,64,686.00	2,15,302.00
5) जल एवं विद्युत प्रभार से आय	78,374.00	60,344.00
6) विविध आय-अन्य	9,33,314.00	6,06,753.00
7) न्यायालय शुल्क	14,350.00	17,500.00
8) अतिथिगृह से आय	34,4,977.00	0.00
9) अग्रदाय पर ब्याज	0.00	697.00
<b>जोड़</b>	<b>63,85,152.00</b>	<b>37,64,931.00</b>
अनुसूची 10	31 .3. 2011 को समाप्त वर्ष	31. 3. 2010 को समाप्त वर्ष
<b>भण्डार में बढत/कमी</b>		
क) भण्डार		
– भ.उ.अ.सं के प्रकाशनों का भण्डार	23,67,907.94	23,10,676.14
– सहप्रकाशकों के पास प्रकाशनों का भण्डार	13,72,622.00	9,93,862.00
<b>जोड़</b>	<b>37,40,529.94</b>	<b>33,04,538.14</b>
ख) घटाएँ भण्डार		
भ.उ.अ.सं के प्रकाशन का भण्डार	23,10,676.14	22,31,001.00
सहप्रकाशकों के पास प्रकाशनों का भण्डार	9,93,862.00	9,65,524.00
<b>जोड़</b>	<b>33,04,538.14</b>	<b>31,96,525.14</b>
<b>भण्डार में बढत (कमी) (क-ख)</b>	<b>4,35,991.80</b>	<b>1,08,013.14</b>

अनुसूची 11	31/3/2011 को समाप्त वर्ष	31/3/2010 को समाप्त वर्ष
<b>प्रशासनिक व्यय</b>		
1. वेतन एवं भत्ते	3,16,07,588.00	3,27,88,706.00
2. मैडिकल, यात्रा भत्ता, मानदेय तथा बोनस	5,72,672.00	4,68,330.00
3. अधिकारियों एवं कर्मचारियों को यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	5,38,917.00	5,60,831.00
4. अराजपत्रित कर्मचारियों को समयोपरि भत्ता	13,977.00	18,370.00
5. भविष्य निधि पर ब्याज	1,18,7,098.00	13,39,132.00
6. मासिक पेंशन तथा अन्य पेंशन लाभ	18,46,3,412.00	98,58,160.00
7. रिवाइड	17,550.00	18,650.00
<b>जोड़</b>	<b>5,24,01,214.00</b>	<b>4,50,52,179.00</b>



अनुसूची 12	31/3/2011 को समाप्त वर्ष	31/3/2010 को समाप्त वर्ष
<b>अन्य प्रशासनिक व्यय आदि</b>		
1. विज्ञापन तथा प्रचार	2,24,871.00	3,36,865.00
2. लेखा परीक्षा शुल्क	1,44,540.00	1,42,402.00
3. जल एवं विद्युत प्रभार	36,61,998.00	36,27,982.00
4. मजदूरी	28,750.00	17,600.00
5. लेखन सामग्री एवं मुद्रण	3,77,773.00	5,08,050.00
6. डाक शुल्क	1,47,346.00	1,60,016.00
7. टेलीफोन प्रभार	2,96,130.00	3,55,619.00
8. स्थाई परिसम्पत्तियों की मरम्मत एवं रख-रखाव	3,83,831.00	3,84,826.00
9. रिहायशी और गैर रिहायशी भवनों का रख-रखाव	30,04,762.00	60,25,052.00
10. बर्दियाँ	1,07,424.00	1,12,763.00
11. प्रासंगिक	8,20,586.00	10,47,762.00
12. संस्थान के वाहनों का व्यय	2,88,003.00	2,55,292.00
13. संस्थान के वाहनों की मरम्मत एवं रख-रखाव	1,29,995.00	1,95,662.00
14. आर.पी.निवास भवन का किराया	12,000.00	0.00
15. आर.पी. निवास फर्नीचर का किराया	6,000.00	0.00
16. के.लो.नि.वि. विद्युत कार्य	15,00,000.00	21,79,141.00
17. आर.पी.निवास की विशेष मरम्मतें एवं रख-रखाव	11,90,8,151.00	0.00
18. उद्यान व्यय	5,48,101.00	3,96,615.00
19. विधि व्यय	1,03,685.00	1,54,690.00
20. नगर निगम कर	98,473.00	97,292.00
21. औषधालय एवं दवाईयाँ	2,87,926.00	2,07,413.00
22. प्रयोगिय भण्डार	2,06,601.00	58,127.00
23. अध्येतावृत्ति अनुदान यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ते सहित	1,66,99,759.00	1,14,65,511.00
24. सोसायटी के सदस्यों को यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	44,11,808.00	11,57,419.00
25. दिल्ली अतिथिगृह का किराया	4,03,152.00	2,56,848.00
26. प्रकाशन व्यय	18,27,490.00	11,92,800.00
27. संगोष्ठी सम्मेलन तथा कार्यशालाएँ	50,80,165.00	60,15,146.00
28. आगन्तुक विद्वानों एवं प्रोफेसरों का आदि का यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	2,76,262.00	3,02,658.00
29. टिकट घर व्यय	29,84,759.00	21,28,888.00
30. आतिथिय	32,319.00	42,661.00
31. आर.पी.निवास का अंगरक्षण एवं जीणोद्वार	26,25,686.00	39,25,978.00
32. पुस्तकालय एवं अन्य व्यय	6,41,889.00	7,16,203.00
33. ईपीबीएएक्स	1,45,350.00	2,08,075.00
34. वर्ड प्रोसेसर	9,17,250.00	26,77,014.00
35. बैंक प्रभार	5,948.00	1,869.00
36. गत वर्ष के पोस्टकार्ड की राशि	0.00	39,220.00
37. के.लो.नि.वि. से गत वर्ष का किराया	0.00	-1,38,066.00
<b>जोड़</b>	<b>5,73,38,783.00</b>	<b>4,62,55,393.00</b>



**प्राप्तियों एवं भुगतान का विवरण**



भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005					
31 मार्च 2011 को समाप्त वर्ष की प्राप्तियों और भुगतान का लेखा					
प्राप्तियों	31.3.2011 को समाप्त वर्ष	31.3.2010 को समाप्त वर्ष	भुगतान	31.3.2011 को समाप्त वर्ष	31.3.2010 को समाप्त वर्ष
1. अथ शेष			1. व्यय		
क) रोकड	0.00	0.00	1. स्थापना व्यय	3,12,74,928.00	3,27,10,512.00
ख) अप्रदाय शेष	30,000.00	30,000.00	1. वेतन एवं भत्ते	5,72,672.00	4,68,330.00
ख) अथशेष बैंक में			2. मैडिकल, एलटीसी, मानदेय व बोनस	5,38,917.00	5,60,831.00
1 चालू खाते	1,24,25,215.53	15,00,724.89	3. अधिकारियों एवं कर्मचारियों का यात्रा / दैनिक भत्ता	13,977.00	18,370.00
2. जमा खाते	0.00	1,39,00,000.00	4. अराजपत्रित कर्मचारियों का समयोपरि भत्ता	11,87,098.00	13,39,132.00
2. अनुदान प्राप्त			5. म. नि. पर ब्याज	1,84,63,412.00	98,58,160.00
क) मा.सं.वि.म. भारत सरकार से प्राप्त अनुदान	9,78,38,000.00	8,98,00,000.00	6. पेंशन प्रभार	17,550.00	18,650.00
ख. आईसीपीआर से प्राप्त अनुदान	2,70,000.00	0.00	7. रिवाइड		
ग. अग्रदाय	0.00	0.00	2. प्रशासनिक व्यय		
2. अर्जित ब्याज			1. विज्ञापन एवं प्रचार	2,24,871.00	3,36,885.00
1. बैंक जमा पर			2. लेखा परीक्षा शुल्क	1,44,540.00	1,42,402.00
1. एसटीडीआर- अनुसूचित बैंक	0.00	9,18,595.00	3. जल एवं विद्युत प्रभार	36,61,998.00	36,27,982.00
सावधिक जमा पर			4. मजदूरी	28,750.00	17,600.00
2) बचत खाता			5. लेखन सामग्री	3,77,773.00	5,08,050.00
			6. डाक शुल्क	1,47,346.00	1,60,016.00
			7. टेलीफोन प्रभार	2,96,130.00	3,55,619.00
			8. स्थाई परिसम्पत्तियों की मरम्मत एवं रखरखाव	3,83,831.00	3,84,826.00
			9. रहस्यशी और गैररहस्यशी भवनों का रखरखाव	30,04,762.00	60,25,052.00
			10. वर्दियों	1,07,424.00	1,12,763.00
			11. विविध प्रासंगिक	8,20,586.00	10,47,762.00
			12. पी.ओ.एल	2,88,003.00	2,55,292.00
			13. संस्थान के वाहनों का रखरखाव	1,29,995.00	1,95,662.00
			14. आर.पी. निवास का किराया	12,000.00	12,000.00
			15. आर.पी. निवास के फर्नीचर कर किराया	6,000.00	6,000.00
			16. के.लौ.नि.वि. विद्युत कार्य	15,00,000.00	21,79,141.00
भ. नि. जमा पर ब्याज	11,87,098.00	13,40,147.00			
ऋण, पेशगी आदि					
कर्मचारियों को दी गई पेशगी पर ब्याज	24,7,972.00	78,273.00			

4. अन्य आय									
1) पत्रिकाओं का अंशदान	300.00	750.00		17) रिहायशी एवं गैर रिहायशी भवनों की विशेष मुरम्तें		1,19,08,151.00		0.00	
2) संस्थान का अंशदान	0.00	0.00		18) उद्यानों का रखरखाव		5,48,101.00		3,96,615.00	
3) पुस्तकालय सदस्यता का शुल्क	54,600.00	13,400.00		19) विधि प्रभार		1,03,685.00		1,54,690.00	
4) संस्थान के प्रकाशनों से आय	1,06,62,432.33	2,98,280.00		20) नगर निगम कर		98,473.00		97,292.00	
5) सह प्रकाशकों से प्रकाशनों की आय	4,960.00	87,428.64		21) कोयला एवं लकड़ी					
6) टिकट वृथ से प्राप्तियाँ	44,84,604.00	27,72,272.00		22) औषधालय		2,87,926.00		2,07,413.00	
7) पौध की बिक्री से आय	16,875.00	13,790.00		23) प्रयोग्य भण्डार		2,06,601.00		58,127.00	
8) फर्नीचर एवं किराये की वसूली	2,64,686.00	2,15,302.00		24) अध्येतावृत्ति अनुदान यात्रा/दैनिक भत्ते सहित		1,66,99,759.00		1,14,65,511.00	
9) जल एवं विद्युत प्रभार की वसूली	78,374.00	60,344.00		25) सोसायटी के सदस्यों का यात्रा/दैनिक भत्ता		14,11,808.00		11,57,419.00	
10) विविध आय-अन्य	9,33,314.00	6,06,753.00		26) दिल्ली अतिथि गृह का किराया		4,03,152.00		2,56,848.00	
11) अतिथिगृह से आय	3,44,977.00	0.00		27) प्रकाशन एवं मुद्रण		18,27,490.00		11,92,800.00	
5) अन्य प्राप्तियाँ				28) संगोष्ठियाँ, सम्मेलन और कार्यशाला आदि		50,80,165.00		60,15,146.00	
क) पेशगियों की वसूली				29) आगन्तुक प्रोफेसरों व विद्वानों का यात्रा/दैनिक भत्ता		2,76,262.00		3,02,658.00	
1) विविध पेशगियों की वसूली	89,43,476.00	79,05,607.00		30) टिकट वृथ का व्यय		29,84,579.00		21,28,888.00	
2) कर्मचारियों से पेशगी की वसूली	3,10,257.00	3,71,535.00		31) मनोरंजन		32,319.00		42,661.00	
3) भारतीय सभ्यता में दी गई पेशगी की वसूली				32) भारतीय सभ्यता की परियोजना		3,32,660.00		78,194.00	
4) अग्रदाय की वसूली	28,060.00	0.00		33) आरपीनिवास का जीणोद्धार एवं संरक्षण		26,25,686.00		39,25,978.00	
5) आयकर की वसूली	25,61,131.00	56,126.00		34) पुस्तकालय की पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ		6,41,889.00		7,16,203.00	
6) कोर्ट शुल्क	14,350.00	17,500.00		पुस्तकालय उपस्कर एक्यूमैन्ट					
ख. प्रेषण				35) ईपीबीएक्स		1,45,350.00		2,08,075.00	
2) भविष्यनिधि, जीवन बीमा आदि				36) वर्डप्रोसेसर		9,17,250.00		26,77,014.00	
3) अन्य प्राप्तियाँ	95,13,751.00	83,84,186.00		3) स्थाई परिसम्मतियों पर व्यय		88,32,556.00		87,98,815.00	
4) पेट्रोल के लिए जमा	0.00	40,000.00		1) स्थाई परिसम्मतियों का क्रय					
नामे देनदार	58,960.67	72,025.00		4) अन्य भुगतान		1,46,556.00		88,522.00	
कर्मचारी कल्याण संस्था	61,334.00	0.00		क) नई पेंशन योजना		89,21,990.00		76,30,584.00	
				1) विविध पेशगियाँ		2,14,302.00		2,66,150.00	
				2) कर्मचारियों को पेशगियाँ		28,0660.00		55,429.00	
				3) अग्रदाय पेशगियाँ		40,000.00		0.00	
				4) पेट्रोल के लिए जमा		5,948.00		1,869.00	
				5) बैंक प्रभार					

जोड़	14,07,34,727.53	11,96,79,368.89	जोड़	14,07,34,727.53	11,96,79,368.89
शिमला-171005 दिनांक : 25.05.2011	(राजेश शर्मा) लेखा अधिकारी	ह0	ह0 (सु.पा. ठाकुर ) सचिव	ह0 (पीटर रॉनल्ड डिसूजा) निदेशक	
प्रेषण					
1) आयकर				32,01,652.00	18,98,971.00
2) भविष्यनिधि व जीवन बीमा आदि				94,29,511.00	83,31,884.00
3) कर्मचारी कल्याण संस्था				46,996.00	0.00
5) अथशेष					
क)					
1) रोकड़ शेष				0.00	0.00
2) अग्रदाय शेष				30,000.00	30,000.00
ख) बैंको में शेष					
चालू खाते				1,03,107.53	1,24,25,215.53

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास शिमला -171005

31.3.2011 को नामेदेनदार विवरण की अनुसूची

क्रमांक	वर्ष	31.3.2011	31.3.2010
1.	1988-89	3523.55	3878.22
2.	1989-90	610.03	610.03
3.	1990-91	5083.45	5083.45
4.	1991-92	3946.30	3946.30
5.	1992-93	4669.00	4669.00
6.	1993-94	3157.00	3157.00
7.	1994-95	5571.00	5571.00
8.	1995-96	2725.00	2725.00
9.	1996-97	6602.00	6627.00
10.	1997-98	7648.00	7648.00
11.	1998-99	32454.00	32454.00
12.	1999-2000	19922.00	19922.00
13.	2000-2001	29901.50	29901.50
14.	2001-2002	8723.00	8723.00
15.	2002-2003	68154.00	68154.00
16.	2003-2004	42175.00	42175.00
17.	2004-2005	46634.00	46634.00
18.	2005-2006	32588.50	32588.50
19.	2006-2007	2747.00	2992.00
20.	2007-2008	17819.00	17969.00
21.	2008-2009	8941.50	12003.50
22.	2009-2010	69310.00	124434.00
23	2010-2011	86240.00	0.00
<b>कुलयोग</b>		<b>509144.83</b>	<b>481865.50</b>

ह/-  
लेखा अधिकारी



भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास शिमला –171005

31.3.2011 को ऋण एवं पेशगियों का विवरण

क्रमांक	विवरण	31 मार्च 2011 को	31 मार्च 2010 को
1.	भवन निर्माण पेशगी	63,369.00	1,55,526.00
2.	स्कूटर पेशगी	18,640.00	-1,160.00
3.	कम्प्यूटर पेशगी	24,302.00	47,000.00
5.	विविध पेशगियाँ	30,81,302.00	31,02,788.00
6.	गर्म कपडा पेशगी	16,144.00	23,944.00
7.	पर्व पेशगी	1,03,480.00	96,580.00
8.	प्रतिकूल मौसम पेशगी	120.00	120.00
9.	बाढ पेशगी	311.00	311.00
	<b>जोड</b>	<b>33,07,668.00</b>	<b>34,25,109.00</b>

ह.  
लेखा अधिकारी

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला - 171005**  
**स्थाई परिसम्पतियों की अनुसूची**

क्र. स.	विवरण	31.3.2010 को परिसम्पतियाँ	31.3.2010 को योजनागत परिसम्पतियाँ	वर्ष के दौरान जोड़ी गई परिसम्पतियाँ	वर्ष के दौरान जोड़ी गई परिसम्पतियाँ	वर्ष के दौरान बट्टे खाते में डाली गई परिसम्पतियाँ	वर्ष के दौरान बट्टे खाते में डाली गई परिसम्पतियाँ	वर्ष के दौरान बट्टे खाते में डाली गई परिसम्पतियाँ	31.3.2011 को परिसम्पतियाँ	31.3.2011 को योजनागत परिसम्पतियाँ	कुल परिसम्पतियाँ
1.	कार्यालय उपकरण	1634113.64	योजनेत्तर	योजनागत	14653.00	योजनेत्तर	योजनागत	योजनेत्तर	योजनागत	योजनागत	8462770.63
2.	इलैक्ट्रनिक उपकरण	696933.00	0.00	2157530.00	87257.00	696933.00	0.00	0.00	6915913.99	6915913.99	7231718.00
3.	फर्नीचर और फिटिंग	1556792.02	0.00	960993.00	0.00	0.00	0.00	1556792.07	3422283.68	3422283.68	4979075.75
4.	वाहन	151699.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	151699.64	1893022.00	1893022.00	2044721.64
5.	पुस्तकालय के उपकरण	47747.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	47747.51	5878394.87	5878394.87	5926142.38
6.	अन्य उपकरण	593901.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	593901.20	356580.00	356580.00	950481.20
7.	प्रकाशन उपकरण	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	839040.02	839040.02	839040.02
8.	पु0 की पुस्तकें एवं पत्रिकाएं	40042614.25	197244.00	5502136.00	0.00	0.00	0.00	40239858.25	77659427.00	77659427.00	117899285.43
9.	स्रोत वही योजना	247622.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	247622.12	0.00	0.00	247622.12
10.	स्रोत वही योजना के उपकरण	41087.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	41087.56	0.00	0.00	41087.56
11.	उद्यान उपकरण	163836.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	163836.00	0.00	0.00	163836.00
12.	दृश्य श्रव्य	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	422500.00	422500.00	422500.00
13.	भारतीय सभ्यता परियोजना	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	518442.00	518442.00	518442.00
14.	वर्ड प्रोसेसर	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	607985.00	607985.00	607985.00
	<b>कुल जोड़</b>	<b>43258660.99</b>	<b>197244.00</b>	<b>8635312.00</b>	<b>784190.00</b>	<b>462211.00</b>	<b>44589400.99</b>	<b>105745306.74</b>	<b>150334707.73</b>	<b>150334707.73</b>	

### 31 मार्च 2011 को समाप्त वर्ष के लेखों पर टिप्पणियाँ एवं लेखा नीतियाँ

1. संस्थान के वर्ष 2010–2011 के लेखे भारत सरकार द्वारा स्वायत्त निकायों के लिये निर्धारित नए प्रोफोर्मा में तैयार किये गए हैं।
2. संस्थान के लेखे सही आधार पर तैयार किये गए हैं। 31 मार्च 2011 तक के 1,94,13,917.00 रुपये की ग्रेच्युटी और 1,04,39,907.00 रुपये का अवकाश भुगतान का प्रावधान रखा गया है। जिसे पूंजीगत लेखों में जमा किया गया है।
3. संस्थान ने स्थाई परिसम्पत्तियों का मूल्यहास नहीं किया है क्योंकि नियम 151(4) के आधार पर संगठन जो मुख्यतः सहायता अनुदान से पोषित हैं उनमें परिसम्पत्तियों के फार्म (स.वि.नि.19) के आधार एक रजिस्टर बनाना होता है। वर्ष के दौरान स्थाई परिसम्पत्तियाँ जो बट्टे-खातों में डाली गई उन्हें स्थाई परिसम्पत्तियों से घटा दिया है।
4. मुख्य कार्यालय, नई दिल्ली स्थित अध्यक्ष के कार्यालय में क्रमशः 20,000.00 रुपये तथा 1000.00 रुपये में अग्रदाये के रूप में प्रदर्शित किये गए हैं।
5. तुलन पत्र में 23,67,907.90 तथा सह प्रकाशकों के पास 13,72,622.00 रुपये स्थाई परिसम्पत्तियाँ अथशेष में प्रदर्शित की गई हैं। यह जन-सम्पर्क अधिकारी द्वारा सूचना के आधार पर है।

ह0  
(राजेश शर्मा)  
लेखा अधिकारी

ह0  
(स0पा0 ठाकुर)  
सचिव

ह0  
(पीटर रॉनल्ड डिसूजा)  
निदेशक

### लेखा परीक्षा रिपोर्ट

मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र (आई.यू.सी.) के तुलनपत्र और प्राप्तियाँ एवं भुगतान तथा आय व्यय लेखाओं का 31 मार्च, 2011 को समाप्त वर्ष का लेखा परीक्षण किया है तथा अपनी रिपोर्ट संलग्न कर दी है।

वित्तीय विवरणियों के लिए आई.यू.सी. प्रबन्धक जिम्मेवार है। हमारी जिम्मेवारी इन वित्तीय विवरणियों के आधार पर लेखा परीक्षा के पश्चात् अपनी राय व्यक्त करना है।

हमने भारत के लेखा परीक्षा के मानकों के आधार पर लेखा परीक्षण किया है जो समानता भारत में स्वीकार्य हैं। इन मानकों के आधार पर हम लेखा परीक्षण करते हैं कि क्या वित्तीय विवरणीय स्पष्ट हैं और किसी प्रकार के गलत विवरणियाँ नहीं हैं। लेखा परीक्षण के आधार पर किया जाता है, तथा वित्तीय विवरणियों में रकमों के सबूत भी लिये जाते हैं। लेखा परीक्षण में लेखा सिद्धान्तों और विस्तृत आंकलन जोकि प्रबन्धकों द्वारा तैयार किये जाते हैं उसका भी परीक्षण किया जाता है तथा वित्तीय विवरणियों का मूल्यांकन भी किया जाता है। हमें विश्वास है कि हमारा लेखा परीक्षण हमारी राय को व्यक्त करने में मूल आधार होता है।

तुलनपत्र के साथ संगलित 3 से 6 अनुसूचियों में 3,08,591/- रुपये की विविध पेशगी पिछले तीन वर्ष से भी अधिक समायोजन के लिए लम्बित है जो सन्देहप्रस्त वसूली प्रतीत होती है। हमारी राय में 3,08,591/- रुपये की सन्देहप्रस्त वसूली को लेखाओं में प्रदर्शित किया जाना चाहिए वित्तीय विवरणियों में इसका उल्लेख न होने के कारण इसे अप्रयोग्य अनुदान एवं विविध पेशगियों के अधिक दिखाया गया है।

उपरोक्त संस्तुतियों के पश्चात् हम निम्नलिखित संस्तुति प्रस्तुत करते हैं।

- 1) हमने लेखा परीक्षण के लिये जहां तक हमें पता और विश्वास है, सभी सूचनायें और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिये हैं।
  - 2) हमारी सलाह और जहां तक हमें पता है एवं हमें दिये गये स्पष्टीकरण तथा अनुलग्नक-2 में दिये गये मानकों के आधार पर इन लेखाओं की स्पष्ट स्थिति प्रकट होती है—
- क) तुलनपत्र में 31 मार्च, 2010 को समाप्त वर्ष के केन्द्र के कार्य कलाप है,
- ख) आय-व्यय लेखाओं में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष में प्राप्त सहायता अनुदान से उपयोग की गई रकम का लेखा-जोखा है।
- ग) प्राप्तियों तथा भुगतान के लेखाओं में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष का प्राप्तियाँ तथा भुगतान का लेखा-जोखा है।

कृते राजेन्द्र रवि और हरीश  
सनदी लेखाकार  
हस्ताक्षरित  
हरीश कुमार  
पार्टनर

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

**उपयोगिता प्रमाण पत्र (योजनागत)**

प्रमाणित किया जाता है कि निदेशक, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने पत्र संख्या: एफ.6-2/2009/आईयूसी दिनांक 1/11/2010 द्वारा 43,00,0000/- रुपये (तेतालिस लाख रुपये मात्र) मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र के लिए अनुदान दिया था। गत वर्ष के अप्रयोग्य अथशेष 17,64,166.51 रुपये (सतराह लाख चौंसठ हजार एक सौ छः रुपये इक्यावन पैसे) का समायोजन करके यह अनुदान 60,64,166.51 (साठ लाख चौंसठ हजार एक सौ छियास्त रुपये इक्यावन पैसे) बनता है।

आयोग की नियमों एवं शर्तों द्वारा वर्ष 2010-11 में जिस कार्य के लिए यह अनुदान स्वीकृत किया गया था (1,81,668.00 रुपये अनुदान पूंजीगत एवं उसपर अर्जित व्याज) उसमें से संस्थान ने 32,12,954.00 रुपये (बतीस लाख बारह हजार नौ सौ चौबबन रुपये) का उपयोग किया। 28,51,212.51 रुपये (अठाईस लाख इक्यावन हजार दो सौ बारह रुपये इक्यावन पैसे) का 31/3/2011 तक उपयोग नहीं हुआ है।

ह0  
लेखा अधिकारी

ह0  
सचिव

ह0  
निदेशक

कृते राजेन्द्र रवि और हरीश  
सनदी लेखाकार  
हस्ताक्षरित  
हरीश कुमार  
पार्टनर  
मोहर

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005  
31/3/2011 को समाप्त वर्ष को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र  
का तुलन पत्र

देयताएं	राशि	परिसम्पतियाँ	राशि
सहायता अनुदान			
1.4.2010 को अथशेष वर्ष के दौरान प्राप्त अनुदान	1764166.51 4300000.00 6064166.51	स्थाई परिसम्पतियाँ (अनुसूची-1 के अनुसार)	6251117.00
पूँजीगत व्यय को घटाएँ व्यय	0.00	समायोजन के लिए लम्बित विविध पेशगियाँ प्रोफेसर आर.एस. मिश्रा (94-95)	18475.00
राजस्व व्यय को घटाएँ व्यय	3212954.00	2851212.51 विविध पेशगियाँ(2003-04) विविध पेशगियाँ(2005-06) विविध पेशगियाँ(2006-07) विविध पेशगियाँ(2010-11) संस्थान के पास शेष	100000.00 10000.00 180116.00 15000.00 2527621.51
<b>पूँजीगत रिजर्व</b>			
1.4.2010 को अथशेष वर्ष के दौरान जमा	6251117.00 0.00		
वर्ष के दौरान घटाएँ	0.00	6251117.00	
<b>जोड़</b>	<b>9102329.51</b>	<b>जोड़</b>	<b>9102329.51</b>

लेखाओं की लेखा पद्धति और टिप्पणियां अनुलंङ्क-2 के अनुसार

ह0 राजेश शर्मा लेखा अधिकारी	ह0 एस0पी0 ठाकुर सचिव	ह0 पीटर रॉनल्ड डिसूजा निदेशक
-----------------------------------	----------------------------	------------------------------------

लेखा परीक्षक रिपोर्ट  
संलग्न रिपोर्ट के अनुसार  
कृते राजेन्द्र रवि और हरीश  
सनदी लेखाकार  
हस्ताक्षर  
हरीश कुमार  
पार्टनर  
मोहर

स्थान शिमला  
दिनांक 15. 05, 2011

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31/3/2011 को समाप्त वर्ष को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अन्तर्विश्वविद्यालय का  
आय-व्यय लेखा

व्यय	राशि रूपये में	आय	राशि रूपयों में
आई.यू.सी. सह-अध्येताओं का रखरखाव	700227.00	आई.यू.सी पत्रिका की ब्रिकी	2391.00
सह-अध्येताओं का यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	573614.00	आईयूसी विविध प्राप्तियाँ	157839.00
आईयूसी शोध संगोष्ठी और अध्ययन सप्ताह	635312.00	अर्जित ब्याज (बैंक में)	21438.00
प्रकाशन व्यय	682.00	प्राप्त अनुदान से किया गया	
प्रशासनिक एवं साचविक सहायता (डाक, मैडिकल लेख सामग्री)	79779.00	व्यय	3212954.00
विविध प्रासंगिक व्यय	107120.00		
अथितिगृह का किराया/रख-रखाव	329850.00		
प्रशासन कक्ष (मजदूरी वेतन एवं भत्ते)	889515.00		
वाहनों का रख-रखाव	74023.00		
पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का संगठन	4500.00		
<b>जोड़</b>	<b>रूपये</b>	<b>3394622.00</b>	<b>जोड़</b>
			<b>रूपये</b>
			<b>3394622.00</b>

ह0  
राजेश शर्मा  
लेखा अधिकारी  
निदेशक

ह0  
एस0 पी0 ठाकुर  
सचिव

ह0  
पीटर रॉनल्ड डिसूजा

लेखा परीक्षक रिपोर्ट  
संलग्न रिपोर्ट के अनुसार  
कृते राजेन्द्र रवि और हरीश  
सनदी लेखाकार  
हस्ताक्षर  
हरीश कुमार  
पार्टनर  
मोहर

स्थान शिमला  
दिनांक 15. 05. 2011

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31/3/2011 को समाप्त वर्ष को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अर्न्तविश्वविद्यालय केन्द्र  
का प्राप्तियाँ एवं भुगतान

प्राप्तियाँ	राशि रूपयों में	भुगतान	राशि रूपयों में
1.4.2010 को अथशेष यू.जी.सी. से प्राप्त अनुदान	1452175.51 4300000.00	पूँजीगत व्यय आई.यू.सी. सह-अध्येताओं का रख-रखाब सह-अध्येताओं का यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	700227.00 573614.00
<b>पूँजी प्राप्त</b> आईयूसी पत्रिका की ब्रिकी	2391.00	शोध संगोष्ठियाँ और अध्ययन सप्ताह प्रशानिक एवं साचविक सहायता (डाक, मैडिकल लेखन सामग्री) प्रकाशन व्यय	635312.00 79779.00 682.00
अर्जित ब्याज आईयूसी की विविध प्राप्तियाँ	21438.00 157839.00	विविध प्रसंगिक व्यय अधितिगृह का किराया/रख-रखाब प्रशासन/कक्ष (मजदूरी वेतन एवं भत्ते) वाहनों का रख-रखाब पुस्तकों एवं पत्रिकाओं संगठन	107120.00 329850.00 889515.00 74023.00 4500.00
<b>अन्य प्राप्तियाँ</b> विविध पेशगियों का समायोजन (चालू वर्ष) आयकर (टीडीएस) विविध पेशगियों का समायोजन (पुराना) जोड़	1122000.00 51083.00 3400.00 7110326.51	<b>अन्य भुगतान</b> विविध पेशगियाँ आयकर (टीडीएस) कम्प्यूटर व अन्य सुविधाएँ संस्थान के पास शेष जोड़	1137000.00 51083.00 0.00 2527621.51 7110326.51

ह0  
राजेश शर्मा  
लेखा अधिकारी

ह0  
एस0पी0 ठाकुर  
सचिव

ह0  
पीटर रॉनल्ड डिसूजा  
निदेशक

लेखा परीक्षक रिपोर्ट  
संलग्न रिपोर्ट के अनुसार  
कृते राजेन्द्र रवि और हरीश  
सनदी लेखाकार  
हस्ताक्षर  
हरीश कुमार  
पार्टनर  
मोहर

स्थान शिमला  
दिनांक 15.05. 2011



भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची-1

मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र

31/3/2011 को समाप्त वर्ष को स्थाई परिसम्पतियों की अनुसूची

क्र. सं विवरण	1/4/2009 को शेष	वर्ष के दौरान जोड़ी गई	वर्ष के दौरान घटाई गई	31/3/2010 को शेष
1. विद्युत उपकरण	520525.00	0.00	0.00	520525.00
2. फर्नीचर तथा फिक्सचर	809164.00	0.00	0.00	809164.00
3. पुस्तकें एवं पुस्तकालय	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
4. वाहन	265054.00	0.00	0.00	265054.00
5. कम्प्यूटर	1846725.00	0.00	0.00	1846725.00
<b>जोड़</b>	<b>6251117.00</b>	<b>0.00</b>	<b>0.00</b>	<b>6251117.00</b>

मोहर

ह0  
लेखा अधिकारी

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

**31 मार्च, 2011 को समाप्त वर्ष की लेखाओं की लेखा नीति और टिप्पणी।**

**लेखा पद्धति**

- 1) लेखाओं को नगद प्रणाली के आधार पर बनाया गया है।
- 2) सामान्य वित्तीय नियमवली के नियम 151 (4) के अनुसार मूल्यहास नहीं लिया गया है।

**लेखाओं पर टिप्पणी**

- 3) 18,475 रुपये की पेशगी की वसूली प्रोफेसर आर.एस. मिश्रा से वर्ष 94-95 से बकाया है पेशगी के समायोजन/वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।
- 4) डॉ. पी.सी. थोमस से 20/3/2004 को दी गई 100000.00 रुपये पेशगी की वसूली की जानी है। पेशगी के समायोजन/वसूली के लिए प्रयास किये जा रहे हैं।
- 5) निदेशक आईसीएआर नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 15000 रुपये संगोष्ठी के लिए दिये गए थे। इसमें से 10000 रुपये की राशि बकाया है। पेशगी के समायोजन/वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।
- 6) कुल सचिव जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 275000 रुपये की पेशगी 30/3/2007 को संगोष्ठी के आयोजन के लिए अकादमिक संसाधन अधिकारी द्वारा दी गई थी जिसमें से 180116 रुपये बकाया हैं। पेशगी के समायोजन/वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।
- 7) श्री देवर्षि सेन सहायक प्रकाशन अधिकारी को 12/1/2011 को 15000.00 रुपये की पेशगी दी गई थी। इसमें से 5000 रुपये का समायोजन होना है। पेशगी के समायोजन/वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।

ह0  
राजेश शर्मा  
लेखा अधिकारी

ह0  
एस0 पी0 ठाकुर  
सचिव

ह0  
पीटर रॉनल्ड डिसूजा  
निदेशक

पृ. सं.	योजना गत नामे शीर्ष	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	जोड़
4	सह-अध्यताओं का रखरखाव	76000	102400	119866	55600	50161	100200	68000	36000	0	0	0	92000	700227
5	सह-अध्यताओं का यात्रा भत्ता	47616	84187	79316	42288	50659	89023	63176	32299	0	1387	0	83663	573614
6	शोध संगोष्ठियाँ/अध्ययन सप्ताह	2000	366419	0	0	3000	0	0	79758	23000	165535	3700	1900	655312
7	प्रशासनिक सहायता आदि					4748	5339	0	0	504	0	0	69188	79779
8	प्रकाशन व्यय								0	682				682
9	विविध व्यय	12038	1983	2095	21023	5776	18368	8958	6615	12242	993	3073	13956	107120
10	शिमला/नई दिल्ली आईयूसी अतिथि गृह का रखरखाव/ फर्नीशिंग	45000	0	59852	0	67500	22500	22500	22500	22500	22498	22500	22500	329850
11	प्रशानिक यूनिट, मजदूरी, यात्रा भत्ता, मानदेय	38907	281000	28446	42137	118428	48417	45200	44253	45425	105200	921.02	0	889515
12	आईयूसी वाहन का रखरखाव/पीओएल	1695	9258	0	10833	11182	10533	5798	0	13765	2150	6143	2666	76023
14	पुस्तको एवं पत्रिकाओं का संगठन							4500						4500
16	विविध पेशगियां	510000	0	0	0	0	250000			350000	27000			1137000
19	आयकर	7903	835247	4166	404	11472	3824	3824	3824	4311	3824	3907	3824	51083
		741159		293541	172285	322926	548204	221956	225249	472429	328587	131425	289697	4582705

पु. सं.	योजना गत	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	जोड़
17	जमा शीर्ष विविध पेशगियां		500000					170242	79758	191385	158615	106	21894	1122000
18	विविध पेशगियां पुरानी									1500			1900	3400
20	आयकर	7903		3966	404	11472	3824	3824	3824	4311	3824	3907	3824	51083
21	विविध प्राक्तियां (किराया/वाहन/मकान भत्ता/ जल प्रभार आदि	11902	22295	29347	12245	12303	24069	17688	9956	906	906	578	15644	157839
22	आईयूसी पत्रिका			650	1040				201			500		2391
23	आईयूसी खाते पर ब्याज			16523						4915				21438
														0
														0
														0
														0
														0
		19805	522295	50486	13689	23775	27893	191754	93739	203017	163345	5091	43262	1358151



भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

शासी निकाय के सदस्यों की सूची

1. प्रोफेसर भालचन्द्र मुण्गेकर अध्यक्ष  
अध्यक्ष, शासी निकाय आईआईएस  
901, दोस्ती कॉरनेशन  
दोस्ती एकड़ कॉम्प्लैक्स  
वड़ाला (ईस्ट)  
मुम्बई-400037  
दूरभाष: 022-24170044 ईमेल: blmungekar@yahoo.com
2. प्रोफेसर ए.एम. पठान  
उपाध्यक्ष, आईआईएस शासी निकाय  
एवं  
उपकुलपति  
केन्द्रीय विश्वविद्यालय कर्नाटक  
दूसरा तल कार्यसुधा  
गुलबर्गा विश्वविद्यालय  
गुलबर्गा-585106  
कर्नाटक
3. प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा  
निदेशक  
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005  
दूरभाष:0177-2830006 (कार्यालय) 2831275 (घर) फैक्स: 2831389, 2830995  
E-mail:director@iias-org

### शिक्षा एवं वित्त मंत्रालय से एक एक प्रतिनिधि

1. श्रीमती विभा पुरी दास, भ0 प्र0 से0  
सचिव  
उच्चतर शिक्षा विभाग  
मानव संसाधन विकास मंत्रालय  
शास्त्री भवन  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष:011-23386451, 23382698 (कार्यालय) 26979585,  
फैक्स:011-23385807, 23381355
2. श्री एस.के. रे  
वित्तीय सलाहाकार  
उच्चतर शिक्षा विभाग  
मानव संसाधन विकास मंत्रालय  
शास्त्री भवन  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष-011-23382696, फैक्स:-011-23070668

### पाँच संस्थागत सदस्य

1. प्रोफेसर एस0के0 थोराट  
अध्यक्ष  
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग  
बहादुरशाह जफर मार्ग  
नई दिल्ली-110002  
दूरभाष:-011-23239628 (क) फैक्स 011-23231797
2. प्रोफेसर जावेद आलम  
अध्यक्ष  
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद  
पोस्ट वाक्स न0-10528  
अरुणा आसिफ अली मार्ग

नई दिल्ली

दूरभाष:-011-26179679 (क), 011-255454865 / 26717146(घ)

फैक्स 011-26162516 / 26179836

- 3 प्रोफेसर के. रामाकृष्णा राव  
अध्यक्ष  
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद  
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया  
मेहरोली बदरपुर मार्ग  
नई दिल्ली-110062

प्रोफेसर के. रामाकृष्णा राव

35 दसपल्ला हिल

विशाखापटनम-530003

दूरभाष:- (891)2567421, टेलीफैक्स:011-29051762 / 26057387(कार्यालय)22221546(घर)

फैक्स:0177-2242844

email:Krrao007@gmail.com

- 4 डा. समीर के. ब्रह्मचारी  
महा निदेशक  
वैज्ञानिक और अनुसंधान परिषद  
रफी मार्ग  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष:011-23710472, 23717053 (कार्यालय), 24618851, 24649359 (घर)  
फैक्स:011-23710618 E-mai:dgc sir@csir.res.in,dg@csir.res.in

5. प्रोफेसर सभश्याची भट्टाचार्य  
अध्यक्ष  
भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद  
35, फिरोजशाह मार्ग  
नई दिल्ली-110001



दूरभाष:-011-23386033 पी.एस.:23384869

फैक्स: 23383421/मोबाइल 09415243954

संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने मनोनित प्रतिनिधियों को भेज सकते हैं।

**नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित सोसायटी के सदस्यों में से 2 उप-कुलपति**

1. प्रोफेसर ए.एम. पठान  
उपकुलपति  
केन्द्रीय विश्वविद्यालय कर्नाटक  
दूसरा तल कार्यसुधा  
गुलबर्गा विश्वविद्यालय  
गुलबर्गा-58510

2. रिक्त

**नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित सोसायटी के सदस्यों में से 4 सदस्य**

1. प्रोफेसर आर.एस. देशपाण्डे  
निदेशक  
इंस्टीच्यूट फॉर सोशल एण्ड इकॉनॉमिक चेंज  
डॉ. वी.के. आर. वी. राव मार्ग नगरभावी  
बंगलौर-560072

दूरभाष:- 080-23217010, 23215468 (एक्स 201,) 23215555 (घ)

मोवाईल-09449866326 E-mai:Deshpade@isec.ac.in,director@isec.ac.in

2. प्रोफेसर योगेन्द्र यादव  
अध्येता  
सैंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डिबैलिंग सोसायटीस्  
29 राजपुर रोड़  
दिल्ली-110024

- 3 प्रोफेसर के. पी. सिंह  
(पूर्व सदस्य यूजीसी)  
गाँव एवं डाकघर धीआ  
जिला रेवा  
(मध्यप्रदेश)

दूरभाष :-07662-299007

- 4 प्रोफेसर जी मोहन गोपाल  
निदेशक  
नैशनल ज्यूडिशल अकादमी  
बडवाडा रोड  
डाकघर सूरज नगर  
भोपाल-462044 (मप्र)

दूरभाष:-0755-2696766, फ़ैक्स:-0755-2696904

E-mail:mohangopal@nja.gov.in

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान सोसाइटी

1. प्रोफेसर भालचन्द्र मुण्गेकर  
अध्यक्ष  
901, दोस्ती कॉरनेशन  
दोस्ती एकड़ कॉम्प्लैक्स  
वड़ाला (ईस्ट)  
मुम्बई-400037  
दूरभाष: 022-24170044 ईमेल: blmungekar@yahoo.com
2. प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा  
निदेशक  
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान  
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005  
दूरभाष: 0177-2830006 (कार्यालय) 2831275 (आवास) फ़ैक्स: 2831389,  
ईमेल: directorias@gmail.com

**नियम 3 (क) संस्थागत सदस्य (पदेन)**

1. श्रीमती विभा पुरी दास,  
सचिव  
उच्चतर शिक्षा विभाग  
मानव संसाधन विकास मंत्रालय  
शास्त्री भवन  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष:011-23386451, 23382698 (कार्यालय) 26979585,  
फ़ैक्स:011-23385807, 23381355 ईमेल: secyshe@mail.nic.in
2. श्रीमती सुषमा नाथ  
सचिव, भारत सरकार  
व्यय विभाग  
वित्त मंत्रालय, नार्थ ब्लॉक  
नई दिल्ली-110001

3. श्री सुनील कुमार  
अतिरिक्त सचिव (उच्च शिक्षा)  
उच्चतर शिक्षा विभाग  
मानव संसाधन विकास मंत्रालय  
शास्त्री भवन  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष: 011-23382298 फ़ैक्स: 011-23070036
4. प्रोफेसर एस.के. थोराट  
अध्यक्ष  
विश्वविद्यालय अनुवाद आयोग  
बहादुरशाह ज़फर मार्ग  
नई दिल्ली-110002  
दूरभाष: 011-23239628 (कार्यालय) फ़ैक्स: 011-23231797
5. डा. समीर के. ब्रह्मचारी  
महा निदेशक  
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद  
रफी मार्ग  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष:011-23710472, 23717053 (कार्यालय), 24618851, 24649359 (आवास)  
फ़ैक्स: 011-23710618 ईमेल: dgcsir@csir.res.in dg@csir.res.in
6. प्रोफेसर जावेद आलम  
अध्यक्ष  
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद  
पोस्ट बाक्स न0 10528  
अरुणा आसिफ अली मार्ग  
नई दिल्ली-110067  
दूरभाष: 011-26179679 (का) 011-255454865/267177146 (घर)

7. प्रोफेसर एस. भट्टाचार्य  
अध्यक्ष  
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद  
35 फिरोजशाह मार्ग  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष: 011-23386033, 23384869, फैक्स 23383421, 23387829, मोबाइल: 9415243954
8. प्रोफेसर के. रामाकृष्णा राव  
अध्यक्ष  
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद  
36, तुगलकाबाद इन्स्टीट्यूशनल एरिया  
मैहरोली, बदरपुर मार्ग  
नई दिल्ली-110062  
  
टैलीफैक्स: 011-29051762/26057387 (कार्यालय) 22221546 (घर), फैक्स-011-2242844
- प्रोफेसर के. रामकृष्णा राव  
35 दासपाल्ली हिल  
विशाखापटनम-530003  
दूरभाष: (891) 2567421 ईमेल: Krrao007@gmail.com
9. प्रोफेसर विपन चन्द्र  
अध्यक्ष  
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया  
नेहरु भवन, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II  
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070  
दूरभाष: 011-26707700  
ईमेल: nbtindia@nbtindia.org.in
10. प्रोफेसर सुनील गंगोपाध्याय  
अध्यक्ष  
साहित्य अकादमी  
रविन्द्र भवन  
35, फिरोजशाह मार्ग

नई दिल्ली-110001

दूरभाष: 011-23387241

दूरभाष: 011-23386623 मोबाइल: 9810112543 फ़ैक्स: 011-23382428, 011-23074168

11. अध्यक्ष  
संगीत नाटक अकादमी  
35, फ़िरोज़शाह मार्ग  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष: 011-24116375 / 76 फ़ैक्स: 011-23381621
12. श्री अशोक वाजपेयी  
अध्यक्ष  
ललित कला अकादमी  
फ़िरोज शाह मार्ग  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष: 011-23387241-43
13. प्रोफ़ेसर एम. विजयम  
अध्यक्ष  
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी,  
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली  
195, 16थ क्रॉस , 4थ मेन, मालेश्वरम  
बैंगलुरु-560012  
दूरभाष: 080-23600765,
14. प्रोफ़ेसर सईयद शाहिद माहदी  
उपाध्यक्ष  
भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद  
7, ओ-1, ऑफ पालम मार्ग (तीसरा तल)  
बसन्त बिहार  
नई दिल्ली-110057  
दूरभाष:- 011-26155339, (मोबाइल 91-9810021600)

15. डॉ. पी.टी. चांदे  
अध्यक्ष, ए.आई.यू.  
तथा  
उप-कुलपति  
कविकुलगुरु कालीदास संस्कृत विश्वविद्यालय  
भागले भवन, शीतलवाड़ी  
मौडा रोड़ रामटेक-441106  
जिला नागपुर  
  
फैक्स एवं दूरभाष: 07114-255549 / 256476 (का.)  
ईमेल: [inikalidas@yahoo.com](mailto:inikalidas@yahoo.com), Website: [www.sanskrituni.net](http://www.sanskrituni.net)  
नागपुर : फैक्स एवं दूरभाष 01712-2291222 / 2560992 (का)
16. श्री स्वपन कुमार चक्रवर्ती  
निदेशक  
राष्ट्रीय पुस्तकालय  
वैलवैड़े, अलीपुर  
कोलकाता-700027  
दूरभाष : 033-24792968 / 24791462 (क) : फैक्स 033-24791462  
ईमेल : [nldirector@rediffmail.com](mailto:nldirector@rediffmail.com)
17. श्री एस. एम. आर. बागर  
महानिदेशक अभिलेखागार  
राष्ट्रीय अभिलेखागार  
जनपथ  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष:-011-23383436, 23384797 ईमेल:-[archives@nic.in](mailto:archives@nic.in)
18. सुश्री राजवन्त सन्धु  
मुख्य सचिव  
हिमाचल प्रदेश सरकार  
हिमाचल प्रदेश सचिवालय  
शिमला-171002  
दूरभाष: 0177-2621022(कार्यालय),2880714(घर) फैक्स : 2621813  
ईमेल: [cshp@nic.in](mailto:cshp@nic.in)

संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने मनोनित प्रतिनिधियों को भेज सकते हैं।

### नियम 3 (ख) नामित सदस्य

#### नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित छः उप-कुलपति

1. प्रोफेसर ए.एम. पठान  
उपकुलपति  
केन्द्रीय विश्वविद्यालय कर्नाटक  
दूसरा तल कार्यसुधा  
गुलबर्गा विश्वविद्यालय  
गुलबर्गा-585106
2. रिक्त
3. रिक्त
4. प्रोफेसर सुरभि बैनर्जी  
उप-कुलपति  
केन्द्रीय विश्वविद्यालय उड़ीसा  
28/6बी विपनपाल मार्ग एक्सटेंशन  
डाकघर कालीघाट  
कोलकाता-700026  
  
दूरभाष: 033-24642047 (आवास) फ़ैक्स: 03328702055  
मो. 09830259535, 0983693930  
ईमेल: banerjee surbhi@hotmail.com, surbhi banerjee 2008@gmail.com
5. रिक्त
6. प्रोफेसर सी.डी. सिंह  
उप-कुलपति  
इंदिरा गांधी नेशनल ट्राईबल विश्वविद्यालय  
अमरकनटक  
मध्यप्रदेश - 484 886



**नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित 18 से 24 शिक्षाविद**

- 1 प्रोफेसर इरफान हबीब  
बदरबाग  
सिविल लाईनस  
अलीगढ़-209992  
दूरभाष: 0571-2705792, 2702620, फ़ैक्स: 0571-2701539
- 2 प्रोफेसर दामोदर आचार्य  
निदेशक  
भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान  
खड़गपुर-721302  
पश्चिम बंगाल  
दूरभाष: 03222-282002 / 255386 (कार्यालय) 282003 (आवास) फ़ैक्स: 03222-282000  
ईमेल: director@iitkgp.emt.in
- 3 प्रोफेसर जी. मोहन गोपाल  
निदेशक  
नैशनल ज्यूडिशियल अकादमी, इंडिया  
बडवाडा रोड  
डाकघर सूरज नगर  
भोपाल-462044  
दूरभाष: 0755-2696766, फ़ैक्स: 0755-2696904  
ईमेल: mohangopal@nja.gov.in
- 4 प्रोफेसर आर.एस. देशपाण्डे  
निदेशक  
इंस्टीच्यूट फॉर सोशल एण्ड इकनॉमिक चेंज  
डॉ. वी.के. आर. वी. राव मार्ग नगरभावी  
बंगलौर-560072  
दूरभाष: 080-23217010 (कार्यालय) 23215555 (आवास)  
मोबाइल: 09449866326 ईमेल: deshpa@isec.ac.in, director@isec.ac.in

- 5 प्रोफेसर जयती घोष  
प्रोफेसर ऑफ इकोनोमिक्स  
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय  
नई दिल्ली-110067
- 6 प्रोफेसर योगेन्द्र यादव  
वरिष्ठ अध्येता  
सैन्टर फॉर दी स्टडी ऑफ डिवैल्पिंग सोसायटीज  
29 राजपुर रोड़  
दिल्ली-110024
- 7 डॉ. असगर अली इंजीनियर  
अध्यक्ष  
सैन्टर फॉर स्टडी ऑफ सोसायटी एण्ड सैकूलरिज्म  
602-603 सिल्वर स्टार  
छटा तल, नजदीक शान्ताक्रुज, स्टेशन प्रभात कालोनी  
शान्ताक्रुज (ईस्ट)  
मुम्बई-400055  
दूरभाष: 022-26135098, 022-26149668, 022-26102089,  
फैक्स: 022-26100712 मो. 09869446999, 09892162233  
ईमेल: [css@mtnl.net.in](mailto:css@mtnl.net.in)
- 8 श्रीमती अरुणा राय  
278, हौजखास अपार्टमेंट  
श्री अरविन्द मार्ग  
हौजखास  
नई दिल्ली-110016
- 9 श्री राम दयाल मुण्डा  
हात्मा, मोराबदी,  
रांची कालेज के पीछे  
रांची

- 10 प्रोफेसर अबदुल बिसमिल्लाह  
हिन्दी विभाग  
मानविकी और भाषाएँ संकाय  
जामिया मीलिया इस्लामिया  
नई दिल्ली-110025  
दूरभाष: 011-26935233 26989669 मो: 09811306331  
ईमेल: abismillah786@gmail.com
- 11 प्रोफेसर एन.आर. माधव मैनन  
सी-1/22 हमायूँ मार्ग  
नई दिल्ली:-110003  
दूरभाष: 011-23022240 (कार्यालय) 24617325 (आवास) टैलीफैक्स: 23022301  
ईमेल: profmenon.milat@gmail.com
- 12 प्रोफेसर बी.एन. गोस्वामी  
171, सैक्टर 19-ए  
चन्डीगढ़-160019  
ईमेल: bngoswamy@gmail.com
- 13 प्रोफेसर के.पी. सिंह  
(भूतपूर्व सदस्य यू.जी.सी.)  
मुख्य डाकघर के पीछे  
सिविल लाईन  
रिवा-4386001  
(मध्यप्रदेश)  
दूरभाष: 07662-29907
- 14 प्रोफेसर प्रभात पटनायक  
सैंटर फॉर इक्नॉमिक स्टडीस् एण्ड प्लानिंग  
स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस  
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय  
नई दिल्ली-110067
- 15 प्रोफेसर यू. आर. अन्नथमूर्ति  
498, 6थ. ए मेन  
आर.एम.वी. 2<sup>nd</sup> स्टेज  
बैंगलौर-560094

दूरभाष: 080-23415125, फ़ैक्स: 080-23515125

ईमेल: ananthamurthy@vsna.net

- 16 प्रोफेसर शकील अहमद  
के-48, प्रथम तल, बाटला हाऊस  
सैलिंग क्लब मार्ग  
जामिया नगर, ओखला  
नई दिल्ली-110025  
  
दूरभाष: 011-26984114, 0631-2425453
- 17 डॉ. रविन्द्र पंथ  
निदेशक / उप-कुलपति  
नालन्दा विश्वविद्यालय  
नव नालन्दा महाविहार  
(डीमड विश्वविद्यालय)  
नालन्दा-803111 (बिहार)  
दूरभाष: 06112-281820(क), फ़ैक्स: 06112-281505 मो. 09334810726  
ईमेल: nnmdirector@sifiy.com
- 18 श्रीमती रूपरेखा वर्मा  
एम-1 / 14 सैक्टर-बी  
अलीगंज हाऊसिंग स्कीम  
अलीगंज, लखनऊ-226024  
ईमेल: rooprekha@eth.net. saajhiduniya@gmail.com  
मो. 09936650643, 09335905337, दूरभाष (आवास) 0522-2374202
- 19 डॉ. धर्मवीर  
प्रतिष्ठित दलित आलोचक और भूतपूर्व आईएएस अधिकारी  
प्रधान सचिव (क्रामिक और प्रशासनिक सुधार)  
केरल सरकार  
केरल सचिवालय  
थ्रियानथरनपुर-695001 (केरल)
- 20 रिक्त





## FOREWORD BY THE CHAIRMAN

I was nominated as the President and Chairman of the Indian Institute of Advanced Study in September 2005 and renominated in 2008 after the end of the first term of three years. As you all know my second term as the President and Chairman is coming to an end. It has really been a pleasure and privilege to be the patron of this ‘temple of learning’ which was established by a great intellectual giant Dr. Sarvepalli Radhakrishnan. I feel myself honoured to be nominated to this position for which I am thankful to Dr. Manmohan Singh ji, Hon’ble Prime Minister of India and late Shri Arjun Singh ji, former Minister of Human Resource and Development. Although I have had a privilege of occupying many public positions such as the Vice Chancellor of University of Mumbai and a Member of the Planning Commission, the position of President and Chairman of the IAS would always remain special to me for many reasons than one.

In all these years, I have tried, in every possible way, to position the IAS as the premier advanced research institute in the country, where there is blend of research on issues of perennial societal importance as well as those which have direct relevance to the policy-making.

You all might be aware that the Institute was in some sort of a drift when I assumed the charge of its President and the Chairman. For nearly one and a half year, the Institute did not have Director, and it was without full-time Secretary for almost four years. In the absence of Director, I had to undertake his functions, besides discharging my duties as a Member of the Planning Commission. Through the dedicated team of officials and the entire staff of the Institute, we ensured that the normal functioning of the Institute went on smoothly. The Fellowship programme, Visiting Professor and Visiting Scholar programmes, and the Inter-University Centre of the University Grants Commission Programme functioned well. It was after quite an effort that we could select a full time Director, Professor Peter Ronald deSouza in December 2008. The Institute has firmly re-established itself under the able academic leadership of Professor deSouza for which I compliment him. We have not only strengthened the existing academic programmes, but have also taken new initiatives, establishment of Tagore Centre for the Study of Culture and Civilization being the most important one. The publication programme of the institute is also going well. During the last six-year period, we could publish more than 30 books on various important topics. The library and the infrastructural facilities are being constantly enhanced and improved so as to cater to the needs of the Fellows and the scholars visiting the institute.

As I had promised last year, we have been able to complete the process of finalizing our accounts and present the Audited Statement to this august house, thereby adhering to the schedule that is specified by the government. We will, therefore, be able to send the printed copies of the Annual Report for the year 2010-11 to the Ministry of Human Resource Development by the stipulated date. I hope that the administration would try to adhere to this schedule in future as well.

I would like to put on record my deep sense of gratitude to Dr. Manmohan Singh ji and late Shri Arjun Singh ji for reposing complete confidence in me during my six-year tenure as the President and the Chairman of the Institute. I also thank Shri Kapil Sibal ji for encouraging me

while carrying out my duties. I thank all the officials of the HRD Ministry for their continued cooperation to me during my tenure.

I must express my gratitude to all the members of the IAS Society, Governing Body, Finance Committee and those of various Committees whose contributions are of immense importance for running the Institute. I am grateful to all Fellows at the Institute who constitute the essence of the Institute. I appreciate the initiatives taken by Professor Peter deSouza during the last four years and hope that he will add many more. I very much appreciate the constant cooperation extended by the officials and entire administrative staff without which it would not have been possible to run the Institute. I am sure, with all these enlarged and innovative projects, the IAS will emerge as one of the fountainheads of advanced learning.

26<sup>th</sup> November 2011

**Dr Bhalchaandra Mungekar**  
President, IAS Society  
And the Chairman of the Governing Body



## DIRECTOR'S NOTE

The year under report has been a fulfilling year for me in many ways. It has been a year of consolidation of the efforts my team and I have put in from the time I assumed the charge as the Director of the Institute. Also it has been a year of expansion of academic and other activities. A perusal of the report would show the robust academic programme we have built by connecting with epistemic communities from across the country, academic events organised that cover a diverse range of interests and disciplines, and development of physical infrastructure to levels that we hope will place the IAS on global map of Institutes of Advanced Study. In striving to achieve these objectives we have been particularly careful in ensuring that diversity in all 'spheres' is maintained. We have organised academic programmes which range from Schools on *The Mahabharata* and *Life and Thought of Gandhi* to the International Conference on *Shifting Perimeters: Social and Ethical Implications of Human Genome Research* and the Study Week on *Exploring Gender, Redefining the Field: Feminist Journeys in the Social Sciences, Humanities and the Arts*. The list of the National Fellows/Fellows truly represents the diversity of minds that make up the Indian intellectual landscape.

I am particularly happy to report that on the 150<sup>th</sup> birth centenary of Gurudev Rabindranath Tagore, the MHRD has granted the Tagore Centre for the Study of Culture and Civilization to the IAS. The Inter University Centre programme of the University Grants Commission has been further strengthened and pending matters have been sorted out with the UGC. The co-publication programme with leading commercial publishers has been strengthened and about 15 books are in the pipeline with OUP, SAGE, Orient Blackswan and Routledge. We have made concrete efforts to increase the sale of books, and we have now tied up with Flipkart, the result of which is very encouraging. The Library of the Institute which lagged in terms of e-resources has now a good collection of e-journals and e-repositories. On the infrastructural development side we have renovated the Swimming Pool into a 'Pool Theatre' and Squash Court into 'Court Gallery' in which rare photographs of the buildings have been placed.

Through this report we are placing the academic and other activities of the Institute in 2010-11 before the IAS Society for comments, suggestions and guidance so that the functioning of the Institute can be further improved and made more relevant to the contemporary times.

**Peter Ronald deSouza**  
Director, IAS, Shimla



**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171 005**

**ANNUAL REPORT FOR THE YEAR 2010-2011**

The Indian Institute of Advanced Study Society was established in 1965, under the Societies Registration Act of 1860. Located at the Rashtrapati Nivas, Shimla, the Institute is devoted to higher levels of research, primarily in the areas of humanities and social sciences. The academic body of the Institute consists mainly of the community of Fellows in residence as well as Visiting Professors, Visiting Scholars, Associates etc. who pursue their individual research and interact with each other, both formally and informally. Rashtrapati Nivas itself, and the natural surroundings which constitute the estate, provides an ambience conducive to living a life of the mind and exploring the different facets of the human condition.

The Institute's Memorandum of Association offers the Institute's perspective on research which is:

- (a) The areas of investigation should promote inter-disciplinary research;
- (b) The areas identified should have deep human significance.

The Memorandum of Association also spells out the areas of study, which are:

- (a) Social, political and economic philosophy;
- (b) Comparative Indian literature (including ancient, medieval, modern folk and tribal);
- (c) Comparative studies in philosophy and religion;
- (d) Education, culture, arts including performing arts and crafts;
- (e) Fundamental concepts and problems of Logic and Mathematics;
- (f) Fundamental concepts and problems of natural and life sciences;
- (g) Studies in environment – both natural and social;
- (h) Indian Civilisation in the context of its Asian neighbours and the world; and
- (i) Problems of contemporary India in the context of national integration and nation-building.

The Memorandum mentions that special attention should be given to:

- (a) Theme of Indian unity in diversity;
- (b) Integrality of Indian consciousness;
- (c) Philosophy of education in the Indian perspective;
- (d) Advanced concepts in natural sciences and their philosophical implications;
- (e) Indian and Asian contribution to the synthesis of science and spirituality;
- (f) Indian and human unity;
- (g) 'Companions' to Indian Literature;

- (h) Comparative studies of the Indian epics; and
- (i) Human Environment.

## I. ADMINISTRATION

During the year under report, the Indian Institute of Advanced Study Society and its Governing Body were headed by Professor Bhalchandra Mungekar, presently Member of Rajya Sabha, former Member, Planning Commission, Government of India, who besides being a distinguished scholar, is one of India's leading agricultural economists as well as an influential thinker and reformer. The members of the Society and the Governing Body are eminent personalities who are drawn from different walks of life. The Institute has a Finance Committee, which includes representatives from the Ministry of Human Resource Development, besides other members from the Society and Governing Body of the Institute to advise the Governing Body on financial matters.

The Institute is headed by a Director who is assisted by a Secretary and other officers. Professor Peter Ronald deSouza continued as Director in the period of report. Shri S.P. Thakur, IAS joined as Secretary of the Institute on 22<sup>nd</sup> September 2010.

## II. FELLOWS IN POSITION

Fellowship programme is the flagship programme of the Institute. The National Fellows/Fellows stay at the Institute and pursue research on their respective projects. Their tenure is for maximum period of two years. At the end of their term the Fellows submit a monograph which, if found suitable for publication, is published by the Institute. They are also required to take part in seminars, discussions and deliberations. In 2010-11 the following National Fellows/Fellows were in position:

Sl. No.	Name of Scholars	Research Project
1.	Professor D.L. Sheth (National Fellow)	<i>Research on Democratic Politics and Social Change</i>
2.	Professor B.V. Nemade (National Fellow)	<i>The Language at Literature Studies in Literary Style</i>
3.	Professor Madhavan K. Palat (National Fellow)	<i>Working Class Violence in Late Imperial Russia</i>
4.	Professor Ghanshyam Shah (National Fellow)	<i>Globalisation, Civil Society and Governance</i>
5.	Professor Gangmumei Kamei (National Fellow)	<i>A History of Manipur: The Modern Period (1826-2000 A.D.)</i>

6. Professor G.C. Tripathi  
(National Fellow) *Monastic Traditions of Buddhism and Christianity*
7. Dr. Gangeya Mukherji *Philosophy of Integration and Reconciliation: A Study of the Political Thought, its Context, and the Form of its Presentation in Gandhi and Tagore*
8. Professor Satish C. Aikant *Postcolonial Indian Literature: Toward a Critical Framework*
9. Dr. Kanchana C.V. Natrajan *Translation and Study of Avudai Akkal's Songs: An Examination of Religious and Philosophical Views of the 18<sup>th</sup> Century Woman Sage of Tamil Nadu*
10. Professor Vir Bharat Talwar *Navjagaran, Italian, Bangla aur Hindi: Ek Tulanatamak Adhyayan*
11. Dr. Mohinder Singh *Conceptions of the Social and the Political in the Colonial World*
12. Dr. Smarika Nawani *Institutions of Maritime Empire: The Portuguese in Coastal South-East India and Ceylon in 16<sup>th</sup> and 17<sup>th</sup> Centuries*
13. Dr. Saitya Brata Das *The Coming Time, the Ethics of Redemption and the Promise of Time*
14. Dr. Raj Kumar Hans *History of Dalit Literary Movement in the Punjab and its Marginalization in the Historiographical Praxis*
15. Dr. Ranjeeta Dutta *The Biographical Process of a Saint: Ramanuja in Tradition and in History*
16. Dr. Shashi Joshi *Religious Crossings and Boundaries: Gandhi, Dinabandhu, Andrews and Din-Sevak Elwin*
17. Professor Shreesh Chandra *Knowledge of Language of Multilingual Mind Chaudhary*
18. Dr. Pramod Kumar *Discourse of Nationalism and Novel (with special reference to 'Gora' and 'Rangbhumi')*
19. Dr. Sanjay Palshikar *Modern Indian Interpretation of the Gita*
20. Dr. P. Narayanan *Tripunithura Grandhavan – A Critique*

21. Dr. Arjun Ghosh *Freedom from Profit: Eshewing Copyright in Resistance Art*
22. Dr. Saroj Thakur *Finding a Voice: Re-Inscription of Hidimba in Contemporary Indian Literature, Tribal Literature and Folk Tales*
23. Dr. Vijaya Singh *Trains in the Early Cinematic Imagination of India*
24. Dr. Soumyabrata Choudhury *Theater Number Event: Three Studies on the Relationship between Sovereignty Power and Truth*
25. Dr. Veena Sharma *The Concept of God and Modes of Knowledge Transmission in the Akan Spiritual Tradition and Advaita Vedanta: A Comparative Study*
26. Dr. Anita E. Cherian *Performing the Nation: Institutions, Cultural Policy Shaping of a National Theatre in Post-Independence India*
27. Dr. Dhananjay Singh *Pravasi Shram Itihasa Maukhik Dastavez: Bhojpuri Lok Sahitya*
28. Dr. Jaya Tyagi *Contestation and Compliance: A Socio-Historical Study of Religious Observances, Rites and Rituals performed by Women (from the Early Historic to 1200 CE)*
29. Dr. Queeny Pradhan Singh *Developing the Hill: A Comparative in the Study of Simla, Darjeeling, Ootacamund and Mount Abu (19<sup>th</sup> and 20<sup>th</sup> Century)*
30. Dr. Yoginder Singh Sikand *A Critical Analysis of Discourses of Islamic Feminism*
31. Dr. Prachi Khandeparker *The Making of Marathi Literary Theory during the Colonial Era*
32. Dr. Swadhinta Mahanta *Development of Assamese Modern Short Story during 'Ramdhenu Period'*
33. Dr. U.A. Vinay Kumar *Synthesis of World Religions: Constructing a General Metaphysical Structure*
34. Dr. Mallarika Sinha Roy *Marriage, Modernity and the Maharani: Gender and Politics in Colonial Coochbihar*

35.	Dr. Susmita Chatterjee	<i>Sexuality, Feminine Symbolism and the Female in Bengal Tantric Buddhism</i>
36.	Dr. Piyush Mathur	<i>Towards a Global Conception of Environment Citizenship</i>
37.	Professor Satish K. Sharma	<i>Visual Expression: Emerging Signals in the Study of Culture and Social Structure</i>
38.	Professor T.R.S. Sharma	<i>Cultural Encounters in Ancient Indian Literature</i>
39.	Dr. Nandini C. Sen	<i>Women in Combat: A Study of the Naxalbari and the Mau Mau Movement</i>

---

### III. ACADEMIC ACHIEVEMENTS

#### A. Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture

Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture is the most important event in the academic calendar of the Institute organized every year. The 15<sup>th</sup> Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture was organized on 8th Decmeber 2010 in New Delhi. Professor Peter Ronald deSouza, Director IAS, welcomed the invitees. Professor B.L. Mungekar, IAS Chairman gave the Chairman's remarks and Smt. Meira Kumar, Honb'le Speaker, Lok Sabha then delivered the lecture on *Enviornment and Development*. Shri S.P. Thakur, Secretary IAS, proposed the vote of thanks.

#### B. Seminars, Conferences, Symposia and Round Tables

The following activities were held during the period under Report:

##### 1. International Conference on "History and Memory" (18-20 May 2010)

**Rationale:** Is reconciliation achieved through historical amnesia? Or, is remembrance, the acknowledgement of past error, and forgiveness the answer to conflict? If reconciliation is the object, is 'the truth' at all germane to the goal? The focus of the deliberations on "History and Memory" was conceived as the exploration of *collective memories* worldover. *Who* 'remembers' *what* – what is selected, highlighted, even amplified or modified from the reservoir of *memory*? Is the project of raising *memory* fitted to the conceptions, ideology, and relations of power in the present and promoted in one's own context? *Who* carries *what* and to *where* in a network of global encounters is not only *factual* based, upon a closed concept of *historical truth*, but also imaginatively represents the desires of the present.

In the context of historical encounters between peoples, cultures, and nation-states, the dynamics of cross-cultural contact need examination. Critical to our purpose is the question: Are the protagonists of the encounters open to cross-cultural dialogue and multiple ways of seeing the past? It is historically significant and contemporaneously crucial that we study the ways in which

they are represented today drawing upon often contradictory and contentious ‘memories’. As Kerwin Lee Klein puts it, “The memory industry ranges from the museum trade to the legal battles over repressed memory and on to the market for academic books that invoke *memory* as a key word”.

An International Conference on “History and Memory” was organised in collaboration with Indian Council for Cultural Relations (ICCR), New Delhi and Indian Council of Historical Research (ICHR), New Delhi during 18-20 May 2010 at IAS Shimla. Professor Peter Ronald deSouza, Director IAS delivered the Director’s remarks. Dr. Shashi Joshi, Fellow and Convener of the Conference introduced the theme. Professor Jean Comaroff, Bernard E. and Ellen C. Sunny Distinguished Service Professor, Department of Anthropology, University of Chicago gave the Keynote address on “History, Inc., or the Plastic Power of the Past” and Professor Margaret Levi, Jere L. Bacharach Professor International Studies, Director CHAOS (Comparative Historical Analysis of Organisations), States University of Washington, and Chair in US Politics, United States Studies Centre (USSC), University of Sydney, gave the Valedictory Address on “The Past as a Source of Political Power in the Present”.

**Participants:** Professor Neeladri Bhattacharya, Department of History, JNU, Delhi; Professor Ciraj Rassool, History Department, University of the Western Cape, South Africa; Professor Philip Bonner, University of the Witwatersrand, South Africa; Professor Chetan Singh, Himachal Pradesh University, Shimla; Professor J.S. Grewal, Mohali; Professor David Lelyveld, New York; Dr. Gangeya Mukherji, Allahabad; Professor Meena Alexander, City University, New York; Shri Bhai Baldeep Singh, New Delhi; Professor Tridip Suvrud, DAIICT, Ahmedabad; Professor Sari Nusseibeh, Al-Quds University, Jerusalem; Professor Shiv Vishwanathan, DAIICT, Gujarat; Professor Madhavan Palat, National Fellow, IAS; Professor Renuka Singh, Department of Sociology, JNU, New Delhi; Professor Helen Jarvis, Head of the Victims Unit, Extraordinary Chambers in the Courts of Cambodia; Mr. Thubten Samphel, Secretary, Tibetan Information Centre, Dharmashala; Ms. Patricia Mukhim, Editor, Shillong Times, Shillong; Dr. Raj Kumar Hans, Fellow, IAS; Dr. Do Thi Hurong Thao, Vietnam National University; Dr. Imre Lazar, Director, Hungarian Cultural Centre, New Delhi; Professor Bhagawan Josh, JNU, Delhi; Dr. Alexandra Curvelo, New University of Lisbon, Portugal; Dr Angelo Cattaneo, Portugal; Professor Ghanshyam Shah, National Fellow, IAS; Professor Maria Paula Meneses, Centro de Estudos Socias, Mozambique; Mr. Jason K. Fernandes, Dona Paula, Goa; Dr. Nilma Lino Gomes, Federal University of Minas Gerais, Brazil; Dr. Ranjeeta Dutta, Fellow, IAS; Dr. Rochelle Pinto, Department of English, Delhi University, Delhi; Professor Paulo Varela Gomes, University of Coimbra, Portugal; Professor Indu Banga, Mohali.

Following presentations were made during the International Conference:

1. Ciraj Rassool : *The Politics of Memory and Public History in South Africa*
2. Philip Lewis Bonner : *Apartheid, Memory and the Occluded Pasts*
3. J.S. Grewal and Indu Banga: *Sikh Congregational Prayer (Ardas): Formation of Collective Sikh Memory*
4. David Lelyveld : *Dreams and Memories of a Mughal Childhood: Sayyid Ahmad Khan*
5. Meena Alexander : *Memory and a Poetics of Dislocation*



6. Bhai Baldeep Singh : *Music and Memory*
7. Sari Nusseibeh : *Memory and the Politics of the Israeli-Palestinian Conflict*
8. Shiv Vishwanathan : *Between Memory and Forgetting*
9. Madhavan Palat : *History and Memory*
10. Helen Jarvis : *Cambodian Responses to the Memory by States and Social Groups*
11. Thupten Samphel : *History and Memory: The Tibetan Experience*
12. Patricia Mukhim : *Selective Memory, Selective Amnesia*
13. Hai Ke and Thao : *Cultural Interactions between Vietnam and the Chinese and Indian Civilizations (through Memory and History)*
14. Imre Lazar : *The Importance of Memory in the History of Indo-Hungarian Cultural Relations*
15. Alexandra Curvelo : *Crossing Boundaries: The Portuguese Visual Culture in India, 16<sup>th</sup> -17<sup>th</sup> Centuries*
16. Angelo Cattaneo : *A Warning against the Pitfalls of National Histories and Memory (Cartography)*
17. Maria Paula Meneses : *Food Recipes and Commodities of Empires: Mozambique in the Indian Ocean Network*
18. Jason K. Fernandes : *Colonialism, Postcolonialism, Citizenship and Humiliation*
19. Nilma Lino Gomes : *The Black Movement and the Racial Question in Brazil: Silences, Absences and Emancipation*
20. Rochelle Pinto : *The Lie of the Land*
21. Paulo Varela Gomes : *The Many Memories of Church Architecture in Goa*
22. Alok Bhalla : *Ahimsa in the City of Mind: Language, Translation, Identity, Politics and Partitions*
23. Urvashi Butalia : *The Persistence of Memory*
24. Sukrita Paul Kumar : *Partitions: From the Archives of Literature*
25. Margaret Levi : *The Past as a Source of Political Power in the Present*

**2. Study Week on “Exploring Gender, Redefining the Field: Feminist Journeys in the Social Sciences, Humanities and the Arts” (1-5 June 2010)**

**Rationale:** For almost three decades now scholars and creative artists have been redefining the fields that they have been working in to bring in a different perspective from the ways in which knowledge and the arts were organised, and reproduced until then. Gender as an analytical category has had a major impact on the social sciences and humanities and has transformed the way we think

about disciplines and disciplinary boundaries. These developments are now fairly well understood. Less attention has been given to the manner in which feminists have redefined the performative arts, cinema and photography as fields to work in, or of the scholarship in these areas.

The study week on gender was intended to bring together a range of scholars and practitioners of the arts, including a number of younger women, for an in-depth engagement and sharing of their work and ideas on the projects that they have done, or are currently doing. The overarching theme of the study week was to provide for a collective journey for the participants as they are taken through the current and previous engagements of other participants. The presentations and discussions were based on history, science, literature, films, theatre, photography and folklore.

A study week on “Exploring Gender, Redefining the Field: Feminist Journeys in the Social Sciences, Humanities and the Arts” was organized at IAS held during 1-5 June 2010. Professor Peter Ronlad deSouza, Director IAS welcomed and delivered the Director’s remarks. Professor Uma Chakravarti, Convener of the Study Week, introduced the theme to the participants.

**Participants:** Professor Sharmila Rege, Department of Sociology, University of Pune, Pune; Professor Kavita Panjabi, Department of Comparative Literature, Jadavpur University, Kolkata; Dr. Mahua Sarkar, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi; Dr. Kanchana Natarajan, Fellow, IAS; Dr. S. Anandhi, Madras Institute of Development Studies, Gandhinagar, Chennai; Professor Kumkum Roy, Centre for Historical Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Dr. V. Geetha, Chennai; Dr. V. Padma Mangaia, Chennai; Dr. Chayanika Shah, Mumbai; Dr. Dipta Bhog, New Delhi; Dr. Vaishali V. Diwakar, Sr. Mirra College, Pune University, Pune; Dr. Lata Singh, New Delhi; Dr. Shubhra Nagalia, Allahabad; Dr. Anagha Tambe, KSP Women’s Studies Centre, Pune University, Pune; A Mangai; Dr. Vani Subramanian, New Delhi; Dr. Swati Dhadroy, Krantijyoti Savitribai Phule Women’s Studies Centre, Dr. Babasaheb Ambedkar Bhavan University of Pune, Pune.

Following presentations were made during the Study Week:

1. Kavita Punjabi: *Gender and the Political Fields of Tebhaga*
2. Mahua Sarkar: *Between Craft and Method: Meaning and Inter-Subjectivity in Oral History Analysis*
3. Kanchana Natarajan: *Creative Dynamism of Oral Compositions: Songs of a Self Realized Woman Sage*
4. Kumkum Roy: *Engendering Social History: Pedagogical Possibilities*
5. V. Geetha: *Negotiating between the Present and the Past: Doing Feminist History*
6. Sharmila Rege: *Ambedkar: A Feminist Reclamation*
7. Chayanika Shah: *Gender and Science: Moving Beyond Binaries*
8. Dipta Bhog: *Gender and Nation in School Textbooks*
9. Vaishali Diwakar: *Re-imagining the Nation and Redefining Regional and Gender Identities in the Cinema of the 1950s*
10. Shubhra Nagalia: *Feminist Literary Criticism: Women Writing in Hindi*

11. Anagha Tambe: *Reading Devadasi Practices in Popular Marathi Literature*
12. Lata Singh: *Fore-fronting the Women Performers of Colonial India: Elite and Popular Theatre*
13. A Mangai: *Re-writing the Histories of Art and Literature: Redefining Body and Space in Theatre*
14. Vani Subramaniam: *Gender and the Built Environment*
15. Uma Chakravarti: *Shifting Texts: In Pursuit of Elusive Histories*
16. S. Anandhi: *Gender and Commodity Aesthetics in Tamil Magazines*
17. Swati Dhadroy: *Targeting Adolescents: Taking 'Modern' Education to Tradition through Chhatra Prabodhan*

### 3. Study Week on “Indian Logic and Epistemology” (2-11 July 2010)

**Rationale:** The structural depth in Indian philosophical systems was acquired in ancient India through dialogue among various philosophical systems. For a meaningful dialogue, however, what is most important is the language of communication. Therefore, by 1000 A.D. it was felt necessary to develop a language of precise communication. It started taking shape and by the 13<sup>th</sup> century A.D. a language called Navya Nyaya was fully developed and thereafter almost all intellectual and philosophical discourses and debates adopted that very language for precise communication and it continues to be used in traditional philosophical discourses even today.

But unfortunately, there are very few institutions in India engaged in the study of Indian intellectual and philosophical traditions, offering any course in the language of Navya Nyaya in which the entire discourse of 1000 years is preserved. As a result, these texts are not accessible to a genuine scholar having genuine interest.

A graded Study Week programme on “Indian Logic and Epistemology” was organised to meet this need during 2-11 July 2010. Professor Peter Ronald deSouza, Director IAS delivered the Welcome address. Professor V.N. Jha, Convener of the Study Week presented the Keynote address of the Study Week. Professor Ujjwala Jha, University of Pune also spoke on the occasion.

**Participants:** Dr. P.S. Rudraman, Mahatma Gandhi Institute, Moka, Mauritius; Dr. M. Srinivasamurthy, Hyderabad; Dr. Maciej S. Zieba, John Paul II Catholic University of Lublin, Institute of Philosophy Poland; Dr. Chandan Kumar Chowdhury, Asutosh College, Kolkata; Dr. Abhijeet Singh, Department of Philosophy, School of Humanities, University of Hyderabad, Hyderabad; Dr. Sarbani Banerjee, Department of Philosophy, Rabindra Bharati University, Kolkata; Dr. Loknath Chakrabarti, Govt. Sanskrit College, Kolkata; Dr. Varun Kumar Tripathi, Shri Mata Vaishno Devi University, Katra; Professor R.I. Nanavati, Oriental Institute, M.S. University of Baroda, Vadodara; Ms. Rashmi Mishra, Department of Philosophy, University of Lucknow, Lucknow; Ms. Namita Tripathi, Department of Philosophy, University of Lucknow, Lucknow; Dr. Rajeshwar Prasad Yadav, Department of Philosophy, University of Lucknow, Lucknow; Mr. Anurag Kureel, Department of Philosophy, Lucknow University, Lucknow; Ms. H.R. Meera, Bangalore; Dr. Ratish Chandra Jha, Hans Raj College, Mahatma Hans Raj Marg, University of Delhi, Delhi; Dr. Sachindra Raul, Department of Philosophy, Ravenshaw University, Cuttack; Dr. Ambuja Salgonkar, Department of

Computer Science, University of Mumbai, Mumbai; Dr. Subhankari Pati, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Dr. Prashant Shukla, Department of Philosophy, Hindu College, Delhi; Dr. Shikha Jha, Jawaharlal Nehru University, Delhi; Professor Rajeeva Ranjan Sinha, Department of Sanskrit-Vidya Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi; Dr. Ranjeet Kumar Mishra, Department of Sanskrit, Hans Raj College, University of Delhi, Delhi; Dr. Meera Rastogi, Department of Sanskrit, Lucknow University, Lucknow; Dr. Anirudha Panda, Paramananda College, Khurda, Orissa; Y. Sridhar Reddy, Gnana Prabha College, Gadwal; Mr. Konseng Baruah, Department of Philosophy, Jorhat College, Assam.

#### **4. Study Week on “Dalit Challenges and Disciplinary Practices” (19-25 July 2010)**

**Rationale:** The interface between dalit activism and academia in the last two decades has given way to a growing body of work on Dalit Studies. It is essentially inter/multi-disciplinary in character and explores new questions, methods and paradigms. The political and cultural overtones of the term and concept of ‘dalit’ have opened up new possibilities of critical engagement with conceptual categories of exclusion and marginality for disciplinary practices. Posing a challenge to the existing disciplines, it propels the initiative for the creation of an alternative paradigm as well as reconfiguring the contours of everyday life in Indian society in general and academia in particular. Caste, religion and land as determinants of relations of power and subordination, as sources of oppression and humiliation are central to the understanding of dalit lifeworlds.

A Study Week on “Dalit Challenges and Disciplinary Practices” of intensive presentations, discussions, and reflections was called for this purpose. The invited participants cover a broad range of scholars from different disciplines including public intellectuals who have already contributed in the field of Dalit Studies. Each day of the Week during 19-25 July 2010 took up not more than four papers with ample time for presentation and discussion to finally lead the scholars towards publication of its proceedings by the Institute. Professor Ghanshyam Shah, National Fellow of the Institute gave the Welcome Address. Professor Raj Kumar Hans, Fellow, IAS and Convener of the Study Week introduced the theme of the Study Week.

**Participants:** Dr. Neerav Patel, Swaman: Foundation for Dalit Literature, Ahmedabad; Mr. S. Anand, New Delhi; Dr. G.S. Suresh Babu, Department of Sociology, University of Jammu, Jammu; Professor Ronki Ram, Department of Political Science, Chandigarh; Dr. Priyadarshini Vijaisri, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi; Dr. Shura Darapuri, Department of History, H.P. University, Shimla; Dr. Jasvir Singh, Bangalore; Dr. P. Sanal Mohan, School of Social Sciences, Mahatma Gandhi University, Kottayam; Dr. Masood Alam Falahi, Maulana Azad National Urdu University, Lucknow Campus, Lucknow; Mr. Anand Teltumbde, Petronet India Ltd., Mumbai; Mr. Om Prakash Valmiki, Dehradun; Dr. Joel Lee, New York; Dr. Manmohan, Rohtak University, Rohtak; Dr. Vijaya Singh, Fellow, IAS.

Following presentations were made during the Study Week:

1. Joel Lee: *A Critical Review of the Anthropology of Caste*
2. P. Sanal Mohan: *Social Science Practice and Cultures of Resistance: Situating Dalit Studies*
3. Priyadarshini Vijaisri: *Beyond the History of Pathos*

4. Masood Alam Falahi: *Dalit Oppression: An Analysis of Islamic Literary and Historiographical Practice*
5. Suresh Babu: *Dalit Rationality and Post-colonial Trajectory of Modernity in India*
6. Anand Teltumbde: *Dalit, Modernity and Metamorphosis of Caste*
7. Neerav Patel: *Who Speaks for Dalits?*
8. S. Anand: *Presentation of a Documentary Bhagwan Das: In Pursuit of Ambedkar*
9. Om Prakash Valmiki: *Hindi Sahitya Ke Antravirodh: Vishistha Sandarbh Aur Dalit Chetna*
10. Dr. Manmohan: *Dalit Questions in Contemporary Punjabi Literature*
11. Ronki Ram: *Cultures of Social Protest in the Periphery: Guru Ravidass, Bhakti and the Rise of Dalit Deras in Punjab*
12. Vijaya Singh: *To Eat or Not to Eat: Hunger and Humiliation in Dalit Stories*
13. Raj Kumar Hans: *Dalit Saint Poets of Punjab and their Exclusion from Histories*
14. Jasvir Singh: *Dalits, Constitutional Promises of Socio-Economic Justice and the State in India with Special Reference to Agricultural Wage Workers*
15. Shura Darapuri: *Caste-based Exclusion and its Impact on Health: A Study with Specific Reference to Dalit Women*

#### 5. Seminar on “Utpaladeva, Philosopher of Recognition” (20-21 August 2010)

**Rationale:** Utpaladeva or Utpalacarya (end of 9<sup>th</sup>-early 10<sup>th</sup> century, Kashmir) is one of the greatest philosophers that India has produced, but he is hardly known in India itself. After Somananda (9<sup>th</sup> century) who laid the foundation for the philosophy of Recognition (Pratyabhijna Darsana), Utpaladeva established this school on a solid basis by his philosophical works *Isvarapratyabhijna Karika* and *Vrtti*, with a *Vivrti* that has come down to us only in fragments, and the *Siddhitrayi*, containing three terse philosophical treatises. Besides his philosophical works he was also a mystical poet, as expressed in his unsurpassable hymn collection *Sivastotravali*. Utpaladeva’s philosophical influence was established by his great successor (two generations later) Abhinavagupta (10<sup>th</sup>-11<sup>th</sup> century) and his two extensive commentaries on the *Karikas* and *Vivrti: Isvarapratyabhijna Vimarsini* and *Vivrtivimarsini*.

The genius of this philosopher of Recognition was re-discovered and was given his due place not only in the history of Indian thought but also in the present-day intellectual and spiritual situation at the Seminar during 20-21 August 2010 at IAS Shimla.

Professor Peter Ronald deSouza, Director IAS, welcomed the participants. Professor Raffaele Torella, Chair of Sanskrit, University of Rome, Italy presented the keynote address entitled “Utpaladeva and the Pratyabhijna School”. Professor Bettina Baeumer, Abhinavagupta Research Library, Varanasi and Professor Torella were the Conveners of the Seminar.

**Participants:** Professor K.D. Tripathi, Faculty of Sanskrit Learning and Theology, Banaras Hindu University, Varanasi; Professor M.H. Zaffar (G.M. Khawaja), Centre for Kashmir Studies, Srinagar

University; Dr. Alexendra Wenta, Centre for the Comparative Studies of Civilizations, Jagiellonian University, Poland; Professor G.C. Tripathi, National Fellow, Indian Institute of Advanced Study, Shimla; Ms. Giorgiana Violante, Institute Kashmir Studies, Srinagar; Dr. Daniele Cuneo, Rome.

Following presentations were made during the Seminar:

1. K.D. Tripathi: *Emergence of the Pratyabhijna Philosophy: Vakyapadiya's Contribution*
2. Raffaele Torella: *Orality and Writing in Pre-modern India*
  - a) *Intimate Enemies: Utpaladeva and the Buddhists*
  - b) *Utpaladeva on Yogic Perception: Passages from the recently recovered Isvara-Pratyabhijna Vivrti*
3. Bettina Baeumer: *Visamapi Amrtayate... Paramadvaita in the Mystical Hymns of the Sivastotravali.*
4. M.H. Zaffar: *The Influence of Utpaladeva's Pratyabhijna on the Mystical Poets of Kashmir (A Short Communication)*
5. Daniele Cuneo: *Differentiating Tradition From Utpaladeva's Ecstatic Aesthetics to Abhinavagupta's Ecumenical Art Theory*

**6. Roundtable on "Social Inquiry Today: The Challenge of Description and Change" (24 September 2010)**

**Rationale:** Some years ago, the Danish social scientist, Bent Flyvbjerg published a trenchant and rather monumental book on the possibilities of social inquiry, imploring the grounds for a reappraisal of the role of the social sciences. It was a sobering study of the trend dominating the social and behavioural sciences where, in one form or another, crucial aspects of social inquiry have been attenuated by the attempt to emulate the natural sciences and create a kind of general theory; after all, as Flyvbjerg suggested, the strength of the social sciences really lay in their rich, reflexive analysis of values and power – so essential to the social and economic development of society. The idea at the "Social Inquiry Today: The Challenge of Description and Change" was conceptualized independently of the problematic that Flyvbjerg was alluding to; independently, one need add, of the decisions to be made concerning the imperative to foreground the idea of a reflexive social science. And yet, it cannot be denied that what was being sought for in the context of the roundtable, even as it cuts across Flyvbjerg's restaging of the prospects of social inquiry today, also resonates with the latter's theme.

The effort clearly was to nurture a fresh reflection on the social sciences and the prospects for social inquiry today. Organised at Department of Sociology, University of Hyderabad, Hyderabad, on 24<sup>th</sup> September 2010, the main issue was to develop around the projectual dimension, with the objective of visualizing both the social sciences and social inquiry today from a particular viewpoint, which singles out the dimension of description and change as social science's space of communication and negotiation. It faced emerging problems that characterize the dynamics of social inquiry today, like the challenge of subalternity and difference, the question of democracy, the enlargement of the space of rights, social equity and public accountability, the sense of contending public space and the

emerging dynamics of scholarly production in the social sciences in India (as indeed in other parts of the world).

Professor Vinod Jairath, Head, Department of Sociology, University of Hyderabad welcomed the participants. Professor Sasheej Hegde, Convener of the Round Table introduced the Round table theme. Professor Peter Ronald deSouza, Director, IAS presented the Director's remarks.

**Participants:** Professor Shiv Visvanathan, Dhirubhai Ambani Institute of Information and Communication Technology, Gandhi Nagar; Dr. Vivek Dhareshwar, Independent Scholar, Bangalore; Professor Madhava Prasad, Central Institute of English and Foreign Languages, Hyderabad; Professor Pulapre Balakrishnan, Centre for Development Studies, Trivandrum; Mr. Harsh Sethi, Consulting Editor, Seminar, Delhi; Professor D. L. Sheth, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi; Shri Prasanna, Kavi Kavya Trust, Heggodu, Karnataka; Dr. Rajarshi Dasgupta, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Professor Javeed Alam, Chairman, Indian Council of Social Science Research, New Delhi; Professor D. Vankat Rao, Central Institute of English and Foreign Languages, Hyderabad; Dr. R. Srivatsan Anveshi; Dr. V.B. Tharakeshwar, Central Institute of English and Foreign Languages, Hyderabad; Professor P.R.K. Rao, Indian Institute of Information Technology, Hyderabad; Dr. Aniket Alam, Economic Political Weekly, Mumbai; Dr. Shilpa Anand, Central Institute of English and Foreign Languages, Hyderabad.

## **7. Study Week on “Reading Rammanohar Lohia” (3-7 October 2010)**

**Rationale:** What we remember and what we have forgotten about Rammanohar Lohia in his birth centenary year is as much a comment on the state of political and intellectual life in contemporary India as it is on the man who lived a short and intense life of mind and action. In part it is a reflection of his strong personality and iconoclastic mind that bifurcates his memory into two strands that talk past one another: the small and dwindling band of Lohia's blind admirers who are still too dazzled to see anything beyond 'doctor sahib' and the equally blind critics who are too prejudiced and self assured to even read what Lohia had to say about some of the big questions of our time.

The birth centenary of Rammanohar Lohia is a good opportunity to remedy the amnesia. While the birth centenary celebrations have resulted in many activities and seminars devoted to Lohia's ideas, there is a need for systematic reading of Lohia. The Study Week on 'Reading Rammanohar Lohia' did precisely that, namely read Lohia's texts closely and subjecting it to meticulous scrutiny. The Study Week during 3-7 October 2010 was divided into sessions devoted to pre-specified texts of Lohia. Each session was led by a scholar who has worked on that aspect of Lohia, but this did not take the form of paper presentation. The sessions were devoted to careful textual scrutiny and criticism by all the participants. Since the basic idea was to encourage a reading of Lohia by a new generation of scholars, a majority of participants were younger scholars who may or may not have written much on Lohia but who were willing to engage with him.

Professor Peter Ronald desouza, Director, IAS welcomed the participants. Professor Yogendra Yadav, Centre for Study of Developing Societies, Delhi and Dr. Prem Singh, Department of Hindi, University of Delhi, Conveners of the Study Week introduced the theme. Professor Nand Kishore Acharya, International Institute of Information Technology, Hyderabad gave the Keynote address.

**Participants:** Dr. Kumkum Yadav, S.G.N.D. Khalsa College, New Delhi; Professor Anand Kumar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Dr. Pankaj Pushkar, CSDS-Lokniti, Delhi; Mr. Niraj Kumar, University of Delhi, Delhi; Dr. Kamal Nayan Choubey, Dyal Singh College, Delhi; Mr. Jayant Kumar Kashyap, Deshbandhu College, Delhi; Dr. Madhulika Banerjee, Department of Political Science, University of Delhi, Delhi; Dr. Medha Pushkar, Sri Aurobindo Centre for Arts and Communication, Adhchini, New Delhi; Dr. Chandan Gowda, Centre for the Study of Social Exclusion, National Law School of India, Bengaluru; Dr. Krishna Swamy Dara, Department of Political Science, Jamia Millia Islamia, New Delhi; Dr. Chandan Kumar Srivastava, CSDS, Delhi; Justice Rajinder Sachar, Peoples Union for Civil Liberties, Delhi; Ms. Shivani Kapoor, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Mr. Sumit Sawrav, Mahatma Gandhi Antarastriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha; Mr. Upendra Kumar, Jamia Millia Islamia University, New Delhi; Dr. Rajaram Tolpadi, Department of Political Science, Mangalore University, Mangalagangothri; Ms. Nayana, Department of Political Science, Mangalore University, Mangalagangothri; Mr. Sunil, Hoshangabad; Professor Sudhir Kumar, Professor of English, Panjab University, Chandigarh; Dr. V. Anji Reddy, Department of Political Science and Public Administration, Acharya Nagarjuna University, Nagarjuna Nagar; Dr. Anjaiah Nannapaneni, Centre for Scientific Socialism Acharya Nagarjuna University, Nagarjuna Nagar; Mr. Quarban Ali, India News, Media House, New Delhi; Dr. Anil Kumar Thakur, Shyam Lal College, Delhi; Dr. Sushil Kumar, A.P.S.M. College, Barauni, Bihar; Dr. Manjul Kumar Singh, A.R.S.D. College South Campus, Dhaula Kuan, Delhi; Mr. Abhay Kumar Dubey, CSDS, Delhi.

#### **8. Workshop on “Pastoralism and Commons” (1-2 November 2010)**

A workshop on “Pastoralism and Commons” was organised in collaboration with Foundation for Ecological Security (FES) Anand, Gujarat at IIAS.

**Participants:** S.S. Samant, S.K. Radotra, Depinder Kapoor, Viren Lobo from Society for Promotion of Wastelands Development, Delhi; Shafat Kakroo, Pashmina Rearee, Jagatram, Rahul Chaturvedi and Kamal Kishore from Foundation for Ecological Security, Anand (Gujarat); Jairam, Imamm Gujjar, Purnendu S. Kavoori from Institute of Development Societies, Jaipur; N. Kandasamy from Veterinary College and Research Institute, Namakkal (Tamil Nadu); S.R. Sharma, N.T.R.S. (CSWRI), Garsa, Kullu (Himachal Pradesh); Nehal Farooqui, Nitya S. Ghotge, Antnra, Bavdhan, Pune; A. Batobayal, S.C. Gupta, Mohd. Aziz, Manzoor Hussain and Maan Singh, Billawar from J&K.

#### **9. Seminar on “Rashtravad Aur Upanyas” (8-10 November 2010)**

**Rationale:** A seminar on “Rashtravad aur Upanyas: Sandarbha Hindi Upanyas” was organized on 8-10 November 2010. This was the first attempt to study and analyze the Hindi novels of the last 125 years in their engagement with the theme of nationalism. In this interdisciplinary seminar, there were scholars who were literary critics, social scientists, dalit critics and feminist writers. Twenty scholars made presentations.

The seminar began with opening remarks by Professor Peter Ronald deSouza, Director of the Institute who highlighted various view points on the issue of nationalism and how it found a place in literature. Professor Nityananda Tiwari, in his Keynote address, covered the journey of Indian nationalism from its formative period to its development after independence as expressed in the Hindi novel. He argued that just as Indian nationalism was a product of the encounter of Indian pride in its



heritage to British colonialism, the Hindi novel is also a product of the interaction between the indigenous narrative form with Western literary realism. Dr. Pramod Kumar, Fellow and Convener of the Seminar introduced the theme.

**Participants:** Dr. Vidya Sinha, Kirori Mal College, Delhi University; Professor Nityanand Tiwari, former Head, Department of Hindi, Delhi University; Dr. Prem Singh, Delhi University; Professor Rohini Aggrawal, Maharshi Dayanand University, Rohatak; Professor Gopeshwar Singh, Delhi University; Shri Manjul Kumar Singh, A.R.S.D. College, Delhi University; Professor Raj Kumar, Banaras Hindu University; Dr. Shanti Nair, Shree Shankracharya University, Aalady, Kerala; Dr. Ravi Kant, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi; Dr. Ved Raman Pandey, Seth Anandram Jaipuria College, Kolkata; Dr. Poonam Sood, Sri Venkataswara College, Delhi University; Dr. Virendra Kumar Singh, S.L. College, Muzafarpur; Shri Virendra Yadav, Lucknow; Dr. Abhay Ranjan, Hindu College, Delhi University; Professor Jyotish Joshi, Lalit Kala Academy, Delhi; Dr. Abhay Kumar Dubey, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi; Professor Arun Kamal, Patna University; Professor Sambhunath, University of Calcutta; Dr. Kawal Bharti, Rampur (Uttar Pradesh); Dr. Kalyan Kumar Jha, Muzafarpur; Professor Om Prakash Gupta, Dr. Vaibhav, Delhi; Professor Vijay Bahadur Singh, Kolkata; and Shri Rajeev Ranjan Giri, Delhi University.

Following presentations were made during the Seminar:

1. Professor Shambhunath : *Rashtravad Samudayik Vimarsha aur Upanyas*
2. Professor Vijay Bahadur Singh : *Upanyas aur Deshjata*
3. Professor Gopeshwar Singh : *Hashiya ke Lagon ka Rashtra aur Maila Aanchal*
4. Professor Arun Kamal : *Maila Aanchal aur Dhodhaya Charitamanas Mein Rashtra*
5. Dr. Vaibhav Singh : *Aarambhik Upanyas Adhunikta aur Rashtravad*
6. Shri Rajeev Ranjan Giri : *Bhartiya Upanyas ki Awdharna aur Aarambhik Upanyas*
7. Professor Om Prakash Gupta : *Hindu Rashtra ki Awdharna aur Gurudutt ke Upanyas*
8. Professor Raj Kumar : *Rashtra aur Gaon (with reference to Godan)*
9. Dr. Pramod Kumar : *Rashtra-Nirman ki Disha aur Sanskritik Sankat (with special reference to Character's of Premchanda's Political Novel)*
10. Dr. Prem Singh : *Shekhar ek Jiwani aur Rashtravad*
11. Dr. Jyotish Joshi : *Bhartiya Rashtravad ka Paripreksiya aur Jainendra ke Upanyas*
12. Dr. Virendra Yadav : *Vibhajan aur Hindi Upanyas*
13. Dr. Ravi Kant : *Aadha Gaon: Kiska Rashtra ? Kaisa Rashtra ?*
14. Dr. Kewal Bharati : *Rashtravad aur Dalit Upanyas*
15. Dr. Abhay Ranjan : *Dalit Chintan aur Rashtra*

16. Professor Rohini Aggrawal : *Stri-Asmita, Bharat Rashtra aur Narivadi Upanyas*
17. Dr. Abhay Kumar Dubey : *Rashtravad aur Upanyas: Narivadi Pratyakhyan*
18. Dr. Vidya Sinha : *Aanchal ka Prashna, Renu ke Upanyas aur Bhartiya Rashtra*
19. Dr. Ved Raman : *Rashtravad ka Uttarkand aur Manohar Shyam Joshi ke Upanyas*
20. Dr. Shanti Nair : *Paristhi ki aur Samkalin Hindi Upanyas*
21. Dr. Poonam Sood : *Bypass se bante Rashtra ki Vyatha Gatha: Kali Katha*
22. Dr. Manjul Kumar Singh : *Vikas aur Visthapan ka Sawal aur Virendra Kumar Jain ke Upanyas*

#### **10. International Conference on “Shifting Perimeters: Social and Ethical Implications of Human Genome Research” (15-16 November 2010)**

**Rationale:** Representing emergent global assemblages of science-techno-capital power, research on the human genome has made quick alliances with market networks, flexible capital, and global research. Despite the growth of human genomic research and its presence in a wide array of possible uses, the ethical, legal, and social implications of human genomics have largely been reduced to a footnote. Research on human genome and its allied science and technical engagements stand to be read at multiple levels: as new informations which has implications for a range of disciplines: as sources for new medical knowledge that can be deployed against a range of diseases; as the prototype for new organisational structures for conducting science and technology research; as holding the mastercode to the possibilities of remaking the physiological constitution of humans; as commercialized knowledge in which humans can exercise their choice and options to redefine the physical and social body; and as a body of knowledge that has the potential to alter the perimeters between science and society and the very constitution of a range of disciplines. In seeking articulations over these issues and concerns, an international seminar on “Shifting Perimeters: Social and Ethical Implications of Human Genome Research” was organised which was a preliminary conversation to bring together understandings and interpretations related several questions:

1. What are the potentialities of the body of knowledge of human genomics? What significance does it have for disciplines of medicine, neurobiology, psychiatry, sociology, anthropology, political science, public administration, jurisprudence and history?
2. What regimes (legal, ethical, political) are required to manage the linkage of human genomics research and its use in a wide variety of fields? What significance does human genome research have for the increasing market based, commercial and profit-oriented research enterprises?
3. What are the potential advantages and disadvantages that countries, such as India, face in the conduct, dissemination and use of human genomic research.
4. What national and international regimes (legal and ethical) are required to ensure that knowledge and information from human genomic research is used as a public good and therefore, what new transnational regulations are required to ensure this?

5. What are the implications of the use of human genomic research in the fields of a range of new medical knowledge (psychiatry, psychology, physiology etc. and practices (such as personalised medicines; profiling, predictive genetic testing etc)? What ethical and legal concerns need to be borne in mind even as these gain wide usage?
6. What are the larger universal concerns relating to the possibilities of using human genomic research to alter the physiologies of humans and hence what larger ethical and philosophical issues can be raised about the very constitution and undertakings of the humans.

The seminar was organised in collaboration with National Institute of Advanced Studies (NIAS), Bangalore on 15-16 November 2010 at NIIAS. Professor A.R. Vasavi, NIAS was the Convener of the Conference. Professor Peter Ronald deSouza, Director, IAS and Professor B.V. Sreekantan, Faculty, NIAS presented the Inaugural Comments.

**Participants:** Professor Wiebe E. Bijker, Faculty of Arts and Social Sciences, Maastricht University, Maastricht, Netherlands; Dr. Norma M. Tsotsi, Director for Undergraduate Studies, Steve Biko Centre for Bioethics, School of Clinical Medicine, University of the Witwatersrand, Park Town, Johannesburg, South Africa; Dr. Linda Macdonald Glenn, Assistant Professor, Department of Medical Education, Alden March Bioethics Institute, Albany Medical Center, New York; Professor Peter Glasner, ESRC Centre for the Economic and Social Aspects of Genomics, School of Social Sciences, University of Cardiff, UK; Professor Sasheej Hegde, Department of Sociology, University of Hyderabad, Hyderabad; Professor N.R. Madhava Menon, Dr. S. Radhakrishnan Chair on Parliamentary Studies, Trivandrum; Dr. K. Thangaraj, Centre for Cellular and Molecular Biology, Hyderabad; Dr. D. Venkat Rao, Department of English Literature, School of English Literary Studies; The English and Foreign Languages University, Hyderabad; Professor Shiv Visvanathan, Dhirubhai Ambani Institute of Information and Communication Technology, Gandhinagar; Dr. Ratna Dua Puri, Sr. Consultant, Centre for Medical Genetics, Sir Ganga Ram Hospital, New Delhi; Dr. Krishna Ravi Srinivas, Associate Fellow and Managing Editor: *Asian, Biotechnology & Development Review*, RIS - Research & Information System for Developing Countries, New Delhi; Dr. M.G. Narasimhan, Associate Professor, School of Humanities, National Institute of Advanced Studies, Bangalore; Professor Sharat Chandra, Centre for Human Genetics, Bangalore; Professor Vinod K. Gaur, Indian Institute of Astrophysics, Bangalore; Mr. J. Sriram, Bangalore; Dr. C. Manmohan Reddy, Bangalore; Dr. Santosh K.R. Rout, Bangalore; Dr. Yadugiri V.T., Bangalore.

Following presentations were made during the International Conference:

1. Wiebe E Bijker : *The Governance of Risks and Benefits of Genome Science and Engineering- Related Experiences in Europe*
2. Sasheej Hegde : *Beyond ELSI: Further Considerations on the 'Morality' of Human Genome Research*
3. N.R. Madhava Menon : *Legal and Ethical Dimensions of Human Genome Research: A Developing World Perspective*
4. Linda MacDonald Glenn : *Human Genome Research + Converging Technologies = The Singularity? (Explorations of the Evolution of Humanity)*

5. Ratna Puri : *Ethical Issues in Medical Application of Genome Research*
6. M.G. Narasimhan : *The Use and Abuse of Genetic Information*
7. Anita Kar : *Human Genetics/Genomics; Translational Research; Developing Country Health Systems*
8. D. Venkat Rao : *Life Itself - Between the Archontic and the Promissory: The Question of Critical Humanities*
9. Norma M Tsotsi : *Human Genome Diversity Research: Social and Cultural Ethical Issues for South Africa*
10. K. Thangaraj : *Genome Research: Population Stratification, Health and Disease*
11. Peter Glasner : *Topologies of the Genome: Mapping the New Genomic Era*
12. Shiv Visvanathan : *Thinking About the Human Genome*

### **11. Colloquium on “Resurgent North East: Constraints and Opportunities” (18-20 November 2010)**

The concept of North East or North East Frontier has a colonial beginning, and it has been developed into the North East region in modern India. This is now a distinct political, ethnic, cultural and geographic entity. The North East India is growing, making progress in every field, making the quality of life improved, more educated and more prosperous. It is a resurgent India which has emerged. The Indian constitution is one of the best instruments of freedom and administration. Indian democracy under the constitution is working; the ideals of Indian democracy, freedom, equality and justice under the umbrella of secularism.

People participate in the democratic process. The democratic institutions like, the Assembly, Panchayats, traditional village councils and the autonomous district councils are working. How genuine and effective are this democratic process? Galore are the corrupt electoral process, use of money, muscle power and gun culture. What freedom and democracy mean to the common people? The system is democratic and there is people’s support to the system. True, there are constraints to democracy; it has to be overcome through people’s consciousness and appropriate reforms.

There are diverse ethnic aspirations ranging from the demands for secession and sovereignty, statehood, ethnic homeland and district councils. These ethnic movements or insurgency are marked by violence. Naturally, these violent movements are encountered by the security force as the counter insurgency measures. They have to defend the Indian state and keep a law and order to maintain the unity and integrity of the nation even to the extent of using a draconian law named, the Armed Forces Special Power Act (AFSPA). There is a great need for the prevention of the violation of human rights both by the security forces and the insurgents.

Dialogue is going on for a negotiated settlement of the conflicts. There is a genuine demand for peace from the people. India as a great nation can accommodate the ethnic aspirations. Ethnic nationalism is to be absorbed within Indian nationalism and democracy.

The women of the North East India are well known for their social freedom and their role in the livelihood of the people. In Meghalaya, there is the unique matriachal system. What are the gender issues? How the position of women is affected by modernization. The culture of the region is rich, diverse and vibrant. The classical dance forms, the folk forms of art, dance and music are preserved by the indigenous communities in the midst of modernisation.

Education, technology, development, democratic process, culture and development, trade and commerce, modern communication including IT revolution have led the region towards modernity. How modern are the people of the North East region?

The region faces constraints in many spheres of life, problems are complex and some times defy immediate solution. But no problem is insolvable. There are opportunities which should be utilised to solve the problem.

These were some of the issues which were discussed at a colloquium on “Resurgent North East: Constraints and Opportunities”, organized from 18-20 November 2010.

**Participants:** Professor Kshitri Mayum Bimola Devi, Manipur University; Professor Tiplut Nongbri, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Dr. C. Joshua Thomas, Director, ICSSR North Eastern Regional Center, Shillong; Ms. Jarjum Ete, President, Indigenous Woman Research Centre, Itanagar; Professor Monirul Hussain, Guwahati University; Professor H. John Sema, Nagaland University Lumami, Mokokchung; Professor B.K. Roy Burman, New Delhi; Professor J.J. Burman, Tata Institute of Social Science, Mumbai; Professor N. Joy Kumar Singh, Manipur University; Professor Margaret Ch. Zama, Mizoram University; Dr. Laura Yerekesheva, ICCR Fellow; Ms. Rosemary Dzuvcitu, Nagaland University; Professor Amar Yumnam, Manipur University; Professor Sanjoy Hazarika, Saifuddin Kitchelw Chair, Centre for North East Studies, Jamia Millia Islamia; Professor Ghanshyam Shah, Professor Madhavan Palat and Professor G.C. Tripathi (all National Fellows IAS); Professor Raj Kumar Hans, Dr. Saitya Brata Das, Dr. Shashi Joshi, Dr. Sanjay Palshikar, Dr. P. Narayanan and Dr. Swadhinota Mahanta (all Fellows IAS).

Following presentations were made during the Colloquium:

1. B.K. Roy Burman : *Ethnic Aspirations and Conflicts in North East India*
2. H. John Sema : *Naga Politics: Issues and Problems*
3. Ghanshyam Shah : *Nation-State Building: Dilemmas and Challenges in Multi-Ethnic Society*
4. N. Joy Kumar Singh : *Genesis of the Insurgency Movement in Manipur*
5. J.J. Burman : *The Future of North East: Look East or Look Around*
6. Tiplut Nongbri : *Exclusionary Practices: The Marginalisation of Women in State and Public Policies*
7. Kshitri Bimola Devi : *Gender Issue: A Case Study of Manipur*
8. C. Joshua Thomas : *How to make Democracy Work in India's Violent North East*
9. Monirul Hussain : *Working of Democracy in the North East*

10. Margaret Ch. Zama : *Cultural Politics and Modernity*
11. Laura Yerekesheva : *Tradition, Modernity and Religion in Colonial Central Asia (Turn on 19<sup>th</sup> and 20<sup>th</sup> Century)*
12. Rosemary Dzuvcitu : *Universities in the North East and the Role of MHRD*
13. Amar Yumnam : *Democracy, Property Rights and Development: The Need for a Regional Ethics*
14. Sanjoy Hazarika : *Armed Forces Special Power Act*

## 12. Seminar on “Me and My Writing: Women Writers from Africa and India” (22-23 November 2010)

**Rationale:** The seminar was an attempt to bring together polyphony of women’s voices located spatially and temporally at different nodes of coloniality and post-coloniality across a wide spectrum of geographical, historical, cultural and social situations. As they spoke about their personal experiences as writers they reflected the varied and divergent intellectual frameworks and experiences that have emerged out of the interactions and confrontations of the colonial and the postcolonial with the indigenous and personal.

The seminar was organized in collaboration with Indian Council for Cultural Relations, Sahitya Akademi, India International Centre, New Delhi and Bharati College, Delhi University, Delhi during 22-23 November 2010 at IIAS.

**Participants:** Professor Yashodhara Misra, Sarojini Naidu College, Bhopal; Dr. Yaba Badoe, Ghana; Dr. Vaidehi, Manipal; Professor Jaiwanti Dimri, H.P. University, Shimla; Dr. Rekha Sharma, H.P. University, Shimla; Professor Joy Constance Kwesiga, Kabale University, Uganda; Dr. Prachi Garg, New Delhi; Dr. Humera Ahmed, Chief Postmaster General, Shimla; Dr. Megha Behl, Rohini; Dr. Shrishti Gupta, Ghaziabad; Karen King-Aribisala, University of Lagos, Nigeria; Dr. Asha Kaul, Bharati College, New Delhi; Dr. Nandini C. Sen, Bharati College, University of Delhi; Dr. Devika Narula, Delhi College of Arts and Commerce, University of Delhi; Dr. Sukrita Paul Kumar, Zakir Hussain College, New Delhi; Dr. Arshmeet Kaur, New Delhi; Dr. Nikita Saxena, Delhi; Dr. Shreya Bhattacharji, Rajiv Gandhi University, Itanagar; Dr. Mridula Garg, Delhi; Ms. Urmila Pawar, Mumbai; Dr. Shaymla Bhatia, Shashi Bhargava, Sitesh Bhatia, Dr. Anita Cherian, Professor Raj Kumar Hans, Dr. Saitya Brata Das, Dr. Jaya Tyagi, Dr. Yoginder Singh Sikand, Dr. Soumyabrata Choudhury, Dr. Prachi Khandeparkar, Dr. Vijaya Singh and Dr. Swadhinota Mahanta, (all Fellows of the Institute) and Dr. Laura Yerekesheva, ICCR Fellow.

Following presentations were made during the Seminar:

1. Joy Kwesiga : *The Door is Ajar: Women Writing in Uganda*
2. Vaidehi : *Writing – a Light in Darkness*
3. Mridula Garg : *Dissent and Protest in Women’s Writing: The Hindi Experience*
4. Karen King Aribisala : *The Marriage Directive*

5. Yashodhara Misra : *My Writing in a Globalised World*
6. Yaba Badoe : *The Breath of Spirits: The Writing of True Murder, an African Gothic Novel*
7. Urmila Pawar : *My Life and My Writing*
8. Dr. Veena Sharma : *From Sindiwe Magona*

On this occasion a Film: *The Witches of Gambaga* (Directed by Yaba Badoe) was also screened.

### **13. Workshop on “The Travelling Public: Perceptions and Representations of Indian Railways” (7-8 December 2011)**

**Rationale:** As the slow leisurely form of travel embedded in nature disappeared, and the mechanical time and space regulated travel of the railways took over in the middle of the nineteenth century in India, a new world of mobility, speed, displacement and encounters with new people, new places, and new ways of being began to take shape. This rapid movement across physical space destabilized the very notion of ‘space and time’ and opened it up for new uses. This opening up of space lent itself to a change in the set of relations of people to people, of people to machines, of people to places, of people to time, past, present and future.

What is the shape of this new world coming into being? What role do the railways play in it? Railways as carriers of ideas of progress, what new forms of modern subjectivity did they generate? The promise of a modern era, symbolized by the railways, where the individual would realize her potential unencumbered by social distinctions of caste, gender and religion, what happened to it? What is the response of literature and popular culture to this most transformatory of technologies? These were some of the questions the seminar debated and addressed in the course of a two day seminar on 7-8 December 2010.

**Speakers:** Dr. Di Drummond, Associate Principal Lecturer in History And Leeds for Victorian Studies, Trinity University College, Leeds, UK; Professor Colin Divall, Head, Institute of Railway Studies and Transport History, New York; UK; Dr. Abhay Kumar Dubey, Editor, Indian Languages Programme, Centre for Study of Developing Societies, Delhi; Mr. Bill Aitken, Travel Writer, Mussoorie; Professor Mukul Kesavan, Department of History, Jamia Millia Islamia, New Delhi.

Following papers were presented at the workshop:

1. Di Drummond : *The Production of British Popular Cultural Perceptions of the Role of the Steam Railway as ‘Civilizer’ in India, 1853-1901 in the illustrations of The Illustrated London News, The Graphic and The King.*
2. Mukul Kesavan : *The Narrative Function of the Railways in Looking Through Glass.*
3. Bill Aitken : *Aesthetic Awareness and the Loss of Public Affection for Indian Railways*
4. Colin Divall : *Railway Imperialisms, Railway Nationalisms*

5. Abhay Kumar Dubey : *Literary Representation of Train in Hindi Fiction: A Parallel Journey to Citizenship*

Bill Aitken and Mukul Kesavan also read from their creative works during the inaugural session:

6. Bill Aitken: *Belles of Hell* : *Branch Line to Eternity*  
 7. Mukul Kesavan : *Looking Through Glass*  
 8. Tridip Suhrud : *At the Katni Railway Station*

#### **14. International Conference on “Challenges to Democracy in South Asia” (15-16 January 2011)**

**Rationale:** There are several reasons to choose the theme, some of them stem from a genuine desire to understand the working of democracies in the region, in terms of their histories, historical residues that still interfere in their contemporary politics, the paradoxes that emerge as contested claims have to be negotiated and conflicting goals harmonised if possible, and the consequences that are produced in the dialectical relationship between politics and economies as these democracies respond to the forces that have been unleashed by globalisation. This first set of motivations can be located along the axis of ‘what is democracy doing to South Asia’.

The second set of concerns is located on the other axis of ‘what is South Asia doing to democracy’. Stating it this way allows us to revisit the conceptual discourse on democracy, led primarily by the epistemic north, and thereby present it with the ‘inconvenient facts’ of our working democracies, ‘inconvenient facts’ that do not lend themselves to easy evaluation and, therefore, ones which this conceptual discourse cannot quite accommodate. This perhaps calls for a reworking of some of the concepts of the democracy discourse.

An International Conference on “Challenges to Democracy in South Asia” was organized at India International Centre, Delhi during 15-16 January 2011.

**Participants:** Professor Michael West, Professor of Sociology, History and African Studies, Binghamton University, Binghamton, New York; Professor Ravi Arvind Palat, Department of Sociology, Binghamton University, Binghamton, New York; Mr. Deepak Thapa, Director, Social Science Baha, Kathmandu, Nepal; Mohammad Musa Mahmoodi, Executive Director, Afghanistan Independent Human Rights Commission Kabul, Afghanistan; Dr. Leena Rikkila Tamang, Head of Mission, International IDEA, Nepal; Professor Samir Kumar Das, Department of Political Science, University of Calcutta; Professor Sanjoy Hazarika, Saifuddin Kitchew Chair, Centre for North Eastern Studies, Jamia Millia Islamia, New Delhi; Professor Nandini Sundar, Delhi School of Economics, Delhi University, Delhi; Professor Valerian Rodrigues, Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Dr. Harsh Sethi, Consulting Editor, *Seminar*, New Delhi; Dr. E. Sridharan, Academic Director, University of Pennsylvania Institute for the Advanced Study of India, India Habitat Centre, New Delhi; Dr. Mary E. John, Director, Centre for Women’s Development Studies, New Delhi; Dr. Usha Ramanathan, Delhi; Dr. Ravni Thakur, Department of East Asian Studies, Delhi University; Ms. Rita Manchanda, South Asian Forum for Human Rights, New Delhi; Dr. Sabiha Hussain, Dr. R.R. Naryanan Centre for Dalit and Minorities Studies, Jamia Millia Islamia, New Delhi; Ambassador TCA Rangachari, Delhi; Shri Paranjy Guha Thakurta, Delhi; Dr. K.P. Shankaran, St. Stephen’s College, Delhi; Shri Gobind Thukral, Chandigarh; Dr. Arjun Ghosh,



IIT Delhi; Dr. Mohinder Singh, Department of Political Science, University of Delhi, Delhi; Dr. Vasanthi Raman, Deputy Director, Centre for Women's Development Studies, Delhi; Professor Madhavan Palat, National Fellow, IIAS; Professor Ramashray Roy, Delhi; Shri Sumanta Banerjee, Dehradun.

Following presentations were made during the Conference:

1. Ravi Arvind Palat: *Back to the Future: A World-Historical Perspective of India's Essay in Democracy*
2. Samir Kumar Das: *Developmental Democracy: Developing Democracy or Development without Democracy in India*
3. Mary E. John: *Between Welfare and Politics: Feminist Perspectives on Representation and Democratic Governance*
4. E. Sridharan: *Coalition Politics and Democracy*
5. Valerian Rodrigues: *India's Constitutional Democracy and Salience of its Public Institutions*
6. Paranjoy Guha Thakurta: *Paid News: How Corruption in Indian Media Undermines Democracy*
7. Sanjoy Hazarika: *Challenges to Democracy in South Asia Dialogue, Security and Draconian Laws: The People Factor*
8. Leena Rikkila: *Politics of Inclusion: Debates on Accommodating Diversity and Elite Resistance in Nepal's Constitution Writing Practice*
9. TCA Rangachari: *The Challenges of Democracy in Pakistan*
10. Rita Manchanda: *No Women, No 'Democratic Peace': Beyond Presence to Participation*
11. Sabiha Hussain: *Gender, Community Identity, Democratic Rights (The Case of Muslim Women in India)*
12. Mohammad Musa Mahmodi: *Challenges to Democracy in Afghanistan*
13. Ravni Thakur: *Two Models of Political and Economic Development in Asia: China and India*
14. Michael West: *Democratic Struggles in Zimbabwe: Legacies and Lies*
15. Gobind Thukral: *Pakistan Caught in the Paradox of Democracy and Democratization*
16. Deepak Thapa: *Operationalising Inclusion: Nepali Politics in the Post-2006 Era*
17. Sumanta Banerjee: *What is India doing to Democracy: Re-inventing or Repressing?*
18. Usha Ramanathan: *UID: A Project to Map and Tag a Billion Plus*
19. Ramashray Roy: *Fault line of Democracy*

### 15. Seminar on “Challenges to Inclusive Development in North-West India: Sites, Strategies and Possibilities” (28-29 January 2011)

**Rationale:** North-West India, which till few decades ago, promised to lead the rest of India in the areas of rural infrastructure, agriculture and social capital formation has suffered serious reversals. As the juggernaut of development rolls by a series of contradictions confront us. While the big landlords continue to multiply their gains made during the heydays of the Green Revolution partly due to heavy state-subsidies, and partly due to their own entrepreneurial skills, the small farmers are burdened with heavy debt. The sudden levels of prosperity seen earlier are difficult to sustain as the land exposed to mindless doses of pesticides and weedicides does not yield enough. The small farmer fails to reconcile with the tragic aftermaths of Green Revolution – either he is driven to commit suicide, or he seeks to indulge in drug-induced bouts of self-forgetfulness, or still worse, he relapses into the feudal past in moments of vainglory. The journey backwards in the age of modernity generates worst kind of social aberrations such as female foeticide, honour killings, the occasional rise of militancy, caste-clashes, kabootarbazi, etc. The project of modernity seems to have consolidated the forces of obscurantism, partly because it was imported from above, and partly because it did not include everyone within its promising sweep. While it might be difficult to go back to ground zero and restart the process of development all over again, it is time that we think about negotiating with it in ways that bring about possibilities of ‘inclusive development’. Assigning the responsibility of inclusive development singularly to the ruling elite, entrenched as it is in the stale structures of the State, would be unimaginative. Global flows have disrupted easy, predictable and linear ways of coming to terms with paradigms, processes and possibilities of progress.

It is to understand these paradoxes that a seminar on “Challenges to Inclusive Development in North-West India: Sites, Strategies and Possibilities” was organised in Chandigarh in collaboration with Centre for the Study of Social Exclusion and Inclusive Policy, Panjab University during 28-29 January 2011. The seminar was divided into three segments: sites, strategies and possibilities.

During the seminar following presentations were made:

1. Professor B.K. Nagla : *Social Exclusion and Unequal Development.*
2. Professor R. S. Ghuman : *Understanding Exclusion in the Context of North-West India.*
3. Professor Birinderpal Singh: *Challenges of Inclusive Development: A Pessimistic Note.*
4. Sardar Jasvir Singh : *Plight of the Agricultural Wage Workers and the Constitutional Democracy in India.*
5. Shri Chander Shekhar : *Development and Exclusion: Ground Reality of Punjab.*
6. Professor Anita Gill : *Indebtedness of Farmer Households in Punjab: Challenges for Financial Inclusion.*
7. Professor Ronki Ram : *Reorienting Inclusiveness in Inclusive Development: Focus on Employment, Education and Health.*

8. Dr. Simran K.Sidhu & Dr. Shalini Sharma : *Exclusion of Rural Students from Higher Education in Punjab: Reasons and Remedies.*
9. Professor Jagrup Singh Sekhon : *Structural Exclusion of the People in Border Belt in Punjab: An Empirical Explanation.*
10. Dr. Navpreet Kaur : *Unveiling Chandigarh: Myth of the Modern City and Reality of Caste.*
11. Dr. Rajesh Kumar : *Marginalising Effect of School Education in Rural Punjab.*
12. Professor P. S. Verma : *Development Strategies and its Impact on Haryana.*
13. Professor Satish Sharma : *State, Market, Economy and Rural Degeneration.*
14. Prof. Paramjit Singh Judge : *Inclusive Development.*
15. Dr. P. L. Garg : *Social Exclusion w.r.t. to Education and Health in Punjab.*
16. Professor Sukhdev Singh : *Place of Dalits in the Economic Development of Punjab.*
17. Dr. Inderjit Singh : *Mirchpur: Politics and Caste Polarisation.*
18. Shri D. R. Chaudhary : *Exclusionary Edge of Khap Panchayats in Haryana with reference to Women and Dalits.*
19. Professor K. Gopal Iyer : *The Predicament of Scheduled Castes in Haryana vis-a-vis the Dominant Castes.*
20. Shri Dhanpat Singh : *Economic Development and Social Underdevelopment in Haryana.*

#### **16. Seminar on “Social and Academic Audit of the Institutions of Higher Education in North East” (11-12 March 2011)**

**Rationale:** Higher education at present has attracted a lot of attention the world over amongst different sections of society ranging from the academia to the policy makers. Its extraordinary role in augmenting economic and technological development in the present social order is widely recognized. However, a lot of ambivalence and confusion prevails in this sector. These relate to ideological issues of inclusion and exclusion, national interest vs. global commitments, market orientation vs. production of intellectuals capable of critiquing, confronting and contributing to the development trajectories for the benefit of people and society at large. The original ethos in the First University Education Commission of 1948 to train ‘intellectual pioneers of civilization’ ‘in the universities, which are the sanctuaries of the inner life of the nation’, has also been echoed in the Yaspal Committee Report on Higher Education. The first sentence of the report begins ‘A university is a place where new ideas germinate, strike roots and grow tall and sturdy’. Simultaneously the report also urged university education to be linked to the job markets which are in tune with the emerging needs of the society.

So far as India’s Northeast is concerned, it is now well accepted that the region is a late developer in the field of higher education. For instance, the first university in the entire northeastern region came up only in 1948 in Guwahati, Assam. Moreover, with the exception of the North

Eastern Hill University which was set up in 1973, most of the universities in the region were set up only in the mid 80s and late 90s. Although the region received a new boost recently by the conversion of several state universities into central universities as well as the setting up of new central universities, yet overall there has not been any significant change in the academic deficit that the region started with. That the region suffers badly from the dearth of professional institutions, including Engineering and Medical colleges, perhaps needs no reiteration. Most of the colleges in the region offer courses in the arts stream, putting the students in a further disadvantaged position in the job market. Although lately one can see the mushrooming of private initiatives in offering vocational courses with promises of placement etc., their authenticity and integrity are of doubtful variety in most of the cases, doing more harm than good. Even in those institutes of higher education which have come up in the recent past, and those which are already there, the demands outpace the limited seats, resulting in a large exodus of students to the metropolitan centers of the country which offer better infrastructural facilities and market oriented courses.

To discuss and deliberate on these issues a seminar on “Higher Education in India’s North East: Issues and Concerns” in collaboration with Omeo Kumar Das Institute of Social Change and Development, Guwahati was held on 11-12 March 2011 at Guwahati. The seminar revolved broadly around the following themes, with special focus on India’s Northeast.

- Political economy of higher education
- Funding and social auditing
- Quality and quantity issues; human resource and infrastructure
- Availability and access
- Courses and curriculum—quality and relevance

**Speakers:** Professor A.C. Bhagabati, Guwahati; Professor Sudhanshu Bhushan, National University of Educational Planning and Administration, New Delhi; Professor Binod Khadria, Zakir Husain Centre for Educational Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University; Professor Amar Yumnam, Manipur University, Imphal; Professor Ashok Barman, General Secretary of IFUCTO, Kolkata; Dr. Kandarpa Das, Institute of Distance and Open Learning, Gauhati University, Guwahati; Professor Srinath Barua, Vice-Chancellor, K.K. Handique State Open University, Guwahati; Professor Joy Shankar Hazarika, Principal, Darrang College, Tezpur; Dr. Gautam Chakma, Assistant Professor, Tripura University, Agartala; Dr. Bolin Hazarika, J.B. College, Jorhat; Dr. Nurul Amin, J.B. College, Jorhat; Dr. H. Srikanth, Department of Political Science, NEHU, Shillong; Dr. J.V. Nunchunga, Assistant Professor, Govt. J. Thankima College, Aizawl.

### **17. International Conference on “The Character of Mind” (18-20 March 2010)**

**Rationale:** The human mind has been the subject of philosophical and scientific speculation for many millennia. Early modern ‘natural philosophers’ targeted the mind’s ‘cognoscitive powers’. Before that, ancient Greek philosophers were fascinated by specifically human domains of knowledge such as arithmetic, music, and geometry. Still before that, Panini, himself based on yet earlier traditions, inaugurated the formal study of universal structures of human grammar. Only 50 years ago, the study of the mind was christened a ‘science’: ‘cognitive science’. What has it revealed, and does a specific concept of mind, new or old, emerge from it? Has knowledge of the character of

mind truly increased, ever since its systematic study began? Have we truly accessed the domain of the mental, or are we forever targeting only its outer manifestations, that is, complex human behaviour in socio-cultural contexts? Do we know which kind of data would be relevant to an actual theory of mind? Are these questions ill-formed or premature?

Partly independently of the developments in cognitive science, some of these questions were in fact addressed as analytic philosophers inaugurated the discipline of the ‘philosophy of mind’ more than a century ago. Major philosophical paradigms in thinking about the mind—functionalism, eliminativism, materialism, and dualism—have long been formulated. By now, discussions and arguments have become ever more intricate and arcane, yet an overarching consensus on the character of mind, as well as a strategic direction, appears to be missing.

It was to deliberate on these issues that an International Conference on “The Character of Mind” was organised in collaboration with Indian Council of Philosophical Research, New Delhi from 18-20 March 2010 at IAS.

**Participants:** Professor G. Mishra, Member Secretary, ICPR, New Delhi; Dr. Probal Das Gupta, Linguistic Research Unit, Indian Statistical Institute, Kolkata; Dr. Amita Chatterjee, Presidency University, Kolkata; Professor Barry Smith, Institute of Philosophy, School of Advanced Study, University of London, London; Professor Mohan Matthen, University of Toronto; Professor Ned Block, Department of Philosophy, New York University, New York; Professor Susan Carey, Department of Psychology, Harvard University, Cambridge; Professor Giuseppe Longobardi, University of Trieste; Professor John Mikhail, Professor of Law, Georgetown University Law Center, Washington; Professor Anna Maria Di Sciullo University of Montreal, Canada; Professor Timothy J Crow, Orford University; Professor Partha Ghose, Institute of Physics, Kolkata; Dr. Smita Sarkar, Department of Philosophy, Jadavpur University, Kolkata; Dr. Mudhuchanda Sen, Department of Philosophy, Rabindra Bharati University, Kolkata; Dr. Maushumi Guha, Department of Philosophy and School of Cognitive Science, Jadavpur University, Kolkata; Dr. Ravi M. Singh, Department of Philosophy, University of Delhi; Dr. Susrut Roy, Kolkata.

Following presentations were made during the Conference:

1. Amita Chatterjee : *The Navya-Nyaya Variation on Computationalism*
2. Probal Dasgupta : *Bhartrihari’s Strategy for Formalism in Linguistic Inquiry*
3. G. Mishra : *Mind and Its Universe: Discursive Construction of Thought Structures in Indian Tradition*
4. Guiseppe Longobardi : *Human Diversity and Theory of Mind*
5. Anna Maria Di Sciullo : *Exploration of the Mind as an Inhabitant of Natural World*
6. Wolfram Hinzen : *The Evolution of Recursion and Complex Thought*
7. John Mikhail : *Moral Grammar: The Mind’s Hidden Rules of Moral Judgment*
8. Mohan Matthen : *The Logical Structure of Visual Content*
9. Nirmalangshu Mukherji : *How far does Computational Theory Go?*

10. Ned Block : *Why Consciousness Research is Difficult?*  
 11. Bijoy Boruah : *Self-Awareness as Self-Acknowledgement*  
 12. Barry Smith : *Human Subjects- the Normal Case?*  
 13. Susan Carey : *The Origin of Concepts: Representations of the Social World*  
 14. Partha Ghose : *Tagore and Einstein Plumb the Truth: A Cognitive Science Perspective*

**18. Workshop on “Understanding Collective Action, Violence and Post-Colonial Democracy” (19-20 March 2011)**

**Rationale:** Democracy has never perhaps stood as discredited as it is now. War on terror, xenophobia, security paranoia, stifling of peoples’ movements, patriarchal mores, flattening the resistance of ethnic, religious and regional minorities have become the *sine qua non* of democracies around the world. Add to that democracy’s historic alliance with capitalism and a free market which perpetrates grave systemic violence. But democracy also opens up the possibility of contentions, collective actions and claim-makings, entitlement, assertion of rights so on and so forth. All these aspects are precise and alive within the ambit of India’s ongoing democratic experience.

A two-day workshop on ‘Understanding Collective Action, Violence, and Post-Colonial Democracy’, organized jointly by Mahanirban Calcutta Research Group (CRG) and the Indian Institute of Advanced Study (IIAS), 19-20 March 2011, wanted to frame the mutually embedded nature of the experience of democracy and violence in contemporary India and accordingly prepare a possible research agenda for the future. Another important aim of the workshop was to explore and review the traces of emancipatory politics implicit in the circulation of such political idioms as gender, identity, subalternity and marginality etc.

The workshop threw up relevant ideas for future research.

- An eclectic approach is the key, but the clear ethical orientation was towards resistance, politics and enfranchisement of the marginalized and the subaltern.
- A balanced understanding of historical processes was proposed. Modernity or democracy or state was to be enframed in all their heterogeneity, not to be seen as villains in a token gesture towards emancipatory politics.
- Violence is to be seen in both its structural and physical manifestation, and also in its variegated moral dimensions, but situated in a holistic optic. Violence of the rebels and the legislators are different, but perhaps speak of many continuities and similarities of political culture.
- In conceptualizing emancipation, resistance and rebellion, one need not homogenize the resisting bloc. There are fissures within that too, signified by gender, ethnic and religious questions.
- A study should focus simultaneously on fever-pitch, insurrectionary moments as well as the everyday, seemingly banal happenings and agentic acts to make sense of violence and democracy.

- Theoretical tools should remain complimentary to empirical findings and the notion of historical change.

### **19. Study Week on “Theory of Arts and Aesthetics according to Abhinavagupta” (23-30 March 2011)**

The Study Week on Abhinavagupta was organized to explore the profound theoretical and religious genius of Abhinavagupta (10-11<sup>th</sup> century AD) in connection with his innovative theory of aesthetics exposed in his commentaries on the *Dhvanyaloka of Anandavardhana* and in the *Abhinavabharati* (the commentary on the *Bharatanatyācāstra*) that gave him a pan-Indian recognition. The seminar intended to provide the experience of the textual reading of the *Abhinavabharati* and the *Tantraloka* was supplemented by the lectures delivered by specialists discussing the historical and philosophical background of his concepts along with the practical application of Abhinava’s theoretical concepts as illustrated by inspiring performances of *Kutiyyattam* (Dr. Madhu Margi) and *Bharatanatyam* (Ms. Aranyani Bhargava).

The Study Week was organized by the Indian Institute of Advanced Study, Shimla. This powerful and magical location was a constant reminder of Abhinavagupta’s own words when he says: ‘Knowledge is not divided <bhinna> by the diversity of the objects of knowledge. (It is universal and pervasive) as is (the vision of) a man standing on the peak of a mountain’. About 25 participants came from all over the country, as well as from abroad. They represented a broad range of academic institutions in the public as well as the private sector and brought to the Study week a valuable mix of experiences and perspectives. The speakers, resource persons and performing artists representing a vast range of disciplines directly and indirectly related to Abhinavagupta’s studies presented the audience with multi-layered concepts, experiences, insights and views.

The seminar was structured in a way that helped participants to walk through the issues, starting from the relevance of the historical and philosophical context of the aesthetics before Abhinavagupta, through the critical analysis of the key-texts of Abhinavagupta (*Abhinavabharati*, *Tantraloka*) and finally to the actual implementation of his theories in literature, poetry, dance and music. The objectives of the seminar were intended to provide insight into aesthetic issues, to identify the contextual basis and influences, and to discuss the possible approaches for formulating and implementing aesthetics in the contemporary framework of postmodern fluidity. Lectures from various disciplines spoke on Vedas, Agamas, theory of art, poetics and theatre and brought together different approaches and concepts into a unifying perspective and on the scope of aesthetics at different levels.

**Participants:** Y. Sridhar Reddy, Sri Sri Paramahansa Yogananda Research Institute, Gadwal, Deb Kamal Ganguly, Faculty, Visual & Sonic Culture, International Institute of Information Technology, Center for Exact Humanities, Hyderabad, Arghya Basu, Film & Television Institute of India, Pune, Dr. Laimayum Bishwanath Sharma, Manipur University, Canchipur, Imphal, Dr. Ahinpunya Mitra, Trivenidevi Bhalotia College, Burdwan, Mrinmoy Pramanick, CCL, School of Humanities, University of Hyderabad, Hyderabad, Dr. Sanjay Dwivedi, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University, Bhopal, Dr. Nilanshu Kumar Agarwal Department of English, Feroze Gandhi College, Rae Bareilly, Hamsa Stainton, Department of Religion, Columbia University, USA, Ms. Sushma Sharma, Rashtriya Sanskrit Sansthan (MHRD), Jaipur, Ms. Mini Priya R., Lecturer, Department of Hindi, Stella Maris College, Chennai, Dr. A. Sri Maha Lakshmi, Department of Sanskrit Studies,

University of Hyderabad, Hyderabad, Ms. Sonal Nimbkar, Lecturer, Centre for Exact Humanities, IIT Gchibowli, Hyderabad, Dr. Aleksandra Wenta, Sri Aurobindo Institute of Research in Social Sciences, Pondicherry, Dr. Shipra R. Upadhyay, Deccan College, Department of Archaeology, Pune, Dr. Narayana Dash, Lecturer in Sanskrit, Ramakrishna Mission Residential College (Autonomous), Kolkata, Mr. Tariq Ahmed Mir, Institute of Islamic Studies, University of Kashmir, Vipin Vijay, Kerala, Dr. Barunjoti Choudhury, Assistant Professor, Department of Bengali, Assam University, Assam.

Following presentations were made during the Study Week:

1. Professor G.C. Tripathi: *Vedic Foundations of Indian Aesthetics*
2. Professor C. Rajendran: *Literary Theory Prior to Abhinavagupta*
3. Professor Bettina Baumer: *Metaphysical Background of Aesthetics in Abhinavagupta*
4. Professor K.D. Tripathi: *A General Introduction to Natyashastra and Abhinavabharati*
5. Professor Radhavallabh Tripathi: *Rasa Theory of Abhinavagupta*
6. Professor K.D. Tripathi: *Textual Readings in Abhinavabharati*
7. Professor Bettina Baumer: *Textual Readings in Tantraloka*
8. Professor C. Rajendran: *Kuntaka's Theory of Art*
9. Professor Radhavallabh Tripathi: *Abhinavagupta's Concept of Natya and the Interrelationship between Arts*
10. Professor K.D. Tripathi: *Textual Readings in Abhinavabharati-Rasadhyaya*
11. Professor Bettina Baumer: *Textual Readings in Tantraloka*
12. Shri Margi Madhu and Dr. K.G. Paulose: *Demo-lecture on Kutiyattam*
13. Dr. Gautam Chatterjee: *Abhinavagupta and Global Aesthetics*
14. Dr. K.G. Paulose: *Influence of Kashmir Tradition on Kerala Sanskrit Theatre*
15. Professor G.C. Tripathi: *Indian Theory of Aesthetic Experience in Visual Arts*
16. Dr. Elisa Ganser: *The Concept of Dance in Abhinavagupta*
17. Dr. Prakash Pandey: *Concept of Svatnupravesa in Abhinavagupta*
18. Ms. Aranyani Bhargav: *Demo-Lecture on Bharatanatyam*
19. Professor Bettina Baumer: *Readings in Tantraloka*
20. Professor Ganesh Devy: *Locating Abhinavagupta*
21. Professor Prakash Pandey: *Abhinavagupta's Theory of Svatmanupravesa*
22. Hansa Stainton: *Presentation on Problem of Bhakti*
23. Shipra Upadhyaya: *Shiva and Parvati in Oral Narratives*



24. Dr. Ahinpunya Mitra: *A Quest for Parallels in Indian and Western Aesthetics: Kant vis-à-vis Anandavardhana and Abhinavagupta*
25. Dr. Gautam Chatterjee: *Abhinavagupta's Contribution to Indian Classical Music*

### C. WEEKLY SEMINARS BY THE FELLOWS

The Fellows of the Institute presented weekly seminars which are open to other scholars at the Institute, Associates of the Inter-University Centre and faculty of Himachal Pradesh University. These seminars are related to the themes of the projects undertaken by the Fellows of the Institute and provide an opportunity for formal interaction among the scholars. During the period of report, the following weekly seminars were given by the Fellows:

1. Professor Satish C. Aikant: *Fortunate Fall: A Reading of U.R. Anantha Murthy's Samskara* (1 April 2010)
2. Professor B.V. Nemade: *Non-linguistic and Linguistic, Oral and Written* (8 April 2010)
3. Dr. Kanchana Natarajan: *Sri Vidya Shobhanam: (The Auspicious Song of Puberty)* (15 April 2010)
4. Dr. Saitya Brata Das: *Erotic and Philosophic: A Note on Love, Life and Thought* (6 May 2010)
5. Dr. Smarika Nawani: *The Portuguese Interface in Southeast Asia, 1511-1641* (13 May 2010)
6. Professor Vir Bharat Talwar: *Maharashtriya Navjagaran Mein Nirantarta* (3 June 2010)
7. Professor Shreesh Chaudhary: *One Grammar or Many Grammars* (17 June 2010)
8. Dr. Sanjay Palshikar: *Asuras across Centuries* (24 June 2010)
9. Professor A.R. Vasavi: *Suicides and the Predicament of Rural India* (1 July 2010)
10. Dr. Mohinder Singh: *"Religion of Filling the Belly": Ascendancy of the Economic in Hindi Vernacular Discourse (1870-1908)* (8 July 2010)
11. Dr. Arjun Ghosh: *Theatre, Sharing, Change* (15 July 2010)
12. Dr. Ranjeeta Dutta: *The Making of a Canon: Ramanuja in the Srivaisnava Textual Tradition (11<sup>th</sup> to 13<sup>th</sup> Century AD)* (22 July 2010)
13. Dr. Saroj Thakur: *Hidimba: A Rakshasi, A Devi or a Manvi?* (29 July 2010)
14. Professor Raj Kumar Hans: *Iconoclasm of a Dalit Poet in the Mid-nineteenth Century Punjab* (5 August 2010)
15. Dr. Pramod Kumar: *Premchand Ke Rajnatik Upanyas: Bharat Rashtra Nirman Ke Sangram Gatha* (12 August 2010)
16. Dr. Shashi Joshi: *Religious Crossings: Charlie and Mohan* (19 August 2010)
17. Dr. Veena Sharma: *The Concept of God and Modes of Knowledge Transmission in the Akan Spiritual Tradition and Advaita Vedanta: A Comparative Study* (25 August 2010)

18. Dr. Anita Cherian: *Performing the Nation: Institutions, Cultural Policy Shaping of a National Theatre in Post-Independence India* (25 August 2010)
19. Dr. P. Narayanan: *Changing Face of Medieval Temple Tripunithura: A Case Study* (26 August 2010)
20. Dr. Vijaya Singh: *Faster than Fairies, Faster than Witches: Cinematic Life of the Indian Railways* (9 September 2010)
21. Dr. Soumyabrata Choudhury: *Liturgy-Sovereignty, Christus-Fiscus: Two Systems of Debt* (23 September 2010)
22. Dr. Dhananjay Singh: *Pravasi Shram Itihas Maukhik Dastavej: Bhojpuri Loksahitya* (30 September 2010)
23. Dr. Queeny Pradhan Singh: *Developing the Hill: A Comparative Perspective in the Study of Simla, Darjeeling, Ootacamund and Mount Abu (Nineteenth and Twentieth Century)* (30 September 2010)
24. Dr. Jaya Tyagi: *Contestation and Compliance: A Socio Historical Study of Religious Observances, Rites and Rituals Performed by Women (from the Early Historic to 1200 C.E.)* (30 September 2010)
25. Dr. Prachi Khandeparkar: *The Making of Marathi Literary Theory during the Colonial Era* (7 October 2010)
26. Professor Madhavan Palat: *Working Class Violence in late Imperial Russia* (21 October 2010)
27. Professor Ghanshyam Shah: *Hind Swaraj: A Moralists' Outcry against Globalization* (28 October 2010)
28. Dr. Yoginder Singh Sikand: *A Critical Analysis of Discourses of Islamic Feminism* (2 November 2010)
29. Professor Gangmumei Kamei: *Feudalism in Pre-Colonial Manipur* (11 November 2010)
30. Dr. Swadhinta Mahanta: *Development of Assamese Modern Short Story During 'Ramdhenu Period' (1940 -1970)* (2 December 2010)
31. Dr. U.A. Vinay Kumar: *Synthesis of World Religions: Constructing a General Metaphysical Structure* (2 December 2010)
32. Professor G.C. Tripathi: *Indian Ascetic Tradition and the Early Buddhist Monasticism* (14 December 2010)
33. Professor Raj Kumar Hans: *Dalit Consciousness and Punjabi Dalit Literature: Confronting the Hegemonic Discourses* (24 March 2011)
34. Dr. Saitya Brata Das: *The Promise of Time: Towards a Phenomenology of Promise (Few Provisionally Conclusive Remarks)* (30 March 2011)
35. Dr. Susmita Chatterjee: *Sexuality, Feminine Symbolism and the Female in Bengal Tantric Buddhism* (31 March 2011)

36. Dr. Piyush Mathur: *Toward a Global Conception of Environmental Citizenship* (31 March 2011)

#### **D. NATIONAL FELLOWS' LECTURE SERIES**

The Institute has started National Fellows Lecture Series. On the joining of the National Fellows, they deliver a lecture on any theme of their interest. These lectures are open to Faculty of Himachal Pradesh University and public intellectuals from the town, apart from scholars in residence.

1. Professor Madhavan Palat: *Alexander Solzhenitsyn, Historian of Decline and Prophet of Resurrection* (14 July 2010)
2. Professor Ghanshyam Shah: *Growth, Governance and Human Development* (4 August 2010)
3. Professor Gangmumei Kamei: *Philosophy of History and the Historiography of Manipur* (8 September 2010)
4. Professor G.C. Tripathi: *Aesthetic Experience of Visual Arts: The Classical Indian Perspective* (14 October 2010)

#### **E. VISITING PROFESSORS AND VISITING SCHOLARS**

Eminent scholars are invited by the Governing Body of the Institute as Visiting Professors to deliver lectures on the subjects of their specialized interest. They stay at the Institute for three to four weeks and interact formally with the Fellows of the Institute. The Visiting Scholars come to the Institute for a week on the invitation by the Director. They give seminars on the themes of their choice. The faculty of Himachal Pradesh University and the intellectually inclined individuals of the town are invited to attend all these lectures and seminars.

##### **Visiting Professors**

The following distinguished scholars were invited as Visiting Professors during the period under Report:

1. Professor Bettina Baumer, Director, Abhinavagupta Research Library, Varanasi gave following lectures:
  - *Auspicious Beginnings or Philosophy in a Nutshell: An Introduction to Kashmir Shaivism through its Mangalaslokas* (22 April 2010)
  - *Trika and Trinity: Towards a Dialogue in Depth between Kashmir Shaivism and Christianity* (29 April 2010)
2. Professor J.S. Grewal, ex-Chairman and Director, IIAS, Mohali gave following lectures:
  - Love and Gender in Punjabi Sufi Poetry (24 May 2010)
  - Social Significance of the Treatment of Tales and Love in Punjabi Literature (26 May 2010)
3. Professor Meena Alexander, Distinguished Professor of English at the City University of New York delivered a lecture on
  - Reflections on Poetic Process (8 June 2010)

4. Professor Pabitrakumar Roy, Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi gave following lectures:
  - The Lesson and Relevance of the Bodhisattva Ideal (9 June 2010)
  - Ethics of Pride: Apropos Bodhicaryavatara and the Imitation of Christ (14 June 2010)
  - Emotions and the Buddhist Images of Human Perfection (25 June 2010)
5. Professor Ravi Arvind Palat, Department of Sociology, State University of New York, Binghamton, New York gave following lectures:
  - Dangerous Fortunes: Financial Crisis in World-Historical Perspective (15 June 2010)
  - *Convergence before Divergence? Eurocentrism and Alternate Patterns of Historical Change.*” (28 June 2010)
6. Professor Raffaele Torella, Chair of Sanskrit, Faculty of Oriental Studies, University of Rome, “Sapienza” Italy delivered a lecture on:
  - Orality and Writing in Pre-Modern India (20 August 2010)
7. Professor Harbans Mukhia: Former Professor of Medieval History and Rector, Jawaharlal Nehru University, Delhi gave following lectures:
  - Positivism, Marxism and Theology: Breaks and Continuities (15 September 2010)
  - Time in Abu’l Fazl’s Historiography (22 September 2010)
8. Professor Indu Banga, Honorary Secretary, Institute of Punjab Studies, Chandigarh gave following lectures:
  - Radicalism, Recalcitrance and Resistance: Bridging Indian India and British India (I) (4 October 2010)
  - Radicalism, Recalcitrance and Resistance: Bridging Indian India and British India (II) (5 October 2010)
10. Professor Atlury Murli, Department of History, University of Hyderabad, Hyderabad delivered a lecture on:
  - *Writing about Indian Nationalism* (27 October 2010)
11. Professor Shormishtha Panja, Department of English, University of Delhi, delivered on:
  - (i) Shakespeare on the Indian Stage
  - (ii) Feminism in India.

### Visiting Scholars

1. Professor Bijoy H. Boruah, Indian Institute of Technology, New Delhi delivered lecture on:
  - *The Ethics of Citizen Agency* (18 June 2010)
2. Dr. M.G. Vassanji, Toronto, Canada delivered lecture on:

- *From Physics to History and the Novel* (21 June 2010)
3. Professor B.N. Patnaik, Mysore gave following lectures:
    - *Socio-Political Dimensions of Football Writing* (7 July 2010)
    - *Lakshmi Purana As a Protest Text* (9 July 2010)
  4. Dr. N.K. Bhattacharjee, Director, K.K. Birla Foundation, Delhi delivered lecture on:
    - *Translation as an Inter-Cultural Dialogue* (16 July 2010)
  5. Professor Lakshmi Bandlamudi, Professor of Psychology, at City University of New York delivered lecture on:
    - *Dialogics of Self, the Mahabharata and Culture* (1 September 2010)
  6. Dr. C.T. Dorji, Bhutan delivered lecture on:
    - *Evolution of Buddhism in Bhutan* (1 October 2010)

#### **F. GUEST SCHOLARS**

1. Dr. Geetanjali Shree, Writer, New Delhi: *Reading from the Fictional works* (23 June 2010)
2. Dr. Chetan Ghate, Indian Statistical Institute, New Delhi: *The “V Factor”: Distribution, Timing, and Correlates of the Great Indian Growth Turnaround* (29 June 2010)

#### **G. GUEST FELLOWS**

1. Professor Rita Kothari (Ahmedabad): *Meghwals of Banni: Narratives of Untouchability, Aspirations and Entrepreneurship* (16 September 2010)
2. Professor R.N. Misra, former Professor and Head, School of Studies in Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Jiwaji University, Gwalior was at the Institute from 18 September to 17 December 2010. During his stay at the Institute Professor Misra gave lecture on “*In Lieu of Guilds: Artist’s Organisation in Ancient and Early Medieval India*” (18 November 2010)

#### **H. ICCR FELLOWSHIP**

Indian Council of Cultural Relations has sponsored two Fellowships to Dr. Laura Yerekesheva, Associate Professor, Institute of Oriental Studies, UNESCO Chair coordinator, Kazakhstan and Dr. Kazunori Sasaki, Department of Indian Philosophy and Buddhist Studies, The University of Tokyo, Japan.

During the period Dr. Laura Yerekesheva gave a lecture on “*Of Culture and Religion: The System Theory in Central Asian Context*” (25 November 2010)

#### **I. MONOGRAPHS RECEIVED FROM FELLOWS**

The Fellows are required to submit their result of their study in the form of a monograph. The Institute received the following monographs during 2010-2011:

Dr. Gangeya Mukherji: *Philosophy of Integration and Reconciliation: A Study of the Political Thought, its Context, and the Form of its Presentation, in Gandhi and Tagore* (Draft).

Professor S.N. Dube: *Ideas and Movements in the Age of the Mauryas (with Special Reference to Pali and Ardhamagadhi Sources)*.

Dr. Kanchana C.V. Natarajan: *Translation and Study of Avudai Akkal's Songs: An Examination of Religious and Philosophical Views*.

Professor Satish C. Aikant: *Postcolonial Indian Literature: Toward a Critical Framework*.

Professor Vir Bharat Talwar: *Navjagran: Italavi, Bangla Maharashtraiya, Aur Hindi: Ek Tulnatmak Adhyayan*.

Professor Shreesh Chandra Chaudhary: *Knowledge of Language and the Multilingual Mind: One Grammar or Many Grammars?* (Working Paper).

Dr. Arjun Ghosh: *Freedom from Profit: Eschewing Copyright in Resistance Art*.

Dr. Saroj Thakur: *Finding a Voice: Re-inscription of Hidimba in Contemporary Indian Literature, Tribal Literature and Folk Tales* (Draft).

J.S. Gandhi: *Professions and their Role in the Formation of State Polity: Case Study of Himachal Pradesh*.

Professor Jaiwanti Dimri: *The Images and Representations of the Rural Women in the Novels of Women Writers*.

Dr. Smarika Nawani: *Exploring Linkages: The Coromandel Coast, Archipelago Southeast Asia and the Portuguese in the 17<sup>th</sup> Century*.

Dr. Saitya Brata Das: *The Coming Time the Ethics of Redemption and the Promise of Time*.

Professor Raj Kumar Hans: *History of Punjabi Dalit Literature and its Space in the Historiography of Punjab*.

## **J. INTER UNIVERSITY CENTRE**

The IAS acts as the Inter University Centre (IUC) for Social Sciences and Humanities on behalf of the University Grants Commission. The academic programmes of the IUC have three basic components: (i) the scheme of Associateship; (ii) organization of Research Seminars in different parts of the country; and (iii) holding of Study Weeks on problems of national and international interest at the Institute. The Centre invites serving teachers from the universities and colleges in the country to spend three months for three consecutive years at the Centre to: (a) complete a piece of writing that they might at the time be engaged in; (b) revise their doctoral work for publication; (c) make use of the library facilities of the Institute; and (d) interact with Fellows of the Institute and Visiting Professors and Visiting Scholars from India and abroad who come to the Institute. The Associates also take part in the seminars and conferences, both national and international, which are among the regular activities of the Institute. Apart from their own work, the Associates are also expected to participate in all the academic activities of the Institute. They are required to give at least one presentation during their stay at the Centre. It is, however, optional for Associates to submit their research paper to the Institute for publication in the Institute's journals.

**(1) IUC Associates**

During the reporting year, 115 University and College Teachers availed themselves of Associateships from all over the country. The Associates who visited the institute and the seminars given by them during the period of report are as under:

**APRIL**

Dr. Prem R. Bhardwaj (Paonta Sahib): *Dynamics of Religious Conversion in H.P Paradox of Manufactured Uncertainties* (19 April 2010)

Dr. Atanu Bhattacharya (Vallabh, Gujarat): *The Technology Rhizome: Digitisation and Pedagogy* (19 April 2010)

Dr. Sudhir Bhausaheb Wadekar (Ahmednagar): *Farmers' Movement: A Comparative Study of Bharatiya Kisan Union and the Shetkari Sanghatana* (19 April 2010)

Dr. Partha Dutta (Dinajpur, W.B.): *Labour Control and Social Security a Study of Jute Millhands of Bengal (Pre-Independence)* (20 April 2010)

Dr. Aparna Joshi (Moradabad): *Women and Political Participation - Emerging Patterns* (20 April 2010)

Dr. Sameera Maiti (Lucknow): *Survival and Sustainability: A Study of Human-Forest Interaction among the Bhotia Tribals of Uttaranchal (India)* (20 April 2010)

Dr. Karan Singh (Mohindergarh, Haryana): *Dalitism and Feminism: Theoretical Explorations* (20 April 2010)

Dr. Nandan Nawn (Kolkata): *Embodied Energy in Commodities as a Tool for Economic Decision Making* (21 April 2010)

Dr. Sangeeta Sarswat (Shimla): *Samayaik Kavya Mein Vyang* (21 April 2010)

Ms. Namita Sethi (New Delhi): *Film Adaptations of Devdas* (21 April 2010)

Dr. Mridula Sharda (Shimla): *Indian Federalism and Party Politics* (23 April 2010)

Mrs. Laxmi Sindhu (Shimla): *Recent Fertility Trends in India: An Appraisal* (23 April 2010)

Dr. Anupama Tandon (Tomar) (Shimla): *Factors Influencing the Non Utilisation of Primary Health Centers in Rural Areas of Hamirpur District in Himachal Pradesh* (23 April 2010)

**MAY**

Dr. Ajay Pratap (Varanasi): *Rock Art of Mirzapur: Some Perspectives* (21 May 2010)

Dr. Ramesh Chand Meena (Bundi, Rajasthan): *Hinsa Banam Adivasi Sandarbh: Katha Sahitya* (21 May 2010)

Dr. Umesh Kumar Singh (Wardha): *Sahitya Mai Machwara Samaj: Ek Tulnatamak Addhyan* (21 May 2010)

Dr. Anita Dash (Cuttack): *Financial Autonomy, Decision Making and Empowerment* (22 May 2010)

- Dr. Ram Pujan Singh (Khagaria, Bihar): *Kavita Aur Soundarya* (22 May 2010)
- Dr. Sunita Jakhar (Rajasthan): *Bapsi Sidhwa's the Pakistani Bride: A Feminist Study* (22 May 2010)
- Dr. Shiba Prasad Behera (Orissa): *Raja Ram Mohan Roy: Pioneer of Indian Renaissance* (24 May 2010)
- Dr. R. Suresh (Kollam, Kerala): *Tibet and China: A Human Rights Perspective* (24 May 2010)
- Dr. K. Satyanarayana (Hyderabad): *Law and Caste: The Tsundur Dalit Massacre Case* (24 May 2010)
- Dr. Bikramaditya K. Choudhary (Varanasi): *Knowledge and Culture under Globalization: (Re) Formation of Spatial Identities* (24 May 2010)
- Ms. Sonali Agarwal (Delhi): *Out of the Closet? The Dostana Trope in Hindi Cinema* (25 May 2010)
- Dr. Mamta Mokta (Shimla): *Challenges of Good Governance in India* (25 May 2010)
- Dr. D. Balaganapathi (Kuppam): *Reading the Histories of Indian Philosophy: Some Reflections* (25 May 2010)
- Dr. Raghuvansh Mani Tripathi (Basti, U.P.): *History and Literature* (25 May 2010)
- Ms. Mukul Chaturvedi (New Delhi): *Remembering and Forgetting the Dirty War in Argentina: A Study of Jo Fisher Mother's of the Disappeared and Alicia Partnoy's Tales of Disappearance and Survival* (26 May 2010)
- Dr. Swati Mandal Adhikari (Kolkata): *Temple of Dev Tikra: An Example of Aesthetic Amalgamation* (26 May 2010)
- Dr. Gopal Sharan Pandey (Jharkhand): *Hindi Sahitya Mein Hasya Vyang* (26 May 2010)

## JUNE

- Dr. Ravinder Singh (New Delhi): *Punjabi Diaspora Literature and Contemporary Concerns (with Special Reference to Punjabi Diaspora in UK)* (14 June 2010)
- Dr. Siddharth Singh (Varanasi): *What Japanese Religion can teach the Religious Fundamentalists?* (14 June 2010)
- Dr. Dinesh Kumar Ojha (Varanasi): *Ancient Greek Ideas and the Imperial Historiography in India* (14 June 2010)
- Ms. Davinder Pal Kumar (Ludhiana): *Women in PRIs: Emerging Issues and Challenges in Border Districts of Punjab* (15 June 2010)
- Dr. Sivadasan P (Calicut): *Late Nineteenth Century Census in Travancore: Rumour and Resistance* (15 June 2010)
- Ms. Anuradha M. Sharma (Dahod, Gujarat): *The Panchatantra and Gender Constructions* (15 June 2010)



Dr. Sanjeev Kumar H.M (Allahabad): *Modernity and the Problems of Democratisation in South Asia* (16 June 2010)

Dr. Manbendu Pathak (Pune): *Human Rights and Rights of Women: Issues and Challenges in India with Special Reference to Arunachal Pradesh* (16 June 2010)

Dr. Manish Sinha (Bodh Gaya): *Reinventing 1857: The Other Women of 1857* (16 June 2010)

Dr. Manoj Kumar Pandya (Banswara, Rajasthan): *Prayojan Moolak Hindi Avdharna Prasangikta aur Vividh Aayam* (17 June 2010)

Dr. R.N. Shukla (Ghaziabad): Vinod Kumar Sukhal Ke Upaniyas - "Diwar Mein Ek Khirki Rahati Thee"- Main 'Ghar', 'Manav' Aur 'Prakriti' (17 June 2010)

Dr. Saraswati V. Kupvade (Belgaum): *Diaspora, Displacement and Assimilation with Special Reference to Jhumpa Lahiri's Novel 'The Namesake'* (17 June 2010)

Shri Sunil Aggarwal (Ludhiana): *John Nash, Elinor Ostrom and an Idea of Money: A Speculative Exercise in Interlinking* (18 June 2010)

Dr. Anju Bala (Ambala): *Mother-Daughter Relationship: Some Reflections from Selected Novels in English* (18 June 2010)

Dr. Maheshwar Mishra (Khagaria): *Arth Chintan Ke Sandharbh Mein Safotvaad Ki Bhumika* (18 June 2010)

Dr. Preeti Sharma (Tonk, Rajasthan): *Mahabalipuram Relief: A Proclamation of Brahmanical Hegemony* (18 June 2010)

Dr. Bhupinder Singh (Hisar, Haryana): *Geographical Appraisal of Malignant Neoplasm in Haryana* (18 June 2010)

Dr. Upasana Pandey (Varanasi): *The Problem with Postmodern Gandhi* (22 June 2010)

Dr. Yogesh Snehi (Amritsar): *Identity, Practices and Historiography: Exploring Popular Spaces in Modern and Contemporary Social Formation of Punjab* (22 June 2010)

## **JULY**

Dr. Sanjeev Kumar Sinha (Dumka, Jharkhand): *Exclusion in the Age of Globalization and Fate of Democracy: With Special Reference to STs of Jharkhand* (20 July 2010)

Dr. H. Srikanth (Shillong): *Nation Building and Right to Self-Determination: Reflections on Secessionist Movements in North-East India* (20 July 2010)

Dr. Manoj Kumar Harilal Joshi (Rajkot): *Ramesh Parikh Ke Geeton Mein Meeranubhuti* (20 July 2010)

Dr. Rajesh J. Raval (Rajkot): *'Shri Arvinddarshan' Ke Sandharbh Mein Pant Aur Sundaram Ke Kavya Ki Prasangikata* (21 July 2010)

Dr. Anubhav Shrivastava (Sant Kabir Nagar): *Bhartiya Sanskriti Ki Samnvayatamak Pravriti* (21 July 2010)

Dr. Umesh Kumar (Dharbhanga, Bihar): *Bhartiya Lokchitra Mein Pratikatmak Avdharanaoo Ka Manosamajik Avam Sanskritk Addhyan* (21 July 2010)

Dr. Rajesh Chandra Mishra (Sant Kabir Nagar): *Gandhi Ka Manifesto: Hind Swaraj* (22 July 2010)

Dr. Jayashree Samantray (Hamirpur): *Quality of Life in Himalayan Region: With Special Reference to Himachal Pradesh: A Conceptual Framework* (22 July 2010)

Dr. Devinder Kumar Singla (Patiala): *Hindu Succession Act, 1956: A Step Forward to Equality* (22 July 2010)

## **AUGUST**

Dr. Jyoti Sinha (Jaunpur): *Raag, Rog aur Rogi – Antahsambandho Ki Vivechana (Ek Parichaya)* (23 August 2010)

Dr. Sudakhsina Gupta (Kolkata): *Globalization and Education with a Special Reference to Urban Indian Women* (23 August 2010)

Dr. Virendra Singh Yadav (Jalaun, U.P.): *Dalit Chintan: Sangharsh aur Mukti ke Naye Kshitij* (23 August 2010)

Dr. Priti Sagar (Wardha): *Stri Atamkathayein aur Stri Prashan* (24 August 2010)

Dr. Sunil Khosla (Ludhiana): *Human Rights in Search of Model in Indian Tradition* (24 August 2010)

Dr. Meti Mallikarjun (Shimoga, Karnataka): *Language Endangerment: The Fate of Indigenous Languages (A Theoretical Approach)* (25 August 2010)

Mr. S. Siraj Ahmed (Shimoga, Karnataka): *City as Society City as Metaphor* (25 August 2010)

Dr. R. Nalini (Pondicherry): *Masculinities and Emotional Violence in the Workplace: An Overview* (25 August 2010)

## **SEPTEMBER**

Dr. Rajeev Bargoti (Pune): *Contemporary Architecture – A Case Study of National Defence Academy (India)* (18 September 2010)

Dr. Leena Chauhan (Hathras, U.P.): *Saptam Dashak Se Vartman Tak Ki Mahila Kathakaron Ki Kathayen Aur Asamanya Mano-vigyan* (18 September 2010)

Dr. Harinder Kaur (Patiala): *Shrinking Natural Resource Base: The Case Study of Bangala Tribe of Punjab* (18 September 2010)

Dr. Bijoy Kumar (Dhumka, Jharkhand): *Reservation Policy and Judicial Response in India: Creating More Confusion than Streamlining the Issue* (20 September 2010)

Dr. S. Indira (Pondicherry): *Pragmatic Implications of Trusteeship* (20 September 2010)

Shri Pulak Chandra Devnath (Mizoram): *Socio – Economic Condition of the OBC in Dhubri Dis-*

*trict of Assam* (20 September 2010)

Dr. Shantan Singh Negi (Srinagar, Garhwal): *Sanskritization among Dalits in Uttarakhand during 20<sup>th</sup> Century: A Historical Study* (21 September 2010)

Shri Govinda N S (Subrahmanya, Karnataka): *The European Perception of Brahmins till 19<sup>th</sup> Century* (21 September 2010)

Dr. Kaustav Chakraborty (Darjeeling): *Politically Deified and Discreetly Glamorized North Indian Hijra Identity – Construction of the ‘Tritiya Prakriti’ in Indian Tradition: Exploring the Possibility of a Third Perspective of Sexual/Gender Stratification* (21 September 2010)

Dr. Mahesh Srivastava (Rajnandgaon, Chattisgarh): *The Situation of Medical Facilities in The Tribal Areas (With Special Reference to Primitive Tribes in Chattisgarh)* (22 September 2010)

Dr. Chilka Ghosh (Kolkata): *Changing Language of Printed Advertisements: Bengali News Paper from 1947 to 1970* (22 September 2010)

Dr. Madan Lal (Shimla): *Land Use Changes in Himachal Pradesh: A Spatio-Temporal Analysis* (22 September 2010)

Dr. Ajay Kumar Jha (Delhi): *Kavi Shiksha Ki Avdharna Evam Kshemendra Ka Aetad- vishyak Siddhant* (23 September 2010)

Dr. Arvind Singh (Moradabad): *China’s Super Power Status: Implications for the Global Order and India* (23 September 2010)

Dr. Shiv Sharan Kaushik (Udaipur): *Atmsakshatkar Ki Prakirya: Prabha Khetan Ka Rachana Karm* (23 September 2010)

Dr Chandrabhan Singh Yadav (Moradabad): *Media Aur Mahila* (24 September 2010)

Shri Pankaj Roy (Mizoram): *Violence in Vijay Tendulkar’s Plays* (24 September 2010)

## **OCTOBER**

Dr. Siyaram Mishra Haldhar (Delhi): *An Outline of Buddhist Economic Theory and Practice* (12 October 2010)

Dr. Udai Bhan Singh (Rai Bareli): *Problems and Prospects of Aging in India* (12 October 2010)

Shri Rakesh Ranjan (Bihar): *Hindustani Sangeet: Ek Avlokan* (13 October 2010)

Dr. Susanta Kumar Bardhan (Suri, Birbhum, West Bengal): *An Intensive Stylistic Reading of Jayanta Majhapatra’s ‘Dawn’* (13 October 2010)

Dr. Nishi Pulugurtha (Kolkata): *Names and Diasporic Identity: A Reading of Jhumpa Lahiri’s ‘The Namesake’* (15 October 2010)

Shri Santosh Kumar Meher (Nuapada, Orissa) *Contractual Arrangement in Seasonal Migration* (15 October 2010)

Dr. Sunetra Mitra (Kolkata): *Grandeur and Valour: Bollywood and India’s Fighting Personnels* (20 October 2010)

Shri Pratul Kumar Panda (Nuapada, Orissa): *NREGA in Orissa: Loopholes need be Plugged* (20 October 2010)

Dr. Vinod Kumar Sinha (West Kameng, A.P.): *Women Emancipation: Gandhi and Premchand* (22 October 2010)

Dr. Anil Kumar Singh (Khirkiya, M.P.): *Khuni Bhandara: Moghul Kaleen Jal Sanrakshan evam Aapurti Ki Anuthi Yojana Ka Ek Etihasic Adhyayan* (22 October 2010)

Dr. Rajesh Kumar Sahu (Nuapada, Orissa): *Nineteenth Century Western Orissa and Mahima Movement* (22 October 2010)

## NOVEMBER

Dr. Madhumita Sen (Kolkata): *The Evolving Family—Breaking the Boundaries of the Collective Mindset*

Shri D.S. Somashekhar (Shimoga, Karnataka): *Development Projects in Shimoga District: Ecological, Environmental, and Cultural Issues (1900-2010)*

Shri Sukhnandan Singh (Haridwar): *Bharatiya Print Media mein Adhyaatmik Patraakaritaa: Swarup, Sambhaavanaaye Evam Chunotiyaon*

Dr. K. K. Vishwakarma (Lucknow): *Humanism and Literature: A Critique*

Dr. Dilip V. Chavan (Nanded): *Beyond Sociolinguistics: Language Education, Caste and Power in Colonial Western India*

Dr. Ambalicka Sood Jacob (Patiala): *Musical Modes: The Tradition that Continues in Art*

## MARCH 2011

Dr. Ashwini Kumar Singh: *Uttar Bhartiya Shastriya Sangeet Ki Gayan Shailiya Vartmann Pariprakshya Mein* (14 March 2011)

Dr. Gaurang A. Bhavsar: *Tabla Vadhya Aur Hazarat Amir Kushroo: Ek Anvashen* (14 March 2011)

Dr. Harish Thakur: *Evading Dynamics in Indo-China Relations* (14 March 2011)

Dr. Suresh R: *India and the Tibetan Issue: A Human Rights Perspective* (14 March 2011)

Dr. Sandeep Sinha: *Medicine in Canada: An Indian Experience* (15 March 2011)

Dr. Raj Kumar: *Gandhi and Governance in Globalised Regime* (15 March 2011)

Dr. Anupama Tandon (Tomar): *Exploring the Determinants of Health Seeking Behaviour and Perceptions of Need for Preventive Health Care among Rural and Urban Women of Shimla* (15 March 2011)

Dr. Nuzhat Zaman: *Child Labour: Comparative Study of Child Labour of Madhya Pradesh and Himachal Pradesh* (15 March 2011)

Shri Pulak Chandra Devnath: *Education of the Other Backward Classes in Dhubri District of Assam* (16 March 2011)

Dr. Sangeeta Sarswat: *Sant Kabir Evam Mahatma Gandhi ke Vichar-Darshan Mein Samyata* (16 March 2011)

Dr. Gauri Shankar Jha: *Diasporic Poetry as Travel Literature: The Case of Dom Moraes* (16 March 2011)

Dr. Gitanjali Mahendra: *Problematics of Translation in Praxis* (16 March 2011)

Dr. Sharvesh Pandey: *Hindi Bhasa Mein Padkram* (21 March 2011)

Dr. Durga Prasad Singh: *Trinidad Carnival: Genesis and Indian Influence* (21 March 2011)

Shri Pankaj Roy: *Sleeping with Evil: A Study of Violence in Selected Plays of Vijay Tendulkar* (21 March 2011)

## (2) Seminars Organised Under IUC

### 1. Spring School on the “Mahabharata Today” (14-28 April 2010)

**Rationale:** The *Mahabharata* is one ancient book of India in which modern Indians have substantial investments. It is as if, to the moderns, (particularly to those who have been subjected to the rigors of western pedagogy), *Mahabharata* is at once an archive and a living text—a source-book complete-by-itself and a text perennially-under-construction as well.

A storehouse of information, *Mahabharata* furnishes ample material to any professional interested in ‘excavation’—and the professional may don the hat of, say, the anthropologist or the historian or the sociologist or the linguist or the literary critic to work out, even if provisionally, some or the other well-integrated meaning. On the other hand, in the course of entering the *Mahabharata* there is almost none who does not undergo a sense of *déjà vu*—an inescapable feeling that the ‘present’ s/he inhabits is only a re-play of ‘happenings’ already-recorded; an eerie sensation that most of the ethical dilemmas, the logical paradoxes, the unavoidable impasses which baffle the modern man as well as the mood of irresolution following every resolution that keeps plaguing him have already been punctiliously check listed.

A spring school on “Mahabharata Today” was organized at IAS during 14-28 April 2010. Professor Sanjay Palshikar, Fellow, IAS welcomed the participants and the resource persons. Professor Peter Ronald deSouza, Director, IAS delivered the Director’s remarks. Professor Sanjay Palshikar and Professor Sibaji Bandhopadhyay, Centre for Studies in Social Sciences, Calcutta, were the Conveners of the school.

**Resource Persons:** Professor G C Pande, New Delhi; Professor Ganesh Devy, Baroda; Professor Saroja Bhate, University of Pune, Pune; Professor Anirban Das, CSSS, Kolkata; Professor Radhavallabh Tripathi, Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi; Professor Bodhisattva Kar, CSSS, Kolkata; Professor Vrinda Dalmiya, University of Hawaii; Professor Arindam Chakrabarti, University of Hawaii; Professor Prabal Kumar Sen, Calcutta University, Kolkata; Professor Uma Chakravarti, New Delhi; Dr. Enakshi Mitra, University of Delhi, Delhi; Professor Sibesh Bhattacharya, Kolkata; Dr. Gangeya Mukherji, Allahabad; Professor Nrisimbhaprasad Bhaduri, Kolkata and Professor Bhalchandra Nemade, IAS.

**Participants:** Dr. A. Srimaha Lakshmi, Hyderabad; Dr. Rachana Bhangaokar, Vadodara; Dr. Tanutrushna Panigrahi, Bhubaneswar; Sananda Sen; Kolkata, Ms. Mousumi Roy, Department of

Philosophy and Religion, Visva-Bharati, Santiniketan; Ms. Epsita Halder, Department of Comparative Literature, Jadavpur University; Ms. Rangana Banerji, Kolkata; Nishant K. Narayanan, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Amitendu Bhattacharya, The English and Foreign Languages University, Hyderabad; M.G. Hegde, Kumta, Karnataka; Santanu Banerjee, Bidhan Chandra College, Burdwan; Dr. Pinak Sankar Bhattacharya, Department of English, Banaras Hindu University, Varanasi; Dr. Ravi Khangai, Ambedkar College, Fatikroy; Anirban Bhattacharjee, Nadia; Ms. Ammel Sharon, New Delhi; Mr. Harshvardhan Kumar, Delhi, Dr. Dhurba Bhaduri, Kolkata, Professor Vidyanand Jha, Kolkata; Mr. Mukesh Kumar, University of Hyderabad, Hyderabad; Mr. Abhishek Mitra, Jadavpur, Kolkata; Dr. Chandan Kumar Panda; The English and Foreign Languages University, Hyderabad; Mr. Kushik Ramu; Dr. A Kishore Reddy, Dr. B.R. Ambedkar Open University, Hyderabad; Dhruvajyoti Sarkar, Nabadwip Vidyasagar College, Nadia and Mr. Nahid Akhtar Siddiqui, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

## **2. Seminar on “Modernity and Changing Social Fabric of Punjab and Haryana” (27-29 September 2010)**

**Rationale:** The seminar on “Modernity and Changing Social Fabric of Punjab and Haryana” held during 27-29 September 2010 proposed to interrogate the complexities of the contemporary social formation in Punjab and Haryana. It underlined that despite the recent emergence of post-modern studies which present a critique of the ‘abstract notion of the term modern’, modernity carries immense significance for an understanding of contemporary social processes. Apart from theoretical debates, modernity as a value system, also amply reflected in the Indian Constitution, as an alternative or contrast to orthodox traditions offers multiple historical possibilities. Many of these debates emerged earlier when the normative traditions of the different regions of India had an interface with colonialism.

The conceptual foundations of Modernity particularly in the Indian context have often been theorised by social and political scientists but these have primarily been capturing macro-aspects of our social formations. Thus a need was felt to locate the regional diversity on the one hand, and its philosophical and material basis on the other. Also, the claims of ‘state oriented modernity’ have induced uneven processes of development in the regional contexts. These processes, culminating with globalisation and its inbuilt contradictions, required further interrogation to comprehend and analyse the changing social fabric of Punjab and Haryana.

Dr. Yogesh Snehi, Department of History, DAV College, Amritsar and Dr. Lallan S. Baghel, Department of Philosophy, Panjab University, Chandigarh were the Conveners of the Seminar. Professor Peter Ronald deSouza, Director, IAS welcomed the scholars from across the region. Dr. Yogesh Snehi, introduced the theme of the Seminar. Professor J.S. Grewal delivered the Keynote address.

**Participants:** Dr. Akshya Kumar, Panjab University, Chandigarh; Professor K. Gopal Iyer, Chandigarh; Mr. Nidheesh Tyagi, Chief News Editor, The Tribune, Chandigarh; Professor Anjali Gera Roy, Department of HSS, IIT Kharagpur; Dr. Shivani Chopra, Assistant Professor, Department of Hindi, DAV College, Chandigarh; Dr. Harmeet Singh Kingra, Department of Economics and Sociology, Panjab Agricultural University, Ludhiana; Dr. Ajay Kumar, Zirakpur, Kanwar Chanderdeep Singh, Govt. College for Girls, Chandigarh; Professor Manjit Singh, Department of Sociology, Panjab University, Chandigarh; Mr. Ambuj Sharma, Department of Philosophy, Dev Samaj College for Women, Punjab; Mr. Tahir Ashraf Siddiqui, National Law University, Jodhpur;

Dr. Minakshi Prasad Mishra, Apex Institute of Technology and Management, Bhubaneswar; Dr. Dharamjeet Singh, Department of English, Punjabi University, Patiala; Dr. Jatinder Singh, Department of Political Science, Punjabi University, Patiala; Dr. Krishan Chand, Centre for Research in Rural and Industrial Development, Chandigarh; Mr. Rajeev Godara, Haryana; Dr. Muzaffar Ali Malla, Panjab University, Chandigarh; Dr. Syed Junaid, Department of Philosophy, Panjab University, Chandigarh; Dr. Punyashree Panda, Indian Institute of Technology, Bhubaneswar, Dr. Rajesh Kumar Jaiswal, Postgraduate Govt. College, Chandigarh; Dr. Rajesh Kumar Sharma, Department of English, Punjabi University, Patiala; Mr. Dieptrye Kuku Simeons, Department of Sociology, Delhi School of Economics, Delhi; Ms. Mahima Manchanda, Department of History, Delhi University, Delhi; Dr. Sukhpal Singh, Department of Economics and Sociology, Punjab Agricultural University, Ludhiana; Mr. Vishawa Bharti, Journalist, Hindustan Times, Chandigarh; Dr. Bhupendra Yadav, Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi; Mr. Ashish Alexander, Mohali; Dr. Nonica Datta, Delhi; Professor Raj Kumar Hans, Fellow, IAS; Dr. Harinder Kaur, Department of Distance Education, Punjabi University, Patiala; Mr. Patrick Frolicher, Department for Media Anthropology, Heidelberg University, Germany.

Following presentations were made during the Seminar:

1. Rajesh Sharma: *On Abuses of Discourses of the Modern and the Postmodern: Some Cases from Punjab*
2. Nonica Datta: *Memory and History: Crafting a Daughter's Testimony*
3. Coping with Modernity: Sikh Kanya Mahavidyalaya, Ferozepur
4. Lallan Baghel: *Modernity and Politics of Representation in the Formation of Dalit Public Sphere in Punjab*
5. Harinder Kaur: *Modernization and the Denotified Tribes in Punjab: A Case Study of Bangala*
6. Ajay Kumar: *Khap Panchayat: Ek Samajik Aitihāsik Avlokan*
7. Bhupendra Yadav: *From Caste Associations to Khap Panchayats: The Jats of Haryana*
8. Ambuj Sharma: *Honour Killings: A Study on Honour Predicament*
9. Tahir Ashraf Siddiqui: *Patriarchy Epitomised: Fighting Female Foeticide in Punjab and Haryana*
10. Rajeev Godara: *Formation of Public Sphere and Alternative Politics on Haryana*
11. Jatinder Singh: *Modernity, State and Institutionalization of Dissent: A Critical Analysis of the Punjab State Commission for Scheduled Castes*
12. Kanwar Chanderdeep Singh: *The Socio-Economic Politics of Punjab: The Akali-BJP Relations Retrospect and Prospect*
13. Dharamjeet Singh: *De-politicization of Universities and the Future of Dissent: Students Perspective*
14. Manjit Singh: *Bounded Labour in Capitalist Agrarian Economy of Punjab*

15. Vishav Bharti: *Debt, Exploitation, Suicides and Resistance: A Journalist's Field Notes on Agricultural Labourers of Punjab*
16. K Gopal Iyer: *Land Rights and Housing Rights for Weaker Sections in Punjab and Haryana*
17. Sukhpal Singh and Harmeet Singh Kingra: *Farmers' Distress in Green Revolution Belt of India*
18. Nidheesh Tyagi: *Modernity and Media in the Times of Globalization: Contextualizing a Case Study of Punjab and Haryana from a Journalist's Perspective*
19. Krishan Chand: *Critical Issues in Illegal Migration: A Way Out to Save Our Youth*
20. Jitendra Prasad: *The Formation of Dual Identity: The Cases of Meos in Haryana*
21. Anjali Gera Roy: *Jatt Stars: New Life of Orality in the Cyberspace using the Bhangra Revival in Punjab as a Case Study*
22. Patrick Frolicher: *Pind di Awaz- the Voice of the Village? – Representing Rurality and Caste in Punjabi Pop Music Videos*
23. Punyashree Panda and Meenakshi Prasad Mishra: *The Punjab of Bollywood versus the Punjab of Newspapers: Taking Stock of the Contemporary Image of Punjab in Different Media*
24. Diepiriye Kuku Simeons: *Coming Out and Coming of Age in Rural Punjab: An Ethnography of Adolescent Same-sex Sexuality*
25. Akshaya Kumar: *Punjabi Dalit Autobiography: Structured Anger*
26. Shivani Chopra: *Reflections of Sexuality in the Literature of Peripheral Writers: In Context of Haryanvi Women Short Story Writers*

### **3. Winter School on “Life and Thought of Gandhi” (1-15 December 2010)**

The second Winter school on “Life and Thought of Mahatma Gandhi” was held at the IAS, Shimla from 1-15 December 2010. The selection was done on basis of all-India applications. The Institute received 130 applications from which 25 participants were selected. There was a four fold increase in the number of applications received for the school.

The School had two batches. Nine participants from the first batch were selected for an advanced course. The advanced course involved guided self-study and lectures, plus a theatre workshop which aimed to explore the bodily practices of Gandhi. The theatre workshop was coordinated by Dr. Soumyabrata Chaudhary, a Fellow of the IAS.

The fresh batch of 22 participants spent 2 weeks working with the faculty of Key aspects of Gandhi's thought, nature of his dialogues and the new critics of Gandhi and questions of the relevance of his thought and modes of political engagement.

The school was inaugurated by Professor S R Mehrotra. The following scholars participated in the school as resource faculty: Dr. Shashi Joshi, Dr. Sanjay Palshikar, Dr. Mohinder Singh, Professor Ghanshyam Shah, Professor Peter Ronald deSouza and Shri Feroz Abbas Khan and Dr. Gangeya Mukherji. The lectures covered large thematic ground; including Gandhi's engagement



with Christianity, the Gita, pre-Gandhi social thought and reform practices, the enduring aspects of Gandhi's idea of trusteeship and its relevance in debates on environment and Gandhi's relevance in the post-independence social movements, and Biography of Gandhi. Apart from these lectures, the students worked through some of the key texts of Gandhi including the Autobiography, the Hind Swaraj, Satyagraha in South Africa, On Constructive Programmes, Key To Health and From Yeravada Mandir.

Following presentations were made by Resource Persons during the School.

1. Dr. Gangeya Mukherji: *Many Lives of Gandhi: The Biographical Tradition*
2. Professor Harish Trivedi: *Gandhi in Literary Imagination*
3. Dr. Mohinder Singh: *Creation of the Public Sphere in India*
4. Professor Peter Ronald deSouza: *Relevance of Trusteeship*
5. Shri Feroz Abbas Khan: *Filming Gandhi*
6. Dr. Shashi Joshi: *Gandhi and the Indian Left*
7. Dr. Soumyabrata Choudhury: *SHOMU: A Theater Workshop for Advanced Batch*

**Participants:** Ashish Kumar Das, Centre for the Study of Social Systems Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Roshan Varghese V., Indira Gandhi National Open University, New Delhi; Laju P. Thomas, M.G. University, Kottayam; Garima Dhabhai, Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Himadri Chatterjee, Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Ashish Upendra Mehta, New Delhi; Pradnya Shidore, Karvenagar, Pune; Mahesh Pandurang Chougule, Walchand College of Arts and Science, Solapur, Maharashtra; Dilip Kumar Dash, Department of Sociology, University of Hyderabad; Debarshi Talukdar, Vivekananda College for Women, Barisha, Kolkata; Radha Kapuria, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Shahiuz Zaman Ahmad, Department of History, Swahid Poelic Phukan College, Namti, Assam; Sultan Ali Ahmed, Department of English, B.H. College, Barpeta, Assam; Jyotia Ghose, Haryana; Rahul Kumar Ishwar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Parag Nathaney, Nagpur; C. Bharath Kumar, Indian Institute of Technology, Indore; Paras K. Jha, Ahmedabad; Harmony Sigantoria, Ahmedabad; Ritesh Kumar Shah, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, Vijendra Singh, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Khaja Azizuddin, Hyderabad; Noorjahan Momin, Jawaharlal Nehru University, New Delhi; Bidu Bhusan Dash, School of Rural Development, Tata Institute of Social Sciences, Tulljapur, Osmanabad, Maharashtra; Anisha Pallavi Gupta, USA; Naveen Kumar Vasudevan, Vellore, Noklanyangla, Aka Ayangti Longkumer, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

## **K. Other Programmes**

**Special lecture on “From Slavery to Freedom in the South of Brazil”** by Professor Henrique Espada Lima, Department of History’ Federal University of Santa Catarina (26 March 2010)

**Poetry Reading Session** by Professor Meena Alexander, Distinguished Professor of English at the City University of New York (3 June 2010)

Professor Peter Ronald deSouza, Director, IAS presented draft **Vision Document** of the Institute

to the Fellows and Associates of Inter University Centre of UGC (16 June 2010)

**Special Lecture on “The Challenges of Democratic Consolidation in Bangladesh”** by Professor Rounaq Jahan and Professor Rehman Sobhan, Centre for Policy Dialogue, Dhaka, Bangladesh (28 July 2010)

Screening of **Had Unhad Bounded-Boundless** (A Film on Kabir and his influence in India and Pakistan) by Shabnam Virmani (18 August 2010)

Music Recital by Sanjay Dwivedi (24 March 2011)

Introduction to *Kutiyattam* –Demo Lecture by Madhu Margi (24 March 2011)

Performance of *Bharatanatyam* by Ms. Aranyani Bhargav (28 March 2011)

#### IV. PUBLICATION

The Institute publishes monographs of Fellows, seminar proceedings, lectures by Visiting Professors and Visting Scholars and two bi-annual journals *Summerhill: IAS Review* and *Studies in Humanities and Social Sciences*. The Institute has published more than 500 titles till now. The expansion of co-publication programme which was started from late 2009 is yielding result and the first book under the IAS-OUP series, *Recognizing Diversity: Society and Culture in the Himalaya* has been published. Two more books under the diversity series which are being co-published with OUP are in the final stage of publication. Other leading commercial publishers like SAGE, Orient Blackswan, Routledge have also taken few titles for co-publication. In all these co-publication arrangements, the entire cost of production is being borne by the commercial publishers and they are giving a royalty to the Institute (which is shared with the author) and some free copies. The Institute will thus continue with its strategy of publishing on its own and also expanding co-publication arrangements.

In the period of report the Institute sold books of Rs. 9.29 lakh. While the backlog in the publication of *Summerhill: IAS Review* has been cleared, the issue of *Studies in Humanities and Social Sciences* for the year 2009 is in the press. Thus SHSS too would become regular soon. The publications brought out are as follows:

1. *Recognizing Diversity: Society and Culture in the Himalaya* edited by Professor Chetan Singh. (Co-published with OUP)
2. *Abhinavagupta’s Hermeneutics of the Absolute Anuttaraprakriya: An Interpretation of his Paratrisika Vivarana* by Professor Bettina Baumer. (Co-published with D.K. Printworld)
3. *New Understanding of Indian Society: Encounters with Sociology* by S.R. Mehta.
4. *Love and Gender in The Rig Veda and Medieval Punjab* by J.S. Grewal.
5. *Understanding Itihasa* by Sibesh Bhattacharya.
6. *Report on the seminar ‘Shifting Perimeters’: Social and Ethical Implications of Human Genomic Research*
7. *Three Lectures on Loving Kindness* by Dr. P K Roy

8. *Secularism and National Integration (With Special Reference to Orissa)* by Dr. Bijayananda Kar
9. *Human Rights in India: Theory and Practice*, edited by Justice Anand and A.V.Afonso.
10. *Summerhill IAS Review* (2010, Vol. I)
11. *Summerhill IAS Review* (2010, Vol. I)

## V. Sales and Public Relations

The RashtrapatiNivas is a center of attraction for the tourists visiting Shimla. With the addition of infrastructural facilities the tourists flow to the Institute is increasing every year. As compared to the last financial year the number of tourists has increased by 24 per cent. During the period from 1 April 2010 to 31 March 2011 the Institute received 1,26,292 tourists (1,18,176 domestic and 8,116 foreigners) as against 96,984 tourists during 2009-10.

The income from the sale of entry tickets for tourists in the year of report has been Rs. 24,95,540.00 while tickets for entry of vehicles and use of camera has been to the tune of Rs.6,16,460.00. Thus the total income from the sale of entry tickets during the year was Rs. 31,12,000.00.

**Souvenir Shop:** It was in the later part of the year 2009 that the Institute renovated the old fire station and two garages into a Souvenir-cum-book-cum-coffee shop. The Souvenir shop is running well and the facilities created by the Institute are very much appreciated by the visitors to the Institute. Souvenir items placed in the shop are also source of attraction for the visitors. During the period following souvenir items were sold: Booklet on the Viceregal Lodge (2314); Pens (826); Caps (656), Picture post cards (21,526); Coffee mugs (1453); Sweat shirts (427), T-shirts (448); Greeting cards (824); Table Calendars (42); Scarfs (44); and Bags (20). The net income from the sale of souvenirs was Rs.3, 48,093.00.

**IIAS Book Shop:** The IIAS book shop is having books from leading publishers of the country such as Oxford, Orient Blackswan, SAGE, Permanent Black etc. besides having Institute's own publications. The Institute sold 1379 books of these publishers during the period and the net income from the sale of books was Rs.1,43,535.00. Similarly the book shop has sold 930 books published by the Institute and has earned a sum of Rs.1,42,800.00. In addition to this the Institute has sold 3382 books published by the Institute to out station clients during the period and has earned Rs. 7,86,436.00. Thus, the total sale of IIAS publications during this period was Rs. 9,29,236.00. Further to boost sale of Institute's publications, the Institute has made arrangement with Flipkart Online Services Pvt. Ltd recently. All the IIAS publications with pictures of cover page, contents of each book and bibliographical details are available on their website. The performance of the Flipkart Online Services Pvt. Ltd. is encouraging.

In the process of further development of the fire station complex, the Swimming Pool and Squash Court have been renovated into 'Pool Theatre' and 'Court Gallery' respectively. The Pool Theatre would be used to host cultural events, screening classic films and organising lectures and seminars. In recent past, ShriMadhu Margi and Ms. Aranyani Bhargava gave demo-performances on the practical aspect of aesthetics of Abhinavagupta in the 'Pool Theatre'. Their performances constituted a part of the Study Week on Abhinavagupta which was held at the Institute during the

last week of March 2011. The Institute has also organized a three-day film festival on Tagore through Films to commemorate the 150<sup>th</sup> birth centenary of the great poet in the theatre. The Pool Theatre was inaugurated by Ms. Vibha Puri Das, Education Secretary on 29<sup>th</sup> April 2011.

The Court Gallery is also an added attraction for the tourists. We have displayed about 40 rare photographs of Viceregal Lodge which were received by the Institute from Middlesex University and the Bowood Estate. The Court Gallery was inaugurated by Professor Peter Ronald deSouza, Director IAS on 8<sup>th</sup> September 2010.

### COFFEE SHOP

The Institute has started a Coffee Shop in its renovated Fire Station Cafe which was earlier known as Fire Station. Tea, Coffee, snacks, cold drinks toasts, sandwiches, biscuits, *idli sambar* and other eatables are being served in the Café.

The Café is under the direct control and supervision of the Fellows' Mess/Canteen. Three persons have been engaged in the Café on contract basis.

Income and Expenditure Statement during the period under Report (April 2010 to March 2011) of the Café is as follows:

Months	Income (Rs.)	Expenditure (Rs.)	Total Profit (Rs.)
April	61,078/-	32,365/-	28,713/-
May	1,02,502/-	69,797/-	32,705/-
June	1,40,437/-	97,988/-	42,449/-
July	62,117/-	26,396/-	36,321/-
August	36,863/-	18,819/-	18,044/-
September	38,444/-	18,108/-	20,336/-
October	47,898/-	28,861/-	19,037/-
November	39,445/-	22,973/-	16,472/-
December	47,736/-	23,408/-	24,328/-
January	27,444/-	17,210/-	10,324/-
February	22,604/-	11,286/-	11,318/-
March	42,831/-	29,231/-	13,600/-

The Institute has also been making efforts to increase the items to be served in the Café since it has been cheerfully accepted by the Tourists, Fellows, IUC Associates, Guests and the Employees of the Institute.

## V. LIBRARY

During the year 2010-11, the Library has taken various steps to improve its services. The list of the action taken is given below:

### 1. Introduction of fully automated Circulation Section

The library has replaced old system of passbook based issues and return of books with bar coded enabled system. Circulation Section of Library is now fully automated. The library members use bar code enabled library membership card which is integrated with Library management software (libsys) for borrowing books.

### 2. Institution Repository

The Library has developed Institution Repository (IR) using open source (Dspace) software. Dspace software was initially developed by MIT Press, Cambridge University Press and HP Lab. The repository has following information which can be accessed from the campus LAN.

- a) **Meta data of IAS publications:** The IAS has been publishing monographs submitted by the Fellows. The Library has uploaded the metadata of 197 books which include: Preface, acknowledgements, contents page and Meta data of the monograph)
- b) **Full Text Books:** Full text of recent publication entitled “Understanding Itihasa”
- c) Sample full text articles, Director’s Report 2009-2010 and lectures delivered by the invited speakers.

**3. Library Membership:** Library has opened its membership to former Associates and academic community. Under the new membership scheme, the members can walk into the library and take the benefit of access to licensed E-resources of library.

### 4. Electronic Document Delivery Service:

The library has access to large number of electronic resources. The Associates of the Institute use these E-resources during their associateship programme at the Institute. But once they go back to their respective Institute, they are deprived of this facility. The Library has initiated electronic document delivery service to the Associates. They can send request for the full text of articles available in electronic format. In order to provide this service effectively, the library has opened Virtual Reference Desk. The Associates can send request for article through email to Virtual Reference Desk of the Library. Within twenty-four hours, library responds to the requests.

**5. Access to Electronic Archives of Cambridge University Press and Annual Reviews:** The library has enriched its collection by purchasing electronic archive of Cambridge University Press and Annual Reviews. The E-archives provides access to volume No. 1 and Issue No. 1 of journals published by these two publishers.

## 6. Photographs from British Library

The library has received seventeen rare photographs of the Institute building from British Library, London. Middlesex University has acquired these photographs and donated to the Institute.

**7. New Server Room:** The Institute has more than eighty computers and three servers. In order to provide uninterrupted internet services to the users, the library has established separate server room. All the three servers viz., Internet server, library web server and library database server have now been kept in new server room. The new server room has enabled the network manager to manage and maintain campus network efficiently.

**8. ICT Infrastructure:** The library has extended ICT infrastructure by adding five more computers for access to E-resources. Twelve computers have been kept exclusively for the Associates and Fellows of the Institute to access E-resources.

**9. Library Furniture:** In order to attract more users in the Library, 15 new modern computer carrels, twelve reading carrels and fifteen Godrej racks have been purchased.

**10. Campaign for dust free Library:** The Library has initiated a campaign to make the library dust free. The revenue generated through the library membership is being used for cleaning and dusting of library. Four people have been engaged for cleaning work since 15th February 2011 and they are cleaning every nook and corner of the library. .

**11. Audio and Video Server:** In order to develop audio and video library, a server has been purchased to upload entire media content. Sample file of music and selected lectures delivered by the eminent scholars have been uploaded on this server.

**12. Installation of Licence Copy of Software:** Library has replaced pirated software of all operating software which was being used in the Institute with licenced copy of Microsoft product.

## 13. Donation of books by Prof H S Srivastava

The library has received donation of personal collection of books from Prof. H S Srivastava, Gorakhpur, Uttar Pradesh.

## 14. Lecture Series

The Library organised lecture on **Federated Search Engine** in collaboration with Satkal trust, founded by Sardar Joginder Singh Ramdev, *Illinois*, USA. The Library and Computer professionals from the Himachal and neighbouring states attended the lecture.

## VI. DISPENSARY

The Institute has a dispensary with a Resident Medical Officer and a Phamacist for providing medical assistance to Fellows, IUC Associates, staff and their families. During the period under report, 4172 patients visited the dispensary while 44 emergency visits were made by the RMO. The practice of regular health camps has been introduced. Two health camps were organised in the year of report. The first one was for women and children in which about 150 patients were examined. Out of the children who were examined nearly 70 per cent children were found to be anaemic and were given advice on proper and balanced diet. Deworming tablets were given and tonics were prescribed.

Oral health was taken care of and eye check-ups were done in the second health camp. 92 patients attended the camp. Refractive errors were detected and glasses were prescribed. Demonstration on proper brushing technique for teeth was also given.

A health camp for children was organized on 15 February 2011. A pediatrician from medical college was invited who examined the children with specific complaints and also advised them to develop healthy eating habits for prevention of obesity as well as undernutrition.

### **WOMEN'S WELFARE CENTER/COMPUTER CENTER**

The Women Welfare Centre aims at bringing out the natural talents of the women residing on the campus to make them self-sufficient. The Centre started functioning with its inauguration on 4<sup>th</sup> December 2009 by the Director of the Institute. It gives them an opportunity of self-expression and self-development.

A computer centre has also been started to make the residents computer literate. Children, housewives and other employees are the members. The idea is to provide the members basic knowledge of computers in this computer savvy world.

The following activities were undertaken by the Women Welfare Centre during the period under report:

1. Computer literacy classes started among women residents on the campus. Nearly a dozen learners enrolled, another dozen learners waiting to join.
2. Stitching class started, about a dozen trainees already enrolled for the first batch course to end in August.
3. On request, hand-knitted woollen garments valuing Rs. 5,000/- approximately supplied to charitable organizations.
4. On request conference bags valuing Rs. 50,000/- approximately supplied to IAS.
5. On request, another batch of 400 cotton bags valuing Rs 6,000/- likely to be delivered to the IAS this week.
6. A diwali mela was also organized by the members of women welfare centre. A variety of food items were prepared and served by the women residing in the campus.

The entire training is designed to enable the members to support to become self-supporting and to enhance their skill.

### **VII. MAINTENANCE OF ESTATE AND SPECIAL REPAIR WORKS**

During the period under report, both the wings of the CPWD, Civil as well as Electrical, continued to attend to the day-to-day maintenance work and special repairs of the IAS campus. The ASI has also planned and initiated action to execute the work of restoration and preservation of the Rashtrapati Nivas Estate, especially the repair of varandah roofs of the Public Entry Building and Main Building. The major works that the Institute did during this period for the maintenance and upkeep of Estate are given below:

#### **(A) Meeting with the Director-General, Archaeological Survey of India**

Due to the new provisions laid down in the recently amended Act on Monuments, it had become difficult to take any remedial measures for renovation of the Rashtrapati Nivas Building Complex – as the buildings fall within the radius of 100 and 300 meters – without the permission of the Competent Authority. In view of this new situation, a meeting of the Director IAS with Dr. Gautam Sengupta, Director-General ASI was organized at IAS Shimla on 22<sup>nd</sup> May 2010. The meeting was attended by Shri S. B. S Sengar, Regional Director (North Circle), Dr. T. R. Sharma, Superintending Archaeologist, Himachal Circle, Shri R. M. Kandwal, Archaeologist Assistant and Dr. S K Goel, Estate Supervisor IAS. All the issues pertaining to renovation, repair and routine maintenance in this new context (amendment of act) were discussed. During the meeting, the Director-General ASI informed that the Competent Authority, who would give permission for any renovation, was not in place at that time, and it would hopefully be constituted in next three months' time. The following issues were discussed by the Director IAS discussed with the Director-General ASI:

1. The issues of renovation of Karanchi Line into a Hall of Residence for IUC Associates, without changing the heritage character or the outer façade. Renovation would be done only inside the building.
2. The renovation of Bilaspur House for the residences of foreign scholars was also discussed, without changing the heritage character or the outer façade. Renovation would be done only inside the building.
3. The issue of day-to-day maintenance of the Rashtrapati Nivas was also discussed.
4. The renovation of Swimming Pool Complex (Phase II) was also discussed with him.
5. Last, but not the least, the issue of shifting the site office of the ASI at RP Nivas to new premises was also discussed which the Director-General ASI. He agreed and instructed his officer of the local office unit to shift the site office immediately to the new premises allotted.

**(B). Meeting with the Authorities of the CPWD (Civil and Electrical)**

The Director IAS held regular meetings with the authorities of the CPWD (Civil) and (Electrical) to review the progress of the ongoing works and also the other developmental works planned and envisioned by the Director to improve the conditions of the Estate. Since now we will have a large number of Fellows from both India and abroad, the standard of housing and infrastructure must be world-class befitting the stature of IAS.

**(C) Repair and Renovation of Fellows' Residences**

The Director IAS took a round of the entire Estate including the residences of the Fellows and found that the residences of Fellows were not in good shape and deserved immediate attention. He discussed at length plans for repair of these houses with the authorities of the CPWD. During this exercise following repairs of the Fellows residences was planned to be undertaken:

1. The repair and renovation of Fellows Flats, especially the toilets and bathrooms were taken up during next three months. The bath rooms and toilets in Courteen Hall Annexe first floor, Grass Shed, Zakir Hussain House Set No. 4, Post Master's Flat, Del Villa Set No. 2, etc., have been completed during this time.
2. Among the repair work of Fellows residences, the PVC flooring in some of the remaining Fellows flats have been completed during first quarter, namely, Grass Shed, DSP Cottage, Zakir Hussain Set No. 4, Post Master Flat.



3. The Monkey caging and the staircase repair in the Curzon Cottage Set No. 3 has been completed during the second quarter of the year under report.
4. The CPWD (Electrical Wing) has completed the work of provision of geysers in the kitchen of all the Fellows during the year under report.
5. Painting of IAS Campus' Residential Buildings from Outside - Hill Station Colour adopted.

During the first quarter of the year, the Director instructed the CPWD and chose a colour combination befitting the Hill Station character of the buildings when they are to be painted on the outside. The CPWD followed the instructions of the Director. This work is completed in many of the buildings, namely, IUC Hostel, Del Villa, Curzon Cottage, Fellows' House, Zakir Hussain House, Red Stone, Courteen Hall, etc. The new colour scheme has given the buildings an identity befitting the IAS campus.

**(D). Works done in the Employees Residences**

1. The work relating to the repair of roof, down pipes and gutters in A-Block, B-Block, Starry Cottage, etc. has been completed by the CPWD during the year under report.
2. The work relating to provision of wooden shelves in the kitchens of 17 quarters of Military Barrack, Outhouse and Mali Line (Near Squire's Hall) has been completed during the year under report.
3. During the first quarter the water tanks of all the residents in the IAS campus were cleaned and the work completed.
4. The CPWD has undertaken and completed the work relating to the repair of Plinth of Fireman Line, B-Block (backside) during the year under report.
5. The repair work of one of the staff quarter, namely, Electrical Supervisor's quarter was undertaken and completed during the second quarter of the year.
6. The CPWD has undertaken the repair work of the 12 Family Line building during the second quarter as well.

**(E) General Cleanliness of the IAS Campus and Miscellaneous**

1. There has been a great rush of tourists and visitors to the Institute during summer months and the tourist litter the campus. The Institute has been facing the problem of garbage which has been exacerbated by the monkeys, who not only disturb the peace of the Campus, but also spoil its gardens, rummage in the garbage bins, etc. During this year under report, the Director drew special attention of the Estate to keeping the campus clean. The Estate Section launched a special drive and cleaned all the hill slopes of the IAS campus of plastic wrappers and bottles and other garbage material thrown by tourists and other visitors. The Municipal Corporation has also launched a scheme of collecting door-to-door domestic garbage from each of the residents of the campus. There is much improvement in the general cleanliness of the IAS campus.
2. The drain work of the rear side of Tennis Court has been completed. With the completion of this work, the new rainwater harvesting tank of 70,000 litres behind tennis court has become operational and has increased the water security of the garden during the year under report.

### **(F) Conservation and Preservation of the IAS Building:**

1. The evaluation work of the Master Plan Reports submitted by Conservation Architect was completed, by holding a series of meetings with the Experts in the field, including the expert representatives of ASI, CPWD and other Organisations. The last such meeting was held on 21<sup>st</sup> July 2010 where the Conservation Architect made a presentation and the Evaluation Committee asked the Architect, Ms. Abha Narain Lambah, to prepare the Action Plan as well as the rough Budgetary Estimates. Ms. Abha Narain Lambah sent the Fourth Volume containing the Action Plan and the rough Budget for implementation of the Master Plan Report.
2. The ASI has started the execution of the work of preservation of Flat Verandah Roof in the Main Building, the proposal of which was sanctioned by the IAS in the previous year. However, the ASI could not complete the work during the year under report and the work is still going on, and, it includes the critically damaged area above the Library Hall.

### **Opening up of an Art Gallery**

During the period under review, the Institute has been able to complete the work of renovation of a part of the Swimming Pool Complex and set up an Art Gallery, called as Court Gallery here. The Art Gallery (Court Gallery) was inaugurated on 8<sup>th</sup> September 2010 by Professor Peter Ronald deSouza, Director of the Institute.

### **The Renovation of Swimming Pool Complex – Phase II - The Theatre**

During the year under review the work of Phase II of the Renovation of Swimming Pool Complex and the work of Theatre was also taken up and completed. Now the Theatre is fully functional and many cultural events are being held.

### **Implementation of Mater Plan Report**

During the period under report, the Director IAS has initiated action to implement the Master Plan Report. To begin with, the Director has constituted the Project Implementation Committee, which would be an umbrella body to execute the Master Plan Report. The implementation of Master Plan Report is a complex and stupendous task which the Institute has taken up in hand for comprehensive conservation of the Rashtrapati Nivas Building.

### **Renovation of Karachi Line**

The Director IAS met the Director-General, ASI and finalized the proposal of renovating the Karanchi Line Building to use this building as a ‘Hall of Residence’ for Inter-University Centre Associates. The Director-General, ASI has agreed in principle that the ASI would be able to take up the renovation work in near future. The ASI has been requested to finalize the renovation plans.

### **Renovation of Bilaspur House**

The Director, IAS has also held a series of meetings with the CPWD authorities to finalize the renovation work of Bilaspur House. The CPWD has been requested to take further necessary action to complete the renovation of the building. After its renovation, the Bilaspur House Building would be used for housing the scholars visiting the Institute from abroad. It was expected that the work would be completed before the close of the last financial year, but due to unavoidable reasons, it would be completed by the end of May 2011.

### **Renovation of Seven Buildings in the IAS Campus**

During the last quarter of the year under Report, the Institute has taken new initiatives to renovate seven residential buildings of the Fellows, namely, Clair Villa (two sets), Prospect Hill A- Block (four sets), Starry Cottage (two sets), DSP Cottage (two Sets), Fellows House (three Sets), Grass Shed (one Set), Bilaspur House (eight Sets).

### **Conversion of present IUC Hostel into Fellows Residences (Six Sets)**

During the last quarter of the year under Report, the Institute has planned to add six residential units for the Fellows by renovating the present IUC Hostel building, as soon as the Karanchi Line Building is renovated and converted into the “Hall of Residence” for the IUC Associates. The Estimates from the CPWD for this work have already been received and principle approval of the same has been given by the IAS to CPWD.

### **Review of Fire Fighting System**

During the year under report 2010-11, the Institute has initiated steps for an effective fire fighting system to be put in place in the RP Nivas Building. The CPWD (Electrical) and D.G. (Fire Services) Himachal Pradesh have been requested to inspect the Institute building and suggest steps for the same. At present the Institute has its original fire fighting system which needs to be tried, tested and kept in operational readiness. The proposal is also to augment the system as per the fire safety laws of the land (NCB 2005). Regular drills are to be conducted and every employee is expected to have elementary knowledge for a crises situation. The CPWD has submitted a comprehensive estimate for ensuring the fire safety of the building in terms of the norms fixed under NCB 2005.

### **Other Works Done Recently**

- a. The partition work in the Library was completed during this period under review.
- b. Three broken gates in the Garden Area have been replaced.
- c. The repair work in the Servant Quarter of Military Barrack No. 3 is also completed.

## **VIII. ACCOUNTS AND BUDGET**

A) The approved Revised Estimates and Budget Estimates for 2010-2011 and 2011-2012 respectively are as under:

	<b>Revised Estimates</b>	<b>Budget Estimates</b>
	<b>2010-2011</b>	<b>2011-2012</b>
	<b>(Rupees in lakhs)</b>	
Non-Plan	633.00	684.00
Plan	430.59	480.00

The accounts of the Institute for the year 2010-2011 duly audited by the Accountant General (Audit), Himachal Pradesh, Shimla are enclosed as **Annexure – I**.

## B) IUC ACCOUNTS

The Accounts of the Inter-University Centre for Humanities and Social Sciences (IUC) Scheme are audited by a firm of Chartered Accountants M/s Rajendra Ravi & Harish of Shimla. The expenditure for the year 2010-2011 was Rs.32.13 lakh.

The Audited Statement of Accounts of the Inter-University Centre (IUC) Scheme for the year 2010-2011 is placed below as **Annexure – II**.

## IX. GARDEN

The Institute has a very beautiful and large garden with a variety of flowers, plants and trees. This is perhaps one of highest landscape garden in the world. The garden is dependent on rain water, which is harvested for its maintenance. The horticulture department is not only maintaining the garden but is also taking new initiatives. The work for the development of “Heritage Walk” is already in progress. Winter annuals have been planted for the beautification of the gardens. Bamboo plantation has been done at some points for the purpose of green fencing of the open areas of the Institute. A number of Poplar and Willows have been planted for avenue plantation. Some of willows and poplars will be planted in the rainy season as there is scarcity of water during the summers. Some new ornamentals have been purchased for the landscaping and beautification of gardens. One new water harvesting tank has been made functional. Fountains on the rear side of the building have been repaired and efforts are being made to ensure their proper functioning. Various government departments like Himalayan Research Group and some departments of Dr. Y S Parmar University of Horticulture and Forestry have been contacted for providing the plantation material for planting in barren areas of the Institute as well as providing technical guidance for the development of the gardens of the Institute. A sculpture prepared in the Artists’ Camp held at the Institute has been installed in the garden.

## ACADEMIC ACTIVITIES OF THE DIRECTOR

1. Attended the Book release function organized by M/s. SAGE Publications, Delhi on 5<sup>th</sup> April 2010. The book entitled *Vulnerable India: A Geographical Study of Disasters* authored by Dr. Anu Kapur during the period of her Fellowship at the Institute from August 2003 to March 2006 was co-published with the SAGE Publications, New Delhi.
2. Nominated by the Government of India as Member of the First Academic Council of the Central University Himachal Pradesh for a period of three years.
3. Delivered Annual Mohan Sinha Mehta Memorial Lecture on 19<sup>th</sup> April 2010 at SEVA Mandir, Udaipur.
4. Delivered the Foundation Day Lecture titled “Between Being Principled and Being Pragmatic” at the Harish-Chandra Research Institute (HR), Allahabad on 19<sup>th</sup> July 2010.
5. Co-edited with Tridip Suhrud the IAS publication entitled *Speaking of Gandhi’s Death*.
6. Attended an International Conference on “Customary Governance and Democracy Building: Exploring the Linkages” organized by UNECA International IDEA at Addis-Ababa, Ethiopia on 14-18 September 2010.
7. Attended the 4<sup>th</sup> Annual Convention of the Consortium of Non-Traditional Security Studies in Asia (NTS-Asia) held on 25-26 November 2010 at S. Rajaratnam School of International Studies, Singapore.

8. Delivered the 50<sup>th</sup> Anniversary Lecture of the *Indian Humanist Union* titled *A Humanist Message in Three Episodes* at India International Centre, Delhi on 18 December 2010.
9. Attended a Political Science Departmental Committee meeting at Central University, Hyderabad and also delivered a Lecture on *Indian Democracy in the Hall of Mirrors* on 20<sup>th</sup> January 2011.
10. Delivered a lecture on *Indian Democracy in the Hall of Mirrors* at State University of New York, Binghamton on 4<sup>th</sup> February 2011.
11. Participated in the Roundtable organized by the National Democratic Institute (NDI), Washington, D.C on *Deepening Engagement with Emerging Democratic Powers on Democracy Assistance* held on 7 and 8 February 2011.
12. In the capacity of a Member of the CORE Advisory Group, invited by the Peace Research Institute, Oslo (PRIO) to participate in the Kick Off Meeting held in Brussels to set up the governance and other aspects of the Project *Cultures of Governance and Conflict Resolution in Europe and India (CORE)* held on 11<sup>th</sup> February 2011.
13. As a member of the 5 Member External Assessment Group, was invited by the International Institute for Democracy and Electoral Assistance (IDEA), Stockholm, Sweden, a multilateral Institution of which India is a member, to evaluate the *new International IDEA Strategy 2012-2017* at a workshop held on 16<sup>th</sup> February 2011.
14. Invited by the Centre for Social Studies (CES), Coimbra, Portugal, to participate in the Conference on *Portugal between Disquiets and Challenges* held on 17 and 18 February 2011.
15. As a Member of the *Coordination Committee on the Living and Diverse Cultural Traditions of India* constituted by the Union Ministry of Culture, Government of India, with the approval of the Hon'ble Prime Minister, 2010, participated in the first meeting on 11<sup>th</sup> January 2011.
16. As a Member of the Advisory Board of Collaborative Project (4<sup>th</sup> European Commission's 7<sup>th</sup> Framework Programme) '*The Semantics of Tolerance and Anti-Racism in Europe: Institutions and Civil Society on a Comparative Perspective (TOLERACE)*' (2010-2013). Held discussions with the team in Portugal on 17<sup>th</sup> February 2011.
17. As a Member of the Search and Advisory Committee for *Rajya Sabha Fellowships on Parliamentary Studies* evaluated the Fellowships awarded at a meeting in the Rajya Sabha on 28<sup>th</sup> January 2011.
18. Nominated as an External Expert on the Advisory Committee of the Nehru Studies Centre of the University of Jammu in March 2011.

## **ADMINISTRATIVE AND OTHER INITIATIVES**

During the year under report we have initiated a couple of new initiatives which will fructify during the on-going year.

### **Heritage Walk**

The Viceregal Lodge rechristened as Rashtrapati Nivas post-47 is a grand building. Annually the Nivas is visited by more than one lakh tourists Indian and foreign. The rear portion of the building

has been spruced up and we have taken a policy decision to ensure that all portions of the building are used frequently – this would ensure proper upkeep of all parts of the building. We propose to start a Heritage Walk which would take the tourists down the memory lane – the walk would be of two hours duration. The walk would ensure that all parts of the building are visited and also cover major part of the campus. The walk would also generate additional resources which in turn would be used for maintenance of the Institute.

### **FCRA**

The Institute had applied for registration under the Foreign Contribution Regulation Act to the Ministry of Home Affairs (MHA), Govt. of India. The MHA vide letter No. II/21022/78(0007)/2010-FCRA II, dated 16.12.2010, has given the permission under the aforesaid Act. This permission opens a new source of revenue/funding for IAS which can be used for expansion, improving infrastructure, maintenance of the campus and above all have an untied source of funds which can be used creatively with the approval of Finance Committee/Governing Body/Society. Needless to say the FCRA will give us an opportunity to tap the philanthropic ventures of Corporate Sector and wealthy individuals.

### **ECOLOGICAL REJUVENATION**

The Institute has total land to the extent of 80 odd acres and major portion is forested. The Institute has already taken up a major plantation drive i.e. avenue plantation (on the roadside) gap filling i.e. plantation on barren patches. This will not only enhance the green cover on the campus but also make the institute eco-friendly. In the coming monsoons the Institute will take up a major plantation drive and the Forest Department of State Government is being roped into supplement our efforts.

### **SPORTS COMPLEX**

During the year we have had interaction with the Ministry of Sports, Government of India and we have been asked to submit a proposal for upgrading the existing sports infrastructure. These initiatives would improve the general ambience of the Institute and also provide further facilities for extra curriculum activities.

- During the period of report the Fellowship Award Committee met twice, first on 14th May 2011 and the second on 14th December 2011. In the first meeting, the FAC recommended for award of Fellowship to 16 scholars. They include Dr. Manav Ratti, Dr. Queeny Pradhan Singh, Dr. Nandini Choudhury Sen, Dr. Michael Krausz, Dr. U.A. Vinay Kumar, Dr. Dhananjay Singh, Dr. Rita Banerjee, Dr. R. Swarnalatha, Dr. Jaya Tyagi, Dr. Mallarika Sinha Roy, Dr. Piyush Mathur, Dr. Prachi Khandeparkar, Dr. Satish K. Sharma, Dr. Swadhinta Mahanta, Dr. Yoginder Sikand and Dr. Sumita Chatterjee. In the second FAC meeting also 16 scholars were recommended for award of Fellowship. They include Dr. Amitranjan Basu, Shri Aditi Nath Sarkar, Dr. Babu Kalathuparambil Tharith, Dr. G. Aloysius, Professor K. Gopal Iyer, Professor Kavita Panjabi, Dr. Manish Kumar Thakur, Dr. Manisha Gangahar, Dr. Meera Ashar, Shri Om Prakash Valmiki, Dr. Sohini Roy, Dr. Vrinda Dalmiya, Dr. Yahodhara Mishra, Dr. Yogesh Snehi, Dr. Sukhpal Singh and Dr. Sarfaraz Ahmad.
- Mr. S.P. Thakur, IAS (1986 Batch: Orissa Cadre) has joined the Institute as its Secretary on 22<sup>nd</sup> September 2010.

- The vacancy of the Section Officer (Horticulture) has been filled during the period under report.
- The vacancy of the Private Secretary to the Secretary has been filled through departmental promotion.
- The fire-fighting system in the Rashtrapati Nivas building is being strengthened.
- To boost sales in the Book-cum-souvenir the system for payment through credit card would be introduced shortly.
- Special initiatives have been taken to redress Fellows' grievances. In this direction a register is being maintained at the Secretary's office in which the Fellows can record their complaints. This has been welcomed by the Fellows.
- After the theft of the bell in the night of 21<sup>st</sup> April 2010 the security system has been beefed up. The working of the security system was reviewed and the contract with the firm was cancelled after their services were found unsatisfactory. The system of monitoring the security of the campus in the form of night vigil by the officers of the Institute was also started.
- Due to the various measures taken by the Institute the rate of submission of manuscripts by Fellows has increased substantially. In the last year, all Fellows except one have submitted their manuscripts. The administration is writing to the defaulter Fellow requesting him to submit his monograph at the earliest.
- Although the telephone and electricity bills have reduced substantially in the last couple of years, efforts are being made to further reduce these bills.

**Indian Audit and Accounts Department**  
**Accountant General (Audit)**  
**Himachal Pradesh, Shimla – 171 003**  
**No.:-G.I.A.Cell/SAR/IIAS/2011-12/298-300**  
**Dated:-21.09.2011**

To,

The Secretary  
Ministry of Human Resource Development  
(Department of Secondary and Higher Education  
Government of India  
Shastry Bhawan  
New Delhi – 110001.

**Subject: Certification of accounts of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla for the year 2010-11 under section 20 (1) of the CAG's (DPC)**

Sir,

The audit of the accounts of the Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla has been entrusted to this office for a period of five years upto 2012-13 vide Govt. of India, Ministry of Finance, Department of Economics affairs, Budget Division letter NO.F.No.1(20)-B@/2008 dated 19.08.2008. Accordingly, I am forwarding herewith the certified accounts of IIAS, Shimla for the year 2010-11 together with the Separate Audit Report of the C&AG of India thereon.

Irregularities noticed during the course of audit have been brought to the notice of the Ministry and the Institute through the Audit and Inspection Report.

It may please be ensured that the above mentioned certified accounts of IIAS, Shimla along with the Separate Audit Report of the C & AG of India thereon, duly approved/adopted by the Board of Governors of IIAS Shimla, are laid before both the Houses of the parliament. The dates of laying of these certified accounts together with the Separate Audit Report thereon to both the houses of Parliament may please be urgently intimated to this office for information and further action.

Hindi version of Audit Report will follow.

Yours faithfully,

Sd/-

**Encls.: - as above**

**Accountant General (Audit)**



Copy alongwith a copy of certified accounts for the year 2010-11, Audit Report thereon and Management letter is forwarded to the Director, Indian Institute of Advanced Study, Shimla Himachal Pradesh for information and necessary action. It may please be ensured that audited accounts along with the Audit Report thereon duly approved/adopted by the Board of Governors are laid before both the houses of Parliament.

**Encls.: - as above**

Sd/-  
**Accountant General (Audit)**

Copy alongwith a copy of Audit Report and management letter is forwarded to the Comptroller & Auditor General of India, 10-Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi – 110124 with reference to their letter No.71433 Report (Swa.ni.)/215-2011 dated 02.09.2011. Annotated reply to the observations of the Headquarters on the SAR and Proforma on progress of audit are also enclosed.

**Encls.: - as above**

Sd/-  
**Accountant General (Audit)**

**Separate Audit Report of the Comptroller & Auditor General of India on the Accounts of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla for the year ending 31 March, 2011.**

We have audited the attached Balance Sheet of the Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla as at 31 March, 2011 and the Income & Expenditure Account/Receipt & Payments Accounts for the year ended on that date under Section 20(I) of the Comptroller & Auditor General's (Duties, Powers & Conditions of Service) Act, 1971 read with Section 60 of the Memorandum of Association of IIAS. The audit has been entrusted for the period upto 2012-13. These financial statements are the responsibility of the Autonomous Body's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

2. This Separate Audit Report contains the comments of the Comptroller & Auditor General of India (CAG) on the accounting treatment only with regard to classification, conformity with the best accounting practices, accounting standards and disclosure norms, etc. Audit observations on financial transactions with regard to compliance with the Law, Rules & Regulations (Propriety and Regularity) and efficiency-cum-performance aspects etc., if any, are reported through Inspection Reports/CAG's Audit Reports separately.

3. We have conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. These standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material misstatements. An audit includes examining, on the test basis evidences supporting the amounts and disclosure in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall presentation of financial statements. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

4. Based on our audit, we report that:

- i. We have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit;
- ii. The Balance Sheet and Income & Expenditure Account/Receipt & Payments Account dealt with by this report have been drawn up in the format prescribed by the Government of India, Ministry of Finance.
- iii. In our opinion, proper books of accounts and other relevant records have been maintained by IIAS, Shimla, as required under section 60 of the Memorandum of Association of IIAS, in so far as it appears from our examination of such books.

iv. We further report that:

**A. Balance Sheet**

**Fixed Assets (Schedule-3) : ₹ 1503.35 lakh**

The schedule has not been prepared in the format prescribed by the common format of Accounts showing Asset wise details. Further, the Institute has not charged depreciation as prescribed in the same format.

## B. Income and Expenditure Account

Other Administrative expenses (Schedule-12): ₹ 573.39 lakh

The above is overstated by ₹ 190.39 lakh due to wrong accountal of the deposits as final expenditure, which were given to Central Public Works Division, Shimla by the Institute in March 2011 for maintenance of residential and non residential buildings (₹ 30.05 lakh), preservation and restoration of Rashtrapati Niwas (₹ 119.08 lakh) and electrical works (₹ 15.00 lakh). This has resulted in overstatement of 'Expenditure' and 'Deficit' for the year', as well as understatement of 'Capital Fund' and Current Assets, Loan Advances' by ₹ 190.39 lakh each.

## C. Grants in Aid

Out of the total available funds of ₹ 11.06 crore (unspent balance of the previous year: ₹ 1.25 crore and grants during the year ₹ 9.81 crore), the IAS could utilize a sum of ₹ 11.04 crore leaving a balance of ₹ 0.02 crore as on 31<sup>st</sup> March, 2011.

## D. Management Letter

Deficiencies, which have not been included in the Audit Report, have been brought to the notice of the Director, IAS, Shimla through a 'Management Letter' for taking remedial/Corrective action.

- v. Subject to our observations in the preceding paragraphs, we report that the Balance Sheet and Income & Expenditure Account/Receipts & Payments Account dealt with by this report are in agreement with the books of accounts.
- vi. In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said financial statements read together with the Accounting Policies and Notes on Accounts, and subject to the significant matters stated above and other matters mentioned in *Annexure* to this Audit Report, Give a true and fair view in conformity with accounting principles generally accepted in India:-
  - a. in so far as it relates to the Balance Sheet, of the state of affairs of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla as at 31 Marh 2011; and
  - b. in so far as it relates to Income & Expenditure Accounts, of the 'Deficit' for the year ended on that date.

For and on behalf of the C&AG of India

Sd/-  
(J. Wilson)

Accountant General (Audit) H.P.

Place: Shimla

Date: 21.09.2011

**Annexure****{Referred to paragraph 4 (vi)}****(A) Adequacy of Internal Audit System**

No Internal Audit System has been introduced by the Institute. The Institute has not prepared its own Accounting and Auditing Manuals for the guidance of its own staff for performing these functions. Thus keeping in view the deficiencies and weakness in the system it is recommended that Accounting/Auditing Manuals should be prepared for the guidance of the staff and an effective Internal Audit System be introduced to conduct internal audit.

**(B) Adequacy of Internal Control System**

Keeping in view the size and nature of activities of the Institute, the Internal Control System is adequate.

**(C) System of physical verification of fixed assets and inventories**

The Registers of Fixed Assets have not been maintained. The physical verification of Fixed Assets and Inventories has also not been done since 1999.

**(D) Regularity in payment of statutory dues**

All statutory dues were regularly paid to the concerned authorities by the Institute.

\*\*\*\*\*

**Office of the Accountant General (Audit)  
Himachal Pradesh Shimla – 171 003**

No.:-GIA Cell/SAR/IIAS Shimla/2011-12/303

Dated: 21.09.2011

To,  
The Director  
Indian Institute of Advanced Study  
Shimla.

**Subject: Management Letter: Deficiencies noticed in accounting records/system/internal controls etc.**

Sir,

This office has audited the annual accounts of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla for the year 2010-11 and had issued the Audit Report thereon dated 21.9.2011. During the course of audit, the following deficiencies of minor nature were noticed, which were not included in the Audit Report. These are, however, being brought to your notice for taking corrective and remedial action.

**(A) Fixed Assets (Schedule-3): ₹ 1503.35 lakh**

- (i) Fixed Assets Register required to be maintain in the form (GFR 19) has not been maintained.
- (ii) The above includes Fixed Assets valuing ₹ 10.07 lakh, which have already been declared unserviceable but no provision towards anticipated loss of the value of these assets has been made. This has resulted in overstatement of 'Fixed Assets' and 'Capital fund' as well as understatement of 'Deficit' for the year' by ₹ 10.07 lakh each.

**(B) Current Assets, Loans and Advances (Schedules-4 & 4A) : ₹ 312.27 lakh**  
**Loans and Advances (Schedule-4A) : ₹ 34.08 lakh**

- (i) The above includes ₹ 30.81 lakh miscellaneous advances pending for adjustment, out of which ₹ 16.40 lakh are recoverable since last more than three years (1972-73 to 2007-08) and are doubtful of recovery. As such to depict a correct recoverable position of loans and advances, a provision for these doubtful miscellaneous advances of ₹ 16.40 lakh should have been made in the accounts. Non provision for same has resulted in overstatement of 'Loans and Advances' and 'Capital Fund' as well as understatement of 'Deficit for the year' by ₹ 16.40 lakh each.
- (ii) There is a difference of ₹ 0.22 lakh between the figures of misc. advances (₹ 30.81lakh) shown in the Accounts and the figures of subsidiary ledger (₹ 31.03lakh). This has resulted in understatement of 'Grant-in-aid' and 'Miscellaneous Advances' to that extent.

<b>(C) Current liabilities and provisions (Schedule-2)</b>	<b>: ₹ 513.05 lakh</b>
<b>Provisions:</b>	<b>: ₹ 298.54 lakh</b>

The above does not include liability of ₹ 14.12 lakh (DA arrears: ₹ 4.22 lakh, Tuitions Fee: ₹ 3.00 lakh and Pension: ₹ 6.90 lakh) of the Fellows and employees. This has resulted in understatement of 'Current Liabilities and provisions' and 'Deficit for the year' as well as overstatement of 'Capital Fund' by ₹ 14.12 lakh each.

**(D) General**

- (i) The Institute, instead of preparing the separate GPF account statements, has mixed the funds of GPF subscription and interest earned thereupon with GIA accounts. Moreover, the Institute has not followed the Government of India instructions dated 24 January 2005 regarding investment out of provident fund subscriptions.
- (ii) The assets of ₹ 13.12 lakh were disposed of during the year, without the required prior sanction of the Government of India. This fact has not been disclosed in the schedule of 'Notes on Accounts'.
- (iii) Journal for passing adjusting entries had not been maintained by the Institute.
- (iv) Sundry Debtors of ₹ 5.09 lakh outstanding for a period exceeding six months include Debts of ₹ 3.45 lakh outstanding for a period of more than three years (4 to 10 years: ₹ 2.19 lakh and 11 to 23 years: ₹ 1.26 lakh). These Sundry Debtors have neither been segregated as 'Good' and 'Bad and doubtful' nor this fact disclosed in the 'Notes on Accounts'.

Yours faithfully,

Sd/-  
Accountant General (Audit)

# **BALANCE SHEET**





<b>INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005</b>			
<b>BALANCE SHEET AS ON 31ST MARCH, 2011</b>			
<b>Capital Fund &amp; Liabilities</b>	<b>Schedule</b>	<b>(Amount in Rs.)</b>	
		<b>As on 31.3.2011</b>	<b>As on 31.3.2010</b>
Capital Fund	1	13,02,57,029.03	13,42,02,015.90
Current Liabilities and Provisions	2	5,13,04,871.40	5,06,22,908.40
<b>Total</b>		<b>18,15,61,900.43</b>	<b>18,48,24,924.30</b>
Assets			
Fixed Assets	3	15,03,34,707.73	14,28,14,552.73
Current Asset, Loans & Advances	4	3,12,27,192.70	4,20,10,371.57
<b>Total</b>		<b>18,15,61,900.43</b>	<b>18,48,24,924.30</b>

Shimla -171005  
Dated: 25.05.2011

Sd/-  
Accounts Officer

Sd/-  
Secretary

Sd/-  
Director



**INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT**



<b>INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA 171005</b>			
<b>INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR 2010-2011</b>			
<b>(Amount in Rs.)</b>			
<b>INCOME</b>	<b>SCHEDULE</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2010</b>
Grant received	<b>5</b>	9,81,08,000.00	8,98,00,000.00
Fees/Subscription Received	<b>6</b>	54,900.00	14,150.00
Income from Royalty, Publication etc.	<b>7</b>	11,53,632.33	5,10,142.64
Interest Earned	<b>8</b>	11,87,098.00	22,58,742.00
Other Income	<b>9</b>	63,85,152.00	37,64,931.00
Increase/ Decrease in stock	<b>10</b>	4,35,991.80	1,08,013.14
<b>Total (A)</b>		<b>10,73,24,774.13</b>	<b>9,64,55,978.78</b>
<b>Expenditure</b>			
Establishment Expenses	<b>11</b>	5,24,01,214.00	4,50,52,179.00
Other Administrative Expenses	<b>12</b>	5,73,38,783.00	4,62,55,393.00
Fixed Assets written off during the year + Prior period adjustments		13,12,401.00	30,33,425.00
<b>Total (B)</b>		<b>11,10,52,398.00</b>	<b>9,43,40,997.00</b>
<b>Excess of Income/ Expt.(A-B)</b>		<b>-37,27,623.87</b>	<b>21,14,981.78</b>
<b>Balance being Surplus / Deficit carried to Capital Fund</b>		<b>-37,27,623.87</b>	<b>21,14,981.78</b>

Shimla -171005  
Dated:25.05.2011

Sd/-  
Accounts Officer

Sd/-  
Secretary

Sd/-  
Director



**SCHEDULES**





<b>INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA 171005</b>		
<b>Schedules 1 to 4 Attached To &amp; Forming Part of Balance Sheet</b>		
<b>SCHEDULE 1</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2010</b>
<b>CAPITAL FUND</b>		
<b>Opening Balance</b>	<b>13,42,02,015.90</b>	<b>13,53,29,412.12</b>
Add: Additions during the year	2,96,36,461.00	2,63,94,083.00
Less: Deductions during the year	2,98,53,824.00	2,96,36,461.00
Add/Deduct : Balance of net income/expenditure transferrred from the Income and Expenditure A/C	-37,27,623.87	21,14,981.78
<b>Balance at the year-End</b>	<b>13,02,57,029.03</b>	<b>13,42,02,015.90</b>
<b>SCHEDULE 2</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>CURRENT LIABILITIES &amp; PROVISIONS</b>		
<b>A.CURRENT LIABILITIES</b>		
1. Sundry Creditors		
2. Other Liabilities		
(a) Other remittances	45,770.00	45,770.00
(b) GPF Broadsheet	2,08,50,127.40	2,00,76,682.40
(c) TDS Payable	0.00	5,53,979.00
(d) GPF/ GIS Payable	1,38,939.00	54,699.00
(e) New Pension Scheme	4,01,873.00	2,55,317.00
(f) Karamchari Kalyan Samiti Recoveries	14,338.00	0.00
<b>B. Provisions</b>		
a) Gratuity	1,94,13,917.00	1,86,92,102.00
b) Leave Encashment	1,04,39,907.00	1,09,44,359.00
<b>Total</b>	<b>5,13,04,871.40</b>	<b>5,06,22,908.40</b>
<b>SCHEDULE 3</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>FIXED ASSETS</b>		
Opening Balance 1.4.2010	14,28,14,552.73	13,70,49,162.73
(+) Assets Added during the Year	88,32,556.00	87,98,815.00
(-) Prior period adjustments	66,000.00	0.00
(-) Assets written off during the year	12,46,401.00	30,33,425.00
<b>Total:</b>	<b>15,03,34,707.73</b>	<b>14,28,14,552.73</b>

<b>SCHEDULE 4</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2010</b>
<b>A. CURRENT ASSETS:</b>		
<b>1. Stock in Hand</b>		
(At cost as taken, valued and certified by the council)		
Stock of IIAS Publications	23,67,907.94	23,10,676.14
Stock of IIAS Publications with Co-Publishers	13,72,622.00	9,93,862.00
<b>2. Sundry Debtors</b>		
a) Debts outstanding for a period exceeding 6 Months	5,09,144.83	4,81,865.50
b) Recovery from CPWD	1652253.00	16,52,253.00
c) Recovery from HP University	36,864.00	36,864.00
d) TDS from Sh. Manas Ray & Sh. S C Chaudhary	90,542.00	4,000.00
e) GPF cont. from Sh. Manas Ray	2,397.00	2,397.00
<b>3. Cash Balance in Hand</b>		
a) Cash in Hand	0.00	0.00
b) Imprest Balance	30,000.00	30,000.00
<b>4. Bank Balances :</b>		
<b>On Current Accounts</b>		
a) SBI Boileuganj, Shimla C/A No.10116685058	54,066.51	1,23,14,156.51
b) Canara Bank, Shimla C/A N0.437	37,842.00	99,860.00
c) SBI New Delhi C/A No.24	6,671.00	6,671.00
d) SBI Defence Colony, Dehli C/A No.62212	4,528.02	4,528.02
<b>On Saving Accounts</b>		
SBI Saving Bank A/C (GPF)	12,30,627.40	19,56,875.40
New Pension Fund Subscription	4,01,873.00	2,55,317.00
New Pension Fund Contribution	4,01,873.00	2,55,317.00
<b>On Deposit Accounts</b>		
Fixed Deposit against GPF	1,96,19,500.00	1,81,19,807.00
(i) FDRs with SBI Boileuganj Rs. 1,92,50,000.00		
(ii) Govt. Promissory Note with RBI Rs.1,02,000.00		
(iii) Special deposit sch. at SBI Simla Rs. 2,67,500.00		
Total	Rs.1,96,19,500.00	
<b>Total (A)</b>	<b>2,78,18,711.70</b>	<b>3,85,24,449.57</b>

<b>Schedule 4A. LOANS, ADVANCES AND OTHER ASSETS</b>		
Loan and advances	33,07,668.00	34,25,109.00
Security with P & T	36,200.00	36,200.00
Security with Vineet Gas	19,000.00	19,000.00
Deposit with Municipal Corporation	980.00	980.00
Deposit for Fuel	40,000.00	0.00
Others	4,633.00	4,633.00
<b>Total (B)</b>	<b>34,08,481.00</b>	<b>34,85,922.00</b>
<b>Total (4 &amp; 4A)</b>	<b>3,12,27,192.70</b>	<b>4,20,10,371.57</b>

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA 171005**

**SCHEDULES 5 TO 12 ATTACHED TO & FORMING PART OF  
INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT**

<b>SCHEDULES</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>SCHEDULE 05</b>		
<b>GRANTS RECEIVED</b>		
Grant received from MHRD(Non-Plan)	5,44,93,000.00	8,98,00,000.00
Grant received from MHRD(Plan-Gen)	3,97,00,000.00	
Grant received from MHRD(Plan-NER)	36,45,000.00	
Grant received from ICPR, New Delhi	2,70,000.00	0.00
<b>Total</b>	<b>9,81,08,000.00</b>	<b>8,98,00,000.00</b>
<b>SCHEDULE 06</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>FEES/SUBSCRIPTION RECEIVED</b>		
1) Subscription of Journals	300.00	750.00
2) Library membership fees	54,600.00	13,400.00
<b>Total</b>	<b>54,900.00</b>	<b>14,150.00</b>
<b>SCHEDULE 07</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>INCOME FROM ROYALTY, PUBLICATION ETC.</b>		
Income from IIAS Publications	11,48,672.33	4,22,714.00
Income from Publications through Co-Publishers	4,960.00	87,428.64
<b>Total</b>	<b>11,53,632.33</b>	<b>5,10,142.64</b>

<b>SCHEDULE 08</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2010</b>
<b>INTEREST EARNED</b>		
1) On Term Deposits;		
a) With Scheduled Bank		
-STDR's	0.00	918595.00
b) Others		
Interest received on GPF deposits	11,87,098.00	13,40,147.00
<b>Total</b>	<b>11,87,098.00</b>	<b>22,58,742.00</b>
<b>SCHEDULE 09</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.03.2010</b>
<b>OTHER INCOME</b>		
1) Ticket Booth Receipt	44,84,604.00	27,72,272.00
2) Sale of Fruits/Plants	16,875.00	13,790.00
3) Income from interest on advances to Employees	2,47,972.00	78,273.00
4) Income from recovery of License Fee & Furniture	2,64,686.00	2,15,302.00
5) Recovery of Water & Electricity Charges	78,374.00	60,344.00
6) Misc. Income - others	9,33,314.00	6,06,753.00
7) Court Fee	14,350.00	17,500.00
8) Income from Guest Houses	3,44,977.00	0.00
9) Int. on Imprest	0.00	697.00
<b>Total</b>	<b>63,85,152.00</b>	<b>37,64,931.00</b>
<b>SCHEDULE 10</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>INCREASE/(DECREASE) IN STOCK</b>		
a) Closing Stock		
- Stock of Publications of IAS	2367907.94	2310676.14
- Stock of Publications with Co-Publishers	1372622.00	993862.00
<b>Total</b>	<b>37,40,529.94</b>	<b>33,04,538.14</b>

b) Less : Opening Stock		
- Stock of Publications of IAS	23,10,676.14	22,31,001.00
- Stock of Publications with Co-Publisher	9,93,862.00	9,65,524.00
<b>Total</b>	33,04,538.14	31,96,525.00
<b>Increase/(Decrease) in stock (a-b)</b>	<b>4,35,991.80</b>	<b>1,08,013.14</b>
<b>SCHEDULE 11</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>ESTABLISHMENT EXPENSES</b>		
1) Pay & Allowances	3,16,07,588.00	3,27,88,706.00
2) Medical, LTC, Honorarium & Bonus	5,72,672.00	4,68,330.00
3) TA/DA to Officers & Staff	5,38,917.00	5,60,831.00
4) Overtime Allowances to Non-Gazetted Staff	13,977.00	18,370.00
5) Interest on GPF	11,87,098.00	13,39,132.00
6) Monthly Pension & Pensionery Benefits	1,84,63,412.00	98,58,160.00
7) Rewards	17,550.00	18,650.00
<b>TOTAL</b>	<b>5,24,01,214.00</b>	<b>4,50,52,179.00</b>
<b>SCHEDULE</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>SCHEDULE 12</b>		
<b>OTHER ADMINISTRATIVE EXPENSES ETC.</b>		
1) Advertisement & Publicity	2,24,871.00	3,36,865.00
2) Audit Fee	1,44,540.00	1,42,402.00
3) Electricity & Water Charges	36,61,998.00	36,27,982.00
4) Wages	28,750.00	17,600.00
5) Printing & Stationery	3,77,773.00	5,08,050.00
6) Postage	1,47,346.00	1,60,016.00
7) Telephone Charges	2,96,130.00	3,55,619.00
8) Repair & Maintenance of Fixed Assets	3,83,831.00	3,84,826.00
9) Maint. of Residential and Non-Resid. Bldgs.	30,04,762.00	60,25,052.00
10) Liveries	1,07,424.00	1,12,763.00
11) Contingencies	8,20,586.00	10,47,762.00

12) Institute's Vehicle Running Expenses	2,88,003.00	2,55,292.00
13) Institute' Vehicle Repair & Maintenance	1,29,995.00	1,95,662.00
14) Rent of Building - RP Nivas	12,000.00	0.00
15) Furniture Rent of RP Nivas	6,000.00	0.00
16) CPWD Electrical works	15,00,000.00	21,79,141.00
17) Special Repair & Maintenance of RP Nivas	1,19,08,151.00	0.00
18) Horticulture Expenses	5,48,101.00	3,96,615.00
19) Legal Expenses	1,03,685.00	1,54,690.00
20) Municipal Taxes	98,473.00	97,292.00
21) Dispensary & Medicines	2,87,926.00	2,07,413.00
22) Consumable Stores	2,06,601.00	58,127.00
23) Fellowship grant including TA/DA	1,66,99,759.00	1,14,65,511.00
24) TA/DA to Members of Society	14,11,808.00	11,57,419.00
25) Rent of Delhi Guest House	4,03,152.00	2,56,848.00
26) Publication Expenses	18,27,490.00	11,92,800.00
27) Seminar, Conference & Workshops,	50,80,165.00	60,15,146.00
28) TA/DA etc., to visiting Scholars & Professors	2,76,262.00	3,02,658.00
29) Ticket Booth Expenditure	29,84,759.00	21,28,888.00
30) Hospitality	32,319.00	4,2661.00
31) Preservation & Restoration of RP Nivas	26,25,686.00	39,25,978.00
32) Library Other Expenses	6,41,889.00	7,16,203.00
33) EPBX	1,45,350.00	2,08,075.00
34) Word Processors	9,17,250.00	26,77,014.00
35) Bank Charges	5,948.00	1,869.00
36) Amount Previous year Post Card	0.00	39,220.00
37) Less:Previous year CPWD license fee	0.00	-1,38,066.00
<b>Total</b>	<b>5,73,38,783.00</b>	<b>4,62,55,393.00</b>





**STATEMENT OF RECEIPTS & PAYMENTS**



**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA 171005**

**RECEIPTS & PAYMENTS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2011**

<b>RECEIPTS</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>	<b>PAYMENTS</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2011</b>	<b>YEAR ENDED 31.3.2010</b>
<b>1. Opening Balance</b>			<b>1. Expenses</b>		
a) i) Cash in hand	0.00	0.00	<b>I) Establishment Expenses</b>		
ii) Imprest Balance	30,000.00	30,000.00	Pay & Allowances	3,12,74,928.00	3,27,10,512.00
b) Bank Balance			Medical,LTC,Hon & Bonus	5,72,672.00	4,68,330.00
i) In Current Accounts	1,24,25,215.53	15,00,724.89	TA/DA to Officers & Staffs	5,38,917.00	5,60,831.00
ii) In Deposit Accounts	0.00	1,39,00,000.00	OTA to NG Staffs	13,977.00	18,370.00
<b>II) Grant received</b>			Interest on GPF	11,87,098.00	1339132.00
a) Grant received from MHRD	9,78,38,000.00	8,98,00000.00	Pensionary Benefits	1,84,63,412.00	98,58,160.00
<b>II. Administrative Expenses</b>			Rewards	17,550.00	18,650.00
b) Grant received from ICPR	2,70,000.00	0.00	Advertisement & Publicity	2,24,871.00	3,36,865.00
c) Imprest increased	0.00	0.00	Audit Fees	1,44,540.00	1,42,402.00
<b>III) Interest earned</b>			Electricity & Water Charges	36,61,998.00	36,27,982.00
On Bank Deposit			Wages	28,750.00	17,600.00
i) On Terms Deposits with Scheduled STDR	0.00	9,18,595.00	Stationary	3,77,773.00	508050.00
ii) On Saving Account	0.00	0.00	Postage	1,47,346.00	1,60,016.00
iii) Interest received on GPF deposits	1187098.00	13,40,147.00	Telephone Charges	2,96,130.00	3,55,619.00
iv) Interest received on advances to employees	247972.00	78273.00	Repair & Maintenance of Fixed Assets	383831.00	384826.00
			Main. Of Residential Non- Residential building (Civil)	3004762.00	6025052.00

Liveries	1,07,424.00	1,12,763.00
Misc. Contingencies	8,20,586.00	10,47,762.00
P.O.L.	2,88,003.00	2,55,292.00
Maintenance of Institute's Vehicle	1,29,995.00	1,95,662.00
Rent of Building RP Nivas	12,000.00	12,000.00
Furniture Rent of RP Nivas	6,000.00	6,000.00
CPWD Electrical works	15,00,000.00	21,79,141.00

#### IV. Other Income:

i) Subscription of Journals	300.00	750.00	1,19,08,151.00	0.00
ii) Subscription IIAS	0.00	0.00		
iii) Library Members Fee	54,600.00	13,400.00		
iv) Income from IIAS Publications	10,62,432.33	2,98,280.00	5,48,101.00	3,96,615.00
v) Income from Publications	4,960.00	87,428.64	1,03,685.00	1,54,690.00
Co-Publishers			98,473.00	97,292.00
vi) Ticket Booth Receipt	44,84,604.00	27,72,272.00	2,87,926.00	2,07,413.00
vii) Income from sale of Plants	16,875.00	13,790.00	2,06,601.00	58,127.00
viii) Recovery of License Fee & Furniture Rent	2,64,686.00	215302.00	Fellowship Grant including TA/DA etc. 1,66,99,759.00	
ix) Recovery of Water & Elect. Charges	78374.00	60344.00	1411808.00	1157419.00
x) Misc. Income-Others	933314.00	606753.00	403152.00	256848.00
xi) Income from Guest House	344977.00	0.00	1827490.00	1192800.00
Seminar Conferences and	5080165.00	6015146.00		
<b>V. Other Receipts:</b>				
<b>a) Recovery of advances</b>				
i) Recovery of Misc. Advances	8943476.00	7905607.00	276262.00	302658.00
ii) Recovery of Adv. to Employees	310257.00	371535.00	2984759.00	2128888.00

iii)	Rec. of Adv. Indian Civilization	0.00		Entertainment	32,319.00	42,661.00
iv)	Recovery of Imprest Advances	28,060.00	56,126.00	Project on Indian Civilization	3,32,660.00	78,194.00
v)	Recovery of Income tax	25,61,131.00	24,48,950.00	Special Repairs to RP Nivas	26,25,686.00	3925978.00
vi)	Recovery of Court Fee	14,350.00	17,500.00	Preservation & Restoration		
<b>b)</b>	<b>Remittances:</b>			Lib. Books & Periodicals/	6,41,889.00	7,16,203.00
				Lib Equipment of Back Volumes		
D)	Income Tax	0.00	0.00			
i)	GPF, GIS etc.	95,13,751.00	83,84,186.00	EPBX	1,45,350.00	2,08,075.00
<b>c)</b>	<b>Other Receipts</b>			Word Processors	9,17,250.00	26,77,014.00
i)	Deposit for fuel	0.00	40,000.00	<b>III.Expenditure on fixed assets</b>		
ii)	Sundry Debtors	58,960.67	72,025.00	Purchase of Fixed Assets	88,32,556.00	87,98,815.00
iii)	KKS	61,334.00	0.00	<b>IV) Other Payments :</b>		
				New Pension Scheme	1,46,556.00	88,522.00
				Misc. Advances	89,21,990.00	76,30,584.00
				Advances to employees	2,14,302.00	2,66,150.00
				Imprest Advances	28,060.00	55,429.00
				Deposit for Fuel	40,000.00	0.00
				Bank Charges	5,948.00	1,869.00
				Remittances:		
				1) Income Tax	32,01,652.00	18,98,971.00
				2) GPF,GIS etc	94,29,511.00	83,31,884.00
				3) KKS	46,996.00	0.00
				<b>V. Closing Balances:</b>		
				1) Cash in Hand	0.00	0.00
				2) Imprest Balance	30,000.00	30,000.00
				3) Bank Balances		
				- Current Accounts	1,03,107.53	1,24,25,215.53
<b>TOTAL</b>		<b>14,07,34,727.53</b>	<b>11,96,79,368.89</b>	<b>TOTAL</b>	<b>14,07,34,727.53</b>	<b>11,96,79,368.89</b>

Shimla 171005  
Dated: 25.05.2011

( Rajesh Sharma )  
Accounts Officer

Sd/-  
(S. P. Thakur)  
Secretary

Sd/-  
(Peter Ronald deSouza)  
Director

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS SHIMLA - 171002**

**SCHEDULE SHOWING DETAIL OF SUNDRY DEBTORS AS ON 31.03.2011**

S No.	Year	31.03.2011	31.03.2010
1	1988-1989	3253.22	3878.22
2	1989-1990	610.03	610.03
3	1990-1991	2083.42	2083.42
4	1991-1992	3946.30	3946.30
5	1992-1993	4669.00	4669.00
6	1993-1994	3127.00	3127.00
7	1994-1995	2271.00	2271.00
8	1995-1996	2252.00	2252.00
9	1996-1997	6602.00	6657.00
10	1997-1998	7648.00	7648.00
11	1998-1999	32424.00	32424.00
12	1999-2000	19525.00	19525.00
13	2000-2001	29901.20	29901.20
14	2001-2002	8253.00	8253.00
15	2002-2003	68124.00	68124.00
16	2003-2004	42172.00	42172.00
17	2004-2005	46634.00	46634.00
18	2005-2006	32288.20	32288.20
19	2006-2007	2747.00	2992.00
20	2007-2008	17819.00	17999.00
21	2008-2009	8941.20	12003.20
22	2009-2010	69310.00	124434.00
23	2010-2011	82540.00	0.00
	<b>Total</b>	<b>209144.83</b>	<b>481862.20</b>

-29-

ACCOUNTS OFFICER

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171 005**

Item	Assets as on 31.3.2010		Assets added during the year		Assets Written off during the year		Assets as on 31.03.2011		
	Non -Plan	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan	Plan	
Office Equipment	16,34,113.64	69,01,260.99	0.00	14,653.00	87,257.00	0.00	15,46,856.64	69,15,913.99	84,62,770.63
Electronic Equipment	6,96,933.00	55,36,399.00	0.00	21,57,530.00	6,96,933.00	4,62,211.00	0.00	72,31,718.00	72,31,718.00
Furniture & Fittings	15,56,792.07	24,61,290.68	0.00	9,60,993.00	0.00	0.00	15,56,792.07	34,22,283.68	49,79,075.75
Vehicles	1,51,699.64	18,93,022.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1,51,699.64	18,93,022.00	20,44,721.64
Library Equipment	47,747.51	58,78,394.87	0.00	0.00	0.00	0.00	47,747.51	58,78,394.87	59,26,142.38
Other Equipment	5,93,901.20	3,56,580.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5,93,901.20	3,56,580.00	9,50,481.20
Publication Equipment	0.00	8,39,040.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8,39,040.02	8,39,040.02
Library Books & Periodical	4,00,42,614.25	7,21,57,291.18	1,97,244.00	55,02,136.00	0.00	0.00	4,02,39,858.25	7,76,59,427.18	11,78,99,285.43
Source Book Scheme	2,47,622.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2,47,622.12	0.00	2,47,622.12
Equipment Source Book Scheme	41,087.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	41,087.56	0.00	41,087.56
Garden Equipment	1,63,836.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1,63,836.00	0.00	1,63,836.00
Audio Visual	0.00	4,22,500.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4,22,500.00	4,22,500.00
Project towards the centre for the study of Indian Civilization	0.00	5,18,442.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5,18,442.00	5,18,442.00
Word Processors	0.00	6,07,985.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6,07,985.00	6,07,985.00
<b>Grand total</b>	<b>4,32,58,660.99</b>	<b>9,37,90,501.74</b>	<b>1,97,244.00</b>	<b>86,35,312.00</b>	<b>7,84,190.00</b>	<b>4,62,211.00</b>	<b>4,45,89,400.99</b>	<b>10,57,45,306.74</b>	<b>15,03,34,707.73</b>

Sd/-

**ACCOUNTS OFFICER**

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY**  
**RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA 171005**

DETAILS OF LOAN AND ADVANCES AS ON 31.03.2011

<b>S.No.</b>	<b>Particulars</b>	<b>As on 31<sup>st</sup> March 2011</b>	<b>As on 31<sup>st</sup> March 2010</b>
1	House Building Advance	63,369.00	1,55,526.00
2	Scooter Advance	18,640.00	-1,160.00
3	Computer Advance	24,302.00	47,000.00
4	Misc. Advances	30,81,302.00	31,02,788.00
5	Warm Clothing Advances	16,144.00	23,944.00
6	Festival Advance	1,03,480.00	96,580.00
7	Bad Climate	120.00	120.00
8	Flood Advance	311.00	311.00
	<b>Total</b>	<b>33,07,668.00</b>	<b>34,25,109.00</b>

Sd/-  
**ACCOUNTS OFFICER**



**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA 171005**

**ACCOUNTING POLICIES AND NOTES ON ACCOUNTS  
FOR THE YEAR ENDED MARCH, 2011.**

1. The Accounts of the Institute for the year 2010 – 2011 have been prepared in the new format prescribed by the Government of India for Autonomous bodies.
2. The Accounts of the Institute have been prepared on accrual basis. Provision of gratuity of Rs.1,94,13,917.00 and leave encashment of Rs.1,04,39,907.00 up to 31.3.2011 have been credited to the Capital Fund.
3. The Institute has not provided any depreciation on the fixed assets as Rule 151(4) (b) of GFR provide that the Bodies mainly financed by the grant from Government will be required to maintain a register of assets in the Form (GFR 19). However, assets written off during the year have been deducted from the schedule of Fixed Assets.
4. The Closing balance also includes imprest of Rs.10,000.00 at Institute and Rs.20,000.00 with Chairman office at New Delhi.
5. Institute's Publication amounting to Rs. 23,67,907.94 and publication with Co-Publisher of Rs.13,72,622.00 as shown in the balances Sheet under "Fixed Assets" is based on the information submitted by PRO.

Sd/-  
**(Rajesh Sharma)**  
**Accounts Officer**

Sd/-  
**(S. P. Thakur)**  
**Secretary**

Sd/-  
**(Peter Ronald deSouza)**  
**Director**

**Rajendra Ravi & Harish**  
Chartered Accounts

77/1, The Mall, Shimla  
Phone: off. 2653171

### AUDITORS' REPORT

We have audited the 'Balance Sheet' of Inter University Centre for Humanities and Social Sciences (UGC), Shimla as at 31<sup>st</sup> March, 2011 and also their 'Receipts & Payment Account' & "Income & Expenditure Account" for the year ended on that date, annexed hereto and report that:-

These financial statements are the responsibility of the UGC's Management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

We conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. Those standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free of material misstatement. An audit includes examining, on a test basis, evidence supporting the amounts and disclosures in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by the management, as well as evaluating the overall financial statement presentation. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

As stated in note no.'s 3 to 5 of Schedule – 2 attached with Balance Sheet, Misc. Advances pending adjustment includes 3,08,591/- recoverable since last more than three years which are doubtful of recovery. In our opinion, provision for doubtful debts of Rs. 3,08,591/- should be made in the accounts. Due to such an adjustment not being made in the financial statements, it has resulted in overstatement of unspent Grant in Aid and Misc. Advances to that extent.

Subject to foregoing remark we report that:-

1. We have obtained all the information and explanation which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit.
2. in our opinion and to the best of our information and according to explanation given to us the said accounts read with the notes contained in Schedule 2, give a true and fair view:-
  - (a) In the case of the Balance Sheet, of the state of affairs of the Centre as at 31<sup>st</sup> March 2011.
  - (b) In the Case of Income & Expenditure Account of the amount utilised from Grant in Aid for the year ended on that date.
  - (c) In case of Receipts & Payment Account of the amount received and payment made during the year ended on the date.

For Rajendra Ravi & Harish  
Chartered Accountants

PLACE: SHIMLA  
DATED: 15<sup>th</sup> May, 2011

Sd/-  
(Harish Kumar)  
Partner  
M. No. 17768

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY**  
**RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005**

**UTILISATION CERIFICATE (PLAN)**

Certified that the grant of Rs.43,00,000/- (Rs. Forty Three lakhs only) was sanctioned to the Director, Indian Institute of Advanced Study, Shimla by the University Grant Commission, New Delhi vide letter No.F.6-2/2009/IUC dated 1.11.2010 for Inter University Centre for Humanities and Social Sciences (UGC) Shimla. After adding unspent balance of Rs.17,64,166.51 (Rs. Seventeen lakhs Sixty Four Thousand One Hundred Sixty Six and Fifty One Paise Only) of the previous year in the above grant, it becomes Rs. 60,64,166.51 (Rs. Sixty Lakhs Sixty Four Thousand One Hundred Sixty Six and Paise Fifty One Only) .

The Institute has utilised Rs. 32,12,954.00 (Rs. Thirty Two Lakhs Twelve Thousand Nine Hundred Fifty Four Only) ( net of Rs. 1,81,668.00 as revenue receipts and interest on grant) for the purpose for which it was sanctioned in accordance with the terms and condition as laid down by the Commission during the Financial Year 2010-11. A sum of Rs.28,51,212.51 (Rs. Twenty eight lakhs fifty one thousand two hundred twelve and paise fifty one only) remained unspent as on 31.03.2011.

Sd/-  
**Accounts Officer**

Sd/-  
**Secretary**

Sd/-  
**Director**

For Rajendra Ravi & Harish  
Chartered Accountants

Sd./-  
(Harish Kumar)  
Partner  
M. No. 17768

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY**

Rashtrpati Nivas Shimla – 171 005 (H.p.)

**Balance sheet of Inter University Centre for Humanities and Social Sciences (UGC)  
as at 31<sup>st</sup> March, 2011**

<b>LIABILITIES</b>	<b>AMOUNT</b>		<b>ASSETS</b>	<b>AMOUNT</b>
<b>GRANT-IN-AID</b>			<b>FIXED ASSETS:</b>	
Opening Balance as at 1.4.2010	17,64,166.51		(As per Schedule 1 attached)	62,51,117.00
Add: Grant received during the year	43,00,000.00 60,64,166.51		Misc. Advances Pending Adjustment (Unsecured-unconfirmed)	
Less: Amount Spent for Capital Expenditure	0.00		Prof. R.S. Mishra (94-95)	18,475.00
Less: Amount Spent for Expenditure	32,12,954.00	28,51,212.51	Misc. Advances (2003-04)	1,00,000.00
			Misc. Advances (2005-06)	10,000.00
			Misc. Advances (2006-07)	1,80,116.00
			Misc. Advances (2010-11)	15,000.00
<b>CAPITAL RESERVE</b>			Balance Lying with the Institute	25,27,621.51
Opening Balance as at 1.4.2010	62,51,117.00			
Add: Additions during the year	0.00			
Sub: Deletion during the year	0.00	62,51,117.00		
	<b>Total Rs.</b>	<b>91,02,329.51</b>	<b>Total Rs.</b>	<b>91,02,329.51</b>

Accounting Policies & Notes to Accounts: As per Schedule – 2 attached.

Sd/-  
(Rajesh Sharma)  
Accounts Officer

Sd/-  
(S.P. Thakur)  
Secretary

Sd/-  
(Peter Ronald deSouza)  
Director

Auditors' Report  
As per our report of even date annexed.

For Rajendra Ravi & Harish  
Chartered Accountants

Place: Shimla  
Dated: 15.05.2011

Sd/-  
(Harish Kumar)  
Partner

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY**

Rashtrpati Nivas Shimla – 171 005 (H.P.)

**Income & Expenditure Account Of Inter University Centre For  
Humanities & Social Sciences (Ugc) For The Year Ending 31.03.2011**

<b>Expenditure</b>	<b>Amount</b>	<b>Income</b>	<b>Amount</b>
To Maintenance Allowance to IUC Associates	7,00,227.00	By Sale of IUC Journal	2,391.00
To T.A./D.A. to Associates	5,73,614.00	By IUC Misc. Receipts	1,57,839.00
To IUC Research Seminar & Study Weeks	6,35,312.00	By Interest Earned (Bank)	21,438.00
To Publication Expenditure	682.00	By Amount spent out of	32,12,954.00
To Admin. & Secretarial Support (Postage, Medical, Stationery)	79,779.00	Grant-in-Aid received	
To Misc. Contingent Expenditure	1,07,120.00		
To Rent/Maintenance of Guest House	3,29,850.00		
To Admin. Unit (Wages, Pay & All.)	8,89,515.00		
To Maintenance of IUC Vehicle	74,023.00		
To Strengthening Books and Periodicals	4,500.00		
<b>Total Rs.</b>	<b>33,94,622.00</b>	<b>Total Rs.</b>	<b>33,94,622.00</b>

Sd/-  
(Rajesh Sharma)  
Accounts Officer

Sd/-  
(S.P. Thakur)  
Secretary

Sd/-  
(Peter Ronald deSouza)  
Director

Auditors' Report  
As per our report of even date annexed.

For Rajendra Ravi & Harish  
Chartered Accountants

Place: Shimla  
Dated: 15.05.2011

(Harish Kumar)  
Partner

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY**

Rashtrapati Nivas Shimla – 171 005 (H.P.)

**RECEIPTS & PAYMENT ACCOUNT OF INTER UNIVERSITY CENTRE  
FOR HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES (UGC) FOR THE YEAR ENDING ON 31.3.2011**

<b>Receipts</b>	<b>Amount</b>	<b>Payments</b>	<b>Amount</b>
By Opening Balance as on 1.4.2010	14,52,175.51	<b>Revenue Expenditure</b>	
By UGC Grant in Aid received	43,00,000.00	To Maintenance allowance to IUC Ass.	7,00,227.00
<b>Revenue Receipts</b>		To T.A./D.A. to Associates	5,73,614.00
By sale of IUC Journal	2,391.00	To Research Seminar & Study Weeks	6,35,312.00
By Interest Earned	21,438.00	To Admin. & Secretarial Support	79,779.00
		(Postage, Medical, Stationary)	
		To Publication Expenditure	682.00
By IUC Misc. Receipts	1,57,839.00	To Misc. Contingent Exp.	1,07,120.00
		To Rent/Maint. of Guest House	3,29,850.00
<b>Other Receipts</b>		To Admin./Unit (Wages, Pays & All.	8,89,515.00
By Misc. Advances Adjs.(Current Year)	11,22,000.00	To Maintenance of IUC Vehicle	74,023.00
		To Strengthening Books and Periodicals	4,500.00
By Income Tax (TDS)	51,083.00	<b>Other Payments</b>	
By Misc. Advances Adjustments (Old)	3,400.00	To Misc. Advances Paid	11,37,000.00
		To Income Tax (TDS)	51,083.00
		To Computer Facility & Other	0.00
		To Closing Bal. with Institute	25,27,621.51
<b>Total Rs.</b>	<b>71,10,326.51</b>	<b>Total Rs.</b>	<b>71,10,326.51</b>

Sd/-  
(Rajesh Sharma)  
Accounts Officer

Sd/-  
(S.P Thakur)  
Secretary

Sd/-  
(Peter Ronald deSouza)  
Director

Auditors' Report  
As per our report of even date annexed.

For Rajendra Ravi & Harish  
Chartered Accountants

Place: Shimla  
Dated : 15.05.2011

Sd/-  
(Harish Kumar)  
Partner

**SCHEDULE-1****INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY**

Rashtrapati Nivas, Shimla – 171 005 (H.P.)

**INTER UNIVERSITY CENTRE FOR HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES (UGC)****Schedule of Fixed Assets as on 31.03.2011**

<b>Sl. No.</b>	<b>Item</b>	<b>Opening Balance 01.04.2010</b>	<b>Addition During the Year</b>	<b>Deletion During the Year</b>	<b>Closing Balance 31.3.2011</b>
1	Electrical Equipment	5,20,525.00	0.00	0.00	5,20,525.00
2	Furniture & Fixtures	8,09,164.00	0.00	0.00	8,09,164.00
3	Library Books	28,09,649.00	0.00	0.00	28,09,649.00
4	Vehicle	2,65,054.00	0.00	0.00	2,65,054.00
5	Computers	18,46,725.00	0.00	0.00	18,46,725.00
	<b>TOTAL</b>	<b>62,51,117.00</b>	<b>0.00</b>	<b>0.00</b>	<b>62,51,117.00</b>

**Sd/-**  
**Accounts Officer**

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY**  
**RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA – 171 005 (H.P)**

**ACCOUNTING POLICIES AND NOTES TO ACCOUNTS**  
**FOR THE YEAR ENDING 31.03.2011**

**ACCOUNTING POLICIES**

1. Accounts have been maintained on cash system of accounting.
2. Depreciation on assets is not being charged in view of the Rule 151(4) of General Financial Rules.

**NOTES TO ACCOUNTS**

3. Advance of Rs.18,475/- is recoverable from Professor R.S. Mishra is long outstanding since 94-95. Steps are being taken to adjust/recover the same at the earliest.
4. Advance of Rs.1,00,000/- is recoverable from Dr.V.C. Thomas since 20.03.2004. Steps are being taken to adjust/recover the same at the earliest.
5. An advance of Rs.15000/- was paid to Director ICAR New Delhi through ARO for seminar. Out of above Rs.10,000/- is still outstanding. Steps are being taken to adjust/recover this amount.
6. An advance of Rs.2,75,000/- was paid to Registrar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi on 30.03.2007 through ARO for organizing seminar and amount of Rs.1,80,116/- is outstanding . Efforts are being made to adjust/recover this amount.
7. An advance of Rs.20,000/- was paid to Sh. Debarshi Sen, APO on dated 28.01.2008. Out of advance Rs.1900/- is yet to be adjusted. Efforts are being made to adjust/recover this amount.

Sd/-  
(Rajesh Sharma)  
Accounts Officer

Sd/-  
(S.P.Thakur)  
Secretary

Sd/-  
(Peter Ronald deSouza)  
Director



**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005**

**LIST OF MEMBERS OF THE FINANCE COMMITTEE**

1. Professor G. Mohan Gopal - Chairman  
Director  
National Judicial Academy  
Bhadbhada Road  
PO Suraj Nagar  
Bhopal – 462 044 (M.P.)  
Phone: 0755-2696766, Fax: 0755-2696904  
E-mail: mohangopal@nja.gov.in
  
2. Professor R.S. Deshpande - Member  
Director  
Institute for Social and Economic Change  
Dr. V.K.R.V. Rao Road, Nagarabhavi  
Bengalore – 560072  
Phone: 080-23217010; 23215468 (extn.201); 23215555 (R)  
Mobile: 09449866326 E-mail: deshpande@isec.ac.in; director@isec.ac.in
  
3. Professor Surbhi Banerjee - Member  
Vice-Chancellor  
Central University of Orissa  
28/6B, Bepin Pal Road Extension  
P.O. Kalighat  
Kolkata – 700026  
Phone: 033-24642047 (Res.); Fax: 033-28702055  
Mobile: (0) 9830259535; (0) 9836193930  
E-mail: banerjee\_surbhi@hotmail.com; surbhibanerjee2008@gmail.com
  
4. Shri S.K. Ray - Ex-Officio Member  
Financial Adviser  
Department of Secondary & Higher Education  
Ministry of Human Resource Development  
Shastri Bhavan  
New Delhi - 110 001  
Tel: 011-23382696, Fax- 011-23070668
  
5. Professor Peter Ronald deSouza - Ex-Officio Member  
Director  
Indian Institute of Advanced Study  
Rashtrapati Nivas, Shimla - 171005

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005**

**MEMBERS OF THE GOVERNING BODY**

1. Professor Bhalchandra Mungekar Chairman  
Chairman, Governing Body, IAS  
901, 'Dosti Carnation'  
Dosti Acre Complex  
Vadala (East)  
Mumbai – 400 037  
Phone: 91-022-24170044; E-mail: blmungekar@yahoo.com
2. Professor A.M. Pathan  
Vice-Chairman, IAS Governing Body  
&  
Vice-Chancellor  
Central University of Karnataka  
II Floor, Karya Soudha,  
Gulbarga University  
Gulbarga – 585106  
Karnataka
3. Professor Peter Ronald deSouza  
Director  
Indian Institute of Advanced Study  
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005  
Telephone: 0177-2830006(O) 2831275 (R), Fax: 2831389, 2830995  
E-mail: director@iias.org

**A representative each of the Ministries of Education & Finance.**

1. Smt. Vibha Puri Das, IAS  
Secretary,  
Department of Higher Education,  
Ministry of Human Resource Development,  
Shastri Bhavan,  
New Delhi -110 001.  
Tel: 011-23386451, 23382698(O) 26979585, Fax:23385807, 23381355
2. Shri S.K. Ray,  
Financial Advisor,  
Department of Higher Education,  
Ministry of Human Resource Development,  
Shastri Bhavan,  
New Delhi – 110 001.  
Tel: 011-23382696, Fax- 011-23070668

### Five Institutional Members

1. Professor S.K. Thorat  
Chairman,  
University Grants Commission,  
Bahadurshah Zafar Marg,  
New Delhi – 110 002.  
Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797
2. Professor Javeed Alam  
Chairman  
Indian Council of Social Science Research,  
Post Box No.10528,  
Aruna Asaf Ali Marg,  
New Delhi – 110 067  
Phone: 011-26179679 (O), 011-255454865/26717146 (R)  
Fax: 011-26162516/26179836
3. Professor K. Ramakrishna Rao,  
Chairman,  
Indian Council of Philosophical Research,  
36, Tughlakabad Institutional Area,  
Mehrauli Badarpur Road,  
New Delhi – 110 062.  
  
Professor K. Ramakrishna Rao  
35 Daspalla Hills,  
Visakhapatnam – 530 003  
Phone: (891) 2567421; Telefax: 011-29051762/26057387  
E-mail: krrao007@gmail.com (O)/ 22221546 (R) Fax: 011-2242844
4. Professor S.K. Brahmachari  
Director-General,  
Council of Scientific & Industrial Research,  
Rafi Marg,  
New Delhi – 110 001.  
Tel: 011- 23710472, 23717053 (O), 24618851, 24649359 (R)  
Fax: 011- 23710618 E.mail: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in
5. Professor Sabyasachi Bhattacharya,  
Chairman,  
Indian Council of Historical Research,  
35, Ferozeshah Road,  
New Delhi – 110 001.  
Telephone: 011- 23386033, PS: 23384869  
Fax: 23383421/ Mobile 09415243954

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

**Two Vice-Chancellors from category 3(b)(i) of the Members of Society nominated by the Central Government.**

1. Professor A.M. Pathan  
Vice-Chancellor  
Central University of Karnataka  
II Floor, Karya Soudha,  
Gulbarga University  
Gulbarga – 585106  
Karnataka
2. Vacant

**Four persons from Category 3(b)(ii) of the Members of the Society nominated by the Government of India**

1. Professor R.S. Deshpande  
Director  
Institute for Social and Economic Change  
Dr. V.K.R.V. Rao Road, Nagarabhavi  
Bengalore – 560072  
  
Phone: 080-23217010; 23215468 (extn.201); 23215555 (R)  
Mobile: 09449866326 E-mail: deshpande@isec.ac.in; director@isec.ac.in
2. Professor Yogendra Yadav  
Fellow,  
Centre for the Study of Developing Societies  
29, Rajpur Road  
Delhi – 110 054
3. Professor K.P. Singh,  
(Ex.-Member, UGC),  
Village & P.O. Dihiya  
District - Rewa.  
(Madhya Pradesh).  
Phone: 07662-299007
4. Professor G. Mohan Gopal  
Director  
National Judicial Academy  
Bhadbhada Road  
PO Suraj Nagar  
Bhopal – 462 044 (M.P.)  
Phone: 0755-2696766, Fax: 0755-2696904  
E-mail: mohangopal@nja.gov.in

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY  
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005**

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY SOCIETY**

1. Professor Bhalchandra Mungekar  
Chairman, Governing Body, IIAS  
901, 'Dosti Carnation'  
Dosti Acre Complex  
Vadala (East)  
Mumbai – 400 037  
Phone: 91-022-24170044; E-mail: blmungekar@yahoo.com
2. Professor Peter Ronald deSouza  
Director  
Indian Institute of Advanced Study  
Rashtrapati Nivas  
Shimla-171005  
Telephone: 0177-2830006(O) 2831275 @, Fax: 2831389, 2830995  
E-mail: director@iias.org

**Rule 3(a) Institutional Members (Ex-Officio)**

1. Smt. Vibha Puri Das, IAS  
Secretary  
Department of Higher Education  
Ministry of Human Resource Development  
Shastri Bhavan  
New Delhi - 110 001  
Tel: 011-23386451, 23382698 (O) 26979585,  
Fax: 011-23385807, 23381355; E-mail: secyshe@mail.nic.in
2. Smt. Sushma Nath  
Secretary  
Government of India  
Department of Expenditure  
Ministry of Finance  
North Block, Central Secretariat  
New Delhi – 110 001
3. Shri Sunil Kumar  
Additional Secretary (Higher Education)  
Department of Higher Education  
Ministry of Human Resource Development  
Shastri Bhavan  
New Delhi – 110 001  
Tel: to changed  
Tel: 011-23382298 Fax: 011-23070036

4. Professor S.K. Thorat  
Chairman  
University Grants Commission  
Bahadurshah Zafar Marg  
New Delhi – 110 002  
Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797,
5. Professor Samir K. Brahamchari  
Director-General  
Council of Scientific & Industrial Research  
Rafi Marg  
New Delhi – 110 001  
Tel: 011- 23710472, 23717053 (O), 24618851, 24649359 (R)  
Fax: 011- 23710618 E.mail: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in
6. Professor Javeed Alam  
Chairman  
Indian Council of Social Science Research  
Post Box No.10528  
Aruna Asaf Ali Marg  
New Delhi – 110 067  
Phone: 011-26179679 (O), 011-255454865/26717146 (R)  
Fax: 011-26162516/26179836
7. Professor Sabyasachi Bhattacharya  
Chairman  
Indian Council of Historical Research  
35, Ferozeshah Road  
New Delhi – 110 001  
Tel: 011-23386033, 23384869, Fax: 23383421, 23387829,  
Mobile 9415243954
8. Professor K. Ramakrishna Rao  
Chairman  
Indian Council of Philosophical Research  
36, Tughlakabad Institutional Area  
Mehrauli Badarpur Road  
New Delhi – 110 062  
Tele fax: 011-29051762/26057387  
(O)/ 22221546 (R)  
Fax: 011-2242844  
  
Professor K. Ramakrishna Rao  
35 Daspalla Hills,  
Visakhapatnam – 530 003  
Phone: (891) 2567421;  
E-mail: [krrao007@gmail.com](mailto:krrao007@gmail.com)

9. Professor Bipan Chandra  
Chairman  
National Book Trust, India  
Nehru Bhavan  
5, Institutional Area, Phase – II  
Basant Kunj,  
New Delhi – 110 070  
Tel. Fax: 011-24526174;24507204;24526169; 24526164  
E-mail: nbtindia@ndb.vsnl.net.in
10. Professor Sunil Gangopadhyay  
President  
Sahitya Akademi  
Rabindra Bhavan  
35, Ferozeshah Road  
New Delhi – 110 001  
Phone: 011-23386623; M.: 9810112543; Fax: 011-23382428, 011-23074168
11. The Chairman  
Sangeet Natak Akademi  
Rabindra Bhavan  
Ferozeshah Road  
New Delhi – 110 001  
Phone: 011-24116375/76 Fax: 011-23381621
12. Shri Ashok Vajpeyi  
Chairman  
Lalit Kala Akademi  
Rabindra Bhavan,  
Ferozeshah Road,  
New Delhi – 110 001  
Tel: 011- 23387241 - 43
13. Professor M. Vijayam  
Chairman  
Indian National Science Academy, New Delhi  
195, (Old No. 49/7)  
16<sup>th</sup> Cross, 4<sup>th</sup> Main, Maleswram  
Bangalore - 560012  
Phone : 080-23600765
14. Professor Syed Shahid Mahdi  
Vice-President,  
Indian Council of Culture Relations  
7, Olof Palme marg (3<sup>rd</sup> Floor)  
Vasant Vihar  
New Delhi – 110 057  
Tele: 011-26155339, (Mobile) 91-9810021600

15. Dr. P.T Chande  
President, AIU  
&  
Vice Chancellor  
Kavikulguru Kalidas Sanskrit  
Vishwavidyalaya  
Baghele Bhavan, Sitalwadi  
Mauda Road Ramtek – 441 106  
District Nagpur  
Fax & Phone No. 07114-255549/256476 (O)  
E-mail: unikalidas@yahoo.com , Website: www.sanskrituni.net  
Nagpur: Fax & Phone No. 0712-2291222/2560992 (O)
16. Shri Swapan Kumar Chakravarti  
Director  
National Library  
Belvedere, Alipore  
Kolkata – 700 027  
Tel: 033-24792968/ 24791462(O); Fax: 033- 24791462  
E-mail: nldirector@rediffmail.com
17. Professor S.M. Baqar  
Director-General of Archives  
National Archives of India  
Janpath  
New Delhi – 110 001  
Tel: 011-23383436, 23384797, E-mail: archives@nic.in
18. Ms. Rajwant Sandhu  
Chief Secretary  
Government of Himachal Pradesh  
H.P. Secretariat  
Shimla - 171 002  
Tel: 0177-2621022 (O), 2880714 (R) Fax: 2621813  
E-mail: cs\_hp@nic.in

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

**Rule 3(b) Nominated Member**

**Rule 3(b)(i) Six Vice-Chancellors of Indian Universities nominated by Central Government.**

1. Professor A.M. Pathan  
Vice-Chancellor  
Central University of Karnataka  
II Floor, Karya Soudha,  
Gulbarga University,  
Gulbarga – 585106  
Karnataka



## 2. Vacant

Phone: 040-23010121, 23132000; Fax: 040-23011090  
E-mail: vc@uohyd.ernet.in

## 3. Vacant

## 4. Professor Surabhi Banerjee

Vice-Chancellor

Central University of Orissa

28/6B, Bepin Pal Road Extension

P.O. Kalighat

Kolkata – 700026

Phone: 033-24642047 (Res.); Fax: 033-28702055

Mobile: (0) 9830259535; (0) 9836193930

E-mail: banerjee\_surbhi@hotmail.com; surbhibanerjee2008@gmail.com

## 5. Vacant

Phone: 0240-2400069, Fax: 0240-2400291; E-mail: vc@bamuniversity.org

## 6. Professor C.D. Singh

Vice-Chancellor

Indira Gandhi National Tribal University

Amarkantak

Madhya Pradesh- 484 886

**Rule 3(b)(ii) 18-24 Educationists nominated by the Central Government**

## 1. Professor Irfan Habib

Badar Bagh,

Civil Lines

Aligarh – 202992

Ph: 0571-2705792 (Off.) 2702620® Fax: 0571-2701539, 2706479

## 2. Professor Damodar Acharya

Director

Indian Institute of Technology

Kharagpur – 721 302

West-Bengal

Phone: 03222-282002/255386 (o), 282003 (R); Fax: 03222-282000/255239

E-mail: [director@iitkgp.ernet.in](mailto:director@iitkgp.ernet.in)

3. Professor Mohan Gopal  
Director  
National Judicial Academy India  
Bhadbhada Road  
PO Suraj Nagar  
Bhopal – 462 044  
Phone: 0755-2696766, Fax: 0755-2696904  
Mobile: 09425601201 & 09847328282  
E-mail: mohangopal@nja.gov.in & mohangopal@gmail.com
4. Professor R.S. Deshpande  
Director  
Institute for Social and Economic Change  
Dr. V.K.R.V. Rao Road, Nagarabhavi  
Bengalore – 560072  
Phone: 080-23217010; Mobile:09449866326  
E-mail: deshpande@isec.ac.in and director@isec.ac.in
5. Professor Jayati Ghosh  
Professor of Economics  
Jawahar Lal Nehru University  
New Delhi – 110 067
6. Professor Yogendra Yadav  
Fellow,  
Centre for the Study of Developing Societies  
29, Rajpur Road  
Delhi – 110 054
7. Dr. Asghar Ali Engineer  
Chairman  
Centre for Study of Society and Secularism  
602 & 603, Silver Star,  
6<sup>th</sup> Floor, Near Santacruz Station, Prabhat Colony,  
Santacruz (East),  
Mumbai – 400 055.  
Phone: 022-26135098, 022-26149668, 022-26102089, Fax: 022-26100712  
Mobile: 09869446999; 09892162233; E-mail: csss@mtnl.net.in
8. Smt. Aruna Roy  
No. 278, Hauz Khas Apartment  
Aurobindo Marg  
Hauz Khas  
New Delhi – 110 016
9. Shri Ram Dayal Munda  
Anthropologist, Hatma,  
Morabadi, Behind Ranchi College  
Ranchi- 834 008

10. Professor Abdul Bismillah  
Department of Hindi  
Faculty of Humanities and Languages  
Jamia Milia Islamia  
New Delhi – 110 025  
011-26935233 (R); 26989669 (O); Mobile: 09811306331  
E-mail: abismillah 786@gmail.com
11. Professor (Dr.) N.R. Madhava Menon  
C-I/22, Humayun Road  
New Delhi – 110 003.  
Phone: 011-23022240 (O), 24617325 (R), Telefax: 23022301  
E-mail: profmenon.milat@gmail.com
12. Professor B.N. Goswamy  
# 171, Sector 19 A  
Chandigarh – 160 019  
E-mail: bngoswamy@gmail.com
13. Professor K.P. Singh  
(Ex.-Member, UGC)  
Village and P.O. Dihiya  
District Rewa  
Rewa – (M.P.)  
Phone: 07662-29907
14. Professor Prabhat Patnaik  
Centre for Economic Studies & Planning  
School of Social Sciences  
Jawaharlal Nehru University  
New Delhi – 110 067
15. Professor U.R. Ananthamurthy  
498, 6<sup>th</sup> A Main  
R.M.V. 2<sup>nd</sup> Stage  
Bangalore – 560094  
Phone: 080-23415125; Fax: 080-23515125;  
E-mail: ananthamurthy@vsnal.net
16. Professor Shakeel Ahmad  
K-48, 1<sup>st</sup> Floor, Batla House,  
Sailing Club Road  
Jamia Nagar, Okhla  
New Delhi – 110 025  
Phone: 011-26984114; 0631-2425453

17. Dr. R. Panth  
Director/Vice-Chancellor  
Nava Nalanda Mahavihara  
(Deemed University)  
Nalanda – 803 111 (Bihar)  
Phone: 06112-281820 (Office), Fax: 06112-281505, Mobile: 09334810726  
E-mail: nmmdirector@sify.com
  
18. Smt. Roop Rekha Verma  
M-I/14, Sector B,  
Aliganj Housing Scheme  
Aliganj,  
Lucknow – 226024  
E-mail: [rooprekha@eth.net](mailto:rooprekha@eth.net); [saajhiduniya@gmail.com](mailto:saajhiduniya@gmail.com)  
Mobile: 09936650643; 09335905337; Phone (R): 0522-2374202
  
19. Dr. Dharamvir  
Noted Dalit Critic and Former IAS Officer  
Principal Secretary (Personal and Administrative Reforms)  
Govt. of Kerala  
Kerala Secretariat  
Thiranathampur – 695001 (Kerala)
  
20. Vacant

\*\*\*\*\*